राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथो का सर्वेक्षण, भाग–३

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थो का सर्वेक्षरण

भाग-३

डॉ० नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी ग्रन्थागार,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

संस्करण जून, १९८९

मूल्य चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक
भारत प्रिण्टर्स
जोधपुर

प्रस्तावना

सर्वेक्षण के इस तीसरे भाग के प्रथम अध्याय मे मारवाड स सम्बन्धित कुछ ख्यातो बातो आदि का परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख प्रथम व द्वितीय भाग मे नही है। ये ख्यातें न केवल राजघराना से सम्बन्धित है अपितु स्थानीय जागीरदारा और परगना सम्बन्धी जानकारी स युक्त हैं इसलिये इनका सामान्य ख्याता स अलग महत्व है।

दूसर अध्याय मे विगत, हाल, हकीकत आदि से सम्बन्धित ग्रथा का लिया गया है। इनमे मारवाड मे राठौड राज्य के सस्थापक राव रिडमल, चूडा आदि के परिवारा की विगत विस्तार से दी गई है साथ ही कूपावत, उदावत धूहड, सीधल, जतमालोत आदि राठौडा की खापा पर भी इसमे प्रकाश डाला गया है। मारवाड मे नमक की खाना की विगत ग्रथाक ३३ मे दी गयी है। उस समय राज्य की ओर से अनाज जसी आवश्यक वस्तुआ के भाव निश्चित कर दिये जाते थे, इसका वृतान भी ग्रथाक ३४ म दिया गया है।

तीसर अध्याय म जोधपुर राजघराने के रनिवास की रानिया सम्बन्धी कुछ वहिया का परिचय है वही अदालती मुकदमा के फसला तथा कर व हासल आदि स सम्बन्धित वहिया की भी जानकारी दी गयी है। इसमे जोधपुर राजघरान के कपडे के कोठार की बहियें तथा तोपाखान की बहियें भी है जा उस समय के वस्त्र, आभूषण आदि की जानकारी करन हेतु बडी उपयोगी है।

चौथे अध्याय मे मारवाड रियासत के अग्रेजो के साथ सम्बन्ध पर प्रकाश डालन वाली सामग्री समाहित की गयी है, वही अग्रेजो के आने के बाद यहाँ राजकीय

व्यवस्था म जो परिवतन हुये उनका वतात भी कुछ वहियो म है। एक मराठी तथा दूसरी पजावी म लिखी इतिहास से सम्बन्धित पुस्तका के अनुवादित मस्करणों का भी इसमे परिचय दिया गया है।

पाचवे अध्याय मे विशष रूप से मारवाड के एक प्रमुख ठिकान पोकरण के रिकाड की सामग्री है जो उस समय मे मारवाड के शासक व जागीरदारा के बीच सम्बन्धो पर प्रकाश डालती है वही राजकाय मे पोलिटियल एजेन्ट के बन्त हुए दखल और स्थानीय राजनीति को समझने हेतु उपयोगी सामग्री जो विविध रूपो मे मिलती है का उल्लेख किया गया है। साथ ही मालानी, उमरकोट, ईडर, अहमदनगर, किशनगढ आदि के शासकों की वशावलिया से सम्बन्धित ग्रथ भी इस अध्याय म दिय गये हैं। इसक अतिरिक्त श्रीरामदवजी के मेले तथा तोपाखाना, मन्दिरा की प्रतिष्ठा आदि से सम्बन्धित विविध जानकारी भी इसक अतगत है जा यहा क राजनैतिक और सामाजिक जीवन को समझने म बडी उपयोगी है।

इस भाग म विशष रूप स जोधपुर राजघराने के जनानी ड्योढी की वहियें जो किले मे स्थित महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (पु०प्र०/जो०म०) म सुरक्षित है पोकरण हाऊस सग्रह (पो०हा०) जोधपुर तथा जोधपुर कविराजा का सग्रह (जो० क०) (वतमान सीतामऊ नटनागर शोध सस्थान) आदि व्यक्तिगत सग्रहो की चुनी हुयी सामग्री का भी परिचय प्रपित किया गया है। अत इनके अभि भावको व व्यवस्थापको के सहयोग व सौजन्य के लिए हम आभारी हैं।

जनानी ड्योढी सम्बन्धी वहियें जो महाराजा जोधपुर की निजी सम्पति है। अलग अलग कमरा म बन्द पडी थी। मेरे निवेदन पर मेहरानगढ म्युजियम के जनरल मैनेजर महाराज प्रहलादसिंहजी ने न केवल उन वहिया को देखने की अनुमति दी अपितु मेरे परामश पर ये वहिय पुस्तक प्रकाश मे व्यवस्थित रूप से रखवा दी गयी। वाद मे भारतीय इतिहास अनुसधान परिषद की वित्तीय सहायता से मेरे निर्देशन म इनके सूचीकरण का काय भी अब सम्पन्न हो गया है। जिसस इतिहास के शोध विद्यार्थिया का काय अब सुगम हो गया है और ये वहिये भी ठीक ढग से सुरक्षित हो गयी हैं। इन वहियो म न केवल यहा के रीति रिवाज अपितु कला, सस्कृति उद्योग, रहन-सहन और सामाजिक मान्यताओ स सम्बन्धित बहुत उपयोगी और प्रामाणिक सामग्री अकित है। इन वहियो की

सख्या पाज हजार के करीब है। इनमे कपडे के कोठार और तापाखाने की बहियो का विशिष्ट महत्व है क्योकि इनसे मारवाड के पारम्परिक उद्योग व विभिन्न वस्तुओ के भावो तथा लोकरूचि पर भी प्रकाश पडता है।

इस प्रकार कुल १२८ ग्रथा का सर्वेक्षण इस भाग मे प्रस्तुत किया गया है। इन ग्रथा व बहिया की सामग्री जितनी विविधतापूर्ण है उतनी ही आधुनिक शोधकर्ता के लिय उपयोगी भी है, क्योकि इनमे न केवल राजनतिक अपितु सामाजिक, प्रशासनिक व सास्कृतिक महत्व की मूल्यवान सामग्री सामाहित की गई है। अग्रेजा के यहा आन के बाद समय-समय पर प्रशासनिक व सामाजिक सुधार की दिशा मे जो कदम उठाय गय उनकी विगत भी इस सामग्री मे मिलती है। राज्य क कोष म शामिल हाने वाली राशि किस प्रकार खच की जाती थी इसका अध्ययन भी अनेक बहिया के आधार पर किया जा सकता है। साथ ही राज परिवार क ऊपर विभिन्न रूपो मे कितना व्यय हाता था तथा विशिष्ट अवसरो पर खर्च किया जान वाला धन किस प्रकार यहाँ के कामगरा तक पहुँचता था उसका प्रामाणिक लेखा जोखा भी इन बहियो व कागजाता म सुरक्षित है जिससे उस समय की आर्थिक व्यवस्था और उसकी आत्म निभरता पर भी विचार किया जा सकता ह।

इस भाग के सर्वेक्षण मे भी हुकमसिंह भाटी न जहा पूरी लगन से श्रम किया है वही दूसरे गवषक श्री मरसिंह न भी अपना सहयोग दिया है। सर्वेक्षण मे प्रस्तुत सामग्री को छाटने के अलावा जनानी डयोढी की बहियो का व्यवस्थित करने मे भी इहाने अपना समय दकर इस उपयोगी काय म हाथ बटाया है, जिसके लिय ये धन्यवाद के पात्र है।

सर्वेक्षण के तीना भागा का मुद्रण-काय भारत प्रिण्टस जोधपुर न सुरुचि पूण ढग स किया है। अत प्रेस के व्यवस्थापक के अतिरिक्त कम्पोजीटर भवरलाल सुथार भी धन्यवाद का पात्र है, जिसने इस काय को उत्परता और सतकता पूर्वक सम्पन्न किया।

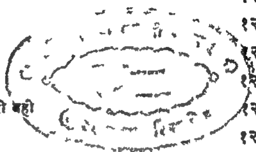
—नारायणसिंह भाटी

विषय सूची

प्रथम अध्याय

ख्यात, बात संग्रह

दूसरा अध्याय
विगत, हाल, हकीकत आदि



चौथा अध्याय

महवाल याददाश्त सग्रह

पाचवा अध्याय

फुटकर सग्रह

पहला अध्याय

ख्यात, बात सग्रह

१ ठाकुरा चंनदानजी री ख्यात बही

१ ग्रथ का नाम व कर्त्ता—ठाकुरा चनदानजी री ख्यातबही, २ प्राप्ति स्थान—रा०शो०स०, ३ ग्रथाक—१४२६८, ४ माप—६५ × २५ सेमी०, ५ पत्र सख्या—६०, ६ पक्ति सख्या—३०-३४, ७ लिपि समय—वि० स० १९०६, ई० सन् १८४९, ८ लिपिकार—अज्ञात, ९ भाषा—राजस्थानी, देवनागरी १० विशेष विवरण—प्रस्तुत ख्यात मे मारवाड के कुछ परगनो (सिवाना, जालोर, साचोर, सोजत, परबतसर आदि) मे पडन वाले गावो की रेख, जागीरदारा के नाम इत्यादि राजस्व सम्बन्धी जानकारी दी गई है। ख्यात के प्रारम्भ मे परगना सिवाने की वार्ता दी है जो विगत[1] से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

"श्री परमेश्वरजी सत्य छ

परगने सिवाना री वात—सिवाणा जोधपुर था कोस २८ नीरत कूण म छै न जालोर था कोस १५, ने जसोल था कोस १० छ। आदू पवार रो करायो गढ छै" (पत्र १½)

१ परगना सीवाना री फरसत —

मूल ख्यात का प्रारम्भ यहाँ से हुआ है—

'॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

प्रगना री फरसत प्रगने सीवाणो, मैवो, साचोर, जालोर, प्रगना री फरसत महाराज श्री वखतसिघजी श्री बिजैसिघजी राज मे रेषा तथा पटा तथा तालकै तिणरी विगत री फरसता छै १८२३ रा वरस सुऊ आगळी प्रसता री बही जुनी हुय गइ तरै

---

१ मारवाड रा परगना री विगत स० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र० भाग–२ पृ० २१५

इण वही म नकल उतारी १९०६ रा भादवा वद १३ मु जोरावरमल देवकीएजी री बटो वाय बाहालो गोडवाड रो नै हमार अठै रहै ठाकुरा चैनदानजी री ख्यात री वही छै। १९०६ रा प्रगना सिवाणा री फरसत स० १८३२ रा बरस मे"

= पालसा

१ कसबै सीवाणो पालसो   रेप ४००

१ गाव बालोतरा पालसै   रेप १०,०००

इस प्रकार सिवाना परगने के विभिन्न गावो की रेख, जिन ठाकुरो को गाव आदि जागीर मे मिले हुए थे उनके खापानुसार नाम दिये है। खालस, सासण और वीरान गावा का भी जिक्र यथा स्थान किया गया है।

कुछ गावो की रख इत्यादि की जानकारी स्वरूप उदाहरण प्रस्तुत है—

(क) करणोत पाप

४७५।।। =) ३ गाव काणाणो न मोरडा कलीया बेरी
पडा २ कुसापायो कोस ५ पटे रा० रामकरण
करणीदान फतकरणात रेप १२०००
गाव वतलव कदीमी
४७८।।। =) जमावा लागै गाव बेतलब जिण मु जागीदार लवे
१८७।। ≡) सीपाई बाब रा
१४२ असल रा
३) अकराई बाट रा
२ भरोती दसतूर रा

———

१४७।। ≡)

१८।) रसत परगा रा माहजनो न लाग
१० फुरमास घास वगेरे फुटकर
३०० दाए ग्रासर

———

४७५।।। ≡)

१ सावणु साख हसो ४ लाग
१ उनाली वरा री गुघरी उघडी (निदिचत) लागे
१ भोम इनामी नही

१ डोली पार जमी

२ बि० सोढार जमी रो दत्त राणा देवीदास वीजावत रौ

२ ब्यास जीवण बेरा २ रो दत्त राणा देवीदास वीजावत रौ

३ बि० मढसीयार वरा ३ रो दत्त राणा देवीदास वीजावत रौ

१ बि० कीसाण रै बेरो १ दत्त राणा देवीदास रो

५ स्यामी सुरजगीरजी रै बेरा ५ रो दत्त राणा देवीदास वीजावत रौ

४ भाटा रे बेरा ४ दत्त राणा देवीदास वीजावत रौ

१ वेरो १ सीरोमलजी रा सेभोए रै हीण रो दत्त करणोत अभकरण दुरगदासोत महाराज श्री अभयसिंह रा राज मे दीयो ।

---

१८ कुल वेरा अठारा

(ख) ४४। -) गाव सुरपुरो पट करणोत उदयकरण वखतकरणोत रै ईक सापीयो रेष १६०० वेतलब

४४। =) जमा बाब रा लागे

३२ लीपाई बाब रा असल अकराई वट रा भरोती दसतुर

२८ ।।।) २॥ =)

१२ दाण आसरा मास १२ रो

४४। -)

गाव वेतलव जीए मु जागीरदार लेवै सो कचेडी भरीज ।

१ सावणु साप रो मुकाता लागे

१ उनाळु साप नी, पाणी समदडी पीव

१ भोम इनामी नही

१ डोळी पारजमी

१ स्वामी सतोष भारती रे पेत १ हळ ७ रो दत्त भाटी नारषा रो महाराज श्री अजीतसिंघजी रा राज म ।

१ वि० हरकिसन रै पत १ हळ २४ दत्त भाटी नारषा रौ

(ग) ७।।।) गाव तरगटी पटै करणोत कल्याणसिंह भीमसिंघ सिरदारसिंघोत रै ईक्सापीयो रष ४००) तलबी गाव कदीम ।

७।।।) जमावा लागै

७।।।) लीपाई वगेरा ने १७।। -) लागे ता मु श्री महाराज विजयसिंघजी

रा राज सु इण माफक लाग असल अकराई वट रा भराती दसतुर
५ =) २॥=)

१ दाम कचेडो भरीज गाव एतलवी जीण सू
१ सावणु साप रो हेसा ४ लागे केईक येत मुकाला लागे
१ उनाली साप कण १ तीण रा पाणी वारो सु मेह (वर्षा) घणा हुवे
तरै गेहूँ हुवै भोग उघडी घुघरी लागे
१ भोम ईनामी जमी नहीं
१ डाळीया नहीं

(घ) थाप जोधा –

गाव पाटोदी, पट्टै राठोड भारथसिंघ जवानसिंघ जालमसिंघोत र

१ सावणु साप री हसो आठमो लाग तीण रो कुतो हुवेला, वैजवाज
मे लेवे जीण सु हेमा पाचवा पढै।
१ उनाळी साप वावा सु गेहू हुवै
१ भोम ईनामी नहीं
१ डोळिया छै आदि।

वि० स० १८८२ मे (सिवाना परगने) विभिन्न खापो के सरदारो के पास कितने गाव थे और उनकी रेख क्या थी इसकी सूची इस प्रकार अंकित है—

रेप	गाव	आसामी	रप	गाव	आसामी
२१५००	७	षालसा	८६२५	६	सरूपा (नाथ) र पटे
१४७५०	६	पाप चापावत	२२४००	७	पाप करणात
४०००	४	पाप जोधा	१०१५०	१३	पाप बालावत
३४२५	[illegible]	पाप मऐचा	११४५०	१८	पाप धवेचा
४००	१	पाप जुजणिया	२००	१	पाप चु डा
२१५००	१४	पाप चवाण	११५००	[illegible]	पाप भाटी
६०००	१४	पाप भाएल	१२५०	१	पाप सोढा
१०००	३	पवास पासवान	२०००	१	मुतसदीयार
३७५०	३	चारणा र पटे	१०३००	२७	चारण वीरामण सासण
				१४	१३
१५४२००	१४३				

(पत्र–४२)

२ सीरकार जाळोर रा गावा री फरसत –

प्रारम्भ मे जालोर परगने मे गावा की सूची दी है फिर खापानुसार पट्टे के गावो का उल्लेख किया है।

यथा—

६१३७५)४४ पटी दयावटी रा गाव

४६५००)३४

३०००) १ गाव गाळ   रेष ३०००) री

२०००) १ गाव मेहलाणो   रेष २०००) री

१०००) १ गाव डागरो   रेष १०००) री

अन्त मे एक सूची दी है जिसमे रेष, विभिन्न पाप के सरदारो के अधीनस्थ गावो की सख्या आदि अंकित है—

सिरकार जालोर रा गावो रो गोसवारो १८२३ रा

रेष	गाव	आसामी	रेष	गाव	आसामी
२२३७५	१४	पालसे गाव			
३४१६००	२३०	पटायता रै पाप वार			
८५१२५	३६	पाप चापावता रै	५५००	४	पाप कूपावता रै
५३७५	४	पाप उदावता रै	३६१७५	२३	जैतावता रै
१०००	१	पाप भदावता र	२८५००	११	जोधा रै
७५००	५	पाप करणोता रै	५१५०	५	करमसोता रै
२६३००	१५	पाप उहड र	१००००	८	बाला रै
३६५००	२४	पाप धवचा रै	३०००	१	मैवचा रै
१०००	१	भीवोता रै	३७५०	१	मडला र
१०००	१	पाप बाहडमरा रै	३०००	३	पाप सीधला रै
१७१२५	२४	चहुवाणो रै	१५०००	६	पाप भाटियो रै
६२५	१	देवडा रै	८०००	११	बालोता रै
१४०००	२७	काबा र	१५२५०	८	बोडा रै
३००	१	मुसदीया र दीवाण	२५००	३	प्रोहितो रै बास
		सुरताराम र	२५००	१	सागड पैसो रै
		सावपुरो	८६२५	८	सीपा रै

३४१६०० २३०

पत्र–१३

३ तफ मेवा रा गाव री विगत –

इसमे केवल गावों के नाम, जागीरदार तथा रेप के आकडे अकित हैं—

प्रारम्भ—

तर्फ मेवा रा गाव १२०   रेप रु० ४५०६७

गाव   रेप   जसोल वगेर

१८   १३०५०

७ गाव जसोल पेडा सात सु रेप रु० ३७५०

(पत्र-१३)

४ परगना साचोर रा गावा री विगत –

साचोर परगने मे पडने वाले विभिन्न गावा की रेख तथा सासण व खालसा गावा की विगत है।

प्रारम्भ—

परगना साचोर रा गाव १८३० रा वरस सु

१३ पालसा रा गाव

१ कसबो साचोर १ गाव गोलासण   आदि।   (पत्र-४)

५ सोजत परगने री फरसत –

वि० स० १८३२ मे सोजत परगने के विभिन्न गावा की रेख, पट्टे के गाव इत्यादि की विगत दी है।

रेप	गाव	आसामी	रेप	गाव	आसामी
२६६००		गाव पालसै			
६६००	२	कसबो सोजत	७००	४	गाव दुधोड
५०००	१	गाव धनावस	५०००	१	गाव बोलावस आदि।

अन्य कृतिया का विवरण इस प्रकार है—

(क) देवस्थानां री विगत –

एक स्थान पर सोजत के देवस्थाना की सूची इस प्रकार है—

४५ त० श्री देवस्थाना रा मीदर ईण मुजब (स० १८२३)

७ श्री ठाकुरजी रा मीदर

१ श्री चुत्रभुजजी रो काट रा मोला री पाळ ऊपर विराज।

१ श्री श्री लिपमीनारायणजी रो जोधपुरीय दरवाजे।

१ श्री नरसिंघजी भापरी ऊपर सेर सु पाव कोस।

१ श्री मूलनाथजी पावटा ऊपर मोचियो मे विराजै ।
१ श्री नागकल्याणदास रा ग्रसतल श्रीजी विराजै नवा वास म ।
६ श्री माताजी रा मीदर
१ श्री सैञल माताजी नवावास म बुरज मे विराजै ।
१ श्री चावडा माताजी सेर सु बारै ग्रधकोस भापर रै ऊपर ।
१ श्री मा० लिपमीजी सीरोलियां रा वडा वास मे पोळ कनै ।
१ श्री सीतला माताजी सीलवाडी म विराज ।
१ श्री वाराई माताजी ग्रवसतिया रा वास म ।
१ श्री राजेस्वरीजी तळाव रा मैल व माहे मीदर १८६० रा वरस ं
करायो छै पुजारी विरधिचद छै ।
१० श्री माहदेवजी रा मीदर
१ श्री माए केसरजी राव मालदेजी रा कराया ।
१ श्री नीलकण्ठजी ग्रायसतीया रा वास कनै ।
१ श्री मादेवजी सीरमालिया रा वडा वास कनै विराजै ।
१ श्री भुतेस्वरजी सतीया री छत्रिया कनै ।
१ श्री केपीलेस्वरजी जालोरी दरवाजै कनै विराजै ।
१ श्री सवेसरजी सीरमालीया रा वडा वास कनै ।
१ श्री ग्रचलेस्वरजी कोटवाळी चातरा विराजै ।
१ श्री सुरंसुरजी पालैळाव री पोळ ऊपर मीदर म विराजै, महाराजै
श्री सूरसिघजी रै करायो देवरो छ ।
१ श्री मलकेस्वरजी राज दरवाजा बार विराजै ।
१ श्री महादेवजी री मीदर भापरी ऊपर ।
६ श्री षेत्रपालजी रा मीदर
१ श्री मेसरीयाजी कैरिया कुवर ऊपर विराजै ।
१ श्री षाचरियाजी मोचिया रा वास म ।
१ श्री गोराजी भडारीया रा वास मे ।
१ श्री सोनाणजी बाघेराव रै ग्रागर मे ।
२ श्री कालाजी, श्री गोराजी जतारणीया दरवाजै बारै विराजै ।
१ श्री हडूमानजी राज दरवाजा बारै विराजै ।
२ श्री गुणेसजी रा मीदर
१ श्री गणेसजी मा० जैतमाल री पोळ कनै विराजै ।

१ श्री गणेसजी री देहरो नवा वास म पातीया रा घर कन ।
६ श्री जैन रा मीदर
१ श्री गोडी पारसनाथजी बाजार मे विराजै ।
१ श्री सभनाथजी नवा उपासरा कनै विराजै ।
१ श्री धरमनाथजी पर उपासरा कनै ।
१ श्री महावीरजी चातरा कनै पोसाल मे विराजै ।
१ श्री विमलदासजी सि० सुरदासजी री पोळ कनै म० दुरगादास री करायी सोभत हाकम थो जद ।
१ श्री ग्रादेसुरजी बसी रा वास म ।
३ जुभार राठोड विरमदेजी री थापना
१ श्री गढ ऊपर मेल म विराजै ।
१ बाजार म, माळा मं तबोलण रा घर म ।
१ भोजगा रा वास कनै नीव मे पुजीजै ।
२ श्री रामदेवजी रा देहरा
१ श्री जालोरी दरवाजा बारै विराजै ।
१ चवड पोळ कनै १८२७ म जटीया करायो ।
२ श्री पाबूजी रा मीदर

४५

(ख) सर मे कुवा बावडिया ग्ररठ निवाण री विगत —
सोजत शहर म स्थित जलाशयो की सूची इस प्रकार है—
१ ग्ररठ पावठो नागोरी दरवाजा कानी अचाल पाणी ।
१ मोण बाव जोधपुरिये दरवाजे लिषमीनारायणजी रा देहरा कनै ।
सु सीरमाली मोवरा बाव कराई ।
१ हाडियो कुवो कुमारा रा वास मे ।
१ नाग कीलाणदास री कुवो नवा वास म ।
१ कुवो वेलियो सुराणा रा वास कनै मसीत नीचे ।
१ जैमल कुवो कलरा रा वास मे ।
१ कुवो १ कमाल सारत कीया मे जैतारणीया दरवाजै ।
४ नोट हुवा ईतरा नीवाण मालिया
१ पावटो १ लापावो, १ पावटी, पुरमीयो

१ अरठ भोजवो, नरसिंघदास रो, पान बावडी
१ १
१ तळाव रामेळाव कोट वनै।
१ रडील कुवो मेरा रा वास म।

(ग) कसबे सोजत र घरा री विगत –

सोजत शहर मे स्थित विभिन्न जातिया के घरा की सख्या दी है, यथा—

५७ भडारिया रा घर

३४ पाल म एक जगे, ८ कोट म, १५ फुटकर

५७

२५ माणोता रा घर

१ माधमलजी वणमलोत री

११ फुटकर कोट म तथा सर मं आदि।

(घ) कसबा रा अरठ माळ हळा री विगत –

विभिन्न कुए जिन पर अरट की मालाएँ लगी हुई थी, उनकी विगत इस प्रकार अंकित है—

अरठ	माळ	हळ	आसामियो
१५	२१	६८	अरठ पारचीया नदी पार घाचियो रे गेहू
३२	३५	०	हुव ती० लाटी हुव जवती रा दाम मडे डोरी मणे अरठ मीठवाणिया चीपा रै तथा फलाला रै।
२०	२५	१४	सीरविआ रै पारचीया तथा मीठवाणीया
४५	५०	०	माळिया र अरठ वाडिया वगैरा तठ गेहू तथा तीजारो, अजमो, ईसबगुळ, तरकारी वगैरे हुवै।
५	०	०	अरठ मुकातीया रै सदामद माफक।
२१	२३	०	अरठ सासणीक डोळिया नीचे।
४	०	०	पसायता रै— १ अरठ रामसागर भडारीया रै १ अरठ सापटो सि० भीवराज लिपमीचदोत रै तथा सि० देवीचद पेमीदासोत रै।

			१ अरठ ढुमावो लाल्जी दीवाण पचोली है तीना रैं।
			१ अरठ सिधि कोट मे तारैं मादेवजी कन ।
			४
१	०	०	अरठ रावी भोजग हुकमी नैं, मारा्ज श्री विजसिंघजी प्रसाद सुद २ पटा सीवाडा सुघा (अरठ की भूमि सहित)
१४३	१५४	८२	

(ङ) सैर तथा कोट रा दरवाजा, बुरजा तथा कागरा वगरे री विगत –

७ दरवाजा

१ जोधपुरीयो दरवाजो २ राज दरवाजो ३ जैतारणीयो दरवाजो

४ नागोरी दरवाजा ५ चावड पोळ ६ राम पोळ

७ जाळोरी दरवाजो

४१ बुरजा नग ईगताळीस

३६ सैर रा कोट री २ भापरी गढ रा नाका सुधि

३५ सफीला पतीस (दीवारें)

३२ सैर रा कोट री ३ आडी भीत सपरी ऊपर

बुरज सु गढ रा नाका सुधि तळाव रामाळाव रैं जतन रै वास्त न एक बारी रापी।

१७९२ कागरा कोट रा री विगत

२६७० काट सु सात दरवाजा नैं बुरजा सुधा ।

१२२ भापरी बुरज सु गढ रा नाका सुदि ।

तलाव रामेळाव रैं उठैं बारी एक रापी सु असवार गाडी निकलै जीसी रापी छ ।

(च) सोजत रैं नव कोट री विगत –

सोजत के पुराने कोट की मरम्मत और नवीन कोट के निर्माण मे जो धन व्यय हुआ उसका ब्योरा दिया गया है । इसके बारे मे लिखा है—

सोजत रो कोट नवो वणीयो तथा आगला री मरम्मत हुई महाराज श्री विजसिंघजी र राज नैं हाकम सि० जोरावर कारकुन, मो० उगरसेण नैं पछ हाकम सि० वरधमान मूलचदोत न, कारकून म सीवसण सामतसिंघोत जोग

समै कोट हुवो स० १८२१ रा वै० वद १४ सू लगाय १८२५ पोस वद ३ सुधी तीण रा रुपीया लागा तिण री विगत—

२७८ –)।। जुना कोट री पदल हुई तीण नै लागा ।

२८१६४ –)।।। सैर काट नवा वणीयो तीण री तजारी काम तथा चूना री काम कोट दोळो दीरायो जिण सुधा लागा ।

(छ) प्रगना सोजत जमा वगैरा लाग तीण री विगत १८८२ रा –

इसमे विभिन्न लागता का उल्लेख हुआ है—

यथा—

आसामिया	रु कुल	सेराठो	जोड	ऊन अघोडी	परथर	पानपाला
सरूपात लगावें पालासणी रा श्रासपत गाव पारो सोढा रो	४६।।)	३५।।।)	६।)	१	१	१
गु साई श्री वीज-भारथीजी रै गाव नीबली मात रो	६२।)	६२।)	०	०	०	■

इस प्रकार की सूची करीब १५० गावा की दी है ।

(ज) सोजत रा वेरा, षेत ईनायत हुवा तीण री विगत १८८२ रा –

इनाम के रूप म दिये गये कुछ कुए एव भू खण्डा का विवरण दिया है—

गाव धनेडो

सि० चद्रभाण रै वेरो १ स० १८३५ रा बरम सु

कसबा रा सहैदे अक्बर अली सेरअली रे वेरो ।

गाव रीसाणीयो जैतावत उरजनसिम रे षेत बीगा २०० (पत्र–१६)

(झ) परगना प्रबतसर री गावा रेषा वार फरसत १८२७ वरस री –

इसमे परबतसर परगने के विभिन्न गावा की रख इत्यादि की जानकारी दी गई है ।

प्रारम्भ—

विगत गावा री — गाव १८६

५४ परबतसर री पटी रा गाव — ५ वाहल रा गाव

४२ बवाल रा गाव — ८५ तोसीणा रा गाव

विगत तफसीलवार

३५००)२ श्री गुसाईजी महाराज र भेंट

२५००)१ गुसाईजी श्री गोकलसाजी र प्रबतसर रो गाव मालावास भेंट १८२७ रा साथ उनाळी।

१०००)१ गुसाईजी श्री दुवरश्वरजी बवाल रो गाव मानपुरीयो स० १८२६ रा वरस री माय सावणु या भेट कीयो।

३५००)२

११५००)३ पालसै गाव रेख साढा ईग्यार हजार री

१००००)१ कसबो प्रबतसर यास नै बारा रो बास।

१५००)१ बहुजी श्री चुडावतजी रो गाव घोळीयो १ गाव कलवा मे वरस १ रा ईजारा रा रु० १०१ देवे रेप

१५०००)३

इसके बाद म विभिन्न खाप के सरदारो इत्यादि को जागीर म मिले गावो की सख्या श्रोर रेख श्रादि का विवरण इसी प्रकार दिया है। (पत्र-४)

८ परगनै जाडोद रा गावा री फरसत १८२५ रा वरस री –

जाडोद परगन के अन्तगत पडने वाले विभिन्न गावा की रेख दी है। जागीरदारो के नाम नही दिये हैं।

यथा—

रेप रा रुपया	गाव	आसामिया	रेप रा रुपया	गाव	आसामिया
२०००)	१	कसबो दौलतपुरो	१५००)	१	कसबो झाडोद
१५००)	१	गाव आसलसर	८०००)	१	गाव वासा
६०००)	१	गाव मोलासर	६०००)	१	गाव डागणी
७०००)	१	गाव थणकोली	६०००)	१	गाव नीबोद

आदि।

इस प्रकार करीब ५८ गावा की रेख की जानकारी दी है जो वि० स० १८२५ मे लागू थी।

९ याददास्त श्री हुजूर मे खालसो तीण रो १८२२ रा –

इसमे जोधपुर, नागोर, मेडता, जालोर, सोजत, जैतारण, फलोदी तथा परवतसर आदि परगनो के खालस गावा की उपज (आय) अंकित है।

यथा—

१०६८०१)५४ =

प्रगना जोधपुर रा गाव री पैदास

१७६६०)२२ तफे हवेली रा २२	२४४००)५ तफे पीपाड रा गाव
२६०००)४ तफे बिलाडा रा ४	६०००)२ तफे बहाला रा गाव
१३७७६)१२ तफे पाली रा गाव १२	१०८६५)१६ तफे दुधाडा रा गाव
६५०) तफे जोसिया तीजो पाति रो हमा	२१००)१ कसबै लवेरा रा गाव
	५००)१ सीवाणो
	१२५०)१ तफे भादराजूण

१०६८०१)५४ (पत्र–१/२)

१० पटायता र गाव री विगत मुकरड (स० १८२२) रा –

इसमे राठोडा भाटिया, चौहाना इत्यादि राजपूत शाखाओ प्रशाखाओ के सरदारा को गाव जागीर मे मिले हुए थे उसकी रेख का विवरण दिया है।

यथा—

५७६८५०)२४२ पाप चापावत रै

२०४१७५)६० आइदानोता र	१५२०७५)४६ बलुथोता रै
७८३२५)३२ बीठलदासोता रै	६६३५०)२३ भोपतोता रै
२१७००)१३ जैतमालोता र	१३७५)२ नरहरदासोता रै
८०००)२ हरीदासोता रै	१०००)२ कीलाणदासोता र
६७५०)५ रायमलोता र	१०७५०)६ पतसीयोता रै

आदि। (पत्र–२)

११ याददास्त जोधपुर राजस्थान र पट रेषा री विगत –

इसमें मारवाड के विभिन्न गावो (खालसा, सासण, वीरान पट्टे के गाव) की उपज एव उनकी रेख इत्यादि की जानकारी दी है।

आसामी वार गावा की पदास री मेळ रेष गाव

१४७५३०६)१४६६

गढ जोधपुर रा गाव १४७५३०६) १४६६

११६७००)५६

गाव पाल्मैं ११६७६०४) ६०१ पट्टे ग

५६७२०)२०५

मासण ९२७२०) १६० जार तलब पीवररएमि

११५२५) ११० वीरान मूना

१४७४३०६)१४६६ (पत्र-१½)

१२ गढ जोधपुर रा २२ परगनों री रेघा री फरसत –

ग्रन्थ के अन्त म एक सारणी दी है जिसमें जोधपुर के २२ परगनो के अन्तर्गत विभिन्न मासणिक एव वीरान तथा पट्टे के रूप में मिले गावो की रेख कितनी थी, अंकित है।

प्रारम्भ—

गढ जोधपुर रा प्रगना २२ री रेषा री फरसत १६०६ रा आसोज वद ७ ने उतारी नैं आगली फरसत १८८४ रा फागण वद १ री लीण र देषा देप रेषा कुल परगना री १५४४५४५)१४८२

गढ जोधपुर रा गाव १४८२ रेष रु० १५४४५४५)

रेष	खातरा नग	पटायत	सासण	वीरान	पटीया रा गाव
३०१७५५	८७१०	२५४६१५	३७६४०	७६०	तफे हवेली रा गाव २८८
२२०६३०	०	२०६५३०	११४००	०	तफे पीपाड रा गाव ८४
४४६५०	०	४२७५०	२२००	०	तफे बीलाडो गाव १५
३३८२५	०	३०६२५	१२००	२०००	तफे बाहालो गाव ६
३१२००	०	३०६००	६००	०	तफे रायठ गाव २०

आदि।

महाराजा बखतसिंह व विजयसिंह के राज्यकाल (वि० स० १८०८-१८५०) में प्रचलित राजस्व सम्बन्धी नियमो इत्यादि के समझने हेतु सामग्री उपयोगी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि अस्पष्ट है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। पत्र हाथ के बने हुए हैं।

२ ख्यात बात सग्रह

१ ख्यात बात सग्रह, २ जो० क० संग्रह ३ १०६, ४ ४१×१५ सेमी०, ५ ५६, ६ १८२०, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात, ६

राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वही मे सकलित कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

(क) फलोदी री ख्यात –

ग्रथ का प्रारम्भ एक श्लोक के बाद फींच ग्राम के सरदारा की सूची से किया गया है।

प्रारम्भ—

"सात बेटा राव लालजी रै हुवा ज्या म यडो हुरीसिंघ ग्राम फीच री धणी हुरीसिंघ १, हठीसिंघ २, फतेहसिंघ ३ पुमाणसिंघ ४, थानसिंघ ५, सिरदारसिंघ ६, जगतसिंघ ७।

फलोदी की ख्यात म लिखी कुछ बातो के उदाहरण प्रस्तुत है—

(१) रावळ अपेराज फलोदी रै घरो दियो जोगीदास रा बेटा हठीसिंघ अनूपसिंघ दोनू फलोदी रा किला माह सू नीसर गया ३२ जणा सू जोगीदास पातावत फलोदी रा गढ आम काम आयो ७१ वप री उम्र।

(२) जोगीदास री बेटी री सगाई रावळ प्रपसिंघ सु कीवी थी सो रावल कैयो—डोलो जसलमर ल्यावो, जोगीदास कहायो—ग्राप बापू आय परणो, रावल आ बात न मानी, विरोध पडिया।

(३) फलोदी रे किला आगे जोगीदास री लोरटी है।

(४) फलोदी लटियाळ री वाडी न नीलकठ रा वाडी अमावस रै दिन वावीजै दोनू नारता।

(५) महाकाळी फलोदी पजडा हूटे बिराजिया जद लटियाळ नाम दिराणो, लटियाळ री सेवा फलोदी कूम कर है।

(६) जाडेचा हमीर रा बेटा तीन राव पगार १, साहिब २, राहिय ३। जाम रावळ रै नै राव पगार रै बडा जग हुआ। जैठू इणानू मार नै हाला हर गाम चार हजार दबाया।

(७) त्यागराज विस्नू री मदिर चौलेद्र करायो, एक सौ आठ मदिर विस्नू रा, एक सो आठ सिव रा, एक रात मे देव कृपा सू चौलेद्र कराया द्रविडे ॥ १ ॥

(पत्र-५)

(ख) कृस्न चन्द्रिका अलकार रो ग्रन्थ (बाकीदास कृत)

प्रारम्भ दूहा—

जूलत प्रताप दिनेस जिमे वदे वाम अवाम
सत्रिजै होऊ जलसु जसा राज तणैं नृपराम (२२ दोहे)

(ग) सिकन्दर नामा री उक्तां –

इसमे सिकन्दर महान् की मुख्य उपलब्धियो का वृतात है।

प्रारम्भ—

धन आप जहाँ आवे तहाँ धणी नु बस्तावे ॥ १ ॥

इसी बाग मे किसो वृक्ष है जिण रै बागवान री कुहाडी नही लागी ॥१॥

(घ) कुरेसी मुसलमानों री ख्यात –

इसमे मुसलमानो की प्रसिद्ध शाखा कुरेसी की जानकारी दी है तथा इनके कुछ विशिष्ट व्यक्तियो का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

'ख्यात—सदीकी हासमी, फरकी ए तीना जात कुरेसिया सपा री है मजर री औलाद रा कुरेसी सेपदे अरस मुलक म रेण वाळा कुरेसी ताजीक तुरकए दोया जात मुगला री है। ।

(ङ) चादा वीरमदे रो हाल –

एक स्थान पर नागोर के नवाब तथा वीरमदे के पुत्र चादा[1] मेडतिया के मारे जाने की घटना इस प्रकार दी है—

चादा वीरमदेओत रै पटे आसोप थी, सो नागोर बुलाया तरै गया, नवाब बुरज माथै बठो थो सो उपरवाडे नीसरणी चादोजी नै बुरज माथे लिया, बेली हेठे उभा रहगा। चादाजी ऊचा गया तरै नवाब र पिजमतगार तरवार चलाई सो चादोजी रौ माथो कट पडियो निसरणी ऊची पाच लीवी नीसरणी रा उपरला पगोतिया माथै चादाजी था सो सिर कटियो अर निसरणी ऊची पाची तर नवाब री पलघट माथै चादा रो हाथ पडियो सो नवाब नै चादो दो सामे नीचा आय पडिया जॅडे पडते पडते तीन कटारी नवाब रै चादे वाही जीसू नवाब मर गयौ।

आ वात सुण अकबर सिपाहिया नु कैयो—पडबूजा रै तीन कटारी लगावो बेरा (कुए) मे पडता, पण किण ही सू लागी नही । (पत्र–६)

(च) किसनगढ री ख्यात –

इसमे मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र व किशनगढ के सस्थापक किशनसिंह की मुख्य उपलब्धियो व उनके सतति का विवरण दिया है।

---

१ इसके वशज चन्दावत मेडतिया कहलाये।

प्रारम्भ—

माटा राजा उदयसिंघजी रा बेटा श्री किसनसिंघजी कछवाहा रा भाणेज राणी मनरगदे रै पेट रा १६३६ रा जेठ वद रो जनम किसनसिंह रो ।

राठौड किसनसिंह द्वारा महाराजा सूरसिंह के प्रधानमंत्री गोयन्दास भाटी की हत्या का उल्लेख इस प्रकार अंकित है—

सूरसिंघजी र डेरा भेळो गोयददास रो डेरो थो तिण उपर पाछा रात रा किसनसिंहजी आया सु गोयददास भाटी नै मारियो स० १६७१ जेठ वद ८ दिन उगता ।

तत्पश्चात् सूरसिंह के सरदारो द्वारा किशनसिंह भी मारे गये। भारमल किशनगढ की गद्दी पर बैठे। उसके पुत्र रूपसिंह ने रूपनगर बसाया। रूपसिंह को बादशाह की ओर से मिले किशनगढ व अजमेर के जागीर के गावो की सूची दी है।

इस प्रकार किशनगढ के शासक पृथ्वीसिंह तक संक्षिप्त विवरण दिया है। पीढ़िया इस प्रकार है—

१ उदैसिंह	२ किशनसिंह	३ भारमल	४ रूपसिंह
५ मानसिंह	६ राजसिंह	७ बहादुरसिंह	८ बीरदसिंह
९ प्रतापसिंह	१० कल्याणसिंह	११ मोहकमसिंह	१२ पृथ्वीसिंह

(पत्र—१३)

इसके अतिरिक्त व्युत्पत्ति सहित शब्द, क्रियाचक्र शब्द, कवित्त जोधाण रा, आदि कृतियां लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ किशनगढ के इतिहास के लिए विशेष उपयोगी है।

ख्यात एक ही व्यक्ति द्वारा लिखी गई है। लिखावट भारथदानजी की प्रतीत होती है। कुछ पत्र छोड कर किशनगढ की ख्यात किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। लिपि साधारण है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

३ फुटकर बातों रौ संग्रह

१ फुटकर बातो रौ संग्रह, २ जा० क० संग्रह ३ १४७, ४ ६६ × १६ सेमी०, ५ २०, ६ एकसी नही, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० एक दूसरे के ऊपर फोल्ड किये इन पत्रो मे अनेक फुटकर नोट के रूप में लिखी ऐतिहासिक बातो के अतिरिक्त कुछ पत्रों की प्रतिलिपिया भी दी हैं। राठौड दुर्गादास तथा सोनग द्वारा मीया फरासत को वि० स० १७३७ मे लिखे एक पत्र की प्रतिलिपि यहाँ प्रस्तुत है—

"स्वरूप श्री जोधपुर गढ़ महा दुरंग मोथा श्री फरमानपाती जाग्य लसकर था राज श्री दुरगादासजी श्री सोनगजी लिपावतु जुहार वाचजो, अठारा समाचार श्री महाराजाजी र प्रताप सूं भला है, राज रा सदा भला चाहीजै, महाराज धणी थात छै राज उपरात कोई बात न है, राज सूं बासूं मनवार लिपी राज सदा दया रापी छा जिण था विशेष रापजो, अपरंच राज नूं त्वाव तहवरखां श्री पातसाहजी रै हुकम सूं श्री महाराज रै बटा नूं मनसब देण रै वासते बुलाया छै सु राज कबूल कीजो, राज चलाया नै धरती री फिसाद मटा नै आ राज नु यह मोह नूं बटा दिपावा तो राज वहजो ठिकाणा पाछा आय हाजर हुसी, वळै कागळ समाचार सम देजो, आसाज सुद ४ गुरुवार सवत १७३७ रा।"

उदाहरण स्वरूप कुछ ऐतिहासिक बातें प्रस्तुत हैं—

(१) विजैसिंघजी मडतिया वीरमदे विमलसिंघ नै बुलाय हाथी २ दिया, सिरपाव दिया, तरवारा बधाई पटा आपरा नाम रा लिप दिया।

(२) १७२८ जसवतसिंघ नै गुजरात रो सुबो हुओ तरै पटण वीरगाम रा परगना हजूर न दिया, हसार रा परगना तागीर किया पातसाह २ वष रो गुजरात रौ सूबा रयो ।

(३) फरुखसेर अजन नै गुजरात दीवी जद म्हारी विजयराज सूब रयो।

(३) म्हमदसा अहमदाबाद अजन नै दीवी जद रघुनाथ भडारा रो बटो अनोपसिंघ सूब रेयो।

(४) पडियारा मना सू रामपाल मडावर लियो थो पण छुट गयो।

(६) म्हमदसा अभसिंघजी न गुजरात दीवी जद म्हारी रतनसी सूबे रयो।

(७) विराज म्हारी—अभकरण दुग्गदासोत ससार नही जरै सिणगार चौकी म्हारी आवणी हुओ है।

(८) भाटी केल्हण जलाल पोपू मुल्तान रा पातसाह रा हुकम सू नागोर माथे आया, चूंडोजी सामा जाय जग कर माराणा, नागोर री राव कानो हुवो।

(९) नागोर सू कोस २३ रिणमलजी री मामो राणो पुन्यपाल सापला जागलू री धणी, जिण माथ कानो गयो, पुनपाल माराणो।

(१०) सवत १५१५ आसोज नै फलोधी वसी।

इसमे सकलित अधिकाश बातें बाकीदास की ख्यात से ली गई प्रतीत होती है।

अधिकाश पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गये है।

४ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) री ख्यात

१ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) री ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३ ६०, ४ ६६×१७ समी०, ५ ६० ६ ४५-८८, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अपात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर के शासक महाराजा जसवतसिंह द्वितीय के राज्यकाल की घटनाए लिपिबद्ध ह जो उक्त महाराजा की दिनचर्या को व्यक्त करती है।
प्रारम्भ—

॥ श्री हरि ॥

स० १९३६ री हकीकत

सावण आसाढ री मह घणो हमार पवन बाज धान री भाव गहू बाजरी मोठ आदि।

अनेक पत्रो की प्रतिलिपियाँ तथा मुरारदान के राजकीय कार्यों का वत्तात भी दिया है। ग्रथ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

यह ग्रथ अनेक व्यक्तियो क हाथ से लिखा गया है। बीच म अनेक पत्र खाली पड ह।

५ राठौड राजाओं री ख्यात

१ राठोड राजाओ री ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३, १५४, ४ ६५ ५×२५ ५ सेमी०, ५ १६२, ६ ३० ३२ ७ १९वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अपात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ख्यात मे मारवाड के राठौड राजाओ एव सरदारो का वृत्तात है। इसे हम निम्नलिखित भागो म बाट सकते हैं—

(अ) राव जोधा सू गागा तक री ख्यात –

ग्रथ क प्रारम्भ मे जोधपुर के शासक राव जोधा से राव गागा तक के विभिन्न राठौड राजाओ का सक्षिप्त विवरण दिया है।

(क) राव जोधा का वृत्तात –
प्रारम्भ—

"राव जोधा बडो प्रापड सिध गई भोम रो वाहरू हुवो, असरय प्रवाडा किया वर वाहर हुओ, जत वादी हुओ। राव राणगदे री दोहीतरो कोडमदे भटियाणी र पेट रो। स० १५०० जेठ तथा असाढ मे राव रिडमल नू चीतौड रा गढ उपर राणे कूभे चूक कराय मारियो आदि।

प्रारम्भ में राव जोधा के विवे का वृत्तात है तत्पश्चात् उसके द्वारा मंडोर पर अधिकार किये जाने का उल्लेख है विवरण क्रम इस प्रकार है।

(१) राव जोधा द्वारा बहलोलखा से युद्ध कर उसे पराजित करने का उल्लेख इस प्रकार है—

राव जोध रे उपर बहलोलखान आयो जोधो वेढ कीवी, पातसाह बहलोलखान हारियो राव जोधा वेढ जीती तिण साख री दुहो—

ए दीहा जोध तणा, ए कीज परियाण।
दळ भगा दिल्ली तणा, व गजिस सुरताण।

(२) राव जोधो का राणा कूभा से वि० स० १५१२ में वैर समाप्त होने का उल्लेख है।

(३) राव जोधा द्वारा लड़े विभिन्न युद्धों का सक्षिप्त विवरण दिया है।

(४) तत्पश्चात उसके द्वारा चारण, भाटो, ब्राह्मणो इत्यादि को सासण के रूप में दिये गये गावो की विगत दी है। यथा—

"गाम थोभ तणे ओयसा सर सू कोस १४ रेप रु० १०००) री प्रायत दामा रा बेटा उदा दमावत नू दिया।'

' ग्राम सेवाऊओ री वासणी सैर सू कोस ८ रेप रु० २००) री तफ बहळवा प्रोयत भवण रामावत सैणाउत नै दियो, हमै किसनो लिखावत वसतो हिमावत छ।"

(५) अन्त में जोधा के रानियां, कुवर कुंवरियो की विगत दी है साथ में उनका सक्षिप्त परिचय भी दिया है। एक स्थान पर जैसा भाटी जैसलमेर से जोधपुर किस प्रसग से आये अंकित है—

"राणी लिखमी भाटी जैसा री बेटी सापला हरभम री दोहीती, सूजा री राणी थी इण रै प्रसग सू भाटी जैसा जोधपुर र दरबार आया ।"

(ख) राव सूजा का वृत्तात —

राव सूजे का जन्म (वि० स० १४९९ भादवा वद ८ गुरुवार) राज्याभिषेक (वि० स० १५४८) और मृत्यु सवत (वि० स० १५७२ कार्तिक वदी ९) आदि दिये हैं। इसके बाद राव बीका और वरसिंह जोधावत का वृत्तात दिया है, फिर राव सूजा के पुत्रों की सूची दी है।

(ग) करमसी को खीवसर मिलने का उल्लेख —

' करमसी री बहन भागा बाई नागोर धणी खान नु परणाई तद नागोरी खान करमसी नै खीवसर गाम, खीवसर आसोप जोधपुर लार घलाणा सो अजस छै।"

(घ) उदा सूजावत का वृत्तात –

राव सूजा के पुत्र उदा जिसके वशज उदावत राठौड कहलाये, सक्षिप्त विवरण दिया है ।

"उदा सूजावत सूजै नू जैतारण दीवी तिण सू उदावत जतारणिया कहीजै छै ।

(ङ) नापा सूजावत का वृत्तात –

राव सूजा के पुत्र नापा का सक्षिप्त विवरण है जिसे खेरवा ग्राम मिला था ।

' नापा सूजावत रै परवो पटा थो, नापा री बेटी पदमा बाई रावळ मालदे (जैसलमेर) परणियो थो तिण री बेटा हरराज अर भगवान ए नाप रा दोहीतरा ।"

(च) नरा सूजावत का वत्तात –

राव सूजा के पुत्र नरा के बारे मे लिखा है—

'नरा नु सूजे फलोदी दी तठै नरो गयो पिण नरा री मन फलोदी टिके नही पोकरण जगमाल मालावत री पोता बरजागात नू हूतो सा सूजाजी रै कहण सू पोकरण नरा लीवी ।

(छ) राव गागा का वत्तात –

प्रारम्भ म गागा के जन्म (वि० स० १५४० वमाख सुदी ११), राज्याभिषक (१५७२ मागशीष सुदी ३) तथा मृत्यु सवत् (१५८८ ज्येष्ठ सुदी ५) दिये हैं ।
प्रारम्भ—

"राव गागो वाघावत वडो प्रापडसिघ रजपूत थो अर दातार जू झार वडो प्रतापीक ।"

गुजरात के बादशाह मुज्जफरसाह से गागा और राणा सागा द्वारा ईडर हस्तगत करन का उल्लेख इस प्रकार है—

गुजरात पातसाह मुजफरसाह राठौड कना सू ईडर ले लीवी जद राणा सागो वागडिया डूगरसी वालावत नू जाधपुर गागाजी कन मिळियाँ सो मास ६ जोधपुर रहि नै डूगरसी राव गागा नू ले गयो तरै राणा सागा न गागा दानू भेळा ईडर छोडावण सारु गया सा ग्रहमदनगर सू वेढा हुई गागा सागा री फतै हुई ।

गागा गोत गुम्राळा ईडर ऊग्रहिया तणै
सोह दो सुपपाल वडो प्रवाडो वाघउत ।।

गागा द्वारा सोजत पर आक्रमण करने का उल्लेख है—

'स० १५८८ राव ने कवर मालदे फौज ले साजत मार्थ गया मुहतो रायमल वजार मे सामो आय वाज नैं काम आयो तठै रायमल री छत्री है, वीरमदे नूं ढालिया सूधो उपाड परव मेल आया ।

आगे राव बाघा के पुत्र वीरमदे और सेतसी का बहुत संक्षेप में वर्णन किया है तत्पश्चात् जोधा और बाघा के पुत्रों की नामावली दी है।

आ) राठौडां री वंशावली –

आदि नारायण से मारवाड़ के संस्थापक राव सीहा तक वंशावली देकर महाराजा गजसिंह तक विभिन्न राठौड राजाओं का वृत्तांत दिया है।

(क) राव सीहा का वृत्तांत –

वंशावली में सीहा का १४४वां नाम है। सीहा की द्वारिका यात्रा, ब्राह्मणों द्वारा आग्रह किये जाने पर सीहा के मारवाड़ में आने और भीनमाल मुसलमानों से हस्तगत करने जिसमें शत्रु पक्ष के २४ हजार व्यक्ति मारे जाने तथा अनेक युद्ध करने इत्यादि बातों का वृत्तांत है।

(ख) आस्थान का वृत्तांत –

इसमें मुख्य रूप से आस्थान द्वारा भीलों से ईडर हस्तगत करने का विवरण दिया है जो इस प्रकार लिपिबद्ध है—

'ईडर रो राजा भील छै, सु आदु कामदार नागर ब्राह्मण छै। बोहरा पिण छ। पिण ठकुराई री मुदार सारी नागरा माथ छै। सो कितराक दिना पूठी (बाद में) नागरा रै विवाह मंडियो तरै भील सगळा ही आया नागरा री बहू बेटी दीठी तरै मन मे पाप आण नागरा नूं क्यो—थाहरी बेटी महान परणाओ नहीं तो म्हे जोरावरी सू परणसा पछै नागरा आय आसथानजी न आ बात कही आसथानजी केयो—इडर म्हाने दिरावजो आसथानजी केयो—आपरं कनैं सडो बधाय नै रापजो अर भीलें नैं नाळेर मेल दीजो, कितरीक डोलिया करावजो, भूजाई करावजो, महुडा रा दारू कढावजो लगन रैं पहले दिन म्हे पिण आवा छा पछै डोलिया म बेस राठौड गढ ऊपर गया तरवार वजाई इण ताव जुदा जुदा भील मारिया ।"

(ग) धूहड़ का वृत्तांत –

इसमें राव धूहड़ द्वारा कर्नाटक से चक्रेश्वरी की स्वर्ण मूर्ति लाने का उल्लेख है, फिर उसके पुत्रों की विगत दी है।

(घ) रायपाल का वृत्तांत –

रायपाल ने यादववंशी राजपूत मागा का सर्वस्व धन दे अपना भिक्षुक बनाया, मागा का बेटा चद हुआ जिसके वशज राहडिया बारट कहलाये इत्यादि घटनाएं अंकित है।

10979
3|4|92

(ङ) राव धनपाल सूं महाराजा गजसिंह का वृत्तांत –

इसमें राव धनपाल जालणसी छाडा तीडा सलखा, वीरम चूडा रिडमल, उदयसिंह, जोधा बीका सातल सूजा, मालदेव चद्रसेन, सूरसिंह और गजसिंह का वृत्तांत है जिसमे इनकी जीवन घटनाओं और सतति आदि का हाल दिया है जो अन्य ख्यातों, बातों से मिलता जुलता है। कुछ राजाओं द्वारा दानस्वरूप चारणों एव ब्राह्मणों को गाव आदि सासण में दिये उसका ब्यौरा भी दिया है। राठौड अमरसिंह नरा सूजावत और रायसिंह इत्यादि कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का वृत्तांत अलग मे दिया है जो उनके इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

राठौड अमरसिंह के पुत्र रायसिंह का वृत्तांत ख्यात की भाषा में इस प्रकार लिपिबद्ध है—

"सवत १६६० आसोज सुद १० राव रायसिंह अमरसिंघोत रो जोधपुर माहे जन्म श्री भागेज कछवाहा रो   स० १७०२ राव रायसिंह पातसाह रै चाकर रयो तरै पातसाह ४ पटी पट दीधी—

१ रण, २ धायल, ३ कोलू, ४ उदपुर पछ सवत १७१५ नागोर पायौ ब्यार लाख माहे   ।

रायसिंघ आछी तरवार बजाई सूजो भागो औरगजेब री फतै हुई तर औरगजेब रायसिंघ नै इतरौ दियो हाथी १, हथणी १ मोत्या री माळ १ गुदगुदी १, घाडो १, सिरपाव १   ।

औरग रै न दारा र अजमेर लडाई हुई तरै रायसिंह सपरी हुओ, दारा भागो औरग फतै हुई पछै साढी चार हजार रो मनसब पायो राव सू राजा हुआ ।

पछ १७२७ फागण वद ७ नागोर सू बहादरखा री तावीन मे दिषण नू चालिया मामला पाच सात दिषणियो सू हुआ तठै फतै हुई।

पछ असाढ वद १२ वार सोम घडी १६ पल २० रायसिंह काळ कीधा, कुसो सो भाग मुहणोता नै आयो   ।"

वशावली का अंतिम भाग—

"बहू भटियाणी लाछळदे रावळ कलै री बेटी रामकवर बाई स० १६६८

जैसलमेर रावल भीव ब्याव कियो गोयददास जान गयो थो, १७०६ पोकरण देहुरे आगली मडप करायो पाछ स० १७२४ मथुरा राम कह्यो।" (पत्र-६१

(ई) राव मालदेव आदि जोधपुर राजाओं रै परिवार री विगत –

वंशावली के बाद राव मालदेव और राव चांपा इत्यादि जोधपुर शासकों के वंशजों का विवरण दिया है, जिनमे से कुछ सरदारों के नाम उद्धृत हैं—

१ जैतसिंह उदैसिंघोत	२ किसनसिंह उदैसिंघोत
३ जगमाल किसनसिंघोत	४ भारमल किसनसिंघोत
५ रूपसिंह भारमलोत	६ हरीसिंह किसनसिंघ
७ जैतमल किसनसिंघोत	८ जसवंत उदैसिंघोत
९ केसोदास उदैसिंघोत	१० राम मालदेवोत
११ करन रामोत	१२ भाव करणोत
१३ राव कला रामोत	१४ जसत कलावत
१५ जगनाथ जसवतोत	१६ गोपीनाथ जसवतोत
१७ बिसनदास जसवतोत	१८ पूरणमल रामोत
१९ भोपत रामोत	२० नारायणदास रामोत
२१ माधोसिंह अमरावत	२२ महेसदास रामोत
२३ सावलदास महेसोत	२४ अखैराज महेसदासोत
२५ सुजाणसिंह अखैराजोत	२६ लखमण महेसदासोत
२७ सकतसिंह महेसदासोत	२८ राव रायसिंह चद्रसेणोत
२९ उग्रसेन चद्रसेनोत	३० करमसेन उग्रसेनोत
३१ रामसिंह करमसेनोत	३२ कुशलसिंह करमसेनोत
३३ कान्हा उग्रसेनोत	३४ गोइददास कल्याणदासोत
३५ रायमल मालदेवोत	३६ कल्याणदास रायमलोत
३७ ईसरदास कल्याणदासोत	३८ नरहरदास ईसरदासोत
३९ बिहारीदास ईसरदासोत	४० नरसिंहदास कल्याणदासोत
४१ केसरीसिंह नरसिंहदासोत	४२ माधोदास कल्याणदासोत
४३ कुसलसिंह माधोदासोत	४४ प्रतापसी रायमलोत
४५ जसतूत प्रतापसो	४६ देईदास बलिभद्रोत
४७ अखैराज कान्होत	४८ गोपालदास कान्होत
४९ सुरताण रतनसिंघोत	५० सादूल रतनसिंघोत
५१ बखरो सादूलोत	५२ भोजराज मालदेवोत

५३ सावळदास भोजराजोत	५४ स्यामसिंह करमसिंघोत
५५ ईसरदास भोजराजोत	५६ विक्रमादित्य मालदेवोत
५७ अचळदास विक्रमादित्य का	५८ महेस मालदेवोत
५९ रामदास महसोत	६० तिलोकसी मालदेवोत
६१ कल्याणदास तिलोकसी	६२ पृथ्वीराज मालदेवोत
६३ गोपालदास आसदेवोत	६४ डूगरसी मालदेवोत
६५ लिखमीदास मालदेवोत	६६ रूपसी मालदेवोत
६७ नरहरदास मानसिंघोत	६८ राघोदास नरहरदासोत
६९ जसवत राघोदासोत	७० राजसिंह जसवतोत
७१ वीरमदे बाघावत	७२ प्रतापसी बाघावत
७३ कैसोदास कलावत	७४ भोपत कलावत
७५ सीधण बाघावत	आदि।

इन राठौड सरदारो ने जोधपुर राजघराने अथवा शाही सेवाओ मे भाग लिया उसका विशेष रूप से विवरण दिया है। एक स्थान पर मोटा राजा उदयसिंह द्वारा अपनी पुत्री की शादी शाहजादे सलीम के साथ करने पर रायमल के पुत्र कल्याणदास द्वारा विरोध प्रकट करने का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

"लाहोर पातसाही चाकरी म १६४४ मोटे राजा मानी बाई नू साहजादा साह सलेम नू परणाई तरै कल्याणदास वकियो—कैयो तुरका नू बन बेटी क्यू परणाओ छो हूँ सायजादा नू नै मोटाराजा नू मार नाप सू, पछ ऐ समाचार पातसाह नू मोटे राजा कैया ।" (पत्र–२६)

(ई) चापावता री विगत –

इसमे चापावत राठौडो के मूल पुरुष चापा और उसके वशजो का सक्षिप्त विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

१ चापो—चापा ने राव जोधे प्रगने जोधपुर रो गाव कापरडो नै वणाड पटे दीया था। चापो उमर २० री उमर म सीधला सू जग हुवो जठे काम आयो सिंधल राठौड है आसथानजी रै औलाद रा ।"

उदाहरण स्वरूप बखतावरसिंह चापावत का विवरण प्रस्तुत है—

"बषतावरसिंह महाराजा मानसिंहजी रै जालोर जोधपुर रा घेरा री बदगी पोहोतो जैपुर घेरो लगायो तिण सू महाराज मानसिंहजी १८६५ श्रावण सुद ११ परधानगी दीवी नै बधारो दियो ।"

अतिम भाग—

१७—मगलसिघ पाहाकरण मोजूद है। राठोडा री खापा मे चापावतों रा ग्रवल दरजो है। गिरै दरवार हुवै नरै महाराज री निजर निछरावळ पता चापावता री हुवै।" (पत्र-२)

जोधपुर के विभिन्न राठोड राजाओ और सरदारा के इतिहास अध्ययन हेतु ग्रथ उपयोगी है।

यह वहदाकार ग्रथ समय-समय पर अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है लिखावट साधारण है। ग्र थ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है, पत्र हाथ के बने प्रतीत होते है। बीच-बीच म अनेक पत्र रिक्त पडे है।

६ ख्यात वात सग्रह

१ ख्यात बात सग्रह २ जा० क० सग्रह, ३ १५६, ४ २१५×२१ समी० ५ २७२, ६ ११-१४, ७ १६वी शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० यह विविध एतिहासिक वाता, पीढिया आदि का समृद्ध सग्रह है जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजपूत शासको व सरदारो के अतिरिक्त मराठा साम ता इत्यादि के ऐतिहासिक तथा काल्पनिक बखान से है। घटनाये क्रमबद्ध नही है। सामा य रूप से यह माना जाता है, "इण वातो मे साच थुडा ने झूठ घणा" ग्रथ के प्रारम्भ मे हास्य सम्बन्धी कुछ दोहे अकित है।

श्री गणेशायनम ॥ अथ दूहा लिख्यते ॥
सगा सगा मिळिया सही, दुरस्त नैमलाह
जाणक कु भठहथिया, ठाना सू ठालाह ॥

ऐतिहासिक कृतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ जालोर रा धणी सोनगरा चहुवाणो री पीढिया –

जालोर के शासक सोनगरा चौहाना की वशावली इस प्रकार अकित है—

१ काह्डद	२, मूछालो मालदे	३ सालो
४ बीकमसी	५ सगरामसिघ	६ पातो
७ वगडो वरजाग	८ जयसिघ	९ नीबा
१० राणो	११ भैरूरण	१२ सामतसी
१३ वलू	१४ जुगतसिघ	१५ दवीदान
१६ मालदान	१७ वीरमद	१८ आणदसिंघ

१९ पदमसिघ हमै चोतलवाणा धणी है।

इस वंशावली के बाद सोनगरा शासकों के बारे में कुछ घटनाएँ दी है जो इस प्रकार है—

"मूछाळा मालदे सु जालोर छूटी   बेटौ सालो साचोर रा धणी रा मालमा परमार ज्यारै परणिया तरै परमारो साचोर रो गाव सेवाडो साला न दियौ। माला रो बेटा वीकमसी कवणद मामा नै मार साचार लीधी सो जुगतसिघ सु छूटी। महाराज अजीतसिंहजी चहुवाणा कना सु साचोर लीधी नै बयालीस (४२) गामा सु साचोर रा परगना रो गाव चीतलवाणो चहुवाणो नै दीधौ।

साला रौ दूजो बेटो हापो सूराचद राणुवा रो भाणेज हुतौ तिण आपरा मामा राणुवा मार सुराचद लीधो।"

जालोर इत्यादि के गाव सासण के रूप म चारणा का दन का उल्लेख है। यथा—

"जालोर रा गाव नरील पडीया सारग नै विहारिया सासण दियौ।

'साचोर रो धणी राव वरजाग मइया सौडा न गाम गामैई सासण दियौ।'

लाळस पचायण जूढिया वाळा न गाव वलू गाम आजोसण सासण दियौ।"

'अ साचोर रा सासण री ख्यात लूणीया हण रै सीमण जगमालजी चीतलवाणा री पीढियो सहित मडाई छ।

इसके बाद कुछ अन्य सासण म दिये जाने वाले गावा का उल्लेख है।

(पत्र-८)

२ परगनों री विगत —

वि० स० १७१८ की जोधपुर मेडता परगन के विभिन्न गावा की उपज का ब्यौरा दिया है तथा महाराजा जसवतसिंह के कुछ परगना व गाव जागीर म मिल उसकी विगत दी है।   (पत्र-४)

३ मडलक गुजरात र पातसाह री बेटी री बात —

लिपिकार ने लिखा है कि यह वार्ता बारट नरहरदास लखावत ने कही।

प्रारम्भ—

'अहमदाबाद र पातसाह री बेटी थटा रा पातसाह नु परणाई थी सा मेहवा र तलवाडै आय उनरी थी   ।"

वार्ता मे लिखा है कि अहमदाबाद के बादशाह ने अपनी पुत्री की शादी थट्टा के बादशाह से की थी, नववधु माग मे जाते समय तिल्वाडे आ ठहरी जगमाल के पुत्र मडलीक उसे उठा अपने घर ले आया। लोगो के फटकारने पर मडलीक ने अलग घर म रखने की व्यवस्था की, फिर वहा से निकाल दी गई गई और वह अपने

पिता के पास पहुँची और वहाँ जहर खाकर मर गई। गुजरात के बादशाह ने विशाल सेना सहित महलीच पर चढ़ाई की महलीच की चाकरी में अरडकमल चूड़ावत रहता था उसने तुरकों का सामना किया और लखे भाटी द्वारा अरडकमल मारा गया, महलीच बादशाह के हाथ नहीं आया, फिर धोखे से महलीच को पकड़कर मरवा दिया। (पत्र-२)

४ वरसिंघ जोधावत की वार्ता –

इस वार्ता में दिया है कि मांडवा के बादशाह का उमराव मलूखां अजमेर के सूबे में रहता था। वह मेड़ते वरसिंह जोधावत पर आक्रमण करने आया तो वरसिंह पीपाड़ फिर कोसाणे आया मलूखां भी पीछे आया यहाँ उसकी लड़ाई सातल तथा सूजा से हुई तथा वह हार कर चला गया फिर वरसिंघ को मलूखां ने धोखे से मरवाया। यह वार्ता नरहरदास ने भडारिया की पुस्तक में से लिखवाई।

५ सींधलां री पीढ़ियाँ –

रायपुर भाद्राजण और कुहेला के सींधल राठौड़ों की पीढ़ियाँ इस प्रकार दी है—

रायपुर

१ अस्थान	२ जापसा	३ सींधल	४ उदो	५ काडू	६ वाहड़
७ सतो	८ लापण	९ आसल	१० नैणा	११ करन	१२ वीरम
१३ रायमल	१४ पमार	१५ सीहो	१६ सूजो	१७ वीदो	१८ वाघ

भाद्राजण

१ नैणो	२ करन	३ अरजन	४ नारमल
५ सतो	६ रामो	७ वीरो	८ बीसल
९ तजमन	१० तोगो	११ माडण	

कुहेला

१ नणो	२ करन	३ वीरम	४ सीधण
५ भाडो	६ जैतो	७ मालो	८ रायसिंह
९ जसवंत	१० सुरताण		

६ ईसरदास कल्याणदास रो ऐवाल –

इसमें मालदेव के वंशज ईसरदास को बादशाह की ओर से कुछ परगने मिलने का उल्लेख इस प्रकार है—

"राव मालदे रो बेटो रायमल रायमल रा कल्याणदास, ईसरमल, कल्याण दासोत रै पातसाही तरफ सू ए परगना हुता—

१ भिणाय २ केकड़ी ३ माडल
४ भगवतगढ ५ तोडा (अमल नही हुवो)

दिपण परगना श्री पातसाहजी ईसरदास नै दिया—

१ मिलकापुर २ वडनरो ३ पाबूजी पातर (पत्र-१/२)

७ नणसी का वृत्तात –

इसमे नैणसी द्वारा लगान कम करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"सवत १७१४ रा जेठ वद १ मुहणोत नैणसी नै देस री पिजमन सूपी तरै लागत छोडी—मोटा गामा वरसालू, उन्हालू दासू साप रा १७ लागता, सो सवत १७१५ सू मोटा गाम कन रु० १० ने छोटा गाम कन रु० ५ लणा ठहराया "

८ पारकर सोढा री जुनी बात –

यह वार्ता नैणसी की ख्यात[1] से मिलती जुलती है ।

प्रारम्भ—

"पारकर छोटी सी भाखरी पर सोढा चवण री करायोडो गढ छै तेरै साढा रा घर छै गढ माहे सपरी ईमारत है एक बावडी है सहर है भाखरी रै हटे वस छै ।"

पारकर के आसपास के गावा की सूची दी है जिसमे पारकर से उसकी दूरी भी लिखी है । तत्पश्चात पारकर साढा की वशावली दी है जो अपूर्ण है ।

१ राणा वैरमल २ राणो भाखर ३ राणो गागा
४ राणो अपौ ५, राणो माणकराव ५ राणा देयो

आदि ।

पारकर के आसपास के पहाडो, नदियो तथा कुछ गावा मे होने वाली फसलो का विवरण दिया है । बाडमेर से दूर २५ कोस पर एक छोहटण नगर का उल्लेख है जिसके निचे २३५ गावा का होना लिखा है । इस पर पहले चौहाना का अधिकार था । जगमाल के पुत्र मडनक ने चौहाना से हस्तगत किया । यह वत्तात नैणसी की ख्यात मे नही दिया है । (पत्र–२)

९ सिरोही री ख्यात –

इसमे सिरोही के देवडा शासक रायसिंह, दूदा, उदयसिंह, मानसिंह, राव सुरताण, राजसिंह, अखेराज इत्यादि का वृत्तात दिया है ।

---

१ ख्यात भाग प्रथम, पृ० ३६८ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर ।

प्रारम्भ—

"राव रायसिंह असेगजात भीनमाल माराणा, दवडा पृथ्वीराज र हाथ रो तिण सू रायसिंह मूग्रो, रायसिंघ र बेटो उदैसिंघ वरस २ रो थो, रायसिंह मारोणा तरै रायसिंह रजपूतो न कैयो—म्हारा बेटा नान्हा है, वरतो इण सू रपवालोज नहीं सो थे टीको म्हारा भाई दूदा नै देजो ।

इसमें वर्णित है कि दूदा जल्दी ही मर गया उसके बाद उदयसिंह गद्दी पर बैठा और दूदा के पुत्र मानसिंह को लोहियाणा की जागीर दे दी, फिर उदयसिंह ने मानसिंह से लोहियाणा छीन लिया तो मानसिंह उदयपुर राणा के यहाँ चला गया। शीतला रोग से उदयसिंह का देहान्त होने पर मानसिंह सिरोही का शासक बना। यहाँ इतना ही विवरण दिया है फिर अन्य कृतियों के बाद फिर से मानसिंह का वृत्तान्त दिया है। उसमें उसके द्वारा कोलियों पर सेना भेजकर २२ थानों पर अधिकार करने का उल्लेख है, जिसमें १० थानों के नाम दिये हैं। तत्पश्चात् मानसिंह द्वारा अपने प्रधान पचायण को विष देकर मारने पर पचायण के भतीजे कल्ला द्वारा मानसिंह की हत्या करने का उल्लेख है।

१० राव सुरताण का वृत्तान्त –

मानसिंह के बाद अल्प आयु में राव सुरताण के उत्तराधिकारी होने, महाराव शिवभाण के भाई सज्जा के वंशज बीजा के हाथ राजसत्ता होने, महाराणा प्रताप के भाई जगमाल जो सिरोही राव मानसिंह का दामाद था उसको अकबर द्वारा आधी सिरोही का हक देने, फिर जगमाल द्वारा राव सुरताण देवड़ा को सिरोही से खदेड़ने व दताणी के युद्ध में जगमाल व रायसिंह (जोधपुर राव चन्द्रसेन का पुत्र) के मारे जाने तथा सुरताण का सिरोही पर पूर्ण रूप से अधिकार होने का वृत्तान्त दिया है।

घटनाएँ नैणसी की ख्यात से मिलती जुलती है। राव सुरताण की मा से सबंधित एक नवीन वार्ता उल्लेखनीय है—

"पहली सुरताण री मा री डोळो बीकानेरिया राठौड नवनगर ले जावता था, नवा नगरा रा धणी बाम्हणिया नू परणावण साह, सो गाम महाड डेरा कियौ हुतौ तरै बाम्हणियो मूआ री खबर आई तरै राठौडी कयो हू बळसू तरै साथे आदमी हुता ज्यां कैयो तू कुंआरी छैं थाने बाळसू नही कुंआरी नैं सत करणो वरजियो ■ पछै रजपूता देवडा भाण नैं आ परणाई पछै भाण र इण राठौडी रै पेट बेटो सुरताण जनमियो।"

राव सुरताण के पुत्र राजसिंह, राजसिंह के पुत्र असेराज व असेराज के पुत्र उदयसिंह का वतात दिया है जो नैणसी की ख्यात के समरूप प्रतीत होता है ।

(पत्र–२०)

११ महाराजा जसवर्तसिंह का वृतात –

धरमाट के युद्ध म जसवर्तसिंह की ओर स काम आये कुछ व्यक्तिया के परिवारा का शाही पट्टे इनायत हुए उसस सबधित कुछ पत्रा की जानकारी इस प्रकार दी है—

१ ' कागल उकील मनोहरदास रो आयो पातसाही उमराव काम आया तिणा रा बेटा नू मुनसब दियो पातसाही तिणरो

१ राव भावसिंघ मत्रमालोत तीन हजारी जात तीन हजार असवार बूंदी रा धणी हाडा ।

१ मानसिंध रूपसिंघोत आठ हजारी जात आठ सा सवार किशनगढ तथा रूपनगर रा ।

१ गौड   सिवरामोत एक हजारी जात हजार असवार

१ राठौड सरसीध रामसिंघोत हजारी जात हजार असवार

२ "कागद मू० सुदरदास पचाली वसरीसिंघ रा आयो तिण म लिखियो उजेण रो राड म काम आया तिणा रा भाई भतीजा न पट्टो बगसियो छो तिणरी लिपाई लिजो मती श्री महाराजजी रो हुक्म छै ।'

३ भण्डारी लालचन्द रा कागद आया साढ ८८ सोउे ने दे लोधी १३ कीटणाव सू ४० जाणियाण सू ३५ लालण सू ।'

आग पोकरण के भाटिया पर चढाई करन हतु मुहणोत नैणसी के साथ भेजे गये करीब ९२ योद्धाआ की सूची देकर युद्ध का हाल लिया है ।

अन्त मे जोधपुर के अन्य शासका व उनक वशजो का सक्षिप्त विवरण दिया है जो क्रमबद्ध नही है ।   (पत्र–१८)

१२ उदयपुर री बाता –

इसमे हरमाडा (हाजीखा व उदयसिंह क बीच) हल्दी घाटी (मानसिंह व प्रताप क बीच) तथा खावर और सागा के बीच लडे गय युद्धो म मारे गये उदयपुर पक्ष के योद्धाओं की सूची दी है ।   (पत्र–४)

१३ शिवाजी सभाजी री बाता –

इसम शिवाजी व उसके वशजा स सबधित ऐतिहासिक घटनायें फुटकर नोट के रूप मे अंकित है ।

प्रारम्भ—

शिवाजी रे बेटो सभाजी ज्या थोडो राज कियो पछै औरगजेब सभाजी न पकड मार नाखियो। सभाजी रो बेटो साहूजी बडो प्रतापीक साहू रे बटा नाया थो ।'

शिवाजी साहू तथा अन्य अधिकारिया की मोहरो की प्रतिलिपिया इस प्रकार अकित है।

सिवाजी महाराज री मोहर रो नकसो ॥श्लोक॥

प्रतिप चद्ररेषवर्धिस्नू विश्व वदित
महा मृनो सिवस्ते सो मुद्रा भद्रा विराजते

साहू रा प्रतिनिधि श्रीपतिराव री मोहर रा नकसो—

श्री प्राथादि पुरस श्री राजासाहू छत्रपति स्वामी कृपानिधि
तस्य श्री निवास परसरामा पडित प्रतिनिधि

राजा साहू री माहर रा नकसो ॥ श्लोक ॥

वर्धिस्नो विक्रमो विस्नू सा मूर्ति रविवामनी।
सभू सूनार सोभद्रा सिवराजस्य राजपतै।

साहू रो असलन नाम सिवो थो सो औरग सिवा रो नाम न लेव जद साहू बाजियो।

सेनापति री मोहर—

श्री राज साहू छत्रपती जसवतराव दाभाडा सेनापति

राम राज री मोहर—

सभू गोरी वर प्राप्त, राज्य साम्राज्य सपदा।
सिव भूनोर सामुद्रा राम रामस्य राज्यते ॥

पेसवा प्रधाना री मोहर पानघटी गोल

श्री राजा साहू नरपति हृष निधान।
बालाजी वाजेराव मुख्य प्रधान ॥ (पत्र-५)

बाकीदास की ख्यात की भाति फुटकर नोट के रूप म अनेक ऐतिहासिक पुरुषा से सम्बन्धित वार्तें भी सग्रहीत हैं जो क्रमबद्ध नही होने से इनका विवरण प्रस्तुत करना सम्भव नही है। ग्रथ के मध्य भाग मे ईरान व रूस की भी वार्ताएँ दी हैं। इसके अतिरिक्त कवित्त, दोहे कुण्डलिया भी लिपिबद्ध की गई हैं।

ग्रथ एक से अधिक व्यक्तिया के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साधारण है, कागज हाथ के बने हुए है ग्रथ पर चमडे का गत्ता मढा हुआ है, ग्रत के कुछ पत्र रिक्त पडे है।

७ राठौडों री ख्यात ग्रर वशावली

१ राठौडा री ख्यात अर वशावली, २ जो० क० सग्रह ३ ५५, ४ ६४×२६ सेमी०, ५ १८२, ६ २८३० ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ राठौडो री ख्यात –

प्रारम्भ मे जोधपुर के सस्थापक राव जोधा से राव गागा तक के शासको का हाल दिया है, ग्रथाक १५४, क० स० से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

'राव जोधा वडा ग्रायडसिध रजपूत, गई भोम री वाहरु हुवो, असख्य *प्रवाडा किया, वैर वाहरु हुवो, जतवादी हुवा ग्रादि।*

२ राठौडो री वशावली –

ग्रादिनारायण से राव सीह तक वशावली देकर राव मालदेव तक के राठौड शासको का विस्तृत विवरण दिया है। राव मालदेव का हाल अधिक विस्तार से दिया गया है। विवरण ग्रथाक १५४, क० स० से मिलता जुलता है।

३ उदावतों री विगत –

अन्तिम भाग मे उदावत राठौड सरदारा की मुख्य उपलब्धिया, पट्टे के गाव ग्रादि का विवरण दिया है।

४ मालदेव र परवार री विगत –

राव मालदव के पुत्रों व उनकी सतति इत्यादि का ग्रलग से विवरण किसी ग्रन्य व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि मे लिखा गया है।

५ मेडतियो री विगत –

इसमे राव दूदा के वशजा का सक्षिप्त विवरण (घसीट लिपि मे) दिया है।

मूल ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। उपर चमडे का गत्ता चढा हुग्रा है।

राठौड राजाओ एव सरदारा के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

इस प्रकार की वशावलियाँ मारवाड की ख्यात का ग्राधार रही है।

८ जोधपुर री ख्यात

१ जोधपुर री ख्यात २ जा०क० संग्रह ३ ६३, ४ ३५×२६ समा०, ५ १६ ६ २०–२४, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमें जोधपुर के शासक राव गांगा से महाराजा मानसिंह तक का संक्षिप्त विवरण दिया है। राव सीहा से राव सूजा का विवरण पत्र लुप्त होने से अप्राप्य है।

प्रारम्भ—

"...सुलतान कढ लीया समत १६१३ रा फागण वद ६ कु वीरमदे रा बेटा जैमल के पास पीछा मेडता ले लिया सो समत १६१८ रा फागण वद कु बादशाह अकबर की फौज लावर जैमल ने फेर मेडता छुडवा लीया ...।"

ख्यात अति संक्षिप्त है और किसी हिन्दी प्रेमी ने रूपान्तर करने का प्रयत्न किया है ऐसा प्रतीत होता है।

प्रारम्भ के ६ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है, पत्र सब खुले है। जोधपुर इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

९ ख्यात बात तथा वीर गीत संग्रह

१ ख्यात बात तथा वीर गीत संग्रह, बांकीदास आदि, २ जा० क० संग्रह ३ ६६, ४ ३३.५×२२ समा०, ५ ४५४ ६ १८-२१ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में बांकीदास कृत अनेक प्रशस्ति गीतों और ऐतिहासिक बातों के अतिरिक्त 'जागरबर री ख्यात नसीहत' और शालिहोत्र इत्यादि कृतियाँ भी संकलित हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः अथ शासन अंग लिषते
लक्षमण १, हनु २ जकि ... आदि।"

साहित्यिक परम्पराओं की जानकारी के लिए ग्रंथ बड़ा उपयोगी है।

एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध है, लिपि अशुद्ध है तथा कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

१० जमीदारो रै पट्टै गावों रो तरजमो अर चीन रो तवारीख

१ जमीदारा रै पट्टै गाव रा तरजमा अर चीन री तवारीख २ जा० क० संग्रह ३ ८०, ४ ३६×३० समा०, ५ ८६ ६ ३०-३६, ७ १६वीं शताब्दी

का उत्तराद्ध, = अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस वहदाकार ग्रंथ मे कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ जमींदारो रै पट्टै रै गाव रो तरजमो —

इसमे जोधपुर के विभिन्न जागीरदारो के जागीर के गावो की सख्या उनकी रेख नय मिले गावो की सख्या व उनकी रेख तथा पुराने खेडो की सख्या वि० स० १८९६ मे थी उसकी एक लम्बी सूची है।

प्रारम्भ—

"नक्ल सवत १८९६ री साल म जोधपुर रा कपतान जान लडलू साहब बहादुर अजट राज मारवाड जोधपुर रा जमीदार नु गाव राज सू न पट कीवी नै गाव गाव लिपीजिया जिणरो तरजमो उतारियो—

ग्रासामी नै ठिकाणा	गाव रप	गाव नवा	रेप	जु रेप	जु पडा
चाप चापावत रा	८५ ५६६४३	१३	२०१६५ ७६६०८		६८

कमुतसिह पोकरण (पत्र-३८)

महाराजा मानसिह कालीन मारवाड के गावो और रेख की जानकारी के लिए यह वृत्तात उपयोगी है।

२ तवारीख चीन —

इसमे चीन देश का इतिवृत्त दिया गया है साथ ही उस देश की कुछ मा यताओ पर भी प्रकाश पडता है।

प्रारम्भ—

"अक्ल और विचार वाले तारीप के इलम का दूसरे इलमो पर इस वासते बडाई देते और आछा जानते हैं के लोगो की पीछाण और अजमायस का जो मुलक है उसमे पोचने का रसता है और जिसने थोडा सा भी यहा का सफर किया वो कुछ होई रहा ।"

अतिम—

' पता की बादसाह के बन्दोवसत का जियादा साबित करना ।"

(पत्र-७४)

यह नकल अपूर्ण है आगे पत्र खाली पडे हैं। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

११ महाराजा मानसिह (जोधपुर) री ख्यात

१ महाराजा मानसिह (जोधपुर) री ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३ ५८ ४ ४१×३५ सेमी०, ५ ३१३, ६ १६-१७, ७ १९वी शताब्दी का

उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह के शासनकाल का पूरा हाल दिया है। घटनाएं प्रथाङ्क १०६१०, रा० शो० सं० से मिलती है। ग्रंथ का आकार व लिपि भी एक जैसा ही है।

प्रारम्भ—

॥ श्री जलधरनाथजी ॥

'महाराजा श्री मानसिंहजी समत १८३९ रा महा सुद ११ दुतीक गुरुवार री जनम नै समत १८६० रा मिगसर वद ७ जोधपुर गढ दाखल हुवो नै समत १९०० रा भादवा सुद ११ सोमवार नैं पाछली रात पोहर एक रह्या मंडोवर में देवलोक हुवा।'

अन्तिम—

'महाराजा श्री विजैसिंघजी रै महाराज कंवर फतेहसिंहजी बीहा (हुए) सो चाकरिया पछै पासवानजी अरज करने कंवरजी सेरसिंघजी नू जुगराज पदवी दिराई नै पासवानजी बाबा तखतसिंघजी चल गया आदि।'

वि० सं० १८६६ में जागीर के गांव, रेख तथा खांपानुसार जागीरदारों की एक लम्बी सूची दी है। तत्पश्चात् भाटियां, चहुवानों के विभिन्न खांपों इत्यादि का भी विगत दी है।

जैसा भाटिया के मूल पुरुष जैसा[1] के बारे में लिखा है कि वह हरभू सांखला का भानजा था। हरभू सुगनी था, जोधपुर गढ की नींव उस पूछ कर दिलवाई थी। जोधा ने उसके पुत्र को उस समय वहां बुलाया, पुत्र तो नहीं आये पर भाटी जैसा आया उसने अपना हक समझ बंट मांगा तो जोधा ने उसे व उसकी संतति को बालरवा चामू रायमलवाडा खुडियाला तथा लवेरा ग्राम हाथ के कुरब सहित दिये।

मानसिंह के राज्य काल का बहुत विस्तार से वर्णन इस ग्रंथ में है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ऊपर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

१२ ख्यात बात कवित्त संग्रह

१ ख्यात बात कवित्त संग्रह, बांकीदास, २ शो० सं० संग्रह ३ ८२ ४ ३५×२३ सेमी०, ५ ३४२ ६ १९२१, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध,

---

[1] यह जैसलमेर के अधीश्वर रावल केहर के पौत्र व कलकरण का पुत्र था।

८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ मे बाकीदास कृत राणा भीमसिंह के कवित्त, मान जसो मडण चद्रदूसण दपण इत्यादि कृतिया सग्रहीत है। प्रारम्भ मे लोद्रवे सम्बन्धी वार्ता दी है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम लाद्रवो रा सिध देवराज सू ग्रा क्ष्यात—ग्रगरेज ता घोडो परीदे नही पूरी ग्रसवारगी नही जिण सू ग्रो पिनाण नामो ।

महाराजा मानसिंह के अनेक ग्राश्रित प्रसिद्ध कवि बाकीदास की कुछ ग्रज्ञात कृतियो का इससे पता चलता है।

इसके ग्रतिरिक्त ग्रनेक छोटी मोटी एतिहासिक बातें भी लिपिबद्ध है। लिखावट अशुद्ध है। ग्रनेक व्यक्तियो द्वारा लिपिबद्ध किया गया है।

१३ महाराजा विजैसिह भीमसिह री ख्यात

१ महाराजा विजसिह भीमसिह री ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३ ५३, ४ १६×१७ सेमी०, ५ १८८, ६ १६ १७, ७ १९वी शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ख्यात मे जोधपुर के शासक विजैसिह व उसके पौत्र भीमसिह के राज्यकाल की घटनाग्रो का विस्तृत वर्णन किया है।

१ माहाराजा विजसिह री ख्यात –

प्रारम्भ—

"॥ श्री हरि ॥

महाराजा श्री विजैसिहजी समत १७८९ रा मिगसर वद ११ ब्रहसपतवार रो जनम समत १८०९ भादवा नू महरोठ मे टीके विराजिया। १८०९ रा माहा वद १२ मगलवार जोधपुर पधार सिणगार चोकी राज तिलक विराजिया, समत १८४९ रा ग्रासाढ वद देवलोक हुग्रा।

मुसायबी पीची गोरधन नै दिवाण बषसी वडा महाराज रापिया था सु सरु रापीया समत १८०९ श्री महाराज महारोट सू कूच कर मेडते पधारिया मेहला दापल हुवा।

राज किशोरसिघजी वगे डेरा मगरा री साथ वगरे भेळो कर मिणाय अमल कीयो आदि।"

इसमें मुख्य रूप से महाराजा के मराठों से संघर्ष, युद्ध में लड़े योद्धाओं की सूची, विरोधी सरदारों का दमन, राजलोकों की विगत, निर्माण कार्य आदि का विवरण दिया है।

अन्तिम भाग में राणा अडसी द्वारा गोडवाड़ का परगना विजैसिंह को दिये जाने के २ रुक्कों की प्रतिलिपियां दी हैं (वि० स० १८२७) फिर उमरकोट टालपुरिया से महाराजा द्वारा हस्तगत कर बीजड़ को चूक से मरवाने की विगत दी है। सारा वृत्तांत जोधपुर राज्य की ख्यात से मिलता जुलता है।

अंतिम भाग—

'पछै समत (१८६६) में हाकम भंडारी सिवचंद सोभाचंदोत तालके लाने कामती माढी गजबनाथ थो नै मारवाड़ में काळ नैं विये रा सबब सूं परचा पहुंचो नहीं नैं माहू समान मिळ नहीं जिण री खबर टालपुरा नैं हुई सो उमरकोट पाछो छुडाय लीयो जिण दिन सूं उमरकोट मारवाड़ सूं छूटौ है[1]।

इति महाराजजी विजैसिंघजी" (पत्र-१७१)

२ महाराजा भींवसिंहजी री ख्यात –

इसमें जोधपुर महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल का वृत्तांत दिया है। प्रारम्भ में महाराजा विजयसिंह की मृत्यु के पश्चात् भीमसिंह के उत्तराधिकारी होने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

'समत १८२२ आसाढ सुद १२ री जन्म नैं समत १८४६ रा आसाढ सु" १२ राजतिलक विराजिया नैं समत १८६० रा काती सुद ४ देवलोक हुवा।

महाराजा श्री भींवसिंघजी पोहकरण सूं जैसलमेर परणीजण पधारिया था उठै महाराज श्री विजैसिंहजी देवलोक हुवा री खबर पाहुची तरै ताकीद सूं कूच कर पोहकरण पधारिया नैं पोकरण सूं सातरा ऊठ लै महाराजा नैं सवाईसिंहजी चढ़िया सो सीगोडिया री बारी होय आसाढ सुद ६ रात रा लायणपाळ पधारिया तर धाय भाई सिंघुदान नै दिवाण भंडारी भानीदास नैं बगसी सिंघवी अपराज नै सिरिमाली धाभो रामदत्त वगैरे लिपणपोळ आय मुजरा किया नैं अरज करी कै महाराज श्री विजैसिहजी रा कवर सेरसिंघजी, सावतसिंघजी, सूरसिंहजी नैं महाराजा अजीत सिंहजी रा कवर प्रतापसिंहजी जिणा नैं जीव जोखो होवै नहीं जणा हजूर वचन दिया तरै गढ री पाळा पोनी आदि।'

---

[1] यह घटना महाराजा मानसिंह के राज्यकाल की है। वि० स० १८६६ (ई० सन १८१२) में उमरकोट पर पुनः टालपुरिया का अधिकार हो गया था।

महाराजा के जयपुर सवाई प्रतापसिंह की बहिन से शादी करने के लिये जाने, बरात मे चले सरदारो की खापानुसार सूची, मानसिंह द्वारा पाली लूटन आदि घटनाओ का हाल दिया है।

भीमसिंह के राजलोक व सतिया की सूची तथा गुमानसिंह व विजयसिंह के कुवरा की विगत के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

ख्यात का अंतिम भाग—

"१ मवरजी श्री मानसिहजी समत १८३६ रा० सुद ११ दूतीक गुरुवार री जनम।"

घटनाए क्रमबद्ध वर्णित की गई है जिनके सवत तिथि और वार इत्यादि भी अंकित है। मराठा का मारवाड म दखल आदि के इतिहास हतु विशेष रूप से ख्यात उपयोगी है।

ख्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

१४ अजीतसिंह अभयसिंह बखतसिंह री ख्यात

१ अजीतसिंह अभयसिंह बखतसिंह री ख्यात, २ जो० क० सग्रह ३ ५२ ४ ४०×३४ सेमी०, ५ २५७, ६ १५ २०, ७ १८वी शताब्दी का उत्तराद्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ख्यात म जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह, अभयसिंह, रामसिंह व बखतसिंह की जीवन घटनाओ का विस्तृत वणन दिया है, जो ग्रथाक १५८ जो० क० सग्रह से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

"महाराजा श्री अजीतसिघजी समत १७३५ चैत वद ४ री जनम लाहोर मे हुवो समत १७३४ लगाय समत १७६३ ताई विपो रेओ, जोधपुर अमल नै समत १७८० आसाढ सुद १३ बैकुठवास। समत १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवतसिहजी देवलोक हुवा, पोस वद ११ राठोड रिणछोडदास सूरजमल सग्राम सिंह ।"

ग्रथ जोधपुर क इतिहास की दृष्टि से उपयोगी है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिखावट साधारण है। ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

१५ महाराजा तखतसिंह री ख्यात

१ महाराजा तखतसिंह री ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३ ११, ४ २४×१८ सेमी०, ५ ४२ ६ २५ २८, ७ २०वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे जोधपुर के शासक महाराजा तखतसिंह के राज्यकाल की घटनाओ का विवरण लिपिबद्ध है। इन महाराजा के अतिरिक्त राजस्थानी रजवाडा के अन्य शासको का ब्रिटिश अधिकारियों से मिलने इत्यादि घटनाए वर्णित है जो क्रमबद्ध नही है। कुछ राजाओ के सतति आदि का भी उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री माताजी ॥

स० १९२७ रा सावण रा मास सू पात इण मे ।"

लिखावट घसीट मे है सबसाधारण के पढने मे नही आती, पत्र लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है।

ग्रथ महाराजा तखतसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१६ पुनीयात री ख्यात

१ पुनीयात री ख्यात आदि, २ जो० क० सग्रह, ३ १५, ४ ११× १७ सेमी०, ५ २६ (२० पत्र रिक्त), ६ २८-३०, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर राजकवि के मरणोपरान्त पुण्यार्थ रुपय दिये जाने वाले व्यक्तियो की सूची दी है।

प्रारम्भ—

"श्री जलधरनाथजी स्या छै

श्री वडा कवराजजी रा देवलोक हुवा तरा पुनीयारत रा ईण मुजब आया री विगत १९२१ रा मिगसर म

११५३।।।) कुल जमा इण मुजब आया

२००) श्री हजूर सायबा रा

२००) पोकरन ठाकुरा रा बीजैसाही अर्पसाही

१३२) ६८)

वि० स० १९२१ म विभिन्न गावो का जो हासल जमा हुआ उसका ब्यौरा अन्त मे दिया है। उस समय उपज का छठा हिस्सा लिया जाता था।

ग्रंथ में बहुत से पत्र रिक्त पड़े हैं। एक ओर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं और राजस्व सम्बन्धी जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

१७ जूनी ख्यात

१ जूनी ख्यात, २ जो० क० संग्रह, ३ ८४, ४ ३३×२४ सेमी०, ५ ६०४ ६ १७२१, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ राजपूत राजाओं एवं सरदारों, दादूपंथियों, ब्राह्मणों, चारणों तथा दिल्ली के बादशाहों इत्यादि की ऐतिहासिक सामग्री का अनूठा एवं समृद्ध संग्रह है जो नैणसी की ख्यात से काफी भिन्न है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेसायनमः अथ सीसोदिया री बात पात लिषते—भाट मगड बागडी सोलंकिया री पोळपात तिणनूं कितराइक कोड रुपिया देने राणो हमीर सोलंकिया री बिरद मोल लियो ... आदि।"

यहाँ प्रत्येक कृति का विवरण प्रस्तुत करना बहुत समयसाध्य है अतः ग्रंथ में संकलित महत्वपूर्ण कृतियों की सूची दी जा रही है—

१ बरसैं छत्तीसी	२ वैद बचन
३ साधारण ख्यात	४ साधारण शास्त्र
५ देवलीया राणावतो री ख्यात	६ दिल्ली रै पातसाहां री ख्यात
७ गोडा री ख्यात	८ गोहिला री ख्यात
९ चहुवाणा रै भाणेजा री ख्यात	१० कायस्था री ख्यात
११ कछवाहा री ख्यात	१२ गढ कोटा री ख्यात
१३, पवार-सोढा री ख्यात	१४ नगर प्रसंग
१५ दादूपंथिया री ख्यात	१६ कूंपावतो री ख्यात
१७ मेडतीया री ख्यात	१८ महेचा री ख्यात
१९ जोधपुर री ख्यात	२० सोलंकिया री ख्यात
२१ वैष्णवो री ख्यात	२२ झालो री ख्यात
२३ हाडा, देवडा, चहुवाणो री ख्यात	२४ खीचियो री ख्यात
२५ परमारो री ख्यात	२६ बारे पंथ जोगेश्वरो री ख्यात
२७ संन्यासिया री ख्यात	२८ जाडेचो री ख्यात

२६ राणावतां री ख्यात	३० बांसवाला डूंगरपुर रावलां री ख्यात
३१ सेखावतां री ख्यात	३२ पाटोदी रै जोधां री ख्यात
३३ नामभेद निरणय (बांकीदास कृत)	३४ बगदाद रा खलिफा री ख्यात
३५ मेडतियों री ख्यात	३६ प्रथीराज रासो रो सार
३७ वाभेणा ख्यात	३८ दिखण रा राजाओं री ख्यात
३९ किशनगढ रूपनगर रा राजाओं री ख्यात	४० सिकन्दर री ख्यात
४१ बीकानेर राजाओं री ख्यात	४२ देव देवी प्रसंग
४३ चारणों री ख्यात	४४ पत्रियां रा विरद
४५ किताबां री रिजक	४६ पातसाही उमरावों री ख्यात
४७ हकीमां री ख्यात	४८ सिंध री ख्यात
४९ प्रस्ताविक दोहा	५० वीर गीत कवित्त आदि

इसमें कुछ एक ख्यातें केवल एक आध पत्रों में ही लिपिबद्ध है तथा कुछ ख्यातें व अध्याय ४५ पत्रों में भी वर्णित हैं। कहीं कहीं एक ख्यात से सम्बन्धित २ ३ स्थलों पर विवरण प्राप्य है।

५१ जैसलमेर री ख्यात –

इन उपयुक्त ख्यातों में बीच बीच में भाटी शासकों का इतिहास लिपिबद्ध है, लिखावट कविराज भारथदानजी की प्रतीत होती है।

प्रारम्भ में जैसलमेर राजघराने के सम्बन्धों की विगत दी है। आगे विजय राज चूडाला व उसके पुत्र देवराज के वृत्तांत में उनके द्वारा वरहियां को मार अपने पिता का वैर लेने, देरावर गढ का निर्माण करने तथा पवारों से लुद्रवा हस्तगत करने आदि घटनाएँ विस्तार से दी हैं।

एक स्थान पर जैसलमेर में भाटी राजाओं के राज्याभिषेक की रस्म अदा करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"बाबा री आसण है जैसलमेर में नै सात आठ जोगी है उण आसण मे रतां रा वस रा रोज रुपयो पावै है नै नित रावळजी रै वभूत रो तिलक करै है। रता बाबा री जायगा गढ उपर मोतीमहल रै नीचे जसलु कुवै रै कोडे (है)। जसलमेर रावळ गादी बैठे तरै आटा री अर मण री मुद्रावां काना मे पहरै नै भगमी (भगवी) चादर माथे ओढे न हाथ में छडी लेवे नै रता बाबा रा जोगी आय वभूत रो तिलक कर पछै गादी बैठे तरै चेलक रा भाटी सिरदार आय कूकू रो तिलक करै पछै निजर

नीछरावळ करै जैसलमेर नवा रावळ गादी बैठे तर सरस्ती हैं, रतन नाथजी न रतौ बाबो यहै छ।"

जोधपुर के शासक जसवंतसिंह (प्रथम) के राज्यकाल में राठौड़ों की जैसलमेर पर चढ़ाई, युद्ध में काम आने वाले भाटी सरदारों की सूची आदि, उस समय की घटनाओं का वृत्तात दिया है। उपरोक्त कृतियों में राजपूतों की अनेक खापों का वृतात है जो अन्यत्र दुर्लभ है। इसी प्रकार सन्यासियों, चारणों, शाह-पथियों और सिध आदि की ख्यात भी अनेक नई सूचनाएँ देने में सक्षम हैं।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साधारण है। जीर्ण कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

१८ उपाध्यायां री ख्यात (उपादिया जसराज री तवारीख)

१ उपाध्यायां री ख्यात (उपादिया जसराज री तवारीख) २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ , ४ ८"×९" इंच, ५ ६०, ६ २०, ७ वि०सं० १९७५, ई० सन् १९१८ जोधपुर, ८ उपादिया जसराज, ९ हिंदी, देवनागरी, १० इसमें जोधाजी के समय उपाध्याय गणपतदत्त द्वारा जोधपुर दुर्ग की नींव दिलवाने तथा उसका नाम मेहरानगढ़ दिये जाने का उल्लेख है। तत्पश्चात् जोधपुर शहर के निर्माण का विवरण दिया है। अन्त में वि० सं० १९७५ तक जो भी निर्माण कार्य इत्यादि हुआ उसका विवरण दिया गया है।

भवन निर्माण पर शोध करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह सामग्री बड़ी उपयोगी है।

१९ लूणड हुवा तिण री खियात

१ लूणड हुवा तिण री खियात २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ ४ बहीनुमा, ५ १, ६ १०० ७ वि० सं० १९००, ई० सन् १८४३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें ओसवाल जाति के लूणड गौत्र का संक्षिप्त इतिहास दिया है।

२० महाराजा अजीतसिंह सू बखतसिंह तक री ख्यात

१ महाराजा अजीतसिंह सू बखतसिंह तक री ख्यात, २ जो० क० संग्रह, ३ १५८, ४ ६६×१७४ सेमी० (बहीनुमा), ५ १८२, ६ ८०४५ ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १०

प्रस्तुत ग्रंथ में जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह, अभयसिंह, रामसिंह और बखतसिंह के राज्यकाल का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

'महाराज श्री अजीतसिंह   १७३५ रा चैत्र वद ४ रो जनम १७६३ रा धत वद १३ जोधपुर गढ लियो संवत १७८० रा आसाढ सुद १३ देवलोक हुआ।

संवत १७३५ पौस वद १० महाराज जसवंतसिंहजी पेसोर में देवलोक हुआ पौस वद ११ राठोड रिणछोड़दास, सूरजमल संग्राम उदसिंघ दुरगदास पंचोली अणदरूप रूघनाथ हरकिशन   ।"

महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु की घटना से ख्यात प्रारम्भ हुई है। ख्यात में अंकित बहुत सी घटनाएं जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती है, कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) जसवंतसिंह की मृत्यु का दुःखद समाचार भेजना और राठोड़ों द्वारा पेशावर से जोधपुर यह भी लिख भेजने का उल्लेख है कि बादशाह का भेजा अमान किरोड़ी आ रहा है उसे किसी प्रकार क्षति नहीं पहुंचाई जाय और अगर जोधपुर नहीं दे तो सोजत व जैतारण के लिए आग्रह करना।

(२) जोधपुर में अनेक राठौड़ों के एकत्रित होने तथा खोजा अगर द्वारा बादशाह को महाराजा के यहां अधिक सम्पति होने की सूचना देने का उल्लेख है।

' खोजो अगर कदीम श्री माराजाजी रो चाकर थो ने उजण रा मामला में दौलत घणी लेनैं भागो सू पातसाहजी रै हजूरिया में चाकर थो उण नू पृथीसी राजा रै साथ नै दौलत कीतरीक छै इण साथ ही घणी बतायी न दौलत ही घणी बताई नै रुपया सतावन करोड पाछला गाडीया बताया सू पातसाहीजी नू भरम हुवो पातसाहजी   सद अबदुलो असवार २५० था मुलक री खबर मेलियो।

(३) राठोड सरदारों का पेशावर से प्रस्थान, लाहौर में पहुँचने वहाँ अजीतसिंह व दलथंभ के जन्म होने, राघोदास द्वारा मेडता में नवाब को तथा जोधपुर में सरदारों को खुशखबरी सुनाने के उपलक्ष में इनाम मिला उसकी विगत इस प्रकार दी है—

'नवाब मेडता सू कूच कियो सू चैत वद १२ गांव पालासणी डेरा हुवा तठै लाहौर सू रेबारी राघो आयो नवाब राजी हुवो, रैबारी राघे नै म्हौर एक ने बादशाई पाघ १ दीवी ताहरवेग फावडा २ दीवी।

राघो जोधपुर प्राय बधाई दीवी, घणो उछाव हुवो धरती री ग्रौर ही नूर हुवौ

१ महेला री तरफ सू	१ मीया फरासत
२ फावड़ा ५० रोक्डा ६	१० रोक्ड २ धाम
१ पचोली केसरीसिंघ	१ राठौड सोनग
१ मोहर एक २० रोकड १ ऊठ	ऊठ १ दियौ
१ राठौड ग्रणदसिंघ भिंवोत	१ राठौड उदैसिंघ
ऊठ १	रु० ३०
राठौड सग्रामसिंघ चापा	राठौड तेजसिंघ करण दुरगावत
ऊठ १	ऊठ १
ऊहड भगवानदास	साहणी दाणीदास
ऊठ १	ऊठ १
भाटी रुघनाथ सुरताणोत	भाटी राकूमकरणोत सोना री
१०० रोकड १ ऊठ	सारुळी २० रोकड ऊठ

(४) बादशाह को खुश रखने हेतु राठौडो ने निम्नलिखित उपाय किये—

"चैत सुद पातसाही नू राजी करण वासत इतरा थोक किया—

१ जोधपुर मे पातसाही ग्रमल करायो।

२ फौजदार ताहरबेग तलेटी रा महुला रायियो ग्रसवार २३० सू ।

३ काजी हामद सिपाई ५० नै तोपची ५० सू ।

४ वाकानवीस कोटवाळ रहीमपा ।

५ बयामयानी दीनदारपा असवार १००० सू सहर बारै मदद नू रेयौ ।

६ तोल ४२ कीयौ।

७ दाणा टके रु० किया ।

■ भाग दारू मने कीयौ ।

(५) जोधपुर दुर्ग की जाच करने व कुछ धन इत्यादि मिलने का उल्लेख इस प्रकार है—

"नवाब बहादरषा ग्रापरो इतवारी ग्रादमी न ताहरबेग ऊपर मेलियौ तिणा कोठार सोधीया नै इण मुजब लायो—

१ सिंदूक जुहार री तथा गहणा री पासी १ रोकड रु० २१०००, ३२ कवाणा, बदुका २००० गोला, दारू, २७ तोपा बडी नै ग्रौर ही ताजी वुसत थी सू

राठोड सग्रामसिंह अरज कीवी—म्हे नवाब री राह देवता था नैं हमे निवाजबेग म्हांन लेण आयो छैं सो दस्तक दो सो वहीर होवा, रजपूत भूपा मरैं छैं सो कोई उपाव करसी, तरैं नवाब समजियो दस्तक दीवो, महा सुद १३ भोम पाछलो दिन घडी चार थो तरैं कूच हुवो, पहलो डेरो कोस एक उपर हुवो, महा सुद १४ नवाब मीरया सोग मजावण रा मेलिया ६ उमरावा रैं सिरपा १ मवा रा पूम १ गोठ री सरजाम।

महा सुद १५ पालदोरा री सराय कोस ५ डेरा, फागण वद १ कोस ६ डेरा नवाब सैर फागण वद २ कोस ७ फागण वद ३ कोस ७ अटक नावा रैं वास्त पचोली जैकरण नू दरोगा उडदबग वनैं नावा र वासते मेलीयो सू नावा थोडी छोडी तर दूजैं दिन राठोड सग्रामसिंघ जाय न नवाडी सारी ले आयो उडतबग डेरैं आयो थो। फागण वद ४ नैं फागण वद ५ मुकाम सहाणी जोगीदास अवदार अया नू दस नू चलाया—लडाई करजो मती सुन्हा रायजो। फागण वद ७ कोस ४ मधूर डेरा, फागण वद ८ कोस ४ कीगर रैं नाळ डेरा, फागण वद ६ कोस ५ हसन अवदाल डेरा राह म हसबल हुकम आयो निजरबेग नैं तिण म लिपीयो—राठोड सूरजमल नू सोहनद था आगे ले आयो। श्रीजी रा फूल पीरोहित कल्याणदास पचोली जसिंघ सादुलात राठोड साथे रुपीया १००० परच नू दीना था। फागण वद १० कोस ७ परबूजा री सराय डेरा फागण वद ११ भोम मुकाम नीवाजबेग री सराय नैं काले पाणी स्यात रैं पचोली जैकरण नू मनावण मेलीयो थो तरैं न आयो, पछैं फागण वद १२ मुकाम राठोड सग्रामसिंह मनाय ले आया आपरैं डेर रापीया। फागण वद १३ कोस ७ पालडी डेरा, वद १४ तथा कोस ७ खेत री सराय, फागण सुद १ कोस ८ पके सराय, फागुण सुद २ कास ८ गा(खड) ताल श्रीजी रैं उमरावा नू फरमान आयो दिलासा री, फागुण सुद ३ कास ६ रोहीतास ग(ढ), फागुण सुद ४ मेह हुवो सू पाचम तांई मुकाम रैबारी राघो साथ रुपीया १२८ गोरखिर्ल मेलिया था सू दन आसका प्रसाद ले आयो। फागुण सुद ५ कोस ▮ नदी बहत डेरा, फागुण सुद ७ परीयारी सराहि, आठम मुकाम फागुण सुद ६ कोस १० दोला री गुजरात, दसम मुकाम, फागुण सुद ११ कोस ५ उजीराबाद डेरा, फागण सुद १२ कोस ७ तलोली डेरा, फागुण सुद १४ कोस ६ नवी री सराय होली री सास्तर कीयो, फागुण सुद १५ कोस ८ लाहोर हवेली मे डेरा हुवा इतरो साथ लसकर मे थो तिणरी विगत—

सिरदार—

१ राठोड सूरजमल नाहपानोत आसोप री धणी, पटो ६० ४००००

१ राठोड सग्रामसिंघ जू जारसिंघोत आउवा री, पटो २८०००

ले गया नैं देहरा आडो भीत चुणाई लसकर रा लोक नैं सहर म जावण दियो नही, नवाब अद्दुत अनीत कीवी।"

(६) बादशाह ने जब किशनगढ प्रस्थान किया तब इन्द्रसिंह द्वारा १०० मोहरें व १००० रुपये बादशाह को भेंट किये जाने का उल्लेख है।

(७) बादशाह द्वारा अटक पार करने का दस्तक भेजने तथा राठौड सरदार पेशावर से लाहौर और लाहौर से दिल्ली जिस माग से आये उनका विवरण दिया है साथ ही लाहौर मे उपस्थित सरदारो इत्यादि की सूची दी है। सरदारो के बादशाह से दिल्ली मे मिलने, राजकुवरो के लिए जोधपुर राज्य की माग करने, बादशाह द्वारा केवल सोजत व जैतारण देने, सरदारो को यह नामजूर होने, बाद की ओर से इन्द्रसिंह को जोधपुर का राज्य मिलने, महाराजा जसवतसिंह का हवेली खाली कर सरदारो के रूपसिंह भारमलोत की हवेली मे डेरे डालने तथा उस समय उपस्थित सरदारो की सूची इत्यादि घटनाओ का वृत्तात दिया है जो ख्यात म इस प्रकार लिपिबद्ध है—

१ लसकर री तरफ री हकीकत –

'महाराजा जसवतसिंघजी देवलोक हुवा री खबर पातसाहजी न डाक चौकिया पोहती तरै फरमान लिखीयो—सोजत जैतारण बहाल छै महाराज रै बेटो हुसी तरै जोधपुर देसा। अटक उतरण री दसतक नै रु० २००००) बीस हजार रा दिया तिणरी सनद देनै पीसोर नै आदमी रवाने किया तरै मीरखा रै भाई रोहिलाखा सू अरज पोहचाई, मीरखा पहाड मे छ नै राजा री लोक उरो आवसी तो पठाण फिसाद करसी जीण उपरै गुरजबरदार दोडायो मारग मे दस्तक हुवै तो पोछो ल आवसी गुरजबरदार वेठ पीसोर मे महा वद १४ आयो, अटक उतरण री दस्तक पाछो ले गयो, तरै पातसाही गुरजबरदार सू ईतराज हुय दूर कीयो महा वद १० पीसोर मे फुरमान आयो तिण सू सगळा साथ म खुसी हुई। महा वद ५ मीरखा काबल सू पीसोर आयो श्रीजी रा उमराव कोस दोय सामा गया तर घणी दिलासा दीयी नै हकीकत पूछी, पथोली हरराय जमरोद र थाणै थो सो श्रीजी रो बारो हुवो तोई नही आयो नै मीरखा आयां पछ महा सुद ८ न आयो, महा सुद १० रो हितासगढ री फोजदार निवाजबग पाचसदी थो तिणनू हजरतो रो हुक्म आयो नू जाय नै राजा रा लोका नू लेन आवजे मो निवाजबेग मीरखा नू कह्यो—अटक री दस्तक दो [illegible] मीरखा दियै नही तर निवाजबग श्रीजी रा उमराव नू कह्यो—थे नवाब रै मुजरै आवो न गाढ करो जू दस्तक देवे, तरै सारा मीरखा रै मुजरै गया नै

राठौड सग्रामसिंह अरज कीवी—म्हे नवाब री राह देषता था नै हमे निवाजबेग म्हान लेण ग्रायौ छ सो दस्तक दो सो वहीर होवा, रजपूत भूषा मरै छ सो कोई उपाव करसो, तरै नवाब समजियो दस्तक दीवी, महा सुद १३ भोम पाछलो दिन घडी चार थो तरै कूच हुवो, पहलो डेरो कोस एक उपर हुवो, महा सुद १४ नवाब मीरषा सोग भजावण रा मेलिया ६ उमरावा रै सिरमा १ मेवा रा धूम १ गाठ री सरजाम।

महा सुद १५ पालदोरा री सराय कोस ५ डेरा, फागण वद १ कोस ६ डेरा नवाब सर फागण वद २ कोस ७ , फागण वद ३ कोस ७ अटक नावा रै वास्तै पचोली जैकरण नू दरोगा उडदवग मन नावा र वासते मेलीयो सू नावा थाडी छोडी तरै दूजै दिन राठोड सग्रामसिंघ जाय नै नवाडो सारो ले ग्रायौ उडतकबेग डेरै ग्रायौ थो। फागण वद ४ नें फागण वद ५ मूकाम सहाणी, जोगीदास अवदार अधा नू देस नू चलाया—लडाई करजो मती सुल्हा रावजो। फागण वद ७ कोस ४ मधर डेरा, फागण वद ८ कोस ४ झीगर रै नाळे डेरा, फागण वद ६ कोस ५ हसन अबदाल डेरा राह मे हसबल हुकम आयो निजरबेग नै तिण मे लिपीयो—राठौड सूरजमल नू सीहनद था आगे ले आयो। श्रीजी रा फूल पीरोहित कल्याणदास पचोली जसिंघ सादुलोत राठौड साथे रुपीया १००० परच नू दीना था। फागण वद १० कोस ७ परबूजा री सराय डेरा फागण वद ११ भोम मूकाम नीवाजबेग री सराय नै माले पाणी रयात रै पचोली जैकरण नू मनावण मेलीयो थो तरै न ग्रायौ, पछै फागण वद १२ मुकाम राठौड सग्रामसिंह मनाय ले ग्राया ग्रापरै डेरे राषीया। फागण वद १३ कोस ७ पालडी डेरा, वद १४ तथा कोस ७ खेत री सराय, फागण सुद १ कोस ८ पैके सराय, फागुण सुद २ कास ८ गा(खड) ताल श्रीजी रै उमरावा नू फरमान आयो दिलासा री, फागुण सुद ३ कोस ६ रोहोतास ग(ढ), फागुण सुद ४ मेह हुवो सू पाचम ताई मूकाम रवारी राघो साथे रुपीया १२८ गोरखिल मैलिया था सू देनै आसका प्रसाद ले आयो। फागुण सुद ५ कोस ५ नदी बहत डेरा, फागुण सुद ७ परीयारी सराहि, ग्राठम मुकाम फागुण सुद ६ कोस १० दोला री गुजरात, दसम मूकाम, फागुण सुद ११ कोस ५ उजीराबाद डेरा, फागण सुद १२ कोस ७ तलोली डेरा, फागुण सुद १४ कोस ६ नवी री सराय होली री सास्तर कीयौ, फागुण सुद १५ कोस ८ लाहोर हवेली मे डेरा हुवा इतरी साथ लसकर मे थो तिणरी विगत—

सिरदार—

१ राठौड सूरजमल नाहपानोत ग्रासोप रो धणी, पटो रु० ४००००

१ राठौड सग्रामसिंघ जू जारसिंघोत आउवा रो, पटो २८०००

१ राठौड़ चन्द्रसेण सबलसिंघोत पोकरण री पटो ४००००
१ राठौड़ रिणछोड़दास गोइंददासोत पेरवा री पटो ३००००
१ राठौड़ प्रतापसिंघ देवकरणोत बगड़ी री पटो २५०००
१ राठौड़ उदैसिंघ लपघीरोत पटे पाली २५०००
१ रावळ हरीदास महेसदासोत मेहवा रो २२०००
१ रावळ केसरी भारमलोत बापरे बदळे आयो महेवो २२२५०
१ राठौड़ स्यामो सूजाणसिंघोत लवाद पटो २००००
१ राठौड़ वीठलदास वीहारीदासोत कुड़की पटो २००००
१ राठौड़ मोहकमसिंघ जगतसिंघोत वलू दी पटो २००० री
१ राठौड़ वीठलदास गोकलदासोत आलणीयावास पटो १७०००
१ राठौड़ दुरगदास आसावत झवर पटो १७०००
१ राठौड़ अपराज उदावत वीठारो पटो १६०००
१ राठौड़ भारमल दलपतोत उदावत पटो १२०००
१ राठौड़ अनोपसिंघ अजबसिंघोत बाती पटो रु० १४०००
१ राठौड़ मुकन्दसिंघ गोरधनोत जोधो सेणी रेप १३००० री
१ राठौड़ जूझारसिंह राजसिंघोत कूंपावत रजलाणी रेप ८००० री
१ राठौड़ भोजसिंघ गिरधरदासोत चांपावत पटे गागूरड़ो १००००
१ राठौड़ हरनाथ भोवोत नै जसकरण हरीसिंघोत करमसोत पटे
पीवसर रु० १६०००
१ राठौड़ सबलसिंघ किशनसिंघोत कूंपावत पटे कंटालियो १२०००
१ राठौड़ चन्द्रभान द्वारकादासोत जोधो पटे पाचलो रेप ६०००
१ राठौड़ अचलसिंघ जाकरणोत जोधो पटो गयो
१ राठौड़ हरीसिंघ मोहकमसिंघोत चादावत रेप ७०००
१ राठौड़ हरीसिंघ महेसदासोत चांपावत पटे बिराणी ५०००
१ राठौड़ महेसदास नाहरखानोत रेप ६०००
१ राठौड़ करमसेण माधोदासोत कूंपावत पटो राणावास रेप ७०००
१ राठौड़ सिवदान वीठलदासोत चांपावत पटे हरीयाढाणी १२०००
१ राठौड़ विजयसिंघ मोहणदासोत पटे मेहवचो थोभ ६०००
१ राठौड़ होदुसिंघ सूजाणसिंघोत पटे नाहरसर रेप ८०००
१ राठौड़ इन्द्रभाण उदैभाणोत जैतावत पटे माढो रेप ६००० री
१ राठौड़ हरनाथ केसोदासोत रेप ६०००

१ भाटी जैसिंघ रामोत पट गाव रामपुरो रेख रु० १५००० री
१ भाटी भीव रुघनाथोत
१ भाटी उदैभाण केसरीसिंघोत पट पजटला रेख ८००० री
१ सूरजमल नरहरदासोत रेख ५०००
१ भाटी सबलसिंघ हरदासोत रेख ५०००
१ उहड अपराज जगनाथोत पटे गाव वाघावास रेख रु० ६०००
१ गाड संग्रामसिंघ हिरदैनारायणोत रेख १०००० री
१ रिपमीदास नाथावत पाप मडला रेख ५००० री
१ म ११ जगतसिंघ बिजैसिंघोत पट गाव अलतवो रेख ६००० री
१ राठौड तुलछीदास मेघराजोत तोग झेले पेटीयो बारगीर पावतो
१ ब ११ बिसनदास माधोदासोत बाप रेख रुपीया ५००० री
१ दियणी अलीपा पट गाव बूडपीयो ३००० भार घणो पावतो
१ मिरजो बेहरवर अजमेरी धारो देस री सीप कर नै गया थो सो हजूर रा साथ मेलो पवर सूणी तरै पूठे आयो वडो चाकर थो मास १ रा रु० ७०० पावतो
१ बारट आसो नाथावत चारण
१ सादू सूरजमल नाथावत चारण
१ कैसरीसिंघोत भीवोत चारण
१ जोखू जैसो
१ मडलो केसरीसिंघ करणात भोजासर रो

४९ कामदार

१ पचोली हरकीसन रामचदोत दिवाण थो
१ पचोली रुघनाथ बिहारीदसोत पानसामा थो
१ पचोली हरीदास राघोदासोत
१ पचोली अणदरूप करणोत
१ पचोली जगनाथ रामचदोत
१ पचोली हरकरण गोरधनोत
१ पचोली जचद अखेराजोत
१ पचोली जैकरण भगवानदासोत
१ पचोली मुरलीधर टीकमदास रो
१ पचोली सबलसिंघ

१ पचोली सीवराम कचरदासोत
१ पचोली पचाइणदास तीलोकचंदोत
१ पचोली जगतराइ वलूजी रो
१ पचोली हरराई दुलीचदोत चोकीनवेस
१ पचोली जैराम जादोराय रो कानूगो
१ पचोली दीनानाथ वछराज रो
१ पचोली प्राणदराम दुलीचदोत
१ पचोली जैराम अपैराजोत
१ पचोली जगजीवणदास
१ पचोली गोकलदास
१ पचोली वसतराय योद्दा रो मुसरफ
१ पचोली दीनानाथ जगजीवणदासात
१ पचोली उदैकरण दफ्तर लिख
१ पचोली गगाराम भीवाणी जात रो
१ पचोली अजबसिंघ सुन्दरसिंघोत
१ पचोली सोभाचद
१ सिंघवी सूरदास परतापमलोत
१ भडारी भगवानदास
१ भडारी लालचद
१ मूहयो भगवानदास रोकड रो दफ्तर लिखतो
१ वेद राम राई
१ भयो मुकनदास गोपाल्दासात
१ कलो जीवण नै माडो
१ पचोली जाल्पदास
१ पचोली जैसिंघ मादुलोत
१ पचोली आईदान दफ्तर लिख
१ पचोली वाल्मुकनरूपजी रो
१ पचोली ताराचद
१ पचोली उदैसिंघ
१ पचोली गोपीनाथ तीपुरदास रो
१ सिंघवी मोहणदास प्रतापमलोत

१ भडारी पतसी
१ मुहतो अचो बीजावत
१ मुहतो भगवान सीराहीयो
१ पवाड देईदास
१ वेद सामदास
१ वेद सद्दाराम
१ मूकीम मोहनदास

३६ पास पासवान

१ घायल उदकरण बीडा गगाजल मरोगावै
१ आसाईच भागचद कोठार बाग रै
१ गेहलोत जुगराज ढालवदार
१ सा ११ उदैकरण
१ पीची उदैकरण नीसाण तोमरी झालतो
१ गेलोत बाघो ढालवदार
१ घाधन रुपनाथ
१ आसायच भारमल
१ सा ११ राम
१ धाधल जसो
१ पीची मुकनदास कलावत तरवार बधाव
१ पवार नारायणदास सूदापाने
१ गुजर लषमण मयापात्र
१ सा ११ जगनाथ
१ गुजर उदकरण
१ पीची सीवराम
१ आसाईच दुधो
१ षबदार अचो
१ घाघल जगनाथ रसोडे
१ घाधल स्याम
१ घाधल मुकददास
१ धाधू दलो
१ स ११ दयालदास

१ गुजर गिरधर दोडो पासो
१ वानर डूगरसी
१ पलाणियो मनो
१ पल्हाणियो भाटी वालो
१ जादम पीथो महमदाम रो
१ वाघेला नरो
१ गुजर बिसनदास वणीदास रो
१ पवार बिठलदास
१ पलाणियो भेरू
१ नथमल राघादासोत सजपाने
१ स ११ रूघनाथ
१ जोगीदास कुसलावत मोदीपान
१ केसोदास भगवान रो
१ पलाणीयो जोगी
१ वानर चतुरभुज
१ वानर देईदास

२२ विराभण रा साथ

१ व्यास लिपमीचद द्रोणाचारज रो देरासर पटे गाव भागोळाई
१ व्यास जगरूप मुरारदास रो पजानो जोहारपानो हवाले
१ जोसी गगाराम वसता रो
१ जोसी ब्रिदावन काह रो
१ जोसी गगाधर सिवराम रो
१ प्रोहित कल्याण
१ वी० जोगेश्वर
१ सुक्ल भानीदास
१ जोसी धनो अयो कल्याण
१ पाठक
१ व्यास मुथरादास वेद
१ फरसो निरपो गणेस रो
१ मु० ११ भामचद चोतरा रो पोनो
१ तिरवाडी बलराम काह रो

१ जोसी लालो सतीदास रो
१ स ११ लपो किसोर व्यास कलो जरजरपामा रो
१ त्रिवाडी दयादेव सुपदेव चुनभुज
१ जो १ मुरलीधर विद्रावन रा
१ जो १ रामसिंघ
१ चूरा घडीयाली हरदत धरणीधर
१ त्रिवाडी रिणछाड पोकर रो

३१ हीडागर

१ राठौड देईदास हजूरीया रो दरोगो
१ राठौड भोजो झारावरदार
१ ईंदो गोकल परात री रोटी दव वरकंदाजा मे
१ नथू नगारपाने
१ मघोलीया हरनाथ तारतपाने
१ चीतारो नगो वदर रो
१ पेस दुर्बीदरपान
१ जलेबदार बादसाह मिरधीव गेर
१ हरनाथ दाढी पासी
१ धोबी मोटो
१ गोड भगवान तोपपाने
१ कबूतरबाज साह मेहमद
१ जलेबदार मीयासाह
१ चो रूपो मोहण री पासी दोढी
१ चीतारो नारण बाघावत
१ छडीदार मीरधो मान तूलै
१ जलेबदार मीरधो पीरपा डूगर दोढी वेसै
१ दरजी काहो कला रो
१ चीतारो करीम
१ सैंगवेला
१ छडीदार अली मेहमद
१ प ११ नारायणदास दोढी पासी
१ वेद अपी दाढी सुधारै

१ चीतारो नाथो
१ ग ११ रूपो रतासी रो
१ छड़ीदार पान महमद
१ चारण हरावत पासी दोढी
१ वेद दानो वीतो करतो
१ तबोळी दलो
१ स ११ जोसी भोजावत
१ डूगर दोढी वसे
१ वजि लोक
१ वधिलो नव गाव वधोला रो वासणी
१ वा ११ देईदास गावती
१ पु ११ वीठलदास
१ वापेलो भगवान सेउद रो
१ धा० डूगरसी गावेती
१ मागलियो वाघो गावेती
१ गोड वाहो चोथा रो
१ पडीयार रूपो पेता रो
१ पीची भागचद
१ धाईभाई गिरधर
१ चो ११ रामो नारायण रो
१ बस कल्याण भगवान रो
१ व ११ चुत्रभुज
१ पीची नरसिंघ गावेती
१ तीवडकीयो केसोदास वलू रो गावेती
१ वानर रामचद्र
१ कल्याण वीरदास रो
१ व ११ हरीदास रो
१ पचोली भानीदास भोजा रो
१ चे ११ रिणछोड गोपाल रो
१ चे ११ जगनाथ बदा रो
१ पचोलो ठाकुरसी करमसी

१ चे ११ रामा नारण रो
१ तू ११ गिरधर ईसर रो
१ दो ११ दुरगो रामदास रो
१ पडीयार आसो वीका रो
१ गोड राघो राम रो
१ सोळपी रुघनाथ
१ लपजी भीगी रो मारग म मूवो

११ मुसलमान हाजर
१ दिलदार बेग दिली मे गयो
१ हसन बेग पेछोर मे गयो
१ सेर दिल बेग
१ बहादर बेग
१ म मारब
१ मूस मी नाजर
१ ईलत फात पाजी
१ उमेद पोजो
१ माकूल पोजो
१ साही बपा मिसरी रो
१ मुराद बेग सुरताण बेग रो

५ पडदार
१ केसरपा
१ मूरादपा
१ नसीरपा
१ सवाज
१ ताज

५ नाईक
१ हबीब पा पीलची
१ लतीफ महमद
१ जीवण साहीबपा
१ सूरजपान नरो
१ लालू पीवा रो

पिसोर मू मावता फागण सुद १५ लाहौर हुवेली डेरा हुवा नरुकीजी र कवर होण री आमद हुई जीण मू मुकाम मीया चैत वद ४ बुधवार पाछली रात घडी ७ मो तिण वेळा राणीजी जादमजी रै कवर महाराज अजीतसिंघजी सत मासीया जनमिया सिन्यासी रिघसिघ पुरी हुररांम पुरी रो चेलो अकप्पय हो गुलाजजी रा हुक्म था गोरणटी लै हुय नै समत १७३५ रा भादवा वद ६ पसोर मे आयो ।

राठोड दुरगदासजी मापे श्री जी नू कह्यो—मोनू हुक्म है हू पार पेट जनम लेसू मातू माटी दिरावो, निपे दरसण नू आवो सू दरसण नू तो पिंडा न गया न दुरगदासजी न मलिया सो घणे उछाव सू रिघसिघ पुरीजी नै समाध दिराई दुरगदासजी ने कैयो जादमजी र पेट आसू भभूत रो गोटो पोथी माळा सू पीछे स माग लेसू । महाराज अजीतसिंघजी जनमीया पछ घडी १ पल ४० सू नरुकीजी रै कवर दलथभणजी हुवा नोबत बाजी, देस नै बधाई देण सारु रेवारी राघो गोरधने न मलिया चैत वद ५ पगलीया वारो सुलछा साथे मेलिया कासीदा री जोडी पातसाहजी री हजूर मलो मीरधा बनै सग्रामसिंघजी रा कासीद मेलिया ।

जनम हुवा री मुजाई हुई तिणरी विगत

वाट	गुळ	घृत[1]	
११	८	६	चैत वद ५ वीसपतवार हजूर री तरफ सू
१४॥	८॥	६	वद ६ सुकर जादमजी री तरफ सू
१५	८॥	६	चैत वद ७ सनिवार नरुकीजी री तरफ सू
१२	८॥	५	चैत वद ८ राठोड सूरजमलजी री तरफ सू
१२	८॥	५	चैत वद १० राठोड प्रतापकरण देवकरणोत री तरफ सू
१२॥	७॥	५	चैत वद १२ राठोड उदैसिंघ लपधिरोत री तरफ सू
१३	८॥	५॥।	चैत वद ९ राठोड रिणछोडदास गोयददासोत री तरफ सू

१ ‿ मण का चिन्ह है ।

तरै फुरमायो मुहम राजी छै परच मत कीजो म्हे जोधपुर राजा रा बेटा नै देसा

सोनत, जतारण वगरा महाराज रा उमरावा कबूल नही कीया तरै पातसाहजी फुरमायो राजा रो हसम न खजानो सभळावो तर पचोली कसरीसिंघ खजानो हसम सभळायो न कामत कराई पचोली रुघनाथ बिहारीदासोत पानसामा यो साई कसरीसिंघ रै नामरू पातसाही कचेडी म मताह समलाय कीमत कराय नै मू पता पचोली केसरीसिंघ उठै हीज म्हनो कपडा जूहार हाथी, घोडा, ऊंट, तोपा, कबाण, गाडीया, वगरे कारखाना सारा सभळाया, दवखाना रा गाडा सभळाया, जगनाथ रामचदोत काजी मू बात बणाय आयो मारवाड रा परगना राजाजी रा बेटा न सगळा हो दवो नै छाईम लाप रु० २६००००० म्हे पसकसी रा दसा तिण म महारो माल पूगा हुवै सू मुजरै दणो बात बण गई थी डेरे आय नै जगनाथ बात कीवी, सो पचोली रुघनाथ पानसामा थो तिण रै दाय नही आई मा राजी न नेम आयो म्है इण बात म नही छा जगनाथ री कयां मत मानजो तर बात बणी नही। पछै देस री दौलत रो भरम केसरीसिंघ न बतायो तर दौलत री पूचल हुई पातसाहजी रै दिवाण कह्यो—देस रा नै लसकर रा सारा कामदार हजूर लावा सो आप आपरो जुबाब कर तर केसरीसिंघ कहयो सारो ही मुदो मालका मोनू था सो सारा म्हारा हुकमी था पूछसो जिण रो जबाब हू देसू बात सू सिंघवी भडारी मुहणोत, मूहता, व्यास सारा री छुटको हुवो (मुक्त हुए) केसरीसिंघ न कैद कीयो, सिंघवी सुदरदास इद्रसिंघजी री मारफत पातसाहजी सू मिळ गयो थो माल बतायो, उमरावा मुतसदीया सू भगडिया थो दिन २५ पचीस केसरीसिंघ कद म रेयो तसती दिपाई तिण सू जेठ सुद २ जेहर पाय मूवो, तरै कामदार वकीला सूधा नाम गया। बगस सासतपा बहादुरपा मोपळी अरज कीवी पिण पातसाहजी मजूर न कीवी नै महरबान हाय राव अमरसिंघजी रा पोता राजाई इद्रसिंघ रायसिंघोत ने दुतिक जेठ वद १२ सोम जोधपुर इनायत कीयो। हाथी, घोडा, सोना री सापत सू सिरपाव मोतिया री जोडी पुणचीया री जोडी, मोतिया री माळा दुगदुगी, तरवार, पजर, नौबत इनायत कीया दिलो री हवेली म महाराज जसवतसिंघजी रौ साथ हो त्या नू हुकम पोहोतो हवेली पाली कर दवो तरै हवेली पाली कर दीवी नै राजा रूपसिंघ भारमलोत किसनगढ रा री हवली म जाय रह्या।

म्हाराज जसवतसिंघजी रो इतरो साथ दिली म राठौड रूपसिंघ भारमलोत रा हवली मे थका सवत १७३६ रा सावण वद ३ ताई।

या मुजरा कीयो मोर १ रुपीया ६ निजर रा दीया हकीकत पूछी दिलासा दीवी। वैसाप सुद ५ सनवादली सू कूच कर दिन घडी १८ चढता दिलो म हवली दापल हुवा वैसाप सुद ७ साम दसरी साथ भाटी रुघनाथसिंघ पचोली कसरीसिंघ वगर बादरपा रा वेटा नवसरीपा साथै आया सू राजा र तळाव डेरा जुदा कीया, दस रो साथ सुद १३ कवरा रै पग लागो, बिसाव सुद १३ रवि (रविवार) बहादुरपा र बेटे दस रा साथ रा न् पातसाहजी री हजूर ले गया लाल कठेहडा म मूजरो कीयौ घडी ११ आथी ताई १ वसाप १८ देसरा नै लसकर रा सगळा उमराव मुजरे गया जणा दस आम पास मे गया न जणा २ राठौड रिणछाडदास नै सूरजमल न बे आम पास म बुलाय न सिरपाव दिया। ल्हसकर रो न देस रौ साथ भला सामान सू घणी कुसोस मू दिली मे दारु चवडे पीवै ने अछक थका रव न बडरा रा साथ पातसाहजी र आय पास मूजर जाव, दीवाण वपसी बा मारूल पातसाही अमलीईबारे भळे मेथी राठोड रिणछाडदास सूरजमल दुरगदास वगर सारा असतपा दीवाणा ने सिरविलदपा वपसी रै हमसा जावता सू इणा ने एक दिन कहया—पातसाहजी सोजत जतारण राजा रा वटा नू दव छ मा असवार ५०० पायस सू हजूर री चाकरी करी न राजा रा वडा उमराव है त्या नू जूदा मुनसव म्मा सो आ बात रजपूता मजूर नही कीवी, कह्यो—जिनगै ही दवा मो राजाजी रा वटा न दवौ म्हे सगळा बाट पासा नै राजा रा वेटा रा चाकर थका पातसाह री हुकम होसी तठ चाकरी करसा ओ मचकूर घणा दिन रह्यो महाराज रा उमरावा वहादुरपा न अजमर लिपीयो थे महासू कोल करने उतरा थोन कबूल कराया था सू अठ तो आ सूरत छै, माहसू कोल कीयौ थो महाराज र वटा हुवा जोधपुर देसा तर नवाब बहादुरपा पातसाहजी नै अरज लीयी जसवतसिघजी रा बेटा नै जोधपुर दिरायौ चाहीज म्हे तो हजरत रा फुरमावण सू इणा नू वचन दीयो था सू हजरत इणा न जोधपुर नही देसो ता हू मनसब छोड देसू हुकम हुवो तो हजूर आय मालम वह तर पातसाहजी जठ सुद ८ काबलीपा नू फुरमायो बहादुरपा नै लियो उठ हीज रहै तरै काबीलीखा अरज करी बहादुरपा दलगीर होसी दिपण सू सोवा छोड उरो आयो था सू मनसब छोड उरो आवसी घणो केयो तर फुरमाया बहादुरपा नै लियो छडे हाथ हजूर आव जठ सुद ८ फरमाण चलायो सा दुतिक जेठ व ११ वहादुरपा दौली आय हजरत र पगा लागो पातसाहजी जोधपुर दण री अरज मजूर नही करी।

राजा अनूपसिंघ करणीसिंघोत बीकानेर रा राजा मानसिंघ रूपसिंघोत राजा रामसिंघ रतनात इणा रा उनीला जोधपुर दि(रावण) सा(ह) अरज कीवी

तरै फुरमायो मुहम साजी उँ परच मत कीजा म्है जोधपुर राजा रा वटा नै देमा

सोजत जैतारण वगैरा महाराज रा उमरावा कबूल नहीं कीया तर पातसाहजी फुरमायो राजा रो हसम न पजानो सभळावो, तरै पचोली केसरीसिंघ पजानो हसम सभळायो नै कामत कराइ पचोली रुघनाथ बिहारीदासोत पानसामा थो सोई केसरीसिंघ र नामल पातसाही कचेडी मे मताह समलाय कीमत कराय न मू पता पचोली केसरीसिंघ उठै हौज म्हनो कपड़ा जूहार हाथी घोडा, ऊंट, तोपा, दवाए, गाडीया, वगरे कारपाना मारा सभळाया न्वसधाना रा गाडा सभळाया, जगनाथ रामचदोत काजो मू यात वणाय भ्रायो मारवाड रा परगना राजाजी रा वटा नै समळा हो देवो नैं आइम लाप रु० २६००००० म्है पसकसी रा देसा तिण म महारो माल पूगो हुवै मू मुजरै दणो बात वण गई थी, डेरे भ्राय न जगनाथ वात कीवी, सो पचोली रुघनाथ पानसामा थो तिण र दाय नहीं आई मा काजी न कैय आयो म्है रण वात म नहीं छा जगनाथ री कमा मत मानजो तर बात वणी नहीं। पछै देस री दौलत रो भरम केसरीसिंघ न बतायो तर दौलत रो दूचल हुइ पातसाहजी रैं दिवाण कह्यो—देस रा नै लसकर रा सारा कामदार हजूर ल्यावा सो आप आपरो जुबाव कर तरैं कसरीसिंघ कह्यो सारो ही मुदो मालका मानू थो सो सारा म्हारा हुकमी था पूछमो जिण रो जबाब हू देसू वात सू विधवी, भडारी मुहणोत मुहता व्यास सारा रो छुटका हुवो (मुक्त हुए) केसरीसिंघ न कैद कीयो, सिमवा सु दरदास इन्द्रसिंघजी री मारफत पातसाहजी सू मिळ गयो था माल बतायो, उमरावा मुतसदीया सू भगडियो थो दिन २५ पचीस कसरीसिंघ कद म रेयो तसती दिपाई तिण सू जेठ सुद २ जेहर पाय मूवो, तरैं कामदार उकीला सुधा नास गया। बेगम सासतपा बहादुरपा मोपळी अरज कीवी पिण पानसाहजी मजूर न कीवी नै महरबान हुय राव अमरसिंघजी रा पोता राजाई इन्द्रसिंघ रायसिघात न दुतिक जेठ वद १२ सोम जोधपुर इनायत कीयो। हाथी, घोडा, सोना री सापत सू सिरपाव मोतिया री जोडी पुणचीया री जोडी, मोतिया री माळा दुगदुगी, तरवार पजर, नौबत इनायत कीया दिली री हवेली म महाराज जसवतसिघजी री साथ हो त्या नू हुकम पोहोतो हवेली पाली कर देवो तरैं हवेली पाली कर दीवी नैं राजा रूपसिंघ भारमलोत किसनगढ रा री हवली म जाय रह्या।

म्हाराज जसवतसिघजी रो इतरो माथ दिली म राठोड रूपसिंघ भारमलोत रा हवेली मे थका सवत १७३६ रा सावण वद ३ ताई।

८१८ सिरदार

पिंडा	असवार	प्रासामी
१७	२२८	लसकर रा साथ रा
४	६०	पाप कूंपावत
१	४०	राठोड़ सूरजमल गाहरणागोत
१	८	राठोड़ कूंआरसिंघ राजसिंघोत काम प्रायो
१	६	राठोड़ महनदास माहरवानोत काम प्रायो
१	६	राठोड़ हिंदुसिंघ सुजाणसिंघोत काम आयो
१	०	राठोड़ मोहणदास धनराजोत काम प्रायो
४	६०	
३	५६	पाप जोधा
१	३०	रिणछोड़दास गोइन्दासोत पातसाही चाक हुवो पछ काम प्रायो
१	२०	वीठलदास वीहारीदासोत काम प्रायो
१	६	चद्रभाण द्वारकादासोत पगारोत गाव सानहुरी लड़ाई म काम प्रायो
३	५६	
२	२८	पाप मेड़तिया
१	२०	मोहकमसिंघ जगतसिंघोत घायल हुवा
१	८	स्यामसिंघ सुजाणसिंघोत मौत मूवो तिण रो साथ यो
२	२८	
१	१२	पाप उदावत
१	१२	भारमल दलपतोत काम प्रायो
१	१७	पाप करणोत
१	१७	दुरगदास ग्रासकरनोत घावा पड़ीया
१	४	पाप मंडला लिषमीदास नाथावत काम प्रायो
१	७	पाप उहड़ अपराज जगनाथोत

४	३८	पाप नाटी
१	१५	जसिंघ रामोत वदल सावण वद १ गयो
१	१०	जीव रुघनाथोत सावण वद १ गयो
१	८	उदभाण केसरीसिंघ काम आयौ
१	५	सकतसिंघ हरदासोत काम आयौ
४	३८	
१७	२२५	जुमले २४२
१०७	८६६ देसरा साथ रा	
पिंडा	असवार	आसामी
६	३५	पाप कूपावत
१	१०	रुघनाथ गोरधनोत
१	१२	महासिंघ जमिंघोत काम आयौ
१	५	षडगसिंघ फतसिंघोत
१	४	मोहणदास धनराजोत
१	३	जतसिंघ हमीरोत
१	१	चुतरो भावसिंघोत
६	३५	
६	३०	पाप चापावत
१	१६	रुघो राजसिंघोत
१	५	महासिंघ केसरीसिंघोत
१	१	महासिंघ जोगीदासोत
१	३	कल्याणसिंघ रुघनाथोत
१	४	नाहरषान भुयरादासोत काम आयौ घोडो वारगीर पावतो
६	३०	
१३	६१	पाप जोधा
१	८	अपेराज ह्रिदनारायणोत
१	७	उदभाण रुघनाथोत
१	५	भूभारसिंघ कुसलसिंघोत

१	८	मू ना ?सोमिघात वगारो काम आयो
१	८	महासिंघ जगनाथात काम आयो
१	८	जगतसिंघ तरनात काम आयो
१	४	ईदास हरनाथात
१	८	प्रिथीराज वानूवात
१	८	दीप कसादासोत काम आयो
१	५	प्रिथीराज वीरमदयात काम आयो
१	४	रामसिंघ स्यामसिंघात काम आयो
१	४	जोगीदास कल्याणदासात
१	२	इन्द्रभाण हिरदनारायणात
१३	६१	
११	६५	पाप मेड़त्या
१	१०	भापरसिंघ गापालदासात
१	१७	वीठलदास गोरधनात
१	६	पीरागदास डूगरसीयोन
१	५	लाडपानगो कलाणदासोत
१	५	चुतभुज विजसिंघोत
१	५	किसनसिंघ वादरसिंघोत काम आयो
१	५	नाथा दईदासोत
१	८	भीव कसरपानोत काम आयो
१	४	भीव करणोत
१	३	सूरसिंघ द्वारकादासोत
१	१	जगरूप भीवोत
११	६५	
१३	६८	पाप उदावत
१	३०	रूपसि... ...ति
१	६	गो...
१	५	साद...
१	५	रुघना...

१	३	ग्रासकरण वाघोत काम ग्रायो
१	३	जसू ग्रजवसिघोत काम ग्रायो
१	३	किसनराम मू दरदासोत
१	२	फरसराम मूरजमलोत
१	२	सिव साहिबपानोत
१	२	कन्होराम सूरदासोत
१	१	स्यामदास मनोहरदासोत
१	१	मानसिघ जगमालोत
१	५	गोरधन मनरामोत काम आयो
१३	६८	
३	३	पाप करनोत
१	१	भीव राघोदासोत
१	१	दलपत राघादासोत
१	१	वलू जसिघोत
३	३	
७	२२	पाप जतमाल
१	४	मूकददास पतसियोत
१	५	भेरुदास पतसियोत काम आयो
१	५	सुरताज ग्रमरावत
१	३	जोगीदास जसवतोत
१	२	पूरमल ठाकुरसीयोत
१	२	जगतसिघ सेहसमलोत
१	२	डूगरसि लाडपानोत काम ग्रायो
७	२२	
६	१४	पाप पातावत
१	३	जोधो भगवानदासोत
१	३	राजसिघ ईसरदासोत काम आयो
१	२	गोरधन जगनाथोत

१	२	भगवानदास गोरधनोत
१	७	हमराज माद्न्नामात पामाड़ सुद १४ गयो
१	२	नाहरखान तजमालोत
६	१४	
३	५	पांच मड़ला
१	७	उदसिंघ दईदासोत
१	२	खेमसीसिंघ करणोत
१	१	मघराज हरीदासोत
३	५	
१	१	राठोड़ कुसलसिंघ सबलसिंघोत नरो असाढ़ सुद १४ गयो
१	७	राठोड़ सू दरदास हरीदासोत भाजराजोत काम आयो
१	३	राठोड़ रूपकल्याणदास नैं भारमलोत
१	७	राठोड़ भोजराज जगमालोत बीदावत
१	२	राठोड़ परबतसिंघ सहवाखानोत पुरबीयो
३३	१०७	पाच भाटी
१	३८	रघनाथ सुरताणोत काम आयो
१	३	अपराज रघनाथोत
१	४	नारायणदास सूजावत
१	३	गिरधरदास हरदासोत काम आयो
१	३	किसनदास भीवोत
१	३	आनंद साहुलोत
१	३	द्वारकादास भाणोत काम आयो
१	३	साहाबखान भिवोत
१	३	राजसिंघ मोहणदासोत
१	३	गोईददास नाहरखानोत
१	३	राईसिंघ मोहणदासोत
१	३	सबलसिंघ फरसरामोत
१	३	जगनाथ विठलदासोत काम आयो—हजूरीया म
१	२	भावसिंघ द्वारकादासोत

१	२	उरजन भीवोत
१	२	करण मानसिघोत
१	२	रतनसी माधादासोत
१	३	केसरीसिंघ फरसरामोत
१	२	सबलसिंघ ग्रासकरणोत आसाढ वद २ गयौ
१	२	मनोहरदास उदसिंघोत
१	२	गोरधन लषमीदासोत
१	२	स्यामसिंघ सु दरदासोत
१	२	जोगीदास नरहरदासोत
१	१	पीथो पूरावत
१	१	सकतसिंघ कल्याणदासोत काम ग्रायो
१	१	द्वारकादास मानसिंघोत
१	१	ग्रपराज जगनाथोत
१	१	सिवदास नरसिंघदासोत
१	१	नाहरषान दयालदासोत
१	१	हेमराज नरावत गयौ
१	१	धनराज बीकावत काम आयौ
१	१	जोगीदास करमसोत
३३	१०७	
१	३५	झालो भावसिंघ रायसिंघोत रोईठ री पटो राणा पदवी थी
१०७	४६६	
१२४	६६४	जुमले ८१८

४३ फुटकर राजपूत वेस रा साथ माहला

पीडा	ग्रसवार	
१	१	बेस रामचद जगमालोत ऊट चढण नू
१	१	सापलो मनौ हररूपस्योत सावण वद २ गयो
१	४	चू ग फतेसिंघ पिथीराजोत
१	२	सोनगरो विठलदासोत दुरगदासोत
१	३	चगे मुरारदास हरीदासोत

१	२	चौधरी प्रगराज कल्याणदासोत काम आयो
१	२	म ११ पीरागदास नतस्यात
१	२	म ११ पारथीराज दयालदासोत
१	३	म ११ वीद्रावन दवकरणोत
१	१	हुल कुम्भारसिंघ नानीगसोत सावण वद २ गया
१	१	हु ११ सादुलसिंघ राघादासोत
१	१	हु ११ जैतसी सावण वद २ गयो
१	१	गौड़ तूसला
१	१	पतस्यात नाथा नरहरदासोत
१	१	पतस्यात वीजा वलुवात
१	१	पोपाड़ा दलपत आसावत
१६	२७	जुमले ४३

११ चारण लसकर रा साथ माहला

पिंडा	असवार	
१	२	सादू सूरजमल नाथावत पकणाणो सू पछ मूआ दस रा साथ माहला
१	२	चारण ईसर
१	२	सादू जोगीदास
१	१	विठु गोविन्द माधावत
४	७	११

१ मीया फरासत पोजो देस रा साथ माहला

१५ कामदार चारगीर सिरकार सू पावे

१० काईथ

२ लसकर रा साथ माहला—

१ पचोली पचायणदास तिलोकचदोत

१ पचोली जगतराय वलूवोत

१ पचोली हरराई हुलीचदोत काम आयो

१ पचोली अनदराम हुलीचद

१ पचोली मुरलीधर तीकमदासोत

१ पचोली सबलसिंघ गंगारामोत सावण वद १ गयो
१ पचोली जगजीवनदास गोरधनोत सावण वद १ गयो
१ पचोली उदैकरण गोरधनोत सावण वद १ गयो

२ देस रा माहला
१ पचोली सिवदास बिहारीदासोत
१ पचोली सिम्भादास

२

५ वाणीया कांमदार
३ लसकर साथ रा
१ भंडारी भगवानदास रायमलोत भंडारी
१ भंडारी लालचन्द सुपमलोत
१ मुहता भगवानदास कीतावत सावण वद १ गयो

३

२ देस रा साथ माहला
१ सिंघवी नयमल सुपमल रो प्रसाद म गयो
१ कोठारी सिंहमल मोदीखान रो

२

३ फुटकर
१ लसकर साथ माहलो
१ मुहतो रूपो बीभावत ऊंट चढण नू सावण वद २ गयो
२ देस रा साथ माहला
१ मुहतो बिसनदास केसोदासोत काम आयो
१ मुहतो धनराज मूजावत

२

१४ ब्राह्मण रो साथ चाकर पाव
६ लसकर रा साथ माहला
१ व्यास लिखमीचंद द्रोणाचारज रो
१ व्यास जगरूप मुरारदास रो गहणो ले गयो

१ निवाडी बलराम कान्ह रौ
१ जोसी लालो सतीदास रौ
१ जोसी गगाराम बसता रौ
१ जोसी गगाधर सिवराम रौ मोहल रौ चाकर
१ चुरा हरदत गोरधन रौ
१ छाणी फरसो गणेस रा निरपो
१ मु ११ भागचद पिराग रो सावण वद १ गयौ

६

५ देस रा साथ माहला

१ व्यास श्री पत नाथावत सावण वद २ गयौ
१ सो १ रूपो भलू रौ
१ से ११ केसो
१ जोसी विंद्रावन कल्याण रौ
१ छागाणी देवजी मादीपान चाकर

५

१५ पवास पासवान वारगीर पाव

५ लसकर रा साथ माहला
१ गहलात बाघो मनोहर रौ ढाला रौ भार हवालै
१ साहणी उदेकरणतागा रौ
१ अबदार अपो राधा रौ असाढ सुद २ गयौ
१ सोभावत जागीदास कुसलावत मोदीपानो हवाले दोढी हवाल की असाढ सुद २ पाभडो ओढाई
१ धाधीया भेरू आनद रौ पलाणीयो वारगार पावै
१० देस रा साथ माहला
१ आसाईच जगनाथ जसावत भागचद गयौ तर वागा रो कोठार सू पीया थो असाढ सुद २ गयौ
१ पीचो सुदरदास   घर रो घोडो रापतो, मुकुददास गयो तरै तरवारा रो कोठार सूपीयो थो असाढ सुद ८ गयो।

२ ढाला रो कार हुवाले
१ गेहलोत धनराज भूतरा रो
१ गहलोत बीठलदास मापो रो

२
१ पोचो नरसिंघ सलेपान
१ सहाणा जोगीदास आएदात

२ फौजदार
१ मधराज जगावत
१ रामचद जगावत

२
१ मददार पूहाए सादो सादुल रो
१ घा ू हरदास उरजन रो

१०

१५

६ चौधड महीनदार गावेतो वारगोर पावे
दस रा साथ माहला
१ देवराज वरसिध परबतोत महीनदार
१ मागलियो भापत कमावत कोठार रा पोहराईत सावण वद १ गयो
१ म ११ सामो माधा रो ईसद रो कोठार चौकी
१ मागलियो चदो कान रो गाव वद रो कोठार चौकी
१ राठोड भावसिंघ उदावत बेठवासियो महीनदार
१ राठोड फतेहसिंह गोरधनोत राणावत घर रो ऊट घो पछै घोडो
वारगोर भाटी रुघनाथजी दिराया

६

१० रवारी ऊट वागोर
देस रा साथ माहला
१ राघो रामदास रो

१ तेजो रायसिंह रासावत
१ सूजो देदो वीरम रो
१ जसो नितावत
१ सुरताण नोज भाखर रो
१ देईदान वेरसल सागावत
१ राघो दिदावत ऊट २ ले गयो मसाढ सुद १०
१ राणो
१ ग्रानद हीगोला रो
१ कूंभो पाता रो

१०

१५ मुसलमान वारगीर पावे
८ लसकर रा साथ माहला
५ घोजा
१ ममारथ
१ मुसकी
१ इलफत
१ उमद
१ माकूल

५

१ दिलदार वेग हजूर मया रो चाकर
२ पडदार छडीदार
१ पडदार सेहवाज नाईया रो
१ पडदार नसीर केसर रो

२

७ दस रा साथ माहला
१ अलेवरदी अवदाल रो
१ दलेल दिल
१ सीदी नालब
१ पीदरपा वसरू

१ वेग महमद
२ छडीदार
१ न्यामत तूलो घर रौ घोडो
१ अली मेहमद घर रौ घोडो
——
२
——
७

५ हौदागर वारगीर पावे
१ लसकर रा साथ माहला
१ गोड भगवान चोथ रा तोपपाने
४ दस रा साथ माहला
१ अनद सामदास रा तबोलपान
१ भ ११ मनो सिलेपान पासो बगतर जापोडो लिय हालतो
१ चे ११ तेजा केसा रा सिलेपाने
१ चे ११ जेता केसा रौ
——
४

४१ बरकदाज वागीर घोडा चढ़
८ लसकर रा साथ माहला
१ तू ११ गिरधर ईसर रौ
१ गोड का ह्लो चोथा रौ
१ भाटी वील्हो
१ नायक जीवण साहबपा रौ
१ वेहलीम चाद समसपा रौ
१ पडदार ताज मेहमद पूब महमद रौ
१ बानर देईदास
१ बानर रामचद
——
८
३३ देस रा साथ माहला
१ राठोड सुन्दर रायपाल रौ

१ म ११ वहादुर
१ राठोड जोवो नारायण रो
१ दहीयो रिणछोड
१ पीची वीजो
१ ग्राघोलियो कमो सादा रो
१ इनायतपा पीदरपा रो
१ तुळछो
१ मीर हुसैन कासमीरी
१ पवार करमसी
१ चे ११ मनाहर
१ मू ११ जूठो वाघा रो
१ सापलो ग्रनद
१ पचोली राजसी
१ पडीहार जगनाथ
१ पवार जोधो
१ द ११ सेपो
१ भायलईसर
१ लसकर रो अबदाळ वेग रो
१ हयातपा साहिबपा रो
१ मिरजो चाद
१ सप जलाल
१ उहड जीवो
१ पडीहार जोधो
१ ग्राहडो वलो लीपमीदास रो
१ तू वर रुघो
१ सापलो तेजो

६ नाईक

१ लाडसा चादसा रो
१ सलेमान सुलतान रो
१ सादुलो ग्रबदुला रो
१ दोस मेहमद दाउद रो

१ केसरया सेषर रो
१ सिकदर सुरताण रो

६

३३

४१
(कुल) २६७

(८) हवेली से मुकन्ददास पीचो के साथ दोनो राजकुवरों को गुप्त रूप से निकालने तथा सिरोही जाते समय रास्ते में दलथभ की मृत्यु का उल्लेख है।

(९) बालक अजीतसिंघ को जयदेव नामक ब्राह्मण को सौंपने का उल्लेख इस प्रकार है—

" गाम कालदरी में पुसकरणो बिरामण जैदेव रहे सो वही मातबर नैं उण रै लुगाई पिण वडी पत भरता (पति भक्त) सो जदेवजी नैं सारी हकीकत कहने अजीतसिंघजी ने सू पीया (अजीतसिंहको) जदेवजी री बहू आपरो दूध पाय मोटा किया।

(१०) शाही सेना का वि० स० १७३५ श्रावण सुदि ३ को राठौडो पर आक्रमण होने, जसवंतसिंघ की रानियों का मरदाने कपडे पहिन लडकर मर मिटने तथा अनेक राठौड सरदारों के मारे जाने का उल्लेख है।

(११) छोटी छोटी टुकडियो मे विभक्त राठौड सरदारों द्वारा मेडता, सिवाना तथा जोधपुर पर अधिकार करने पर बादशाह के चिन्तित होने, तहव्वरखा द्वारा पुष्कर मे उदावत व मेडतिया राठौडा के साथ वि० स० १७३६ माह वदि ११ युद्ध होने का उल्लेख है युद्ध में लडे राठौड सरदारा की सूची दी है।

(१२) इन्द्रसिंह का जोधपुर किले मे प्रवेश होने इत्यादि घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया है—

'सवत १७३६ रा भादवा सुद ७ मगलवार तीजा पोहर रा घणे जलूस था महाराज इन्द्रसिंहजी जोधपुर गढ चढिया नौबत बाजी इन्द्रसिंहजी इतरा थोक किया देहरा पडाया, गाया बदहुई गढ म्हेल पाडीया, दिषण दिसा ने बुरज री तरफ दोढी कीवी, सिणगार चौकी छोटी कीवी, जोधपुर रे लागा क्ने दोय बार करने रुपिया ३७००० लीना, श्री आणदघनजी ठाकुरजी ने धन रे लालच

१ म ११ वहा
१ राठोड जोव
१ दहीयो रिण
१ पीची वीजो
१ ग्राघोलियो
१ इनायतपा प
१ तुळछो
१ मीर हुसैन व
१ पवार करमस
१ पे ११ मनोह्
१ मू ११ जूठो
१ सापलो ग्रनद
१ पचोली राजस
१ पडीहार जगना
१ पवार जोघो
१ दे ११ सेपो
१ भायलईसर
१ लसकर रो अबद
१ हयातपा साहिबपा
१ मिरजो चाद
१ सेप जलाल
१ उहड जीवो
१ पडीहार जोधो
१ ग्राहडो वलो लीपमोदा
१ तू वर रुघो
१ सापलो तेजो

६ नाईक

१ लाडसा चादसा रो
१ सलेमान सुलतान रो
१ सादुलो ग्रवदुला रो
१ दोस मेहमद दाउद रो

अम्बर के भागने, दुर्गादास द्वारा उसके परिवार के भरण-पोषण हेतु कुछ धन देकर राठौड रघनाथ, पचोली जगनाथ इत्यादि को वान्मेर रखने का उल्लेख है।

(१८) मारवाड म राठौड सरदारो द्वारा उपद्रव करने, अजीतसिंह का सिवाने पर अधिकार होन, विलाडे म उपद्रव करने, वीजापुर म शाही सेना को परास्त करन, वीजापुर अजीतसिंह का जालोर पर अधिकार होने तथा विभिन्न युद्धो म मारे गये तथा घायल हुए योद्धाओ की सूची भी अंकित है।

(१९) दुर्गादास के दक्षिण म अकबर के साथ अनेक युद्धो मे भाग लेने, फिर मुकददास खीची के सदा भेजे जाने पर अकबर से विदा होकर दुर्गादास के मारवाड म आने, अजीतसिंह को प्रकट करन का उल्लेख है।

(२०) महाराजा के राजा गजसिंह दवलिया प्रतापसिंह जसलमेर रावल अमरसिंह, चौहान फतसिंह चौहान, चतुरभुज तथा चौहान महसमल के यहाँ शादिया करने का उल्लेख है।

(२१) अजीतसिंह के राज्याभिषेक के समय कुछ दस्तूर आदि किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"चैत वद १३ घडी ५ दिन चढीया वडे जलूस सू नोबत बाजता महाराज गढ दाखल हुआ। गढ़ री कागरो पाघ रा पला सू भाडियो चत सुद १ चायड बूरज पधारिया नै सारो कोट दीठो   महाराजा सहर माहे सू धुडला नै गवर मगाई देपी तिणा नू एक एक रुपीयो दियो देवस्थान श्री ठाकुरजी श्री महादेवजी श्री माताजी विराजिया पूजा झालर घटा बाजा सा वाजिया।"

(२२) महाराजा द्वारा विद्रोहियो को दण्ड इत्यादि देने तथा विखे म सेवा करने वाले सरदारो को प्रमुख ओहदो पर नियुक्त करने का उल्लेख है।

(२३) राठौड उरजनसिंह प्रतापसिंघोत द्वारा नकली दलथम (राजकुमार) बना कर बादशाह के पास ले जाने, वहाँ पर उनको किसी प्रकार की मान्यता नही मिलने, महाराजा द्वारा वि० स० १७६४ आसाढ सुदि ११ को नकली राजकुमार इत्यादि को मरवाने तथा इस अभियान म भाग लेने वाले विभिन्न सरदारो को १० रुपये से लेकर ४०० रुपये के इनाम दिये जाने की एक सूची दी है।

(२४) अजीतसिंह और बहादुरशाह (सन् १७०७ ई० से सन् १७१२ ई०) की सेनाओ के बीच हुए अनेक छोटे मोटे युद्धो का वृत्तात है।

सू नागोर ले गया, माताजी श्री नागणेचीजी री मूरत नागोर पोहचाइ जवाहर रो डाबो (डिब्बा) व्यास जगरुप रै हवाल थो सू लीयौ, राव जोधाजी र हात रो पाडो थो सू लीया, फेर ही कोठार स भाळ नै घणी वसता नागोर पहुचाइ।

इन श्रमहनीय कार्यों से राठौड सरदारा की भावनाओ को आघात पहुचाने का उल्लेख है।

(१३) औरगजेब का दिल्ली स अजमेर के लिए प्रस्थान व इन्द्रसिंह का अजमेर म बादशाह से मिलना तथा बादशाह को खुश करन हेतु भाटी राम का मरवाने इत्यादि घटनाओ का उल्लेख है—

"महाराज इन्द्रसिहजी भाटी राम कू पावत नै पटा री उमदवार कर दया सू राखीयो, पातसाहजी री हजूर १७ माथा उमरावा मलणा कबूल किया था त्या म ओहीज हाय आयो प्रधान साहिवषा जोधपुर म राठौड किसनसिंह केसरीसिघोत पोस वद ८ भाटी राम रा डेरा उपर मलिया गोळीया वाही तर भाटी राम रो साथ तो कपडा धोवण गयो थो न राम एकलो थो राम पोल घाटी चढीयो उघाडी तरवार कर किसनसिंह राठौड सामी दौडियो सू गाळा तार सू राम नू मारियौ माथा काट पातसाहजी री हजूर मेलियो ।"

(१४) राठौड दुर्गादास और सोनग द्वारा वि० स० १७३६ ज्येष्ठ वदि १० को विलाडा घरन, घोडे और ऊट इत्यादि लूटन तत्पश्चात् ज्येष्ठ सुदि १० जोधपुर आने फिर ओसिया क सेतासर ग्राम मे ज्येष्ठ सुदि १४ को इन्द्रसिंह व अजीतसिंह की सेनाओ म युद्ध होन, दोनो ओर से मारे गये योद्धाओ की नामावली इत्यादि लिपिबद्ध है।

इस युद्ध म इन्द्रसिंह के हार जान और पुन जोधपुर लौटने का उल्लेख है।

(१५) जोधपुर के आस-पास अनेक छुट पुट राठौडा द्वारा उपद्रव करने तथा शाही सेना व मवाड क राणा राजसिंह के बीच युद्ध हान का विवरण दिया है।

(१६) शाहजादे अकबर का मारवाड म आने अनेक छोटे-मोटे राठौडों स युद्ध करने, राठौडो द्वारा तव्वरखा के माध्यम स अकबर को अपना ओर करन, ग्राम सोड म अकबर के राज्याभिषक के समय सरदारा को मनसब, खिताब आदि मिलने का उल्लेख है।

(१७) अकबर के राठौडो से मिल जान पर औरगजेब क चिन्तित होने औरगजेब व अकबर के बीच युद्ध कूटनीतिज्ञता से औरगजेब के विजयी होने

अकबर के भागने, दुर्गादास द्वारा उसके परिवार के भरण-पोषण हेतु कुछ धन देकर राठौड रुघनाथ, पचाली जगनाथ इत्यादि को बाडमेर रखने का उल्लेख है।

(१८) मारवाड म राठौड सरदारो द्वारा उपद्रव करने, अजीतसिंह का सिवाने पर अधिकार होने, बिलाडे म उपद्रव करने, बीजापुर म शाही सेना को परास्त करने, बीजापुर अजीतसिंह का जालोर पर अधिकार होने तथा विभिन्न युद्धो म मारे गये तथा घायल हुए योद्धाओ की सूची भी अंकित है।

(१६) दुर्गादास के दक्षिण म अकबर के साथ अनेक युद्धो म भाग लेने, फिर मुकुन्ददास खीची के सदेश भेजे जाने पर अकबर से विदा होकर दुर्गादास के मारवाड म आने, अजीतसिंह को प्रकट करने का उल्लेख है।

(२०) महाराजा के राजा गजसिंह, देवलिया प्रतापसिंह जसलमेर रावल अमरसिंह, चौहान फतेसिंह चौहान, चतुरभुज तथा चौहान महेसमल के यहाँ शादियां करने का उल्लेख है।

(२१) अजीतसिंह के राज्याभिषेक के समय कुछ दस्तूर आदि किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"चैत वद १३ घडी ५ दिन चढीया वडे जलूस सू नौबत बाजता महाराज गढ दाखल हुआ। गढ री भागरो पाघ रा पला सू झाडियो चत सुद १ चावड सूरज पधारिया नै सारो कोट दीठो   महाराजा सहर माहै सू पुडला न गवर मगाई देपी तिणा नू एक एक रुपीयो दियो देवस्थान श्री ठाकुरजी श्री महादेवजी श्री माताजी विराजिया पूजा झालर घटा बाजा सा बाजिया।"

(२२) महाराजा द्वारा विद्रोहियो को दण्ड इत्यादि देने तथा विखे म सेवा करने वाले सरदारो को प्रमुख ओहदो पर नियुक्त करने का उल्लेख है।

(२३) राठौड उरजनसिंह प्रतापसिंघोत द्वारा नकली दलथभ (राजकुमार) बना कर बादशाह के पास ले जाने, वहाँ पर उनको किसी प्रकार की मान्यता नही मिलने, महाराजा द्वारा वि० स० १७६४ आसाढ सुदि ११ को नकली राजकुमार इत्यादि को मरवाने तथा इस अभियान म भाग लेने वाले विभिन्न सरदारो को १० रुपये से लेकर ४०० रुपये के इनाम दिये जाने की एक सूची दी है।

(२४) अजीतसिंह और बहादुरशाह (सन् १७०७ ई० से सन् १७१२ ई०) की सेनाओ के बीच हुए अनेक छोटे मोटे युद्धो का वृत्तात है।

(२५) अजीतसिंह आमेर नरेश सवाई जयसिंह तथा उदयपुर महाराजा अमरसिंह के प्रयत्न से शाही सेनाओ को परास्त करने का उल्लेख है।

(२६) अजीतसिंह और जयसिंह के अजमेर के पास बादशाह से मिलने अजीतसिंह द्वारा मोहरें व रुपये आदि भेंट करने तथा बादशाह द्वारा अजीतसिंह को मनसब आदि देने का उल्लेख।

(२७) अनदसिंह द्वारा नागणेचिया देवी को रुपये आदि नजर कर इन्द्रसिंह के पुत्रो को महाराजा के समक्ष ले जाने, महाराजा अजीतसिंह द्वारा उन्हे सिरोपाव आदि देने का वृत्तांत इस प्रकार है—

'पछै श्री आनदसिंहजी थी नागणेचियाजी री सवा हथणी १, घोडा २, रुपिया ऐक लाष १००००० निजर कर राव इन्द्रसिंहजी बेटा पोता न ले पाव लागा कवरा नै सिरपाव दिया नागोर कूच कियो नागोर पधारता गाव लूटिया घोडो म हजार मण धान यो सो लियो।

नागोर सु इन्द्रसिंहजी रा कवर दाय सौ घोडा सु जोधपुर आया महा सुद २ असवारी म मसुरिया आवर कनै पावा लागा गढ म जाय राज लोगा रे पाव लागा दिन च्यार रिया नै सिरपाव दियो।''

(२८) एक स्थान पर अखेराज की पुत्री द्वारा तुलादान करने का विवरण इस प्रकार है—

''पोस सुद ७ माजी दवडीजी राव अपराज री बेटी तुलाव कीवी सूरसागर रा मैहला मे महाराज न महाराज न राज लोक सारा सूरसागर ही था " १०८ गाया न रुप(या) दिन पनर पहेला बिरामणा नै दीया था

१ तुलाव बैठा रूपा री एक

४००० तुलिया रु०

१००० महाराज ओर मेलिया

७०० राज लोक साथे था त्या घालिया

१ तुलाव छव बीजी हुई—

१ सपत धान री
१ कपडा री
१ घिरत री
१ तिल री
१ लवण री
१ पाड चोणी री'

(२९) भडारी विठलदास के यहाँ महाराजा के भोजनादि करने तथा रुपये आदि नजर करने का विवरण इस प्रकार है—

"फागण वद १० भडारी विठलदास र घर श्री महाराज पधारिया न अरोगीया पहले दिन विठलदास नै सिरपाव ईनायत किया, श्रीजी रै भडारी विठलदासजी रु० ४६००० निजर किया तिका रो विगत—३१०० रोकड २००० म्पडा निजर कीयो १३००० मोदिया मार्ह दिया।

श्री महाराज वीठलदास न हथणी १ राव इन्द्रसिहजी निजर कीवी सु ईनायत कीवी सो भडारी रै घर मुई (मरी) पौळ मे गडाई।"

(३०) वि० सं० १७६४ म विभिन्न ओहदो पर नियुक्त अधिकारिया की एक सूची देकर उमरावा की सूची दी ह।

यथा—

१ परधान राठौड मुकददास सुजाणसिघात पाप चादावत आईदानोत पट पाली।
१ दिवाण भडारी विठलदास भगवानदासोत।
१ बपसी पचोली हरकिसन रामचदोत।
१ श्री हजूर रै दफतर दरोगो पिची सीवराम कल्याणदासोत मुकददास री नाई ।
१ डोढीदार गुजर बिजराम महीर।
१ पान सोमा प्रोहित रिणछोड जदेवोत।
१ मास पदवी व्यास दीपचद बालकीसन री।
१ सिकदार सोभावत दयालदास वैणीदासात।
१ राजगुर प्रोहित अपराज गाव तिवरी री।
१ बारहठ केसरीसिह।
१ मडत हाकम भडारी नारायणदास।
१ जतारण हाकम भडारी दवकरण जगनाथोत कू पावत ।

(३१) जोधा सुजानसिह केसरीसिघोत न अजीतसिह के विखे साथ नहीं दिया उसके पुत्रो को चूक से मरवाने का वत्तात इस प्रकार है—

"जोधा सुजानसिघ केसरीसिघोत पिसागण जुनीया रौ धणी अजीतसिघ रा विपा मे पातसाही चाकर—सोजत सिवाणो पायो, महाराजा रा रजपूतो सू केई लडाई कीवी, सुजाणसिहजी र एक हथणी छोटी थी सो महाराजा अजीतसिहजी विपा म बालक थका था तर मगाई सो दीवी नही न कह्यो—मडता मे हाथी कुमारा रै चोपा हुवै छ सो भगाय नै रमो (खेलो) सो सवत १७६६ सुजाणसिह रा

बेटा करणसिंघ जुझारसिंघ नै जोधपुर बुलाय जेठ सुद १ रात आधी रा सिरपाव दे विदा कीया नै हट भैरुजी रा तेहपाना उपर नै मारग री बार साला में पावडिया उबा रापीया तिणा चूक कर मारिया ।'

चूक करने वाले प्रमुख ६ सरदारा के नाम भी दिये है।

(३२) अजीतसिंह द्वारा इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह को मरवाने पर (वि० स० १७७०) फरुखसियर के नाराज होने का उल्लेख है। अजीतसिंह को बादशाह से गुजरात का सूबा नही मिलने तथा अजीतसिंह द्वारा उपद्रव करने पर फरुखसियर व महाराजा के बीच मनमुटाव होने पर हुसन अलीखा द्वारा विशाल शाही सना लेकर अजमेर मडता के गाव इत्यादि लूटने का उल्लेख है।

(३३) भडारी खीवसी को दीवान नियुक्त करने तथा हुसेन अलीखा से सन्धि की बातचीत करने हेतु खीवसी को भेजने का वृत्तात इस प्रकार है—

पछै भडारी पीवसी नै नवाव हुसन अलीपा कनै मडते बात करण सारु मेलीयो सो इण तर ठहराई इदर कवर बाई नै पातसाह नै परणावणा न पटा री सोवो कबूल कीयो न कवरजी अवसिंघजी न पातसाह कन चाकरी म रापणा नवाव री मडते सू कूच करायो न साथ कुवरजी अभैसिंघजी नै मलिया सा भडारी पीवसी नै मेलियो ।"

(३४) आग अजीतसिंह द्वारा बनाये गये भवन निर्माण आदि कार्यों का विवरण दिया है।

(३५) महाराजा द्वारा बादशाह फरुखसियर को मरवाने का वृत्तात इस प्रकार राजस्थानी भाषा म दिया है—

'सईदा अरज कराइ तोपपाना री दरोगाई नै लाल किला री किलादारी मानै बपसावो तो मारा दिल री पटको मिटे तरै तोपपाने री दरोगाई नै लाल किला री किलादारी सईदा नै इनायत कीवी तरै अजीतसिंहजी बादशाह न पकडण री विचार कियो सवत १७७६ रा फागण सुद १० नवाब अबदुलापा नै, हुसनअलीपा कोटा रा हाडो भीवसिंघजी रूपनगर री राजा राजसिंघजी वगेरा दिवाण आम मे जा बैठा नै पातसाहजी न पबर पहुँची सो जनाना म जाय बठा न नाजर र साथे फुला री माळा महाराज अजीतसिंघजी नै मली जिण म रुको मेलियो—लिखियो म्हारी पातसाही नै ज्यान थार दीवी रेवे इण वपत रो एसान भूलसू नहीं - ।

नीवसिंहजी - महाराजा मू अरज कीवी पातसाह नै बचावो तुरक पण कितराक सामल होसी आपाणो आछो लागसी श्री महाराज

फुरमायो सइदो नू श्री हिंगलालजी विचे दीया है पातसाह म्हारा सू चूक विचारियो थो, नवाब डेरे नह् आवतो तो म्हान कद छोडतो   सईदा रा आदमी जनाना म सू पातसाह फरकसेर नू पकड लाय कैद कीयो   सईदा न कहन बाईजी (इद्रकवर) न जोधपुर पाहचाय न उठारी सारी चीज वसत लेन आया   पछ बाईजी आळो पीय नै मरीया " पातसाह फरकसेर र गळे तात फेर न सईदा मारियो   ।"

(३६) अजीतसिंह को गुजरात की सूबेदारी मिलन वहा महर अलीखा को नायक तथा नाहरखा को दीवान नियुक्त करन का उल्लख है। फिर रफीउदरजात रफीउदौला तथा मुहम्मदशाह स महाराजा क सम्बन्धो का विवरण दिया है।

(३७) अजीतसिंह को मुहम्मदशाह क राज्यकाल म अजमर की सूबेदारी मिलना, वहा भडारी विजयराम का नायब नियुक्त कर भेजना, अजीतसिंह की पुत्री सूरज कवरी की शादी जयसिंह के साथ होन, गुजरात व अजमेर की सूबेदारी स अजीतसिंह का हटाय जान, नारनोल अलवर इत्यादि स्थानो म लूटमार करन इत्यादि अनेकानेक घटनाओ का विस्तृत विवरण दिया है।

(३८) अन्त म बखतसिंह द्वारा अजीतसिंह की हत्या करन की घटना दी है।
तत्पश्चात् महाराजा के रानिया कुवर कुवरिया, पासवाना इत्यादि की एक लम्बी सूची दी है।   (पत्र-१०३)

महाराजा अभयसिंह, बखतसिंह तथा रामसिंह का वृत्तांत –

इन महाराजाओ के पूरे शासन काल का विस्तृत विवरण दिया है। घटनाए जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती है, यहा केवल इनकी मुख्य उपलब्धियो का विवरण दिया जा रहा है—

प्रारम्भ म अभयसिंह के जन्म, राज्यारोहण व मृत्यु के सवत् अकित है तथा महाराजा के जयपुर सवाई जयसिंह की पुत्री से शादी करन, इस पर अनेक रुठे सरदारो की सूची, राजकीय ओहदो पर भडारियो, सरदारो को नियुक्त करन बखतसिंह को वि० स० १७८२ कार्तिक मास म नागोर देने, नागोर बखतसिंह के साथ चले विभिन्न उमरावो चाकरो की सूची, वि० स० १७८८ म घाधला से पेशकशी के रुपये वसूल करने, अहमदाबाद सरबुल दखा को परास्त करन, युद्ध मे घायल हुए अथवा मारे जाने वाले योद्धाओ की सूची, वि० स० १७८७ से १७८६ तक विभिन्न परगना से प्राप्त होने वाली आय की सूची (तीन वष की कुल आय

८५३४००० रु० दिये हैं) सवाई जयसिंह व बखतसिंह के बीच गगराने का युद्ध (वि० स० १७९७) होने, बीकानेर पर चढाई करने तथा अभयसिंह के भवन निर्माण काय इत्यादि का वृत्तात लिपिबद्ध किया गया है।

अभयसिंह के पुत्र रामसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसके द्वारा विभिन्न ओहदो पर नियुक्तियो, राठोड सरदारा के साथ दुर्व्यवहार करने, बखतसिंह द्वारा रामसिंह से जोधपुर हस्तगत करने, अपने व्यक्तियों को विभिन्न पदो पर नियुक्त करने, सनिक अभियाना तथा सतियो की सूची के साथ बखतसिंह के राज्य काल का वृत्तात समाप्त हो जाता है।

ग्रथ के अन्त म रामसिंह का फिर से विवरण दिया है जिसम उसके राज्याभिषेक के समय धाय भाई देवकरण व अन्य सरदारा को हाथी, घोडो एव सिरोपाव इत्यादि इनायत किये उसकी सूची दी है तथा अभयसिंह का मृत्यु के दु खद समाचार नागौर बखतसिंह को मिलने पर उसके द्वारा बहुत शोक प्रकट करने, पैदल चलकर तलाव म स्नान करने का उल्लेख है। फिर बखतसिंह व रामसिंह के बीच तनाव उत्पन्न होने की घटना दी है। अन्त मे उन ६ राठोड सरदारो के नाम दिये है जिनको महाराजा रामसिंह ने हाथी इनायत किये।

(पत्र--८६)

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिखावट साधारण है। पत्र हाथ के बने हुए है, कुछ पत्र पानी मे भीगे हुए है प्रारम्भ का पत्र खण्डित है। ग्रथ के एक ओर चमड का गत्ता लगा हुआ है।

दूसरा अध्याय

विगत, हाल, हकीकत आदि

२१ राठोड राजाओ रै वशजो रौ हाल

१ राठौड राजाजो र वशजो रो हाल २ जो०क० सग्रह, ३ १५५, ४ १४×१७ सेमी०, ५ ११६, ६ ६–१३, ७ १९ वी शताब्दी का मध्य, ८ अप्राप्त, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ म राव मालदव तथा सूजा के पुत्र उदा और नरा के वशजो का विवरण सकलित है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(क) मालदेव रा वशजों रौ हाल –

प्रारम्भ म मोटा राजा उदयसिह के पौत्र व दलपतसिह के पुत्र महेसदास का वत्तात दिया है।

प्रारम्भ—

"अथ बारा सू पोथी मगाई सो ष्यात लिषते, महेसदास दलपतोत पहिला साहिजादा पुरम री चाकर थो पछै रावळै कुडकी री पट्टो दियो थो सु स० १६८४ रा महा वद ४ माहबतषा रै मुहडा आगे दषिण मे पूरो लोह पडियो पछै महोबत मुओ पातसाहजी राषीयो, जाजपुर पटे वसी नु पछ जालोर गढ दियो सु स० १७०३ लाहार राम कियो।'

अन्य कुछ सरदारो का विवरण राजस्थानी भाषा मे इस प्रकार लिपि-बद्ध है —

(१) सूरजमल जूझारसिह दलपतोत रावळ स० १६७४ वलाहडी वसी नू राजसिघ भेळो पछ सवत १६८४ रामसरी मढता री, पछ महेसदास साथे मोहबतषा रै वसियो सु स० १६४१ मोहबतषा रै काम आयो।

(२) राजसिंघ दलपतोत वलाहडी स० १६७८ दियो जूझारसिंघ भळो "
१६८१ दक्षण काम आयो ।

(३) कान्हाराम दलपतोत पातसाही चाकर १६८१ पातसाही र
काम आयो ।

(४) घासीराम रावळ सु सोल हजार री रप मू दवाऐं पट दियो १७०८।

(५) राठोड हरीसिंह रो बटा रतनसिंघ रावळ चाकर साथ थो उठ मानसिंह रो बटा मारियो इण वर भार निसरियो सवत १६४६ रा काती वदी १४।

(६) अमरो जैतसिंघोत स० १६८४ मडते लाबिया री सीव माह ग्रमरपुरो वसायो ।

(७) किसनसिंघ उदसिंघोत न सवत १६५१ मोटा राजा ग्रासोप पट दीधी पछ १६५२ मूरजसिंघजी दुघाड रो पटो दियो ।

(८) सहसमल किसनसिंघोत झाला रो भाणेज स० १६७८ बुरहानपुर माह राम कियो ।

(९) भारमल किसनसिंघोत भाटीया रो भाणेज जगमाल भारमल भेळा माराणा । स० १६६१ रा पोह सुद ४ भारमल रो जनम ।

(१०) रूपसिंह १७१४ उजेण काम आयो हरीसिंघ पछै किशनगढ पायो ।

(११) भावसिंह भीवसिंघ रो पातसाही चाकर स० १६८६ जेठ सुद १३ दिपण काम आयो ।

(१२) स० १६३३ राव कला न नडूल माह सेप बहम चूक कर मारियौ ।

(१३) पूरणमल रामोत सोनगरा री भाणेज स० १६०४ ग्रासाढ वद ८ सनि जनम । भोपत रामोत झाला री भाणेज स० १६१२ फागण सुद ४ बुध जनम मोटे राजा नवसरा रो पटो दियो ।

(१४) माधोसिंह ग्रमरावत (राम का वशज) पातसाही चाकर स० १६८६ जेठ सुदि १३ काम ग्रायो।

(१५) महेसदास रामोत कछवाही रो स० १६१५ मिगसर सुद ८ शुक्रवार जनम ।

(१६) जगनाथ जसवतोत पातसाही चाकर वधनार पटे दपण माह पातसाह रै काम ग्रायो १६८६ आसाढ वद ३ गुरुवार ।

(१७) राव रायसिंघ चद्रसेणोत कछवाहो रो भाणेज स० १६१४ भाद्रवा सुद १ जनम १६४० काती सुद ११ दताणी राव सुरताण सू वढ कर मराणा ।

(१८) गोयददास पातसाही चाकर स० १७०८ फागण सुद लाहौर राम किया।

(१६) कल्याणमल रायमलोत जुहर कर नाम आयो १६४५ माह वद १०।

(२०) जतसी रतनसीघोत स० १६७२ रावळा सू गिररी रो पटो पछै १६७४ बुरहानपुर माहे छाडि साहजादा रै रह्यो थो। (पत्र–५८)

(ख) उदावतो री विगत –

इसम सूजा के पुत्र उदा व उसके वशजा का हाल दिया गया है जिसम बतलाया गया है कि किस ठाकुर क बाद कौन उत्तराधिकारी हुआ उन्ह जागीर म कितन गाव मिले हुए थे। इन ऐतिहासिक व्यक्तिया के जन्म व मृत्यु सवत भी कही कही दिये हैं। मिलावें ग्रथाक ८१६०(७), रा० शो० स०।

प्रारम्भ—

"उदो सूजावत मागलिनी सरवगदे रो बेटो उदोजी सागोजी पिरागजी तीनू सगा भाई। उदजी न जतारण दरावजी सूजाजी जुदा किया तर जैतारण आय वसीया धरती माहे सिंधल था तिणा नै परा काढ्या ।"

उदा के वशजा सम्बन्धी कुछ घटनाएँ प्रस्तुत है—

(१) जतारण रावजी रतनसी धीवावत न दीवी सा स० १६१४ चत माहे अकबर पातसाह री फौज कासमपा अजमेर था ले आयो तरै रतनसी नैं जैतारण मे मारियो।

(२) मेडते जैमलजी री वेढ प्रथीराज काम आया तरै डूगरसी उदावत जमलजी भेळो थी ।

(३) पिरागदास भगवानदासोत वडो डील, राजा जयसिंह री चाकर (आमर) स० १६४७ काती माह राम कयो।

(४) मुकददास कल्याणदासोत वडो वेटो रावळा सू पहला दातीवाडा रो पटा थो पछै स० १६६७ आसरलाई जतारण री रो पटो ।

(५) गोयददास स० १६४६ गु दोच राम कियो, इण च्यार मामला सिंधलो सू किया। (पत्र–६२)

(ग) नरावतो री विगत –

राव सूजा के पुत्र नरा के वशजा का हाल दिया है। जिसम खीवसर के नरावत राठौडो का सक्षिप्त विवरण है।

प्रारम्भ—

"नरो सूजावत लिपमी भटियाणी री वागजो रो भाई ओ सूजाजी रो मलियोडो गुजरात पात्साह नू ।" (पत्र–१२)

ग्रथ के अन्त म राठौड राजाग्रा को पीढिया ग्रौर 'ग्रखाणा' इत्यादि कृतिया सग्रहीत है । जो बाद म अन्य किसी व्यक्ति के हाथ स लिखी गई है ।

उदावत, नरावत एव जाघा राठौडा क इतिहास ग्रध्ययन हतु सामग्री उपयोगी है ।

ग्रथ ग्रनक व्यक्तिया के हाथ से लिपिवद्ध किया गयाहै । ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है, ग्रनक पत्र रिक्त पडे है ।

२२ सिसोदिया, शेखावत, भाटी, चहुवान तथा पवार सरदारो र जागीर रै गावो री रेख री विगत

१ सिसोदिया, शेखावत भाटी चहुवान तथा पवार सरदारा रै जागीर र गावा री रप री विगत २ जो० क० सग्रह ३ ६२, ४ ३५×२७ ५ सेमी०, ५ ५२, ६ ११-१३ ७ १९वी शताब्दी का उत्तराद्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे मारवाड मे विभिन्न सरदारा को मिले जागीर के गाव, उसकी रेख तथा ६ ७ पीढिया के नाम ग्रकित हैं ।

प्रारम्भ—

'सिसोदिया—

गाव भा॒दा प्र० गाढवाड गाव १ रप ३०००)

भरे ३०००)

सादुलसिघ, गुलाबसिघ सेरसिघ, उदभाण ग्रादि ।

भाटिया के एक गाव का उदाहरण प्रस्तुत है—

३ (गाव) माळ्गो जोधपुर री रेप १०००) भरे १०००)

बपतावरसिघ, छतरसिघ, नाथूसिघ, भवानोसिघ, ग्रनाडसिघ, मोकमसिघ, जगतसिघ ।

यह सामग्री एक ही व्यक्ति क हाथ स लिखी गई है । ग्राघ पत्र रिक्त पडे हैं, पत्र वे सिले हैं । राजस्व सम्बन्धी अध्ययन हेतु उपयोगी है । गावों को पीढ़िया इतिहास की दृष्टि से उपयोगी है ।

२३ रुपीया आया उपडिया री विगत

१ रुपीया आया उपडिया री विगत, २ जो० क० सग्रह ३ १०, ४ ४१ ५ × १५ सेमी०, ५ ३७, ६ १८-२० ७ १९वी शाब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विजैशाही रुपया की थैलिया जोधपुर राज्यकोष मे आती थी उसकी विगत दी है। थैलियो पर व्यक्ति का नाम, रुपया की सख्या आदि लिखी रहती थी।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गरोशायनम ॥

डेरा री विगत रुपिया आया री विगत रुपिया उपडिया री विगत री बही।

करनी जी नाम १०००) री थैली माये

आवडजी ओ नाम १०००) री थैली माये

पूवडजो १०००) री थली माथ

१२००० जुमले रुपिया बार हजार विजसाही चम कोस दोयला माहे मेलिया आसीया बाकीदास सवत १८८४ रा।

यह कविराजजी के निजी कोश की विगत प्रतीत होती है।

लिखावट अशुद्ध है, गत्ता कपडे का मढा हुआ है।

२४ सरकारी खर्च ने केफीयता री विगत

१ सरकारी खच ने केफीयता री विगत, २ जो० क० सग्रह- ३ ३८, ४ ४५ × १७ सेमी०, ५ ५० ६ १७-१९ ७ वि० स० १८९४, ई० सन् १८३७, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० खच खाते सम्बन्धी इस बही मे निम्नलिखित कृतिया वर्णित है—

(१) चाकरो री विगत

(२) तीन महीने रो खरच

(३) गावो री पैदास

(४) गावा री रेया न पीडा नै लाप पसाव

(५) लालजी सा नै लाप पसाव

(६) कागदो रा अवाळ

(७) हवाला रा आसामिया री विगत

(८) जोधपुर कागदो री नकल

(९) काणेचे माजी रैं हाथ खच री विगत
(१०) मयारिणया री विगत
(११) बुजावड र थान री विगत
(१२) आयपूरा रा मेण री विगत
(१३) मेनाजी रैं बाई री ब्याव री विगत
(१४) रेमतुलापाजी अलीगढ पढण में गया री विगत
(१५) बुजावड रैं थान रो भाटो
(१६) बासवाडा रा वीरणा री हिसाव

आदि ।

यह सामग्री अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुई है । पत्र मटमैले रग के है । ग्रथ मे मारवाड की खानो, कुछ रीति-रिवाजा आदि पर अच्छा प्रकाश पडता है ।

२५ जोधपुर रा कमठो री विगत

१ जोधपुर रा कमठो री विगत, २ जो० क० सग्रह, ३ ८१, ४ ४०×२८ सेमी०, ५ ६६ ६ १५-१७, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमे जोधपुर के विभिन्न शासको द्वारा बनवाये भवन निर्माण कार्यो व कुछ ऐतिहासिक घटनाओ का विवरण दिया है । पत्र लुप्त होने स सामग्री अपूर्ण है । इस प्रकार का विवरण अ य ग्रथा म भी मिलता है ।

प्रारम्भ—

"स० १८३८ माघ वद ५ री सेवा री प्रतिष्ठा हुई पाछी पधराई वरस गाठ री दरबार सळा मडल महाराजा अजीतसिंहजी हेठे फेर बधायो बावाजी आतमारामजी री मीद

अन्तिम—

" — पछ नवाब असते ।"

ग्रथ के ये खुले पत्र एक हा ।

६ राठौ

१ विग

२३ सेमी०,

७ अनात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० ये खुले पत्र एक कपडे में बन्धे हुए है। इनमे कू पावत, चापावत, उदावत, जतावत, मडलावत इत्यादि राठौड सरदारो की विगत दी है। जिसमे उनके शाखाओ प्रशाखाओ के मूल पुरुषो व उनकी सतति, पट्टे के गाव इत्यादि का विवरण अकित है। साथ ही उनकी जीवन-घटनाओं का विस्तृत वर्णन भी दिया है।

सामग्री बहुत महत्वपूर्ण है पर तु पत्र सब ग्रस्त-व्यस्त है व जीर्ण होने के फलस्वरूप खण्डित होते जा रह है अर्थात् इनकी गणना करना भी सम्भव नही है।

पत्र मटमैले रग के है जो अधिकाशत एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखे गये है।

जोधपुर के राठौड सरदारा के इतिहास अध्ययन हेतु सामग्री बहुत उपयोगी है पर तु इसकी उपयोगिता तभी हो सकती है जबकि सभी पत्रा को क्रमबद्ध किया जाय।

२७ राठौडो री खापा अर पट्टे रै गाव री विगत

१ राठौडो री खापा अर पट्टे रै गाव री विगत, २ जो० क० सग्रह, ३ ४८, ४ ३५×३६ सेमी०, ५ १५६, ६ १०-१५, ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० निम्नलिखित राठौडो की विभिन्न खापो का वृत्तात अकित है—

खाप	पत्र सख्या
(१) चापावत	५७
(२) उदावत	३२
(३) जतावत	६
(४) बाला	१५
(५) करमसोत	१८
(६) जोधा	२४

इन खाप के राठौड सरदारो को प्राप्त पट्टे क गावा व उनकी रेख इत्यादि का विवरण दिया है। प्रत्यक खाप का अलग से वृत्तात दिया हैं।

यह खुले पत्र एक से अधिक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किये गये है। लिखावट साधारण है।

राठौडा की शाखाओ सबधी जानकारी हतु ही नही अपितु राजस्व सबधी जानकारी के लिये सामग्री काफी उपयोगी है।

२८ जमीदारो रै पट्टै रा गावो रो रेख रो विगत

१ जमीदारा रै पट्टै रा गावो री रेख री विगत, २ जो० क्र० सग्रह, ३ १३३, ४ ६५×२७ सेमी०, ५ १३३, ६ ३०–३२, ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ म मारवाड के विभिन्न राठौड सरदारा के पट्टै के गाव व रेख आदि का विवरण दिया है। जिसमे जागीरदार का नाम, निश्चित की गई रेख, भरी जाने वाली रेख, भूमि की उपज, एक साख व दो साख वाले गावो की सख्या और वीरान गावा के आकडे अकित ह।

प्रारम्भ—

'पाप चापावत—

राव रिडमल १४४९ रा माह सुद १३ रो जन्म, उदपुर राणा पता र पवास रा बेटा चाचो मेरा था तिणा राणा मोकल न चूक कर मारिया न राणा कू भा रो अमल हुवो

रिडमल री चोपो

रेख कदीम, रेख भरे, पदास, आसामीवार, कुलगाव-दुसाखिया, एक साखिया, सुना।

इस ढग से विवरण निम्नलिखित शाखाओ (खापा) का अकित किया हैं—

(१) चापावत —विठलदासोत, आईदानोत, भोपतोत, रायसिंघोत, खेतसिंघोत, रायमलोत, हरभाणोत तथा हरिदासोत। (पत्र–६१)
(२) कू पावत —महेशदासोत, ईसरदासोत, तिलोकदासोत, उदसिंघोत, माडणोत। (पत्र–२५)
(३) जैतावत —पृथ्वीराजोत, आसकरणोत, भोपतोत। (पत्र–७)
(४) करनात — (पत्र–१०)
(५) मडला — (पत्र–७)
(६) रूपावत — (पत्र–४)
(७) पातावत — (पत्र–७)

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। तत्कालीन राजस्व सबधी जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

२९ रेख चाकरी रो विगत अर वेद पुराण आदि

१ रेख चाकरी री विगत अर वेद पुराण आदि, २ जो०क० सग्रह, ३ ३३, ४ ३५ ५×२५ सेमी० ५ ९७, ६ २५–३०, ७ २० वी शताब्दी

का प्रारम्भ, ८ प्रनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० वि० सं० १९६३ में जोधपुर महाराजा के अधीन भूमि की जानकारी देकर रेख इत्यादि का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

॥ श्री हरि ॥

समत १९६३ रा भादवा वद ५ मारवाड़ रै कुल गावा रा पडा गाव छोटा मोटा पाच हजार कहीजे इण बपत ईतरा मौजूद है वाकी रा वीरान ही जाण सू पडा री पतो नहीं। हमार वसता पेडा ४२३२ मुधा है माग दफतर श्री हजूर गाव मौजूद है।

श्री दरबार रे पालसे

६६२	गाव
१९९	जागीरी सरदार महाराजा रावराजा वगेरे
८८९	नामीचारा रा
५४३	सासण देवस्थान वगेरे
१९	जनाना सरदार पडदायतिया न
४६	मुसदी (यो)
७	मरजीदान
४६	पवास पासवान
२४	मीलटरी
२	कमीणा र
४२३२	

१९०६ महाराजा तखतसिंहजी री सलामती में हजार री रेप पर श्रोलीया निचे लिपीया मुजब वीराड रा नाव सु मुकरर हुवी

८०) राजपूत जागीरदार र
१२५) मुसदिया र
१००) पवास पासवान

राजपूत ने हजार री रेप लारे श्रेक घोडा रो सवार, नै पाच सो री रेप वाळा नै श्रेक पैदल कदीम सु सासतो चाकरी म रापणो पडे है। जिए सू मुसदिया रै रेप रो श्राक (श्राकडो) जादा कीयो गयो ओर पवास पासवान श्री

दरबार री नौकरी म सासता नजदीक रणो पड जोण सु उणा रै रय रो प्राक मुसदिया सू कम कीयो गयो है।"

वदा वे दलाव देकर उनका अथ लिखा गया है तथा वि० स० १६२२ के वप का कुछ जमा खच दिया है। एक स्थान पर वि० स० १६०१ के अदालती मुकदमो का भी विवरण दिया है।

प्रथ अनेक व्यक्तिया द्वारा लिपिवद्ध किया है। लिपि अधिक पुरानी नही है।

३० गाम खेड री विगत

१ गाम खेड री विगत, २ एम० डी० एम० सग्रह, ३ , ४ वही, ५ ६ ६ ६०, ७ वि० स० १८८३–१६५०, ई० सन् १८२६–१८६३, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० गाव खेड[1] (जि० बाडमेर) का आर्थिक विवरण वि० स० १८८३ से १६५० तक का दिया है।

तत्कालीन आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए ग्रथ उपयोगी है।

३१ राठौडो रै खापो री विगत

१ राठौडा रै खापो री विगत २ जो० क० सग्रह, ३ १५७, ४ २७ × ३० सेमी०, ५ २६७, ६ १०-१३, ७ १६वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० यह मारवाड के राठौड राजाओ से फटने वाली विभिन्न शाखाओ प्रशाखाओ का समृद्ध सग्रह है जिसमे मारवाड के सस्थापक राव सीहा के पुत्र आस्थान स मोटा राजा उदयसिंह तक के विभिन्न शासका से निकलने वाली राठौडा की खापो के नाम मूल पुरुष की मुख्य उपलब्धियो व उनके वशजा की पीढिया ऐतिहासिक टिप्पणियो सहित अकित है। खापो की बडी खान होने के कारण इसका महत्व है। विवरण क्रमबद्ध नही दिया है।

---

१ (क) ख्यातो के अनुसार राव सीहा के पुत्र आस्थान ने गोहिलो से खेड हस्तगत कर वहा अपनी राजधानी स्थापित की जिससे उसके वशज खेडचा कहलाय।

(ख) वि० स० १६८६ राठौड महारावल जगमाल के समय नगर गाव से मिले लेख के अनुसार सीहा के पुत्र सोनिंग द्वारा गोहिलो से खेड लिये जाने का उल्लेख है। इससे यह प्रमाणित होता है कि खेड आस्थान ने नही उसके भाई सोनिंग ने विजय किया था। (ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ० १६० ६१ की पाद टिप्पणी)

राठौड़ अखेराज रिडमलोत के वंशजों की विगत –

प्रारम्भ मे मारवाड के शासक राव रिडमल के पुत्र अखेराज व उसके वंशजों का हाल दिया है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गणेशायनम ॥

॥ राठौड़ अखराज रिडमलोत वडो ठाकुर हुवो, सोनगरा रो भाणेज ।' राव जोधो पाट वैठो तद आपरा भाया बेटा नू धरती बाट देण लागो तर अखराजजी नू कह्यो—थे कहो तिका ठोड थानू द्या तरै अखराजजी कह्यो—म्हे कहीक ठोड जोय अरज करसा पछ सोजत र परगने वडी ठौड बगडी दीठी तिका ठौड़, मांगली बगडी सीधल वसता सू खरडा सीधल नू मार ने अखेराज बगडी लीवी । अखेराजजी रै बेटां री विगत ॥

१ पचायण	२ महराज	३ राणो
४ रावल	५ सीधल	६ भूरो
७ सीहो	८ मालो	९ नगराज
१० नरबद	११ देवो	१२ रायमल

पचाइण अखेराजोत रो परिवार –

इसम अखेराज के पुत्र पचायण व उसके वंशजा का हाल दिया है। पचायण के ९ पुत्रो की सूची इस प्रकार है—

१ अचलो	२ जता	३ भवो
४ रा हो	५ भोजो	६ अरजन
७ सामदास	८ जाभण	९ रामो

१ अचला पचायण –

वर्णित है कि अचला की शादी मेवाड झाला अजा के यहाँ हुई थी उसने अपने ससुराल जाने की घटना दी है। मालदेव ने इनको रडोद के थाने नियुक्त किया वहीं नागौर क खान से लड़ते हुए मारा गया।

२ जता पचायण –

इसमे पचायण के पुत्र जता तथा उसके वंशजा का हाल दिया है। प्रारम्भ म जता द्वारा मालदेव के यहाँ की गई अमूल्य सेवाओ का वृत्तात है। जिसमे कू पा का भी जिक्र किया है। तत्पश्चात् जैतावत राठोडा का संक्षिप्त विवरण दिया है जो राजस्थानी भाषा मे इस प्रकार है—

३ मानसिह जतावत का वृत्तात –

"मानसिह जैतावत पाटवी, वहु टाकणो रो वटा सारण रामर चूहाहड वलाच नू विप म वगडी उपर ले आया वर वगडी छाड नै नीसरियो राणावास रो नदी जाता वेढ हुई तठै मानसिह काम आयो "मानसिह र वास कोई नही ।'

४ उदैसिह जतावत का वृत्तात –

"उदसिह जैतावत वडो वेढ म पूर लाहडे पड उपडीया था न सियासी हुओ सा घणा दिन रहयो ।"

५ पृथ्वीराज जैतावत का वत्तात –

पृथ्वीराज जैतावत वडो ग्रापड सिद्ध रजपूत हुग्रो, स० १६१० मालदेव मडता उपर गयो तठै काम ग्रायो ।'

६ पूरणमल पृथ्वीराजोत का वृत्तात –

'पूरणमल पृथ्वीराजोत वडो रजपूत हुग्रो, वगडी घणा गाव सू पटे हुई पछ पिचीयाक पट हुई, मडते दईदासजी साथे काम ग्रायो ।"

७ सूरजमल पृथ्वीराजोत का वृत्तात –

'सूरजमल पृथ्वीराजोत वडो रजपूत हुग्रो राव राम रो चाकर थो। राव राम मासकरन वना सू उतारन दो थी मास ११ रही।"

८ राघोदास सूरजमलोत का वृत्तात –

"राघोदास सूरजमलोत—घरै वठो रहतो चाकरी किण ही री न कीधी।"

६ वैरसल पृथ्वीराजोत का वृत्तात –

"वैरसल पृथ्वीराजोत वडो ठाकुर—रायसिह चद्रसनोत नू सिरोही देवडे मारीयो पछै तिण दावै माट राजा स० १६४० गुजरात जाता सीरोही ग्राया पछ जिका देवडा रायमिह नू लोह कियो थो तिणा सू मिळिया सू वैरसालजा दवडा नू ग्राणिया दवडो तागो, पनो सावतसो तीहो नू मोटे राजाजी चूक कर मारिया पछ वैरसल पट मार मुग्रा सिरोही रो गाव सागवाडा नीतोडा बीच वरसल प्रिथीराजोत रो चौतरो छे ।"

१० वाघ पृथ्वीराजोत का वृत्तात –

'वाघ प्रिथीराजोत वडो ठाकुर हुग्रो पातसाह रो चाकर वगडो विलाडो पटे थो स० १६३६ पातसाहजी दिया था गुजरात जाता मीच मुग्रो वाघ।"

११ गोयददास वाघोत का उल्लेख –

"गोयददास वाघोत वगन्डी पटे । बु देला री मु हम जाता मीच मुम्रो ।"

१२ कु भकरन वाघोत का वृत्तात –

"कु भकरण वाघोत वडो रजपूत वगडी पटे, दिषणिय' सू वडी वेढ जीती पछै केहीय' दिन सानीयो हुवो थो पर्ग वेडी थी मीच मुम्रा । (मृत्यु से मरा युद्ध म नही)"

१३ जगनाथ वाघोत का वृत्तात –

'जगनाथ वाघोत बू दी राव रतन रो चाकर थो पछै स० १६८६ राव रतन पीचीया उपर गयो तठै काम मायो ।"

१४ वेईदास जतावत का वृत्तात[1] –

"दईदास जतावत वडो ठाकुर देस रो थभ कहाणो १६१८ चैत्र सुद १५ मिरजा सरफदीन सू मडता माल गढ छोड नै निसरियो तठै काम ग्रायो ।"

१५ ग्रासकरन वेईदासोत का वृत्तात –

"ग्रासकरण देईदासोत चोहाणा रो भाणेज स० १६१५ रा वसाप सुद १२ बुधवार जन्म, आसकरणजी नू मालदेजी गाव १२ मू वगडी री पटो दीयो नै बीजी गाव देईदासजी रा पटा म था मु प्रिथीराजजी रा देईदासजी रा बीजा बेटा नू बाट दिया मोटे राजाजी नै सोजत हुई तरै राजाजी ग्रासकरणजी नू खेरवो केई गावा सू दियो ।

श्रीजी ग्रावेर परणिया तरै ग्रासकरणजी साथे नाथा, तर वगडी भगवानदास नू दीवी, ग्रासकरणजी नू सवत १६५६ ग्राउवा रो पटो दीयो थो पछ वळे (फिर) राणा रै गया दवलो जैतारण री रो पटो दीयो थो १६८० मे ।"

१६ भोपत वेईदासोत का वृत्तात –

'भोपत देईदासोत वडो ठाकुर पातसाही चाकर हुआ तरै पातसाहजी कटालियो वापारी पटे दीया था ।"

१७ सकतसिह भोपतोत का वृत्तात –

'सकतसिह भोपतोत रावळ स० १६५२ वापारी सोजत री गावा २ सू थी पछै राम कह्यो, बाथ पीची रै परणीयो थो ।"

---

१ ग्रथ मे एक स्थान पर देवीदास जतावत सम्बन्धी वार्ता भी है ।

१८ साईदास पचायणोत रौ परवार –

(पचायण के पुत्रों की सूची मे साईदास का नाम नही दिया है, यहा इसका अलग से वृत्तात देकर उसके वशजो का नामोल्लेख किया है।)

"साईदास पचायणोत मेवाड राणाजी रो चाकर थो स० १६३२ सावण वद १३ हळदी री घाटी राजा मानसिंह सू वेढ हुई तठै काम आयो।" (पत्र-३½)

१६ भोजराज पचायणोत –

पचायण के पुत्र भोजराज के सम्बन्ध मे केवल इतना लिखा है।

"वडो ठाकुर हुओ, ओ सादो सो रजपूत वडो थो, कूपाजी रो चाकर थो वही वेढ कूपाजी साथे काम आयो।" (पत्र-½)

अखेराज रौ परवार

१ राणा अखेराजोत रौ परिवार –

इसमे अखेराज के पुत्र राणा के वशजो की सूची अकित है। (पत्र-२)

२ सिघण अखेराजोत रौ परवार –

इसमे वशावली इस प्रकार दी है—

१ रिडमल	२ अखेराज	३ सिंघण
४ धनराज	५ नारायणदास	६ किसनदास
७ वीरमदे		

३ माले अखेराजोत रौ परवार –

अखेराज के पुत्र माला के वशजो का नामोल्लेख है। पीढियें इस प्रकार दी है—

१ रिडमल	२ अखेराज	३ माला
४ करमसी	५ सादूल	६ राघोदास
७ हरीदास		

फिर राघोदास इत्यादि के पुत्रो के नाम दिये है। (पत्र-१)

४ रावल अखराजोत रौ परवार –

अखेराज के पुत्र रावल के वशजो के नाम लिपिबद्ध है। रावल से आगे पीढियें इस प्रकार है—

१ रिडमल	२ अखेराज	३ रावल
४ जोगा	५ कलो	६ नारायणदास
७ सुदरदास		

फिर जगमाल, नारायणदास इत्यादि के पुत्रो के नाम दिये हैं।

५ राठौड सूरो अखेराजोत रौ परवार –

अखेराज के पुत्र सूरा के वशजो का उल्लेख है। पीढियें इस प्रकार है—

१ रिणमल	२ अखेराज	३ सूजो
४ भानीदास	५ गोपालदास	६ जोगीदास
७ उदसिंह		

इन मूल राठौड सरदारो के बाद की सतति का भी नामोल्लेख है। (पत्र–१)

६ राठौड सीहा अखेराजोत रौ परवार –

अखेराज के पुत्र सीहा के वशजो का नामोल्लेख है। पीढियें इस प्रकार है—

१ रिणमल	२ अखेराज	३ सीहो
४ नैतसी	५ वाघ नेतसियोत	६ कल्याणदास

फिर इनके सतति का नामोल्लेख है।

७ नगराज अखेराजोत रौ परवार –

अखेराज के पुत्र नगराज के वशजो का नामोल्लेख है। पीढियें इस प्रकार है—

१ रिणमल	२ अखैराज	३ नगराज
४ रायपाल	५ जोगीदास—गुढो लूटीजतो काम आयो	
६ रामा रायपालोत	७ लपी रामोत	८ भगवानदास लपा रो
९ सूरजमल		
९ किरतसिंह	९ सकतसिंह	९ अजबसिंह
९ साहबखान, ए चार सूरजमल रे बेटा।		

फिर इन उपरोक्त सरदारो के अलग से सतति का भी विवरण दिया गया है। (पत्र–१)

अपराज राठौड –

इसमे अखेराज के १२ पुत्रो के नाम देकर उनका वर्णन फिर से दिया है। पर यहाँ कुछ अधिक जानकारी दी गई है। इस प्रकार पृथ्वीराज जैतावत, वाघ पृथ्वीराज, कल्याणदास वाघावत, कुम्भकरण वाघावत, देवकरण कुम्भकरणोत, साहिबखान कुम्भकरणोत, भगवानदास वाघोत, सुजाणसिंह भगवानदासोत, उदभाण भगवानदासोत, गोपालदास वाघोत, वैरसल पृथ्वीराजोत इत्यादि का सक्षिप्त विवरण है। (पत्र–१०)

नदा पचायणोत –

पचायण के पुत्र नदा व उसके वशजो का हाल दिया है। कुछ घटनाए उद्धृत है—

'नदो पचाइणोत दातीवाड वसी। राव मालदेजी विस दियो बीडा माह, दीवाळी रो मुजाई था उठनै बीडा दने कह्यो—घरै जावो सू राते दातीवाड़ै गया सु जातसवा राम कह्यो। भदो नै काह्यो वहू नू भाण उहड घात घाली थी।"

१ लिघमण भदावत का वृत्तात –

"लिघमण भदावत रावल मालदजो रैं, लघमणजी र पटे कटालीयो थो स० १६२४ रा महा वद १० गुरुवार इसमाईल कुली लषमणजी रा गुढा उपर झूवीयो, मुगल नाठा हाथी ४ वळाया, मतरो साथ लिघमणजो सावलदास रामोत कमो हुल सादुल रायसलोत ।"

२ जसा लिघमणोत का वृत्तात –

"जसो ल्पिमणोत पटे स० १६४१ भीवलीया ह्रीगाउस रो पछै भूपेलाव, पछ स० १६६६ हरीयामाली पछै स० १६८० ह्रामाउस नै सोनेई पाली री पद्ध १६८७ वले हरियामाली पटे थो।"

इसी प्रकार अन्य भदावत राठोडा का सक्षिप्त विवरण दिया है। (पत्र–७)

कूपावत राठौडो री विगत –

अखेराज के पौत्र व मेहराज के पुत्र कूपा तथा उसके वशजो का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ मे दिया है—कूपा का जन्म किस प्रकार हुआ तथा वह महादेव का अवतार कहालाया।

प्रारम्भ—

'मेहराज अखेराजोत रैं छोरु नही हो तो थेटू गाव धनहडी सोजत री रहता, सु गाव माहे हाळी हळोतियो कर नीसरीयो नै पहिलाई मेहराजजी साम्हा मिळिया तर हाळो पाछो वळीयो तरैं हाळी नू पूछीयो तू पाछो क्यू वळीयो तरैं कह्यो—अउत रो मूडो न देषणो आ सुण मेहराजजी धनहडी माहे देव छ तिण महादेव कनै आया कूपोजी हुवा महादेवजी रो अवतार पछ मेहराजजी सारण राभे मेरा सू वेढ हुई तठै काम आया स० १५६० काती वद।"

तत्पश्चात् उसके द्वारा की गई राजघराने की सेवाओ का वृत्तात है। उसको सोजत के माढा डीडवाना तथा फतैपुर और झुझनू वि० स० १६६७ मे मालदेव से प्राप्त हुए।

१ मांडण कूपावत का वृत्तांत –

कूपा के पुत्र माडण सम्बन्धी कुछ घटनायें राजस्थानी भाषा म इस प्रकार लिपिवद्ध है—

' मालदवजी माडण रो पटो माडणजी न दियो पछ माडणजी रै वाळा हुमा सो पग उठ न सकै, चाकरी म मार्ने नही तरै पटा रावजी पाल्से कियो। माडणजी जाय उदसिंघ रै वसिया राणाजी पोड रो पटो दियो पछै पातसाही चाकर हुआ अकबर पातसाह बेटी मागी, पिण न दीवी १६४३ पातसाहजी प्रासोप माडणजी नै दीयो। आसोप माहे ऊरोपा री पीचतो माळीयो तिर्ण माडणजी करायो थो पछ लाहोर माह राम कह्यो ।

२ पींवो मांडणोत का वृत्तांत –

माडण के पुत्र खीवे का वृत्तात इस प्रकार दिया है —

"पीवो पातसाही चाकर पहला रायसिंघ चद्रसेणोत रो चाकर मेडता रो गाव ईडवो वसी नू दीयो, पछै दखिण था स० १६६६ श्रीजी साथ अहमदावाद आया १६७४ बुहानपुर राम कह्यो ।"

३ राजसिंघ पींवावत का वृत्तांत –

राजसिंह (खीवा का पुत्र) कूपावत को गाव जागीर म मिले इत्यादि घटनाओ के बाद उसका मृत्यु सवत् अंकित है—

" दखिण माहे पीवजी साथे, पछ देस म आया, श्रीजी रो लिपीयो आयो जु राजसिंह नू रावजो तरै देस माहे श्री कुवरजी गोयददासजी राजसिंहजी नू स० १६६८ बाहुला रो पटो दे ने रापीयो १६७६ आसोप रो पटो वधारै दीयो आसोप माहलो कोट तळाव बावडी कराया वडलू वडो बाग करायो, १६८७ रा पोस वद ५ सोमवार रात ऊपर घडी ४ गई तर राम कह्यो। जोधपुर माहे वहु १ भटीयाणी ने खवास ३ आसोप माह सती हुई प्रवाडा १८ कीधा।'

४ रतन राजसिंघोत का वृत्तांत –

इसम राजसिंह के पुत्र रतन सम्बन्धी सक्षिप्त वृत्तात दिया है, जो इस प्रकार है—

"पहला ही चडावल रो पटो स० १६८७ दीया, पछ स० १६८९ देवली रो पटो दीयो सु स० १६९१ कुवरजी श्री अमरसिंघजी साथे गया स० स० १६९२

वळ राजसिंघोत आगर ले गया तरै खेरवा रो पटो दीया। स० १६६६ रा आसाढ सुद २ जन्म।"

५ नाहरखान राजसिंघोत का वृत्तात –

इसमें केवल उसके पुत्रों की सूची दी है।

६ कान्हा पींवावत का वृत्तात –

पीवा के पुत्र कान्हा कूंपावत का वृत्तात इस प्रकार है—

"कान्हजी वडा देवडा रा भाणेज पछै पातसाही चाकर हुआ १६७७ पातसाही फौज दिपणीयां कनै भागो बुरहानपुर लोहडे ३ दिन श्रावण माह पडिया रहया पछै भोमिये उपाडिया । १६७८ पीपावड रो पट्टो दरावल रायिया स० १६८७ बुहानपुर माहे राम कयौ ।"

७ मानसिंह पींवावत का वृत्तात –

खीवा के पुत्र माना कूंपावत का खीवसर का पट्टा इत्यादि मिलने क उल्लेख है।

"वडा देवडा विजाजी रा दोहिता, स० १६७८ मडत रायिया सु गाव रो पटो रयो पछ १६७८ पीवसर री पटो दीयो सु स० १६८१ छाडीयो पछ स० १६८६ वळे पीवसर री पटो दियो ।"

८ किसनसिंघ पींवावत का वृत्तात –

खीवा के पुत्र किसनसिंघ कूंपावत का विवरण दिया है जिसे नाहडसर ग्राम का पट्टा मिला हुआ था।

' देवडा री भाणेज रावळे स० १६७८ नाहडसर री पटो दीयो थो सु १६७८ जेठ सुद ८ देस माहे अबू साहजादो मेडते थो सो साहजादा री वित मेर ले लियो तिण रा दाम देणा किया था त्या माह अबू आय नै नीबोल जैतारण री रा बौरा उपड ले नीसरियो त्यारी बाहर किसनसिंहजी नै रामदासजी काम आया।"

९ गोयददास पींवावत का वृत्तात –

खीवा के पुत्र गोयददास जिसे रतकूडिया सोयला इत्यादि गाव मिले हुए थे, का वृत्तात इस प्रकार है—

" भाटियो री भाणेज रावळे १६७८ रतकूडियो सायलो कई गाव भू पटे था सु स० १६८६ छाडीयो स० १६९१ कु० अमरसिंहजी साथ गयो, बरस १ रहियो ---।"

१० पूरणमल माडणोत का वृत्तात –

माडण के पुत्र पूरणमल द्वारा की गई राजघराने की सेवाओं तथा दताणी के युद्ध म मारे जाने का उल्लेख है।

" मुरताण सू वेढ हुई स० १६४० काती सुद ११ तठै पूरणमलजी राव रायसिह भळा काम आया।"

११ माधोदास पूरणमलोत का वृत्तात –

पूरणमल के पुत्र माधोदास कू पावत का वृत्तात इस प्रकार अकित है—

' धणला री पटा दियो पछै १६६६ साजत रा माढा री पटा दियौ आगानूर रा लोको सू पानाजगी तठै माधोदासजी र तीर लागो काम आया, पछै तिण वैर १६८८ किमनसिंघ जसवतोत आगानूर नू मारीयो।'

१२ वणीदास पूरणमलोत का वृत्तात –

पूरणमल के पुत्र वैणीदास कू पावत सम्बन्धी कुछ घटनाओ का विवरण इस प्रकार दिया है—

"माढा री पटो था पछ मोडता स० १६५८ रावळ हुमो तद वणीदासजी नै भाण भाटी फोजदार राखिया था सु या थका कनीदासजी रा लोक धन रा पेडा काढ ले गया तिण दिसा या सू रीसाणा, पछै स० १६६१ श्रीजी देस पधारिया तरै मेडते आया तरै महदली नू कहयो—वैणीदास न भाण पगै लागै तरै तु कहै वणी बाई भाण बाई पगै लागै छ। महदली कह्यो तिण उपर वणीदास भाण वेउ छाडिया पछ स० १६६८ रिडकली केई गाव सू, पछै स० १६६६ कालोऊ कई गाव सू, १६८१ पूरब था आवता राम किया।"

१३ महेस कूपावत का वृत्तात –

कू पा क पुत्र महसदास का वृत्तात इस प्रकार अकित है—

' राव मालदेजी राम कु वर नु देसवटो दीयौ तरै पहला उपाव कर रामजी नू कहयो—राणो आपणी धरती उपर आयो चाहे छ थे साथ लेने जाय नु दोज थाणा रहजो, तरै महसजी (कू पावत) नू ही राम कु वर साथे विदा किया पछ बासा या बेरा (रानियो) ही राम री मल दी न कहाडीयो थानू देसवटो छै पछ राव राम रै टीके राव कला हुवौ सो कलो पातसाही चाकरी करण न जाय, पातसाही फौज आई स० १६३२ मिगसर सुदि १२ । पछ सोजत सद या त्या राव कला सू वढ की स० १६३२ रा माह सुद ८ तठै महेसजी काम आया, गाव डीघोड वेढ हुई ।"

१४ सादूळ महेसदासोत का वृत्तात –

महेसदास के पुत्र सादूळ रूपावत सम्बन्धी विवरण इस प्रकार है—

" राव कलो न महसजी काम आया पछै सोजत सद या त्या सू सादूलजी जोर मामलो कीयो न तुरके घणा ही सादूलजी नू मारण नू कीयो पछ चद्रसेन स० १६३६ डूगरपुर वागड था धरती माहे आयो तर सादूलजी मुहडा आगे हुआ पछै १६४० गाव दताणी वेढ म रायसिंह भेळो काम आयो।"

१५ किसनसिंघ जसूतोत का वृत्तात –

जसवतसिंह के पुत्र किसनसिंह रूपावत द्वारा राजघराने म की गई सेवाओं इत्यादि का विवरण इस प्रकार है—

'रावळे स० १६८० रीसाणीयो सोजत रो गाव ३ सू थो सु १६८८ छाडियो पछै स० १६६१ सोजत रा कटाळिया रो पटो द जाळोर फौजदार कर मेलियो सु स० १६६२ वणवीर देवल उपर रावळो साथ सिरोही रो राव अपराज चढ गया था तठै घाटी माहे वेढ की किसनसिंह काम आयो ।"

१६ गोवधन चादावत का वृत्तात –

चादा क पुत्र गोवधन रूपावत का वर्णन इस प्रकार दिया है—

'स० १६६७ काकोणी दीवी केई गाव सू पछै स० १६७६ गजसिंघपुरो पछ स० १६७६ चडावळ रो पटो दीयो स० १६८० पूरब साहजादा पुरम री वेढ लोह पडियो उजैण साहिजादा उपर मेलिया तठै काम आयो।" (पत्र–३७)

अखेराज रो परिवार –

यहाँ अखेराज (रिडमल के पुत्र) के पुत्रो रावळ राणा, सिहा, नगराज, सीधल का वृत्तात फिर से दिया गया है तथा पूर्व वर्णित रूपावत राठोडो इत्यादि का विवरण भी दिया है।

माला अखेराजोत का वृत्तात –

माला अखेराजात के वशजो का सक्षिप्त विवरण दिया है जो पहले नहीं दिया था। यथा—

"करमसी मालावत स० १६३६ चद्रसेन विया था आय न गाव सवराड वढ की सर्दा सू तठ काम आयो।" (पत्र–२२)

रिडमल के वशजो की विगत –

१ साडावत राठोड –

इसमे रिडमल के पुत्र साडा व उसके वशजों का विवरण अंकित है।

आरम्भ—

"साडो राव रिणमल रो साडा रो वेसणा वेरु राव जोधा रो दीयोड़ो, साडो वाघेलो री भाणेज ।" (पत्र–१)

२ राठोड वरा रिणमलोत रो परिवार –

इसमे रिडमल के पुत्र वरा व उसके वशजो का विवरण दिया है जिसमे रामदास वैरावत का कुछ विस्तार स वरणन दिया है, उसकी ८४ प्रतिज्ञाओ (आखडियो) की सूची दी है। (पत्र–४)

३ षेतसी जगमालोत रो परिवार –

इसम रिडमल के पौत्र व जगमाल क पुत्र खेतसी और उसके वशजो का हाल दिया गया है। इन्होने नेतडा गाव बसाया। (पत्र–४)

४ अडवाल रो परिवार –

रिडमल के पुत्र अडवाल के वशजो का नामोल्लेख है इनको जोधा की ओर से आसोप का गाव हीगोली मिला हुआ था। (पत्र–३)

५ जतमल रिणमलोत रो परिवार –

इसमे रिडमल के पुत्र जतमाल व उसके पुत्र भोजराज तथा उसके वशजो इत्यादि का ब्योरा दिया है। (पत्र–१)

६ सकतावत रिणमलोत रो परवार –

रिडमल के पुत्र सकता व उसके वशजो का नामोल्लेख है। (पत्र–१)

७ नाथु रिणमलोत रो परवार –

रिडमल के पुत्र नाथु और उसके वशजा का उल्लेख है। यथा—

"केहिक दिना नाथू री परवार बीकानेर नू थो नाथूसर बीकानेर नवौ गाव वसीयो ककू पारी पटी रो गाव छै जोधपुर री बू गडी था कोस ४ छै, बीकानेर र देस भळू चान्ही इणा रा उतन गाव था हमै भाटिया नै छै, चान्ही (गाव) अजेस नाथूओता नू छै ।" (पत्र–२)

राव चूडा के वशजो की विगत –

१ राठौड भींवोत रो परवार –

चूडा के पुत्र भीव तथा उसके वशजो का हाल दिया है। इसमे वरजाग भीवोत का वृत्तात देकर वशावली दी है जो इस प्रकार है—

वरजाग भीवोत

सुरजन वरजागोत, कलौ, सूरजनोत

अयेराज कलावत, मेघराज अयेराजोत, राघोदास मेघराजोत, सुन्दर राघोदासोत।

फिर इनके पुत्रो के नाम के साथ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं। वरजाग के बारे मे लिखा है कि वह सूजा के राजगढ का थानेदार था तथा बादशाह ने उसे हाथी सिरोपाव इत्यादि प्रदान किये गये। (पत्र-८)

२ अरडकमल चूडा रो परिवार –

इसमे चूडा के पुत्र अरडकमल के वंशजो की सूची अंकित है। अरडकमल व उसके पुत्रो चरडा व चादराव सम्बन्धी कुछ घटनाएँ उद्धृत हैं—

गागाद वीरमात नैं भाटी राव राणगदे मारीयो थो तिए रैं वर अरडकमल भाटी सादा राणगदे रा बेटा नू मारीयो, पछै किण ही सूल गुजरात अरडकमल नू मोळ दीया थो उठै अरडकमल माराणो। तिण अरडकमल रा बेटा चरडा नै चादराव हुवा तिकैं राव रिणमल चूडावत रैं वसीया, मेवाड म पछ राव रिणमल चूडावत नैं चूक कर राणो कुंभे चीतोड मारीयो तरै चरडो न चादराव श्रे जोधा रिणमलोत नू साथ ले निसरिया पछ भीलवाडा रैं घाटे राणा री फौज जोधा थास आपडी तठै चरडो नै चादराव काम आया। जोधे धरती वाळी तर चरडा रा बेटा नू जोध सवराड ओलवी, कराडी (३ गाव) दीया।' (पत्र-१०)

३ वरसल भींवोत रो परवार –

चूडा के पौत्र व भींव के पुत्र वरसल के वंशजो की सूची दी है—

३ वरसल भींवोत
४ पगार वैरसलोत
५ वरसिंघ पगारोत राव फलोदी थी
६ सुरताण वरसिंघ रो
७ सूजो सुरताण रो
८ भोजो सुजा रो
९ रामदास भोजा रो

इस उपरोक्त वंशावली के अतिरिक्त इन राठोडो के पुत्रों प्रपुत्रो के नाम इत्यादि भी दिये हैं। (पत्र-३)

४ राठोड़ सहसमल चूंडावत रो परवार –

राव चूडा के पुत्र सहसमल के वंशजो का वृतांत दिया है जो सहसमलोत राठोड कहलाये। सहसमल को सिरियारी का पट्टा मिला हुआ था यह हूल राजपूतो के हाथो मारा गया जिसकी घटना इस प्रकार दी है—

'सहसमल चूडावत बडो ठाकुर हुवो सिरियारी दो था के रा दो थी सु सहसमल रो राजथान सिरियारी, रा घर सिरियारी मायर माह छै। सहसम सहसमल हुवो रा बामण एकै नु

सिरियारी री वाडी ग्राप सहसमल उतरियो तर कहण लागो आजरो दिन भलो न छै, राज सवारे गाव माह पधारजो। सवार रो निपट भलो दिन छै। तर सगळै कह्यो एके दिन माहे क्यू ही पाटोमोळो हुवे नही छै वामण जाय हूला नै पवर दीनो सहसमल तो वाडी रह्यो नै रजपूत चाकर रात पोहर गई। आपरे घरे गया हुल आय झूबीया सहसमल मारीयो गयो। एक भतीज एक भाणेज साथे परणीजोया था सु तिको पिण वाडी माहे मुहुरत र वास्ते रह्या था सु माराणा, एक चारण काम ग्रायो सेहसेलाव तलाव री पाळ ऊपर सहसमल री छत्री है, सती तीन हुई है सु सहसमल री छत्री माहै माडीयो ग्रापरो वैर भावलदै हाडी माडी छै भतीज भाणेज री नै चारण री वैर सती हुई छ सु पिण माडी (ग्रकित) छै।'

सहसमल के वशजो की वशावली इस प्रकार है—

२ राठौड सहसमल चू डा री	३ रावत राघवदे सहसमलात
४ पचायण राघवदे रो	५ रायमल पचायण रो
६ मानसिंह रायमल रो	७ नारायण मानसिंह रो
८ जगनाथ नारायण रो	९ मुकन्ददास जगनाथ रो

५ राघवदास का वृत्तात –

सहसमल के पुत्र राघवदास को राणा कुम्भा ने सोजत का पट्टा दिया। राघवदास के राव जोधा से लडते हुए चौकडी के थाने काल कवलित होने का उल्लेख है तत्पश्चात् उसके पुत्रो की सूची दी है।

' राव रिणमल नू राणो कू भे मार न मारवाड ली तर राणो राघवदे नू रावताइ दे टीको काढ न सोजत पटे देने मडोवर थ्हावण नू साथे मेल्हीयो, तद सोजत म वेहुरो। श्री लीयमी नारायणजी रो जोधपुर रै फलसे रावत रायदेव करायो छै। पछै राव जोधो चोकडी रै थाणै राणा रा साथ नू झूबीयो तठ राघवदे उठ काम आयो।

११ साप ११ दुहो राव जोधा रो

जोधा विढियो जोध, चहू रावासू चोकडी टीला होडा तेथ, रहीया राघवदे

बेटा री विगत—१ पचायण, देवीदास सायर, रामदास, भोजराज, गोपो, लषमण ७ बेटा राघवदे रा।"

६ लूणा सहसमलोत के पुत्रो की विगत –

सहसमल के पुत्र लूणा के ५ पुत्रो की नामावली दी है जो इस प्रकार है—

फिर इनके पुत्रो के नाम के साथ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं। वरजाग के बारे मे लिखा है कि वह सूजा के राजगढ का थानेदार था तथा बादशाह ने उसे हाथी सिरोपाव इत्यादि प्रदान किये गये। (पत्र-८)

२ अरडकमल चूडा रौ परिवार –

इसमे चूडा के पुत्र अरडकमल के वशजो की सूची अकित है। अरडकमल व उसके पुत्रो चरडा व चादराव सम्बन्धी कुछ घटनाएँ उद्धृत है—

'गागादे वीरमात ने भाटी राव राणगदे मारीयो थो तिण रै वर अरडकमल भाटी सादा राणगदे रा बेटा नू मारीयो, पछै किण ही सूल गुजरात अरडकमल नू श्रोळ दीयो थो उठ अरडकमल माराणो। तिण अरडकमल रा बेटा चरडा न चादराव हुवा तिकै राव रिणमल चूडावत रै वसीया, मेवाड मे पछ राव रिणमल चूडावत नै चूक कर राणो कुभे चीतोड मारीयो तर चरडो न चादराव श्रे जोधा रिणमलोत नू साथ ले निसरिया पछ भीलवाडा रै घाटे राणा री फौज जोधा वासे आपडी तठै चरडो न चादराव काम आया। जाधे धरती वाळी तर चरडा रा बेटा नू जोध सवराड ओलवी कराडी (३ गाव) दीया।" (पत्र-१०)

३ वरसल भीवोत रौ परवार –

चूडा के पौत्र व भीव के पुत्र वरसल के वशजो की सूची दी है—

३ वैरसल भीवात ४ पगार वैरसलोत
५ वरसिंघ पगारोत राव फलोदी थी ६ सुरताण वरसिंघ रौ
७ सूजो सुरताण रौ ८ भोजो सुजा रौ
९ सामदास भोजा रौ

इस उपरोक्त वशावली के अतिरिक्त इन राठौडो के पुत्रो प्रपुत्रो के नाम इत्यादि भी दिये हैं। (पत्र-३)

४ राठौड सहसमल चूडावत रौ परवार –

राव चूडा के पुत्र सहसमल के वशजो का वृत्तात दिया है जो सहसमलोत राठौड कहलाये। सहसमल को सिरियारी का पट्टा मिला हुआ था वह हूल राजपूतो के हाथो मारा गया जिसकी घटना इस प्रकार दी है—

"सहसमल चूडावत वडो ठाकुर हुओ राव चूड सिरियारी दी थी क राणे दी थी सु सहसमल रौ राजथान सिरियारी हुतो। सहसमल रा घर सिरियारी भाखर माहे छ। सहसमल कठैक परणीजण गयो थो सु हुले नै सहसमल दावो हुतो सु बामण एकै नु हुले हेरो लगायो थे सु कठै ही कि चेतो घात लागी नही नै

सिरियारी री वाडी ग्राप सहसमल उतरियो तरै कहण लागो आजरो दिन भलो न छै, राज सवारे गाव माह पधारजो। सवार रो निपट भलो दिन छै। तरै सगळै कह्यो एके दिन माह क्यू ही घाटोमोळो हुव नही छै वामण जाय हूला नै पबर दीनो सहसमल तो वाडी रह्यो नै रजपूत चाकर राठ पीहर गई। आपर घरे गया हुल आय भूंबोया सहसमल मारीयो गयो। एक भतीज एक भाणेज साथ परणीजीया था सु तिका पिण वाडो माहे मुहरत रै वास्ते रहया था सु माराणा, एक चारण काम आयो सहसेलाव तलाव री पाळ ऊपर सहसमल री छत्री है, सती तीन हुई है सु सहसमल री छत्री माहे माडीयो छ मापरो वर भावलदं हाडी माडी छै भतीज भाणेज रो न चारण री वैर सती हुई छ सु पिण माडी (अकित) छ।'

सहसमल के वशजो की वशावली इस प्रकार है—

२ राठौड सहसमल चूडा रो	३ रावत राघवद सहसमलात
४ पचायण राघवदे रो	५ रायमल पचायण रो
६ मानसिंह रायमल रो	७ नारायण मानसिंह रो
८ जगनाथ नारायण रो	९ मुकन्ददास जगनाथ रो

५ राघवदास का वृत्तात –

सहसमल के पुत्र राघवदास को राणा कुम्भा नै सोजत का पट्टा दिया। राघवदास के राव जोधा स लडते हुए चोकडी के थाने काल कवलित होने का उल्लेख है, तत्पश्चात् उसके पुत्रा की सूची दी है।

' राव रिणमल नू राणो कूभे मार न मारवाड ली तरै राणो राघवदे नू रावताई द टीको काढ न सोजत पट देन मडोवर वसावण नू साथे मेल्हीयो, तद सोजत म देहुरा। श्री लीषमी नारायणजी रो जोधपुर र फलसे रावत रायवेव करायो छै। पछे राव जोधो चोकडी रै थाणा राणा रा साथ नू भूंबीयो तठै राघवदे उठ काम आयो।

११ साथ ११ दुहो राव जोधा रो

जोधा विढियो जोध, चढू रावासू चोकडी टीला होडा तेथ, रहीया राघवदे

बेटा रो विगत—१ पचायण, देवीदास, सायर, रामदास, भोजराज, गापो, लषमण ७ बेटा राघवदे रा।"

६ लूणा सहसमलोत के पुत्रों की विगत –

सहसमल के पुत्र लूणा के ५ पुत्रो की नामावली दी है जो इस प्रकार है—

१ करमसी	२ वीको	३ वीजो
४ सिवा	५ पूना	

(पत्र–३)

■ रणधीर चूडावत रो परवार –

चूडा के पुत्र रणधीर तथा उसके वशजा का विवरण दिया है। इसके वशज रणधीरोत राठोड कहलाये। मडोर के शासक राव सता राठौड का राज-काज रणधीर द्वारा चलाने, भाटी राव राणगदे के पुत्र सादा को मारने इत्यादि घटनाएँ इस प्रकार लिपिबद्ध है—

'१२ रणधीर चूडावत—रणधीर, सतो पूनो ए तीने ही भाई गहलोता रा भाणेज तारादे रा बेटा, राव रिणमल रा सगा भाई च्यार भाई त्या माहे पहिला ही सतो नू डावत मडोवर टीके बैठो तरै राव सता रै मुहडे भ्रागे काम रणधीर चलावतो रणधीर, राव चूडा वैर माहे भाटी सादो[1] राणगदे रो पूगलीयो मारियो पछ सते जीवता होज रणधीर राम कयो, तर सता था राज हाले नही तरै रिणमल नू टीको दीयो न सतो कायलाणे भ्रा रह्यो ।

१३ हरराज रणधीरोत	१४ सावत हरराजोत
१५ परबत सावतोत	१६ दूदो परबतोत
१६ घडसी परबतोत	१७ रार्मासह घडसोत
१८ रतनसिह रार्मासघोत	१८ देईदास रामसिघोत नू घोडे मारियो

आगे रणधीर चूडावत सम्बन्धी एक वार्ता दी है जिसमे मालदव के इशारे पर नागोर के खान (दालतिया) के मेडता पर आक्रमण करने तथा इस युद्ध मे जैमल की ओर रणधीर के मारे जाने का उल्लेख है। वार्ता सक्षेप म इस प्रकार वर्णित है—

' वीरमदे री वार माहे मेडतो मारण नू मेडते पवर कही ■। राव मालदे वीरमदे नू आय कन तेडायो थो न दोलतीया नू कहाडियो थो थे मेडते भूबो (आक्रमण करो) वीरमदे म्हा कने छै सु रिणधीरोत कटक री चढाई दीठी रिणधीरोत आपरो घोडो नजाणा ऊठ हुतो तिण चढ नै उडाया सू कटक आवता पैंहला घडी २ आगे आय न पबर दी कोट री पोळ जडाणी साथ समायो वेढ निपट सबळी हुई रिणधीरोत ठाकुर अपेराज रा मुहडा आगे काम आयो, नागोर रो साथ भागो। वेढ अपराज जीती, ता पछ रिणधीरोत रा बेटा

---

१ अरडकमल चूडावत द्वारा भाटी राणगदे का पुत्र सादा के मारे जाने का उल्लेख है देखें 'अरडकमल चूडावत री परवार ।

पोता भतीजा नू आदर भाव घणो कर मडतीया ठाकुर चाकर राखिया कायलाणा माहे मोकल री वाडी छै, तठै कूवो छै तिण उपर कीरथभ छै तिण थभा माह रिणधीरोत चूडावत रो नावो छै स० १६७५ रा रो सवत लिपीयो छ।"

रणधीर चूडावत के अन्य पुत्र नीवा रणधीरोत तथा नापा रणधीरोत के वशजो की विगत दी है। नीवा के पुत्र मेला के बारे मे लिखा है कि उसे बीकानेर का गाव अमर मिला हुआ था (उतन)। (पत्र–१२)

८ राठौड कान्हा चूडावत रो परवार –

१ चूडा २ कान्हो चूडावत ३ भारमल कान्हा रो
४ घडसी भारमलोत

घडसी भारमलोत का वत्तात –

'घडसी भारमलोत वडो ठाकुर हुओ राव मालदेजी री वार माह मेवाड र फेनवे कुभलमर कन्हले थाणे रहतो, थावलो पट हुतो, केलवा मेवाड म जीलवाडा था कास ७ आवलमाल भापर रहे छ। केलवो राम मालदेआत नू उदसिंघ पटे दीयो थो ।'

घडसी के पुत्र महेस का वत्तात –

महेस घडसीयोत वडो ठाकुर हुओ राव मालदेव रा दीया अजमेर पीपाड पट हुता महेस राठौड देवीदास साथे १६१८ मडते काम आयो। महस वडा ठाकुरा माहे थो पिण वडी यढ जतो कूपो काम श्राया तठ नीसरीयो थो महेस ।"

आगे अन्य कान्हावत राठौडा के नाम दिये हैं जिनको गाव इत्यादि पट्टे मे मिले तथा श्रव युद्ध इत्यादि मे मारे गये उसका उल्लेख है। इन राठौडो का सम्बन्ध मूल पुरुषा से जोडा गया है। (पत्र–६)

६ राठौड पुनपाल चूडावत रो परवार –

इसमे राव चूडा के पुत्र पुनपाल तथा उसके वशजा का विवरण दिया है। पुनपाल सम्बन्धी घटनाए इस प्रकार दी हैं—

"१२ पुनपाल राव चूडा री गहिलोता री भाणेज। सता, रिणमल रणधीर नैं पूनो ४ भाई वालीसा कहै मोहरा भापरा री पाणी जाय तलक तिए था गोहू नीपजे ■ या रो भोग म्हे लेसा सता चूडावत र राज। तर हेक छाकरी बेटी रो नाळेर मेल न कहो मैं थानू परणावा छा ये आवौ सु वीसलदे (वालीसा) जान कर आयो सु पुना सु मिळियौ तरै पूने मिळते हीज भीच न जीव काढीयौ ।"

१३ डूगो पुनपाल रो	१४ दवो डूगावत
१८ लूनो दवावत	१५ लू णा दवावत
१६ वरजाग लू णावत	१७ जोणा वरजागात
१८ जतसी जोणा रो	१६ हरीदास जैतसो रो"

ग्राग पुनपाल के इन वशजा के पुत्रा, पौत्रो, प्रपौत्रा की विगत दी गई है तथा पुनपाल द्वारा बीमलदे दूदावत का मारने का घटना का पुन जिक्र किया है जिसम बीसलद दूदावत का जालोर का शासक हाना लिखा है इम घटना स सम्बधित एक गीत दिया है—

गीत प्रारम्भ—

बळ मत करै गाट कर बालीसा, बळ म लाऊ ग्राप बळ, पुना तणै वधा म मडियौ वीसल जीवण मतै बळ ।'

पूना चू डावत का रोहिट १८० गावा स मिलन का भी उल्लेख है। (पत्र-४)

१० राव सता चूडावत रो परवार –

राव चू डा के पुन सता जो कान्हा का उत्तराधिकारी हुआ उसक वशजा का विवरण दिया है। पीढिये इस प्रकार है—

१२ राव सता चू डावत	१३ नरवद सतावत
१४ वरसिंघ नरवदोत	१५ रायमल वरसिंघ रो
१६ सागा रायमल रो	१७ जतसी सागा रो
१७ सूजो सागा रो	१७ जमल सागा रो
१७ पतसी सागा रो	१८ भगवानदास पतसी रो
१८ गोपालदास पतसी रो	१६ जतसी गोपालदास रो
२० कल्याणदास जतसी रो	

इन राठौडा मे स निकलन वाली शाखाग्रो प्रशाखाआ के व्यक्तिया के नाम एतिहासिक टिप्पणियो सहित दिय हैं। नरवद सतावत के बारे मे लिखा है—

"राठोड नरवद सतावत एकरमा राणा री साथ लेने काडमदेसर राव जोधा उपर विप म ग्रायो था मु नडो आयो तर राव जोध नू खबर हुई न नरवद पिण खबर दी तर जोधा जीमण री थाळी पुरसो थी मु मल नै ग्रळगी निसरीयो, एक नान्हो सी डावडा पिण पालणा म रही।

११ जोगा वरसलोत का वृत्तात –

सता के पौत्र व वरमल क पुत्र जागा व राव जोधा के बारे म एक घटना इस प्रकार दी है—

जोगो वरसलोत वडो हुओ, जिण राव जोध जाधपुर बैठा थका चौगान कह्या था सादिया ली गाव जोधा एक दिन पूछीयो—जोगा थार गाय भस कितरी एक मिळे छै, तर इण कह्यो—म्हार माणको तरवार मिळ छ। पछ राव जोध कह्यो—हूता थार माणको मिळ तरै म्हानू पियार छ इण कितराईक दिन पाडा घाल न असवार ५०० करन साडा ली न राव जोधा नू असवार २ मल्ह न कह्यो माणको आज मिळ छ।" (पत्र-११)

१२ राठोड राजधर चूडावत रो परवार –

चूडा क पुत्र राजधर के वंशजो की नामावली दी है। पीढियें इस प्रकार अंकित है—

१ राव चूडो वीरमोत	२ राजधर चूडावत
३ उदसिंघ राजधर रो	४ सुरजन उदैसिंघोत
५ लषणो सुरजन रो	६ किसनो लषणा रो
७ नागो किसनावत	७ वाघा नागा रो
९ हाथी वाघावत	१० सूरो हाथी रो
११ जसा सूरा रो	१२ लालो जसा रो
१३ दूहड जसावत	(पत्र-१/२)

माला सलखावत रो परिवार –

राव सलखा क पुत्र मल्लीनाथ के वशजो का विवरण दिया है जो क्रमबद्ध नही है।

१ जगमाल के पुत्र भारमल का वृत्तांत –

अंकित है कि भारमल अपने पिता जगमाल द्वारा मारा गया।

'१२ भारमल जगमाल रो, भारमल नू बाप जगमाल होज मारियो। भारमल दातार थो सू चारण जगमाल नू कह्यो भारमल रो बाप तिण मारियो नर चारण कहे—

पूत पियार मातलोक भी पूत पियारे।
पूता कारण ताडीयो अबर हू तारे॥

गोवाणचा राठोड—

हू पो राव माला रो जिण रा गोवाणचा राठोड कहीज।

फलसू डिया राठोड—

उदसी मालाउत जिणरा फलसू डिया राठोड कहीजै।

कुसुमलीया राठोड—

ग्रडवाल मालावत जिणरा कुसुमलीमा राठोड कहीजै ।

२ मल्लीनाथ के पुत्र जगपाल का वृत्तात –

जगपाल मालाउत जगपाल न चद्रावत देवडी नै वजक न लूठो जतमलोत रावल माल अलावदीन पातसाह र ग्राळ रापीया छ । पछै पातसाह या नू कलमो भणायो । तठा पछला जगमाल रा पट रा पठोण छ । घाघरीया राठोड तिक जगपाल रा पोत्रा चाडा नराउत फलोदी रै गाव घाघर वसीयो तठा था घाघरीया कहीजै ।' (पत्र–२०)

जतमाल सलपावत री परवार –

राव सलखा के पुत्र जैतमल व उसक वशजा का विवरण दिया है । इसक वशज जतमलोत कहलाय ।

प्रारम्भ—

जैतमल सलपावत राव मलाजी न जतमालजा सगा भाई पडिहारा रा भाणेज । रावळ माले महव थके सिवाणो जतमाल नू द सिवाणे वासीया, पछै जगमाल मालाउत जैतमाल नू चूक कर मारियो ।"

पीढियें इस प्रकार अंकित है—

११ हापो जैतमालोत	१२ हरभू हापावत
१३ भादो हरभू रो	१४ राजा भादावत
१५ पातल राजा रो	१६ दासो पातलोत
१६ भापरसी दासाउत	१८ केसोदास भापरसोत
१८ कल्याणदास भापरसोत	१९ वाघ केसोदासोत

१ दासा पातलोत का वृत्तात –

१६ दासो पातलात राव मालदेजी र दासाजी र पट साचोर थी, पछै पहला ही दासोजी जाय अकबर पातसाहजी नू मिळीया । पातसाह रा दरसण हुय रहा पछ पातसाह साचोर नै कालू मडता री दी ।"

२ भापरसी दासाउत का वृत्तात –

'१७ भापरसी दासाउत पातसाहजी साचोर कालू वरकरार रापी ली छ १६५६ दक्षिण माह राम कयो ।"

३ केसोदास माखरसोत का वृत्तात –

"१८ केसोदास भापरसोत स० १६६४ लाबी परवा री पछै सिराणो ।"

४ कल्याणदास मासरसोत का वृत्तात –

"१८ कल्याणदास भापरसात स० १६६४ पाचपदरो भाद्राजण री पहिला स० १६५६ कु डल सिवाणा री दीया थो स० १६७५ भाडोला भाद्राजण री स० १६८४ पादू सिवाणा री सु स० १६८७ गाव ग्रोछर । दषिण माहे राम कयो, रावल जगमाल पछ बीज दिन ।"

५ रावत उदा का हडदे का वृत्तात –

जैतमाल का वजल, वजल का का हडद तथा का हड का रावत उदा द्वारा मडता का गाव गगडाणा उसान इत्यादि का विवरण इस प्रकार दिया है—

"१३ रावत उदा का हडद री उदै सिवाणा था आया नै पहिला ही गाव गगडाणो मडता री वसायो तद मडतो सूनो थो। पछ उदा री उठै जोरो हुम्रो फलोदी नागौर लार थी सु उद मडता लार की । तद मडतावटो माह सापला रजपूत रहै नै जतारण तद सीधला री जारी सीवल पीदान नरसिघोत वडो ठाकुर ।

दूदो जोदावत आय मेडतो वसायो तरै उद आगे हुय या रा हुाडा कीया ।'

६ अखेराज भदावत का वृत्तात –

उदा का मोकल, मोकल का भदा, भद का अखराज जिसका विवरण इस प्रकार दिया है —

'१६ अखेराज भदाउत वडा रजपूत हुओ जैमलजी रै अपराजजी र पट लाबीया पालडी नतडो घोलराव अपुवस, मुगदडो वडो था पछै राव मालदेजी कन परधीन मेलीया था सु प्रिथीराजजी दप न कह्यो जमला र अपराज कहीजै सु म्रो भीव सु म्रतरो साभल न अपराजजी रीसकर न उठीया सु उठतै गळा माह पोतियो थो सू काटकीयो सु पोतिया रा आगुल रा टुकडा हुय न उडाया न प्रिथीराजजी नू कह्यो म ग्रोहीज भीव छा हम थे वगा पधारजो । पछ राव मालदेजी स १६१० जमलजी उपर मडते गया तठै प्रिथीराजजी नै अपैराजजी न बेउ ठाकुर काम आया ।" (पत्र–१६)

सुहड र परवार री विगत –

सलखा क पौत्र सोभित क पुत्र सुहड तथा उसके वशजा पूवजो इत्यादि का वत्तात है ।

१ सोभित सलखावत का वत्तात –

"१० सोभित सलखावत सोभित नै राव वीरमजी सगा भाई सोढा रा

भाणेज पछै व्याही नू राव माल महेवा परा काढिया पछ सोभित तौ विछ हिज रह्यौ पोकरण र मढलै गाडा छोडीया नै विरम विठुडै गयौ।"

२ सुहड सोभित का वृत्तात –

'११ सुहड सोभित रो जिण रा सुहड राठोड कहीज सुहडा रौ वसणा गाव मढलौ पोकरण रो है।"

छाडा री परिवार

१ का हडदे छाडावत का वृत्तात –

'६ का हडे छाडावत सलषाजी रौ भाई महवे का हडदे ठाकुर हुतौ तरै सलषाजी न परा कढीया मु सलषाजी जाय गापडी गाव सिवाणा रौ रह्या, पछै सलषाजी रै ४ बेटा हुग्रा।'

२ त्रिभुवनजी का वृत्तात –

'१० त्रिभाणसी का हद रौ[1] त्रिभाणसी रावल मालारा हीडा कीया चहुवाण मालद मु छाळै अलावदी पातसाह ग्राग घाल घाली—जु माला र बर बेटी बहुत फुठरी छै, तिण उपर पातसाह रा लिषिया ग्राया तर त्रिभाणजी नडुल जाय न सोनगरा री वहु बेटी हीचोले हीचली उपाड न घोडा री वल चढाय न ग्रलाउद्दीन पातसाह कन ले गयौ पछ माल्द चहुग्राण नू षबर हुई—ग्र तौ ग्रापाणीज बहु बटी आणी पछ मालद पिसाणै पडीयो तर त्रिभाणजी उवानू वेम पहिराय न सगलिया नू पाछी घरे पहुतो कीवी।"

सुहड राठोडो की पीढिये इस प्रकार ग्रन्ति है—

१० सोभित सलषावत	११ सुहड सोभित
१२ सुना सुहड रो	१३ विजराबत सुनावत
१४ आल्हण विजराओत	१५ सोहा ग्रल्हण रौ
१६ नेरु सोहावत	१७ जमल भैरूदासोत
१८ वीरम जमलोत	१९ दुदो वीरमोत ।" (पत्र-९)

वठवासिया उदावतों री परिवार –

त्रिभावनसी के पुत्र उदा जो कि वैठवास आकर वसे इसलिये वठवासिया उदावत कहलाय इसके वशजो का विवरण दिया है।

---

१ त्रिभुवनसी कान्हडदे का पुत्र नहीं वरन भाई था देखें वाकीदास ख्यात पृ० ४

पीढियें इस प्रकार है—

९ उदो त्रिभाणसी	१० विजो उदावत

११ वीरम बीजावत (राव जोधाजी रै बीकानेर रा गांव सउवा था अठ आय न वैठ वासैवगियो)

१२ जैतसी वीरमरोत	१३ लूणो जैतसी
१४ भगवान लूणावत	१५ आसो भगवानोत

तिलोकसी वरजांग —

उदा का वरजांग वरजांग का तिलकसी

'११ तिलकसी वरजांगोत राव मालदेजी रै नडूल र थाण रहतो ।

(पत्र—६)

फिटक राठौड —

राव रायमल का कल्हण, कल्हण का थाथी तथा थाथी का फिटक इसके वंशज फिटक राठौड कहलाये। इसके वंशजों की केवल नामावली दी है।

(पत्र—१)

सूडा राठौड —

रायपाल के पुत्र सूडा के वंशज सूडा राठौड कहलाये उनके वंशजों की विगत दी है, वंशावली इस प्रकार अंकित है—

५ सूडा रायपाल जिण रा सूडा राठौड कहीज

६ उदैभाण सूडा रो	७ सांगो उदभाण रो
८ तोलो सांगावत	९ कवरसी तोलावत
१० गैमल कवरसी रो	११ उदा गैमल रो
१२ पतो उदावत	१३ समर पतावत
१४ कूंपो समर रो	१५ जमल कूंपा रो

फिर इनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की मुख्य उपलब्धियां आदि का विवरण दिया है, सांगा के पुत्र तोला का विवरण प्रस्तुत है—

तोला सांगावत का वृत्तांत —

"८ तोलो सांगावत, तोलो सूडो जिण गांव तोलीसर कोट करायो धणी सपत रो धणी थो सलपाजी रो तोलो मासीयाई भाई सलपाजी सिवाणा री गोपडी रहे सलपा र बहू हेक पडिहारी हेक साढी सु त्यांनू आधीन न सुवावड जोगो क्यू

भाणेज पछ व्याही नू राव माल महवा परा काढ़िया पछ सोभित तो विछ हिज रह्यो पोकरण र मदलै गाडा छाडीया नै विरम विठुड गयो।"

२ सुहड सोभित का वृत्तांत –

'११ सुहड सोभित गो जिण रा सुहड राठोड वहीज सुहडा रो वसणो गाव मड्लो पोकरण रो है।"

छाडा रो परिवार

१ काहडदे छाडावत का वृत्तांत –

६ का हडे छाडावत सलपाजी रो भाइ महव का हडदे ठाकुर हुतो तर सलपाजी नै परा कढीया सु सलपाजी जाय गापडी गाव सिवाणा रो रह्या, पछै सलपाजी र ४ बटा हुआ।

२ त्रिभुवनजी का वृत्तांत –

१० त्रिभाणसी काहदे रो[1] त्रिभाणसी रावल मालारा हीडा कीया चहुवाण मालदे सु छाळ अलावदी पातसाह आग घात घाली—जु माला र वर वेटी बहुत पुठरी छ तिण उपर पातसाह रा लिपिया आया तरै त्रिभाणजी नडुल जाय न सोनगरा री वहु वेटी हीचोले हीचली उपाड न घोडा री बैल चढाय न अलाउद्दीन पातसाह कनै ले गयो पछ मालदे चहुआण नू पवर हुई—अ तौ आपाणीज बहु वेटो आणी, पछ मालदे विसाणँ पडीयो, तर त्रिभाणजी उवानू वस पहिराय न सगलिया नू पाछो घरे पहुतो कीवी।"

सुहड राठोडा की पीढियें इस प्रकार अंकित है—

११ सुहड सोभित
१० सोभित सलपावत
१३ विजरावत लूभावत
१२ लुभी सुहड रो
१५ सीहा अल्हण रो
१४ आल्हण विजराजोत
१७ जमल मरूदासोत
१६ मेघ सीहावत
१६ दुदो वीरमोत ।" (पत्र-६)
१८ वीरम जैमलोत

वठवासिया उदावतो रो परिवार –

त्रिभावनसी के पुत्र उदा जो कि वठवासे आकर वसे इसलिये वठवासिया उदावत कहलाये इसके वंशजो का विवरण दिया है।

---

[1] त्रिभुवनसी कान्हडदे का पुत्र नही वरन् भाई था, देखें बांकीदास ख्यात पृ० ४

पीढियें इस प्रकार है—

९ उदो त्रिभाणमो १० विजो उदावत

११ वीरम वीजावत (राव जाधाजी रैं बीकानेर रा गाव सउवा था अठ आय न वठ वासवमियो)

१२ जैतसी वीरमरेत १३ लूणा जतसी

१४ भगवान लूणावत १५ ग्रासो भगवानोत

तिलोकसी वरजाग –

उदा का वरजाग वरजाग का तिलक्सी

'११ तिल्वसी वरजागान राव मालदजी रैं नडूल र थाण रहता

(पत्र–६)

फिटक राठौड –

राव रायमल का केल्हण, कल्हण का थाथी तथा थाथी का फिटक इसक वशज फिटक राठौड कहलाये। इसक वशजो की केवल नामावली दी है।

(पत्र–१)

सूडा राठौड –

रायपाल के पुत्र सूडा क वशज सूडा राठौड कहलाय उनके वशजो की विगत दी है, वशावली इस प्रकार अकित है—

५ सूडा रायपाल जिण रा सूडा राठौड कहीज

६ उदभाण सूडा रो ७ सागा उदैभाण रो

८ तोलो सागावत ९ कवरसी तोलावत

१० गमल कवरमी रो ११ उदो गैमल रो

१२ पतो उदावत १३ समर पतावत

१४ कूपो समर रो १५ जमल कूपा रो

फिर इनम म कुछ विशिष्ट व्यक्तियो की मुख्य उपलब्धिया आदि का विवरण दिया है, सागा क पुत्र तोला का विवरण प्रस्तुत है—

तोला सागावत का वसात –

"८ तोले सागावत, तालो सूडो जिण गाव तालीसर कोट करायो धणी सपत रो धणी थो मलपाजी री तोलो मामोयाइ भाई सलपाजी खिवाणा री गोपडी रह मलपा र वहू हुक पडिहारी हुक सोढी सु त्यानू आधीन न सुवावड जोगो क्यू

नही तर ताला ग था धाय ले गया तिण धा रावल मालोजी न वीरमजी जाया ।"

राव धूहड़ रो परिवार –

१ वाड़पेना राठोड़ –

धूहड़ पे पुत्र जोगा के वंशजो का हाल दिया है ये वाड़पना के राठोड़ कहलाय इससे संबंधित एक किस्सा दिया है—

जोइत र ताणमताणा सीरप थी नलू णो मस थी न वाडपो कुतरो (कुत्ता) थो, सु जोगाइत वाडपा कुतरो लाप पराजीया माह साह र अडाणा राय मायो थो, पछ साह र चार पैठा तरै वाडपो जागीयो चार पकडीया ब्यार लाप परोजिया रो विस जातो रह्यो तर साह वाडपानू सीप दी मैं जोगाइत नू चीर (चिटठी) लिप वाडपा रै गळै बाधी जुई सोप दी छैं, सु पेरोजी लन जोगाइत वाडपा नू छुडावण हालीयो सू आगे वाडपा साम्हो आयो, जोगाइत रिसायन कैयो साम द्रोह म्हारो बोल गमीयो, इतरो साभळ वाडपो मुओ जोगाइत चीठी वाची घणा ही पिछतायो नै त्या होज परोजीया रो वाडपा रै नाप तलाव करायो सू वाडपो तलाव महेवा पर वाहडमर दिसा छ, उठै बस सु वाडपचारा राठोड कहीजै ।'

२ कटारमल का वृत्तान्त (वहड़ राठोड़) –

राव धूहड का वेहड व वहड का कटारमल का विवरण इस प्रकार दिया है—

४ कटारमल वेहड धूहड रो वेहड कटारी माथ बाधयी, तिण कटारमल कहीजतो जिण रा वेहड राठोड कहीज ।"

३ पेथड़ राठोड़ –

धूहड के पुत्र पेथल (पीतल) के वंशज पेथड राठोड कहलाये—

'४ पथड धूहड रो पेथड रा तिर्के पेथड राठोड कहीजे ।"

(पत्र–१२)

उहड़ राठोडो रो परवार –

राव आस्थान के पौत्र व जोप के पुत्र उहड के वंशजो की विगत दी है । पीढियें इस प्रकार है—

३ जोपसा आस्थान रो ४ उहड जोपसा रो

५ अरसी उहड रो—वरी म्हूबीया तठ आ चहुआणो नैं मारिया, तठै लोह २० लागा पछ घाव फाट मुओ, वेटो नहीं

५ महाणसी उहड रो	६ विजसी महाहणसी रो
७ अर्जसो विजैसी रो	८ धारड अजसी रो
६ तोलो धारड रो—गाय एक नित देतो	
६ मानदे धारड रो	१० दवसी तोला रो
११ पहथ देवसी रो	११ मुहडपाल तोला रो
१२ माडण मुहडपाल रो	१३ दवसी माडणोत
१४ परहथ देवसी	१५ काजो परहथ रो
१६ भाण काजावत	१६ नतसी कजावत
१७ जमल नतसी	१८ गोपालदास जमलोत
१६ भोपत गोपालदासोत	२० गोइददास भोपतोत
२१ केसोदास गोइददासोत	

१ भाण कजावत का वृत्तात –

"१६ भाण काजावत नू राव गागो पहिला ही बावळली कोढणा री पटो दीयौ पछै सगळा कोढणा रो राव मालदेवजी दीयो भाण प्रधानगी माहे थो पछ भाणजी घात घाल नैं रावा कना सू कानो नैं भदो पचाइणोत बीडा माहै विस दे मराया था पछ सूर पातसाह आव न रावजी सोजत पधारिया नैं साथ भेळो हो सु उठ भाण आयो नही तरै रावजी कहयो—भाई भाण उहड अजे क्यू न (आ)यौ तरै जतोजी घात घाली पछै रावजी जगमाल ऊहड नू कहयौ—तू भाण नू मारा पछ भाण आयो सू सोजत री पाल चढता नू जगमाल कूबीओ मारीयो भाण नू ।"

२ नतसो कजावत –

"१६ नतसी काजावत राव मालदेजी कोढाणो किसना भाणोत कना सू लेने नतसी नू दीयो ।

३ जमल नतसी का वृत्तात –

"१७ जमल नैंतसी रो कोढणो जमलजी नू दीयो न नतसी पछै तुरकाणै गोपालदास नैं मुरताण नतसोत तुरकानू मिळ काढण होज रहया न जेमलजी राव चद्रसेनजी साथ विपा म था सू स १६३६ श्रावण वद ११ सवराड सदा सू वेढ की तठै काम श्राया ।"

४ गोपालदास जमलोत का वृत्तात –

"१८ गोपालदास जैंमलोत स० १६४० कोढणो गोपालदास रामा नू दीयो पछ जोधपुर रा गढ उपर रहता सू स० १६५५ जैंसलमेर था रावळ भीव रै भाई कल्याणमल आय कोढण मारीयो तरै गोपालदासजी जोधपुर चढीया जाय

गागा रै भाटीया सू वढ़ की तठ काम आया पहेला उरजन गोपालदासोत न भोपत भाटीया री वित लाया था तिण वैर भाटी आया ।"

५ गोईदास भोपतोत का वृत्तान्त –

२० गोइदास भोपतोत स० १६७३ छासेलाई कोढाणा री स० १६८५ पाचपदरौ सिवाणा री स० १६८ , छाड माहबतखा र वसीयौ पछ मोहबतखा मुग्रो तरै १६६४ पछै राव अमरसिंघजी रै वसीयो ।"

६ उरजन गोपालदासोत का वृत्तान्त –

"१६ उरजन गोपालदासोत किसनसिंघजी (दूधोडके) रौ चाकर थो पछै गोपालदासजी काम आया तरै स० १६२६ कोढाणा तीजा हैसा सू वाघावास री पटौ दीयौ पछै स० १६७६ रु० ४०००) पसकसी रा कर कोढाणौ लीयौ ।"

७ सुन्दरदास उरजनोत –

"२० सुन्दरदास उरजन री स० १६६४ वाघावास री पटो थो १६६५ छासेलाई वसी नू दीवी ।"

जैतमाल जैमलोत माडण गोपालदासोत सुरताण नेतसीत, मोकल परहथोत, हरदास मोकलोत जगमाल नीबावत, मानसिंह महेसोत इत्यादि उहड राठौडो पर भी ऐतिहासिक टिप्पणियें अंकित है। (पत्र–१४)

सींधल राठौड री परवार –

आस्थान के पौत्र व जोप के पुत्र सीधल व उसके वशजो का विवरण लिपिबद्ध है, इसके वशज सीधल राठोड कहलाये।

प्रारम्भ—

सीधल नै उहड सगा भाई कवरीया जपाल री बहिन गागी रा बेटा जाळोर रै बालावाडै रहता पछै उठै जलन्धरजी आया मिळिया ठकुराई हुई तरै उठा था न सीधल भाद्राजण रै धूमडै भाखर आया रह्यौ भाद्राजण वसाय न उहड आय कोढणा री भाखरी कोढणा वसायो सु स० १६६६ रा मालदेजी भाद्रजण बीरा सीधल कने ली ।'

पीढियें इस प्रकार हैं—

५ मासल सीधल रो	६ नणो मासल रो
७ भीव नणावत	८ करण भींवोत
९ उरजन करणोत	१० भारमल उरजनोत
११ सता भारमलोत	१२ मेघा सतावत

१३ मूजो मेघावत १४ रतनो मूजावत
१५ भदो रतनावत १६ अचलो भदावत
१७ सादुल अचलावत

इसमें महाजल जसावत, रावत कलावत, सीहो पत्तारोत इत्यादि सीधल राठोड़ा का भी विवरण दिया है। (पत्र–५)

जोलू राठौर री परवार –

इसमे जोप का पुत्र जालू के वशज जोलू राठौड कहलाये उनका विवरण दिया है।

राठौड सरदारा की विभिन्न खापा के मूल पुरुषा तथा उनकी सतति इत्यादि की जानकारी के लिये सामग्री बहुत उपयोगी है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा मोटे अक्षरा मे लिखा गया है। ऊपर चमडे का गत्ता चढा हुआ है। अ त म काफी पत्र रिक्त पडे हैं।

३२ पोकरण तथा पटा रा गाव उपर मुकदमा री विगत

१ पोकरण तथा पटा रा गाव उपर मुकदमा री विगत, २ पो०ह्रा०सग्रह, ३ १६, ४ ३६.५×१६.७ समी०, ५ १, ६ २४, ७ वि० स० १९३४, ई० सन् १८७७, ८ अपात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस परवाने म पोकरन परगन के मुलजिमो स जुरमाने के रुपये वसूल करने का निर्देश है। विगत से पता चलता है कि अजटी पचायत की ओर से पशुधन आदि की चोरियो के फैसल पर सरकारी कोष से तत्काल रुपय अदालत मे जमा करा दिये जाते थे, फिर अपराधी से रुपये मय ब्याज से जागीरदारो के मारफत वसूल किये जाते थे।

'उजल श्री नाथुदानजी फजूलाया लिखावत जूहार वाचसो। तथा पोकरण पास उप्र तथा पटा रा गावा उप्र मुकदमा इण माफक है तीण री वीगत—

१ गाव गुढा उप्र जसलमर रा राज री साड १ तोडीयो १ गाव लाठी सु दोय वरस पेली चोरीयो गयो सु गुढा रा सेरा सु थारा टोळा मे चावा हुवा सु दीग्रा नही तीण री मुकदमो थारे गाव उप्र अजटी पचायत सु साबत होय रुपया ९०) री डीगरी हुय मुदे उने सीरदारी षजाना सु दोरीजो या सु ब्याज सुधा लावजो।

२ पोकरण पास उप्र जैसलमेर इलाक रा वेड गाव रा जागीरदार आद्दान मुक्नसिंघ रा ऊट २ असबाब रोकड सुधा पहोकरण री वगसीयो चापावत नैं गुमटीओ अरजन सीपाई पादु फरीद पास पोकरण मे रेण वाळा पोस लीया ने

भ्राईदान नै दोनू ऊटा र तरवारा सु घायल कीया तीणरो मुकदमा भ्रजटी री पचायत सु थारे उग्र साबत होय रुपया १७८) री डीगरी हुय सीरकार रा पजाना मु दीरिजीया सु ब्याज सुधा लावजो ।

३ पोकरण पास उग्र जैसलमर री भाटी लीछमण फलोदी वोरा न रुपीया देवण न जावता था सु धोरे सीव म देवडा वीरम री नाडी कनै सड़ा माडा न घाडवीया कोस लीया तीण री मुकदमो भ्रजटी पचायत सु थार उग्र सावत होय डीगर रुपया १२०) री हुय सीरकारी पजाना मु दीरीजीया ।

इण माफक मुकदमा है तीण रा रुपीया ब्याज सुधा मल देसा स० १६३२ रा ।"

उस समय की भ्रदालती व्यवस्था की जानकारी मिलती है ।

३३ लूण रै भ्रागार री विगत

१ लूण र भ्रागार री विगत २ पो० हा० सग्रह, ३ १११, ४ ५३ × १७ ३ सेमी०, ५ १, ६ ३७ ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ भ्रज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस पत्र मे नमक की खानियां की विगत दी है । इसमे पडत एव चालू नमक की खानियो का उल्लेख करते हुए उस पर लगने वाले कर की जानकारी भ्रग्रेज की सरकार को दी है ।

"श्री परमैश्वरजी सत्य छै

१ अपरच कागद राज री आयो नै पटारा गावा मे थारी लूण रा भ्रागरा री विगत मगाइ जीण री विगत तो साहब उठै आया नै साहब पुछी जीण मुजब विगत साहब बाहादुर नै भडारी इमरतमलजी री मारफत मडाय दीवी ।

१ चलु आगार नग वार कीता है सो पास पोकरण र कन है जीण मे लूण पारवाल जमावे है सा पास पोकरण तथा पोकरण रै पापती रा गावा म सजै जीतरी लूण नीसरै है इण सीवाय दीसावर चढ़े नही ।

२ पडताल आगार म लूण हमार नीसरै नही नै भ्राग नीसरतो हो जीके आगार कीता है सो गाव थाट १ भलारीये १ ढेढीयाली १ मे ईणा गावा म भ्रागार तो है पीण लूण भ्राज ताई पदा हुवो नही ।

३ आगरा मे लूण कीता मण भ्रदाजे नीसरै न पदास रा श्री दरबार म कीता रुपीया आवे सो मणगत री भ्रदाजे तो आज ताई कदेई काढ़ीयो नही नै पदास रा रुपीया म श्री दरबार मे तो कुई लागे नही न लूण भ्रागार मे बीके जीण मे रुपया ५) म रुपया ३) तो मार भ्रावे रुपया २) पारवाल रै भ्रावै नै सैर मे

फुटकर बीके पईसा १ री पायली २ लेपे बीके जीण मे आधा तो मारे आवै नै आधा पारवाल रै आवे न पारवाला रा घर १२ है बीके महीना म घर दीठू रा सवा ६ द्रव उठारा चोपला रा गावा ने बेचण ले जावे जीण रा हासल रा घर दीठ ७ आना भर देवे सो रो मास १२ रा रु०   ) ईण अदाजे सीरकार मे जमा हुवै।''

पत्र की प्रतिलिपि अपूर्ण है।

३४ दरबार सु धान री नीरख राखण रै हुकम री विगत

१ दरबार सु धान री नीरख राखण रै हुक्म री विगत, २ पो० हा० सग्रह, ३ २२, ४ ३७.५×१६.७ सेमी०, ५ १ ६ २६, ७ वि० स० १६३४, ई० सन् १८७७, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पत्र सिवाने के हाकम को लिखा गया है जिसम निश्चित की गई नाज की कीमतों का उल्लेख हुआ है। उस समय की अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है।

प्रारम्भ—

'कागद १ दीवाणी सीवाणा रा हाकमा रै नावे अपरच श्री दरबार सु रैत री परवसी र वासत पास जोधपुर नै प्रगना म, तथा गावा म इण मुजब सरब धान री नीरप रापण री हुकम हुवो है तीण री विगत तोल जोधपुर रा सु

१) गोहू १)२ बाजरी १)२ मूग १)८ मोठ १)४ चीणा १)४ जवार
१)४ जव

ईण मुजब जारी हुवो है सु जोधपुर रीयासत रा परच वासतै परीदण मुदै सीरकार सु पोकरण रा ठाकुरा रा आदमी आया है सु उपर लीपीया मुजब नीरप रा भाव सु उठारा प्रगना रा गावा रा वोपारीया रै धान हुवै जीण कनै ईण सरसतै परीद करसी सु वोपारी जीण भाव सु धान परीदियो हुव तथा उनालु सावणू आपरी आसामीया री धान जीण भाव सु लीयो हुव जीण री असल नीरष देषनै ब्याज प्रा० ११) री नै कोठार रो भाडो द मजुरी बगेरे लागो हुव सु तो परच टाळ बाकी नफो रेव जीण म आघो नफो तो सीरकार म भाडा वगेरै परच मे लीरीज सी न ईण मे कोई जूठ फरेब करसी सु सजावार हुसी न ईण नीरप मुजव देण म कोई गावा वाळा उजर करै तो थाने आप वाकब कर जठै थोडा आदमी म्हैल धान हुवै सु मगाय लीजो ईण मे गाफली रायी तो ओलामो थारै जुम है, १९३४ रा भादवा सुद ८।''

तीसरा अध्याय

बहियों का संग्रह

३५ राज रै हिसाब किताब री वही

१ राज र हिसाब किताब री वही, २ जो० क० सग्रह, ३ ७०, ४ ६२ × १७ सेमी०, ५ ६४, ६ ३० ३७, ७ वि० स० १६३१ ३८, ई० सन् १८७४ ८१, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर के महाराजा जसवतसिहजी (द्वितीय) के राजकीय खच का हिसाब दिया है।

प्रारम्भ—

'श्री नाथजी सत्य छै

कविराज मुरारदानजी उदैपुर जाव तीणा ताईक री बगेर रौ—

५६४) पीडा रै गुव ईक रोजा रा मास १ रा

२००) रसाडा परच रा मास १ रा

१४१) महीनदार आदि।"

राजकीय व्यवस्था सम्बन्धी कुछ जानकारी इसम मिलती है।

यह वही एक ही व्यक्ति के हाथ स लिखी गई। बहुत से पत्र रिक्त पड़े हैं।

३६ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री लाडी भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खर्च रौ सावो

१ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री लाडी भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खच रो सावो, २ जो० म० सग्रह, ३ २१, ४ १५ × ४ सेमी०, ५ १८८, ६ ४७ ५०, ७ वि० स० १८८७ १८८८, ई० सन् १८३०-१८३१, जोधपुर ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम जमा खच का हिसाब वि० स० १८८७ श्रावण वदि १ स लगाकर वि० स०

१८८८ के असाढ सुदि १५ तक का दिया गया है। इसमें महारानी के पट्टे के गावों का उल्लेख भी हुआ है, वे हैं—सरलाई, सुवालिया, वालरवा। इसके अतिरिक्त श्री नाथजी का मन्दिर गुलाबसागर पर बनवाने का वर्णन है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी सत्य छ"

मीती सावण वदी लाा० सुदी १५ सुधा दोन रो जमा परच रो सात्रो श्री लाडी भटियाणीजी रो साा० १८८७ रा।'

ग्रंथ मे एक जगह श्रीनाथ के मन्दिर का बनवाने के लिये दिये गये रुपयों का वर्णन इस प्रकार हुआ है—

१०००) श्री नाथजी रो मीदर गुलाब सागर उपर हुव तीण ता० (तालकै) रुपीया १०००) हजार अेक दीया ह० (हस्त) प्रो० सवाईराम।पाा० साहबचद हजारी सालग सु कमठे जमा कराई ताा० तीलाडी मोतीराम ताा० रा रोज नावे।

१०००)

ग्रंथ मे जगह-जगह देवस्थानों मे भेंट स्वरूप दिये गए पैसा तथा वस्तुओं आदि का भी वर्णन है। इसके अतिरिक्त कपडे, सोने के आभूषण, किराणा का सामान, कमीणो, चाकरो का रोजगार, भाडा पट्टे के गावों से आयी आय का वर्णन हुआ है। ग्रंथ मे एक जगह श्री नाथजी महाराज का मन्दिर तथा गुलाब सागर की पक्की मेड बंधवान पर दिये गए रुपयों का वर्णन इस प्रकार हुआ है—

"१०००) ताा० श्रीनाथजी माहाराज रो मीदर गुलाब सागर उपर हुवो नै तळाव रो पटा बंधीजी तीण ताा० रु० ४०१६०) तो आग आया नै फेर रु० १०००) दीया हाा० प्राा० सवाईराम उमेद गगारा महाराज कुल रुपया ४११६०) दीया।"

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिखा गया है। ग्रन्थ पर चमडे का गत्ता है। पत्र हाथ के बने हुए है। लिपि साधारण है। काफी पत्र कीट भक्षित हैं।

३७ ब्याव तालके महाराज तखतसिंघजी की सलामती मे भावा श्री सिरदारसिंहजी साहब री बरात बुंदी गई तिण तालके सफर खर्च

१ ब्याव तालके महाराज श्री तखतसिंहजी की सलामती मे भावा श्री सिरदारसिंहजी साहब री बरात बुंदी गई तिण तालके सफर खच, २ जो० क० संग्रह, ३ १९, ४ ३१०×१७ सेमी०, ५ १, ६ २९३, ७ वि० स० १९२०

ई० सन १८६३, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस लम्बे पत्र मे सरदारसिंह की बरात बुंदी गई तब रास्ते म हुए खर्चे का उल्लेख हुआ है। पत्र का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

"श्री जलधरनाथजी सत्य छै"

मिती मीगसर वद १ गुर लग सुद १५ सुकर सुदा माा० १ रा दी० ३० रो १९२० रा मीगसर वद १ गुर

मीग० वद २ सुकर

ताा० बुंदी वाभा सीरदारसिंघजी री जान साथे जावत री"

इस पत्र म प्रत्यक दिन का खर्चा लिखा हुआ है। पत्र की सख्या एक है लेकिन पूरा पत्र ६ पत्रो को मिलाकर बनाया गया है। पत्र के दोनो ओर लिखावट है।

पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि साधारण है।

तत्कालीन विभिन्न वस्तुओ के मूल्यो की जानकारी के लिए उपयोगी है।

३८ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री चावडीजी साहबा की सरकार तालुके दोढी तालके रोजनावा री वही

१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री चावडीजी साहबा की सरकार तालुके दोढी तालके राजनावा री बही, २ जो० म० सग्रह, ३ २७, ४ ६३ ५ × १६ सेमी०, ५ १२३, ६ ५०–५४, ७ वि० स० १८७३, ई० सन १८१६ जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर महाराजा मानसिंहजी के कुवर छतरसिंह की माताजी के ड्योढी के खर्चे का विवरण दिया गया है। इसमे वि० स० १८७३ माघ सुदि १४ से श्रावण वदि १५ वि० स० १८७४ तक का हिसाब है।

प्रारम्भ—

'श्री जलधरनाथजी"

स्वासुष श्री अनेक सकल सुभ आपमा वीराजमानान श्री राजराजेश्वर म्हाराजाधिराज म्हाराजाजी श्री मानसिंहजी म्हाराजकवर श्री छतरसिंहजी देव बचनायते म्हाराजीजी श्री चावडीजी साहबा रे दोढी तालक रोजनावा री वही १८७३।

इस वही म जनानी ड्योढी म होने वाले खर्च का उल्लेख हुआ है जिसम ड्योढी के मजदूरो की मजदूरी, धान लाने वाली बलगाडियो का किराया, बाजार

से खरीदी गई वस्तुओ की कीमत, मंदिरो मे चढाई गई भेंट, त्यौहारो पर होन वाला खच जैसे सकरायत, ज माष्टमी। घास की खरीद जसे—चीपटा, कडव का पूला आदि चीजो की खरीद का उल्लेख है।

एक स्थान पर वाळदीया बामणीया भाट के कणवारिया से लडने के फल स्वरूप लडने की तकसीर के ६) रुपये लिये जाने का वणन है।

इसम महारानी के पट्टे के गाव सालावास की आय, किसाना पर लगने वाले भूमि कर इत्यादि का भी उल्लेख है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ग्रथ पर चमडे का गत्ता है। पत्र हाथ के बने हुए हैं। लिपि साधारण है। कुछ पत्र सडे हुए है।

३६ बडा महाराजाजी श्री मानसिंहजी रँ नित हकीकत री बही

१ बडा महाराजाजी श्री मानसिंहजी रँ नित हकीकत री बही, २ जो० म० सग्रह, ३ २६, ४ ६२×१५ सेमी०, ५ १४२, ६ ३७–४०, ७ वि० स० १८७३-७४, ई० सन १८१६-१७, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम जोधपुर महाराजा मानसिंहजी द्वारा अपने कुवर छतरसिंह को जुवराज की पदवी देने इत्यादि घटनाओ का वृत्तात है।[1] बही मे सवत १८७३ वैसाख सुद ३ शनिवार से लगाकर सवत १८७४ तक का हाल लिखा हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी सत्य छै

स्वरूप श्री अनेक सकल सुभ ओपमा वीराजमानान श्री राजराजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री मानसिंधजी महाराज कवार श्री १०५ श्री छतरसिंधजी वदे जनानी दोढी रा दरोगो हुरचनराम न वेटो वीदरावनदास ईनायत १८७३ रा वैसाख सुद ४ हुई तीण तालकै री बही"

बही म मानसिंहजी द्वारा अपने कुवर छतरसिंहजी को युवराज पदवी दने का वणन इस प्रकार हुआ है—

---

१ मानसिंह की ख्यात के अनुसार राजकुवर छतरसिंह का देहान्त वि० सं० १८७४ चत्र वदि ५ को हुआ। ग्रथांक १०६१० रा० प्रा० सं०

'स्वारुप श्री राजेराजेस्वर माहाराजाधिराज माहाराज कुवर श्री छतरसिहजी साहवा ने श्री हजुर सु जुगराज पदवी दीवी स० १८७३ रा वसाष सुद ३ सन न मोती मेहल मे बुलाय न रात घडी ४ गया पछ पाचवी रा अमल म श्री हजुर आपरा हाथ सु तिलक कवरजी र कीया नै तरवार वदाई, मोर थापिया, फुरमायो सेवा चाकर सीरदार रैत न सरव न आछीतरै सु परोटजो काम कुसी सु करो तरा पछै श्री कवरजी मुजरो करे नै दौलतषाना मे पधार न सीरदार वार कानी चोकी बीराजिया नै नीजर नीछावर हुई, घडी ४ वीराजिया नै पछै फतमल म आया तीज थी तीण सु पाती पटे हुवो नै सीरदार पोकरण, आउवो, आसोप, नीवाज, रोपडै, पीवसर, चडावल, रास वुटसु, करनोत, जोधा, वगर सरव हाजर हा पछवातीयो चालिया पछ सीरदारा नै फुना री माळा दने सीष हुई सु आप आप र डेरे गया पछ पोर ऊपरे तीजो रा अमल म तोपखाना री सीलक हुई ।"

वही मे जगह २ गवर माता, नागणेचीया माताजी, मडोर के देवस्थानों आदि की पूजा, छतरसिहजी का वषगाठ का उत्सव, होली का उत्सव पर हुए खर्चे का वर्णन है।

वही मे एक जगह छतरसिहजी के व्याह का वर्णन है जो कि कालाणपुर के चौहान राव दुरजनसाल महोकमसिघोत की पुत्री से हुआ था।

वही अनेक व्यक्तियो के हाथो से लिखी हुइ है, पत्र हाथ के बने हुए हैं लिपि साधारण है। वही पर एक तरफ चमडे व दूसरी तरफ कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

४० अदालत मुकदमा रै फैसला री वही

१ अदालत मुकदमा रै फैसला री वही, २ जो० म० सग्रह, ३ ३, ४ ६५×१७ सेमी० ५ ११४, ६ ३८–४०, ७ वि० स० १९३०, ई० सन् १८७३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे जोधपुर इत्यादि परगना मे चल रहे अनेक मुकदमो व उनके फसले आदि का विवरण दिया गया है। ग्रथ का शीर्षक इस प्रकार अकित है—

'सदर अदालत दीवाणी रा मुकदमा फैसला त्या रो पढ जमा परच री नकल री वही १९३० रा आ० लागतो ३ रा काती वदि १२ ताई।

प्रारम्भ—

"॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

सदर अदाल्त दीवाणी[1] ता रा मुकदमा रा फैसला हुवा—स० १९३० आ(सोज) वद १ ला० दु० आसाढ वद १५ सुधा मा० ११ म दरोगा कवराज मुरारदान

१३३ लण दैवण

२ आसोज रा

१ मुदई नागोर रौ अनसाली जठमल मुदाय लै उठारो चौ० पुनमचद

दावो अमल रा० रुपया १६० री अरजी आ० वद ७ लवर फैसलो

आ० वद ११ विगत जठमल रा २८५ लैण रो दावो सावत हुवो नी

(नहीं) ' आदि ।"

इसमे अधिकाश मुकदमे लेने दन के हैं। उस समय कविराज मुरारदानजी दरोगा पद पर नियुक्त थे।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है।

लिपि अस्पष्ट है, चमडे का गत्ता मढ़ा हुआ है।

४१ खाता बही

१ खाता वही २ जा० क० सग्रह, ३ ६, ४ ६४×१६ सेमी०, ५ ५१, ६ ७०–७२ ७ २०वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह जोधपुर के राजकवि घनदानजी के जमा खच की निजी वही ह।

प्रारम्भ—

"॥ श्री परमस्वरजी महाराज सत्य छ ॥

स० १९९८ रा मीती आसाढ वद २ सु पात अही (वही) कविराज घनदानजी रै नदानगी रो जमा पच ।"

---

1 विश्वेश्वरनाथ रेउ क अनुसार दीवानी अदालत वि० स० १८९६ म रजीडन्सी कायम होने के समय खोली गई थी। इसके वाद वि० स० १९०० तक तो इसका काम सूरसागर म ही होता रहा, परन्तु महाराजा तखतसिंह क गद्दी पर बठने पर इसका दफ्तर वहां से उठा कर शहर म लाया गया। पहले दिवानी का काम कविराजा मुरारदान को सौंपा गया था परन्तु वि० स० १९३८ म मेहता अमृतलाल दिवानी अदालत का हाकम बनाया गया और उसी वर्ष मुरारदान महकमा अपील के हाकिम नियुक्त हुए। (मारवाड का इतिहास, द्वितीय भाग, पृ० ४६३ ४६४ ४६५)

इस जमा खच से तत्कालीन भावो आदि की अच्छी जानकारी मिलती है।

लिखावट के अक्षर महीन है, पत्र चिकने व बारीक है। एक ओर गत्ता चढा हुआ है।

४२ जब्ती री बही

१ जब्ती री बही २ जो० क० सग्रह, ३ ७, ४ ६३×१७ सेमी०, ५ ६०, ६ ३० ३१, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम जोधपुर, नागोर, जालोर, साचोर, मेडता, जतारण इत्यादि परगनो के विभिन्न गावो मे जब्ती, चोरी, अदालती भूमि आदि की जानकारी दी है।

मूल ग्रथ का प्रारम्भ यहा से हुआ है—

'जबतिया री नकल उतारी सावण वद १, १६१६ रा

मीती सावण वद, ११ १६१६ रा

नागोर रै गाव भावडा म प्रो० मेसदास गुला री पाती री चौथ री पालो फादीसतै तथा ईण री पाती श्री दरबार मे जबत हैं ए हासल मुकातो बगेर दाम श्रेक इणा नै दीजो मती नै जाबता सारू एवालदार मेलियो है ।"

किसी पूरे गाव या हिस्से के जब्त किये जाने पर क्या व्यवस्था की जाती थी इसका पता इस ग्र थ मे चलता है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया है। चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

४३ जमा खर्च की बही

१ जमा खच की बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३५, ४ १६×१७ सेमी०, ५ ५३, ६ ३०-३३, ७ २०वी शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० इस बही मे जोधपुर के राजकवि के कुछ गावो का जमा खच का हिसाब तथा हासल इत्यादि वसूल करने का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री परमेश्वरजी साय छै ॥

महामही पायाय कविराज श्री मुरारदानजी साहब कवरजी श्री गणेसदानजी साहब र लेणा मे गाव पीयल रा जागीरदार उदावत रामसिंघजी आप रै पट्टै रै गाव मडलो वरस ८ म कीड दीयो प्र० सोजत तीण रै जमा खच रो मळ समत १६६६ रा सावण वद १ आदि।"

कज आदि लेने के लिए गाव रेहन रखने की क्या पद्धति थी इसकी जानकारी विशेष रूप से इस ग्रथ के द्वारा मिलती हैं।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। लिखावट अशुद्ध है।

४४ विसू द रै लेखे रो बही

१ विसू द र लेखे री बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३२, ४ ४८×४× १६ सेमी०, ५ ७, ६ २७३०, ७ वि० स० १९३०, ई० सन् १८७३ ८ अप्रात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम उस समय के जमा खच का ब्यौरा दिया है।

प्रारम्भ—

सवत १९१० रा वरस री वीसूद रो लेखो इण म है।

जमा	खच
४७) पोत बाकी	४७) या सतालीस (रुपयो) री मोरा ३ तीन लीवी सो मार एक तो व्यासजी न दीवी नै मोर दोय पोते बाकी आदि।"

वि० स० १९१० मे सोन की मोहर का भाव करीब १६ रुपये होने की जानकारी मिलती है।

एक स्थान पर सोने व चादी के गहना की सूची इस प्रकार दी है—

"॥ श्री नाथजी ॥

विगत पिंडा रा गूहणा री सोनो गहणो

१ कठी एक मोटोडी।
१ पु णची एक।
१ डारो पाघ माथलो।
२ बीटिया दोय अष्ट पेल।
१ मोतिया री कठी दोलडी दुगदुगी वाळी जुमलै लडा च्यार।
२ मोतिया रा चोकडा दोय जुमलै मोती आठ, लाला ४।
१ मोतिया रौ काठलो पाच लडो।
१ जामो एक घेरादार कसू बल भाभा र
१ कमरबधो १ ताश री
१ कटारी एक सोना री

१ तरवार एक रूपा री मूठ वाळी
२ कडिया रूपा री दोय पडतला री नै, १ जरी रो पडतलो
४ ढाला नग च्यार।"

कब किसको कितना गहना इत्यादि दिया गया उसका भी उल्लेख दिया है। गहनो इत्यादि के नामो आदि की रोचक जानकारी इससे मिलती है।

ग्रन्थ एक से अधिक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। लिपि साधारण है। बहुत से पत्र खाली पडे है।

४५ चाकर राख्या अर हिसाब री वही

१ चाकर राख्या अर हिसाब री वही, २ जो० क० सग्रह, ३ १०५, ४ ५६×१४४ सेमी० ५ ३३२, ६ २८ ३१, ७ वि० स० १८६४ १९१२, ई० सन् १८३७ १८५५, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० इस वही म निम्न श्रेणी के रखे जाने वाले नौकरा की सूची दी है, जिनको माहवार करीब ३ रुपये मिलते थे।

प्रारम्भ—

"१८६४ रा वरस मे आदमी रह्या जारी विगत—
चत सुद १ मोतियो चाकर रहयो रुपीया तीन मास रा पाया जासी।
चत सुद ३ दिन विलायती रहीमदा चाकर रह्यो द्याणगी रुपीया तीन रो मास री मास पावसी, सवाय उजर करण पावे नही ।"

इसके अतिरिक्त वि० स० १८६४ स १९१२ तक का हिसाब किताब लिखा गया है।

उदाहरण—

।—) ।। वाईसा रै जूतिया ली
—) भु वरजी र ताळो लियौ
४) पोथी लिखाई रा

उस समय नौकरा की आर्थिक स्थिति और वस्तुओ के भावो की जानकारी इस ग्र थ से मिलती है।

ग्रथ एक से अधिक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

४६ कागजो रौ वस्तो

१ कागजा रौ वस्तो, २ जो० क० सग्रह, ३ १०७, ४ , ५ २०० के करीब, ६ एकसी नही ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ ग्रज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० प्रस्तुत वस्त म विविध विषयो के ग्रनेक पत्र सकलित हैं। राव सीहा से जोधपुर क महाराजा सरदारसिंह तक का एक वशवृक्ष ग्रकित है तथा दूसरा वशवक्ष मोटा राजा उदयसिंह की सतति का है। इसके ग्रतिरिक्त मुरारदानजी की जन्मकुण्डली, उदयपुर राणाग्रा की पीढिया, 'रामचन्द्रका रा छुटकर छद', फैसला की नकलें, तजतसिंह की ख्यात (सक्षेप म) दिवानी ग्रदालत के कानून तथा इसी प्रकार की कृतिया के पत्र सग्रहीत हैं। यह सग्रह ग्रनेक दृष्टिया से महत्वपूर्ण है परन्तु सभी पत्रो का व्यवस्थित करके ग्रध्ययन किया जाना आवश्यक है।

राठोडो की विभिन्न शाखाग्रा की जानकारी इत्यादि के लिए सामग्री उपयोगी है।

४७ कागदो रै नकला री बही

१ कागदो रै नकला री वही, २ जो० क० सग्रह, ३ ८ ४ ६३ ५× १७ सेमी०, ५ ६८ (६२ पत्र रिक्त), ६ ३२ ३८, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ ग्रज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसम जोधपुर स पालेटिकल एजेन्ट इत्यादि को लिखे जान वाले पत्रा की प्रतिलिपिया दी हैं।

प्रारम्भ—

'॥ श्री नाथजी सत्य छै ॥

ग्रठा सू कागद दीरीजै वगर री नकल ।'

सीमा विवाद सम्बन्धी मुरारदानजी द्वारा एजेन्ट को लिखे एक पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार ग्रकित है—

'सिध श्री सरब ग्रोपमान लायक राजश्री मेजर उजीन कलटर वकइमणो साहब बाहदुर ग्रेजेन्ट मुलक मारवाड जोग्य कविराज मुरारदान लि० सलाम वचावसी, ग्रठारा समाचार भला छ राज रा सदा भला चाहीज, सदा महरबानी रपावो हो जिण था विसेस रपावसी।

अपरच मार गाव चवा र नै ग्रावौर रा ठाकुर रै पटा रौ गाव सथलाणा र सरहद उपर पथर रोपीग्रोडा है जिणा माहे सु पथर २ सथलाणा रै हुवालदार

हमार उपल नोधीया है जिण री अरजी पत रै साथ भेजी है सो महरवानी फुरमाव ईनसाफ जलदी कराय दियो चाहिजे सो फीसाद नही वधै और मार लायक काम काज हुवै सो लिखावसी १६२८ रा फागण वद ५ ।"

प्रतिलिपिया एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। बहुत से पत्र खाली पडे हैं। ग्रथ पर चमडे का गत्ता मढा है।

४८ पट्टा वही

१ पट्टा वही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३, ४ ६५×१३ सेमी० ५ ८३ ६ ३८४०, ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे पट्टे के गाव तथा कही-कही उनकी रेख हुकमनामा[1] आदि का ब्यौरा दिया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ एतिहासिक पत्र परवानो की प्रतिलिपिया व राजस्व सम्बन्धी जानकारी दी है। यह लेखा-जोखा वि० स० १६२६ से वि० स० १६३६ तक का दिया है।

प्रारम्भ—

मीति भादवा वद १३ सद वा   १६२६ रा गाव काकेलाव रा मीठवे चौपा १६३३

४८) डागा सीताराम ने   ।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा घसीट मे लिया गया है। ऊपर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

राजस्व सम्बन्धी जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

४६ कागदा रो कडियो

१ कागदा रो कडियो, २ जो० क० सग्रह ३ ८८, ४ कडिये का ३०–३१ सेमी०, ५   ६   , ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी १० लाल कपडे व कागज के गत्ते की

---

१ विश्वश्वर रेउ के अनुसार वि स० १६२८ म हुक्मनामे (नए जागीरदारा के गद्दी पर बठने के समय के राज्य क नजराने) का कानून बना। हुक्मनाम की रकम साधारण तौर पर रेख का पौन हिस्सा नियत किया गया साथ ही ठाकुर के पीछे उसके लडके या पोते क गद्दी बठने पर उस साल की रेख और चाकरी माफ करदी गई परन्तु भाइयो या व घुओ म से गोद लिए जाने पर लेना और चाकरी माफ करना निश्चित हुआ। (मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग पृ० ४५७ ४५८)

वनी इस सन्दूक म अनेक पत्र राजस्व व अदालत सम्बन्धी फोल्ड किये रखे हुए है। अधिकाश पत्र कविराज मुरारदानजी तथा भारथदान के नाम के ह। इसके अतिरिक्त याददास्त के तौर पर लिखे पत्र भी मिले हैं। एक पत्र का थोडा अश दिया जा रहा है—

प्रारम्भ—

"॥ श्री जलधरनाथजी सत्य है ॥

याद दास्त १ प्रगन गोडवाड म जवर (जोहर) हुवा चादिया हुई तिण री विगत १९१२ रे वरस मे।

१ गाव वाडवो सोकडो मे अेक डोकरी रोती माथो वाढ जवर कीयो नै चादिया ३० हुई ।"

इसी प्रकार के पत्रो की एक और पेटी है जो इससे कुछ बडी है। इन पत्रो मे बडी महत्वपूर्ण स्फुट जानकारी सकलित की हुई है। कई पत्र जीर्ण भी हैं। इन पत्रो को पढना भी बडा समय साध्य काय है।

५० हासल अर गेहू रै बेचान री बही

१ हासल अर गेहू रै बेचान री बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ६, ४ ६२.५×१७ सेमी०, ५ ५३ ६ ५२, ७ १९वी शताब्दी का उत्तराद्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० वि० स० १८९२ म कितना गेहू वेचा गया उसका हिसाब लिखा है फिर जोधपुर आदि परगनो के गावो की आमदनी हासल आदि की विगत दी है। उधार अथवा पेटिये के रूप म दिये जाने वाले अनाज का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री रामजी सहाय है ॥

पोळा रा गाव री विगत

गाव परुकड कोटडी मायेला पोडा माटी मु गोहु वीके तणा री विगत समत १८७२ रा पास सुद १३ ।"

ग्रथ से उस समय के अनाज के भावो तथा पदावार आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

लिपि अस्पष्ट हैं। पत्र हाथ के बने हुए हैं अनेक पत्र बीच बीच म खाली पडे हैं। एक ओर चमडे का गत्ता है।

५१, दस्तावेजो रै सूचो रो वही

१ दस्तावेजा रै सूची री वही, २ जो० क० सग्रह, ३ ५ ४ ६२ × १७ सेमी०, ५ १३७ (१२७ पत्र रिक्त), ६ ३५–३८, ७ वि० स० १९६५, ई० सन् १९०८, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे बेचान की जाने वाली भूमि, कुए और मकान के दस्तावेजो की सूची दी है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री परमेस्वरजी सत्य है ॥

तोसाषान म पवार मगीया कने पेटी १ है जिण मे दस्तावेज इण मुजब हैं
१९५६ रा श्रावण सुद ५
७८ गाव टीकाईत रा
मोल लीयोडा वेरी नग ७ रा

लीपतु। ईसटाम रा पाना म गुसाई मोतीलालजी रै नाव रो कारकुट रो १९४४ रा माह वद ८ री मोती रौ ।"

यह नकल अपूर्ण है, बाकी के पत्र सब खाली पडे है। एक ओर चमडे का गत्ता मढा हुआ है।

५२ जमा खर्च री वही

१ जमा खच री वही, २ जो० क० सग्रह, ३ १, ४ ६७ × १७ सेमी०, ५ ७४ ६ ३४–३६, ७ वि० स० १९१४–१७, ई० सन् १८५७–६०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानो, देवनागरी, १० इस वही मे मुख्यत जमा तथा खच का लेखा-जोखा (वि० स० १९१४ से १९१७ तक) दिया गया है।

प्रारम्भ—

"पडद्रसण री अदालत रो जमा खरच री नापोणो आसोज वद आसाढ वद १५ रीव सुदा मास ११ रो ईधक महीना सुधो कबराज भारतदानजी।"

ग्रथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है और ऊपर चमड का गत्ता मढ़ा है।

चारणो, ब्राह्मणो, सन्यासियो आदि की मिलकियत वगरे के मुकदमा की सुनवाई के लिये पडदरसन नाम से न्यायालय कायम किया गया था। कविराजाजी उसक प्रमुख अधिकारी (अध्यक्ष) के रूप म इन मुकदमा को सुनकर फैसले देते थे।

५३ हासल री बही

१ हासल री बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ४, ४ ६६×१२ सेमी०, ५ ६१, ६ ४८–५१, ७ वि० स० १९२८, ई० सन् १८७१, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर इत्यादि परगनो के गावो की पैदावार और उसके हासल (निश्चित हिस्से) का ब्योरा दिया गया हैं। गाव के लोगो द्वारा कविराजजी को नजराने मे रुपये आदि देने का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

स० १९२८ आसोज वद १

गाव रीसाणीयो री पहोस गुरा रो वतन हासल री फदास १९२८ रा वरस री

गाव के किसानो से दण्ड स्वरुप राजकीय कर्मचारियो द्वारा पैसे वसूल करने का भी उल्लेख हैं। तत्कालीन राजस्व सम्बन्धी अध्ययन हेतु उपयोगी है।

लिखावट काफी जीर्ण हैं। ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

५४ श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो

१ श्री माहाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ १७, ४ ६३×१६ सेमी०, ५ ३८, ६ ५६–५९, ७ वि० स० १९११, ई० सन् १८५४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर के शासक तखतसिंहजी की रानी राणावत के कोठार (खाने पान की वस्तुए) सम्बधी खर्चा एव तीर्थस्थलो इत्यादि पर किये जाने वाले खर्च खातो का विवरण फाल्गुन सुदि ४ से आसाढ सुदि १० (वि० स० १९११) तक का दिया है।

प्रारम्भ—

"श्री जलधरनाथजी सत्य है"

श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री लाडी राणावतजी सायवा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो फागुण सुदि ४

आसाढ सुद १० सुधा मास ने दीन मे जमा परच री ता० गगाजी री अस्वारी ता० रो १९११ रा

२२)४० पोते बाकी जोधपुर सु साथे जीनस लीवी सु
६६
११२

३।।)६ –) गोऊ आटा
।। –)।।। फिटकरी
६८ श्रीफळ
'५०। सीगाडा आटो
'१।।)।।। कु कम
'३।। म्हैट
'१०।।। साजी
।)८।) मीठाई
'५। –) राया
'३।।)।। – सुपारिया
'।)। – पाजमार
२ पीपला
११)०।। मूठ
'।।) – कायफळ
'५।। सीधो लूण
'१ ≈) हुरड
'। –) मैदा लकडो
१ –) नीपगी लोल
–)१ दाणा मैथी
८० माळीपनां
'२ मट रा मुलाला
'१।। पठोडी
'२।)४ चापल चावल
'।।) कायो
६।।।)।।।

२२)४०
६६ ११२

१।।।)६।। =) धान दाल
२)६। –) खाड बुरो
१।।।) नीमक
'२ =)।। पीसता
'६।)।। दाणा
।।)।।। = वडीया
।)३०। मीसरी
२।। –) मुदा
'८ =)।।। गरम मसाला
'।३ अरेटा
'।। =)।।। मीजो
'।)३।।। काचरिया
'। पीपरा
।)।। सागरिया
'। –) सोनमपी
२।।। आवळा
११२ पीपीरा वाटीया
'१ –) अनार दाणा
'१ –) द्दाख
')।। कपूर
'। ०।। सीदूर
'१०।। सपल लुण
४। =)।। आवळो
'२)।। गूद

।।)७। –) गुळ
।)४।। मैदो
१।।)६। =)। वस्वार
'२।।। –)।। पारका
'।)।। अपोजी
३ ☰) मैदो
।) ☰ ।। तमाखु
।)२।। –)।। लसण
।।)१ – वीदाम
'।।। =) गोटा
'५ घोडा रा मुसाला
'।)। केर
'१।।। –) अजमा
१०।। कुटैक
'३ असाळीयो
'१०।। नासीट
'।।) माणा
'१)।। गूप
'१०।। घास
।।।)।। चमण
'५।।)।। जोरा मुफेद
'५०।। ठहाई रा ममाला
१)। – तम
'१ =)।। मापा हळद

नर क चिह्न है।

ग्रथ मे जगह जगह पर रसोई बनाने के लिए चीजो का उल्लेख हुआ है और घोडे, बैल आदि को घी, धान, दाल गुल आदि दिया जाता था उनका महीनेवार हिसाब दिया गया है। एक जगह पर महाराणी के गगाजी जाकर वापस आने पर उजमणा (उत्सव) करने का उल्लेख है। एक स्थान पर दरबार मे रहन वाले एक जाट के बाळा दुख आने पर उसे दी गई खाद्य सामग्री का हिसाब भी दिया गया है।

यह वही दो व्यक्तियो द्वारा लिखी गई है। पन्न हाथ के बने हुए हैं, लिपि आसानी से पढी जा सकती है। वही के कुछ पत्र कीट-भक्षित हैं।

राजघराने मे खान-पान की विभिन्न जिन्सा पर कितन रुपय खच किये जाते थे तथा उस समय वस्तुओ के दाम क्या थे इत्यादि जानकारी के लिए सामग्री उपयोगी है।

५५ महाराजा श्री मानसिहजो साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तालके गाव ४ री जमा वधी री नकल

१ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तालके गाव ४ री जमा वधी री नकल २ पु० प्र० सग्रह ३ ३ ४ ६३ × २६ समी०, ५ १६७, ६ ३८-४०, ७ वि० स० १९०९-१९१५, ई० सन् १८५२-५८ जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस वही मे जोधपुर के शासक मानसिह के भटियाणी रानी को मिले भाआसर, मेलासर इत्यादि गावा की पैदावार का विवरण दिया गया है। साथ ही राजस्व सम्बन्धी विभिन्न करा का भी उल्लेख किया गया है।

प्रारम्भ—

व पटा रा गावा री पैदास राजमा पदे गाव ४ तिण री पैदास—

१ गढ जोधपुर रो गाव बावडी वासा सुधी

१ परगने गोढवाड रौ गाव डडा रौ

१ परगने फलौदी रो गाव भोजासर रो

१ परगने सोजत रौ गाव मेलावस रौ

तिण री पैदास राज मा

४

श्रावण साख का लाटा लाटने तथा विभिन्न अनाजो पर लगने वाली लागत इत्यादि का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

"पाईणो बाजरी मू ग मोठ तिल जवार रो मण १ लारे पायली १ लाग।

मणवारिया री गुगरी रो ताली १ दीठ पायली १ लागे, मु पु पा रो फरलो लेवे तरतो लागे नहो मु मेस फरलो लीयो नही।

चाणठी रा तोल मणवारिया रो लाग, खेत म कुछ भी देवे तथा कुछ ने घरमेला वे तरे लाग असल भोग मण १ लार १ उसके लागे।

प्रगने फलोधी रो गाव भोजसरा री साव सावणु री लाटो लाटीयो सीरकार री तरफ मु मडारी मानकरण, पीडीहार पुतरसिंह, हवालदार सीघा इदरचद, सोळकी जीवण कणवारिया जणा २ गोड उमो सीपाई अमसुध गाव रा चोधरी बीसनोई, गोकल कवरो, मयाराम सेवो पेमा रो, भूरो सुरताणो, पटवारी महाजन किसानो गोई और गाव रा समस्त सामल होने लाटो लाटिया गाव री तोल पायली १ पईसा ७६० भर री तौण रो पायली ४० रो मण १) गीणीज ने ताकडी री तोल सेर ७१ पईसा २६ गुणतीस भर री तौण री सेर ७४० रो मण १) हुवें।

विगत हैसो लागत री

१ हैसो ईण माफक लागे—

हैंसो ४ गाव समस्ता बीसनोई देवाल वगैर सरव धान री कपास सुधी।

हैसो ५ पाचमो

चोधरी पाग बाध नै सीरकार मे रुपीया देवे तरे १

हैसो ८ मू ग तील कपास री।

हैसो ५ बाजरी माठ री।

ग्रथ मे एक स्थान पर अनाज लाने वालो की बैलगाड़ियो का किराया देने का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१७) किरायो भाडो

५) आसोज वद ४ चीणा गोउ (गेऊ) री गाडीया १३ भेजी तीणा रा भाडा रा असल हिसाब।

१२) पोस सुद ५ घास रा गाडा ६ जोधपुर मेलीया।

२) घासी लिखमो, २) घासी कानो २) घासी गोमो,

२) घासी जेसीग, २) सीरवी सवो, २) चाचक अणदा

एक स्थान पर सरकार द्वारा किसानो स लिया जाने वाले हासल व लाग लागत का उल्लेख है।

हैंसो ईण मुजब लागे

हैसो ३॥) साढा तीजो बाजरी मूग मोठ जवार रो, गाव रा बसवाना समस्ता ने लागे। हैंसो ४ चोथो तील, कपास रो ने फेर हवालदार रा लिपीया मुजब जवार चोपटो हैसो ३॥) साढा तीजो।

लार लागत इण मुजब लागे ससीरा माय सु

—लार मसल भोग १) लार सर लाग समस्ता नै सरव धान रो लागे।

—कवर मटकी असल भोग १) लार १ सर एक लोक समस्ता नै लागे सरव धान रो।

—पाटणी असल भोग १) लार। पाव पटवारी रो लाग पटवार पालस हुवै तरै जमा हुवै न पटवार ईजार हुवै तरै ईजारादार लेवे सु

—कमीणा रा फड़का ५ पाच चोधरी रा हाथ सु ताली मण ६०) री हुवै तर ता धोबा २० कमीणा न देव।

एक जगह किसानो पर लगने वाले परपर नामक (बेगार) कर का उल्लेख इस प्रकार हुमा है—

परवर रा

घष हळ रो इण मुजब घर दीठ देवेला न लाग—

११) हळ १ रो ६ आदमी री परवर रो

३)२५ नावो दाती	ठवार रो
२) १)	)२५
११)६)२५	

हळ भाडे कर नै बुलावै ती णने घर दीठ सु ॥) (ग्राठ आना) लागेला।

एक स्थान पर शादी क समय लगने वाले कर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

'६।) सा पुरषारी बेटी परणी चत सुद १५ रै सावा जान गाव अडेल रा गुठा रा

३) दापा रा   १) चवरी रा,   )७५ परणावणी रो,

२) कासा रा

६।।।)   भी मे वाद १ –)।।। बाकी ६।)

एक स्थान पर सरकारी काम मे भेजे जाने व्यक्तिया की खुराक के खर्चे का वरान उल्लिखित है, यथा—

॥ -)॥। पाली हुडीया करावण गया त्या घास री वागर हाकमा न दीवी
तीण रा रुपीया लेण नै गया तीणा आदमीया रै रोटीया रा ।
।) पाली जणा ४ गया तीणा नै रोटिया रा ।
=) हुडी करावण गया तीणा रा रोटिया ।
=)॥। वागर वेचण ने पाली गया तरै उपादिया गेहू वगर जणा ४ रै
रोटीया रा ।

विभिन्न ग्रामीण लोगो से लिये जान वाले हासल का एक और उदाहरण प्रस्तुत है—

हँसो इण माफक लागे
गाव रा लोक रै हँसो ४ सरब धान रौ ।
गाव रा कु मारा नै हसो ५ पाचमो सरब धान रौ ।
रले मे रजपूत तील जवार बावै तीण री गुघरी लाग न नेपकीरी हुवै न
लादा मे धान आवतो हैसो ३ लटे
एक जगह घासमारी के कर का उल्लेख है—
भैंस १ रा टका ४।) सवा चार लागे
उट रो लागे नही ।
उनेवडे रा जीनावर रौ जीनावर ८० रौ १)
तफदारा रोजगार इण माफक
साप सावणु रौ करसा ने ई १) लार -) लागे
साप उनालु रौ ई १) लार)॥ लागे

इस वही म तत्कालीन माप-तौल, सरकारी व्यक्तिया को किसाना द्वारा दिए जाने वाले कर, किसाना पर लगने वाले अन्य कर, शादी पर लगन वाले विभिन्न करा आदि की जानकारी मिलती है ।

वही अनक व्यक्तिया के हाथो से लिखी गई है, लिपि साधारण है । पत्र हाथ के बने हुए हैं । वही पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है ।

५६ महाराजा श्री भींवसिंहजी साहब के राजलोक श्री जेसलमेरीजी साहवा सरदार तालुके दोढी तालके जमा खर्च री बही

१ महाराज श्री भीवसिंहजी साहब के राजलोक श्री जसलमरीजी साहवा की सरकार तालुके दोढी तालके जमा खच री बही, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २०,

४ ६२ × १५ सेमी०, ५ ३३, ६ ४६ ४६ ७ वि० सं० १८५८-५६ ई० सन् १८०१-२ जोधपुर ८ अज्ञात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में जोधपुर महाराजा भीमसिंहजी की महारानी जैसलमेरीजी के ड्योढी के जमा खर्च का ब्योरा श्रावण वदि १ से आसाढ सुदि १५ १८५६ तक दिया गया है।
प्रारम्भ—

॥ श्री रामजी ॥

श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री जसलमेरीजी साहबा ताा जमा खरच री डोडी ताा री बही सा (सावण) वद १ नगा म आसाढ सुद १५ सुदा सा (संवत) १८५८ रा।"

प्रारम्भ में रसोई में काम आने वाली विभिन्न जिनसों की खरीद का विवरण दिया गया है जिससे उस समय की पाकशास्त्र सम्बन्धी सामग्री का बोध होता है। तत्पश्चात् कपडा की खरीद बख्शीश, मुजरा तथा दानगी[1] पर किये गये खर्चे का ब्योरा भी दिया गया है जो राजघराने के रीति रिवाज को समझने हेतु उपयोगी है।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ के बने हुए हैं। ग्रंथ पर लाल रंग के कपडे का गत्ता चढा हुआ है लिपि साधारण है।

५७ महाराजा श्री तखतसिंघजी साहिब के राजलोक श्री वडा देवडीजी साहब की सरकार तालुके बौपारियो री लेखा बही

१ महाराजा श्री तखतसिंघजी साहिब के राजलोक श्री बडा देवडीजी साहब की सरकार तालुके बौपारिया री लेखा बही, २ पु० प्र० संग्रह, ३ ४ ४ ६४ × १६ समी०, ५ ८५ ६ ३६ ४० ७ वि० सं० १६२६ ३०, ई० सन् १८७२ जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० इस बही में जोधपुर महाराजा तखतसिंहजी की महारानी बडा देवडीजी के व्यापारियों से खरीदे गए कपडे इत्यादि का हिसाब वर्णित है।
प्रारम्भ—

'श्री नाथजी सत्य छै'

बही में खरीदी गई चीजों का मूल्य व उनकी संख्या का वर्णन इस प्रकार हुआ है—

---

१ दानगी के रूप में दर्जी कुम्हार नाई इत्यादि कमीणों को मजदूरी दी जाती थी।

"६=) पारणा १३ गुलाबी
६=) कामळा ऊन रा १३
२) टुकडीया खरीद १)"

कपड़ा की रंगाई एवं उन पर लागत का (खर्च का) उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

"१) फुटकर वटका रंगणा दीया
=) ग्रवरा गज ।।।=
।−) बेंगणीया गज ।।।।
।−) सोसनी गज २
।) ग्रबवा करे गज २।।="

एक स्थान पर कुछ गहनों के नाम भी आये हैं। कातरीयो, तीमणिया, बेडिया, कान री पारी, तीवा कडीया, टोटी आदि। ५३) कपडा परीद मुलमुल रा थान परीद लवणा

२२।।) मुलमुला नग ६ डोसी कलारी प्रा० थान १ रा प्रति नग ३।।।) लप।
१४।) मुलमुला रा थान नग २ परीद ९) थाना रा ६।) थान १ रा १४।) परीद डोसी कला री।
२६।) मुलमुला रा थान नग ६ परीद ओरणा साष पली तयार कराया सु परसन श्री ग्रापजी सायबा र नहीं, तरा दूजी परीद ओरणा कराया तरा लीना परीद पीवसरा गोपल री प्रा० नग १२ रा रु० ८।=) लेप।

---

५३)

राजकीय वषभूषा इत्यादि जानकारी के लिये सामग्री उपयोगी है।

बही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है ग्रंथ के एक ओर चमड़े का गत्ता चढा हुआ है। लिपि साधारण है। पत्र हाथ के बने हुए है।

५८ श्री महाराजा मानसिंघजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणी जो साहबां के सरकार के बाजार वाळा री लेखो

१ श्री महाराजा मानसिंघजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा के सरकार के बाजार वाळा री लेखो, २ पु० प्र० संग्रह, ३ १०, ४ ३८×१४ सेमी०, ५ ५३ ६ २८–३१, ७ वि० स० १८८६, ई० सन्

१८३२, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह की भटियाणीजी रानी का जो खर्चा होता था व बाजार से खरीदी गई चीजों का वृत्तांत है। बही में संवत १८८९ के माह जेठ से भादों तक का वर्णन है।

प्रारम्भ—

॥ श्री राम ॥

बही के प्रारम्भ के पत्र गायब हैं बही में वस्तु का नाम उसका मूल्य तथा तौल इस प्रकार दिया गया है—

२०) घीरत	॥	(आधा मण)
६॥) गुळ	१	(एक मण)
५) बाट	१	(एक मण)
॥।) चावल	॰५	(५ सेर)

बही में कपडों का भाव मय नाप व संख्या सहित इस प्रकार दिया गया है—

३। =) जगनाथी हाथ २१

८ = ॥) अगोछा ४ नग ३

॥ –) सूगी हाट ८

४) दुपटा नग २

॥। ≡) मुलमुल थान १ हात १ कीरमचीओ आरणा

। =) पोमचो १

१५ =) गाभरा २ कसु बल

॥) रेजो हाथ १२

इस बही में मिठाइयों का नाम, कीमत, तौल आदि इस प्रकार दिया गया है—

पतासा

॥) पापड	॰१ (एक सेर)
–)॥ सीगोडा री सेवा	॰१ (एक पाव)
७) काजू	॰५ (पाच सेर)
=) मखाणा	॰। – (पाच आनी भर)
॥।) दही बडा	॰२ (दो सेर)

॥) जलेबी	'। (एक सेर)
।=) बूरो	। (एक सेर)
५॥) घेवर	।) । (पाव मण)
२।) नुगती	६ (छ सेर)
३) सेवा	'९ (नौ सेर)
=) दूध	'२ (दो सेर)
॥) गुलगुला	१॥ (डेढ सेर)
॥=)॥ खाजा	'२ (दो सेर)
॥) पकोडा	'१॥ (डेढ सेर) बसण रा
।) दाळ रा बडा	१ (एक सेर)
।–) पिसता	१ (एक पाव)

बही मे एक जगह कौडी नगरा सीचने का उल्लेख है इससे प्रतीत होता है कि पुण्य करने के लिये ऐसा किया जाता था।

बही अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखी गई है पत्र हाथ के बने हुए है लिपि साधारण है। ग्रंथ के एक ओर चमडे का गत्ता है।

५६ श्री महाराजा मानसिंहजी के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा की सरकार का जमा खच का रोजनामा बही

१ श्री महाराजा मानसिंहजी के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा की सरकार का जमा खच का रोजनामा बही २ पु० प्र० संग्रह ३ ६, ४ ५६ × १५ समी० ५ २१८, ६ ८३-४८ ७ वि० स० १९२३ ई० सन् १८६६ जोधपुर, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस बही म संवत १९२३ पोस वदि १ शनिवार लगायत आसाढ तक का जमा खच का विवरण है। जो महाराजा मानसिंह (जोधपुर) का भटियाणी रानी से सम्बन्धित है।

ग्रंथ अपूर्ण होने से प्रारम्भ यहा से हुआ है—

"१०३॥=)॥। मोदी गगाराम रा लेपा रा पोस वद १ लग सुद १५ सुधी रौ लेपो रा सीरकार मे फुटकर म जीनस आइ तीण रा

इस बही मे दुरगा पाठ का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१) ही रामै श्री माताजी री हाथा री पुजन हुव तीणा भ० दुरगा पाठ बीरामण छोगो पीजु कर तीण र मोत सादुजी स० मोदी गगाराम रा सु० पोथा १५) घोरत लेपे।

भाज पर किये जान वाले खर्चे का विवरण है—
७०॥। =)॥ श्री लालजो सायबा गढ दापल हुवा तरा गोठ दीनी पोस वद १४ नै—
१। =) लापसी सादुका गगा फरोवाट सेर '८ प्रगणा १) रौ सर '५॥
लेप जीना १। –)
२५।)। घीरत इण भात खरच म आयो।

३॥ लापसी म घीरत घालीयौ।
७ सीरा म घीरत घालियौ।
६॥ मालपुडो म घीरत लाग।
४ पुडोया मे घीरत लाग।
१॥ पीचडी म घालियौ
॥। –) पापड सलेवड म।
। = बोणज म घालियौ।
। – हमैजी म घालीयौ।
॥)४ परत १ रा न० ४२। लेपे।
जुमले पुरा २५।)।

एक स्थान पर इन्द्रकुवरी के खर्चे का विवरण भी दिया है—
५३। =)॥ श्री इदरकौर बाइजी सायवा र तालके
५१॥ =)॥ दा० फागण सुद १० श्री बाईजी रै दुपटा नग २ जैपुरे रग रा कराया तीण तार दा० मु दडो जमना पासु परीद पोवसर रा राजमल रा सु
२०॥ =)॥ सीकी गोटी तोला १२॥।) की बधातर का ॥) पुरा तोला १३। प्रा तोलो १) रा प्रा १॥)

राजकीय अन्य खर्चे का विवरण प्रस्तुत है—
१२१) गठरी पडदा सु पोस सुद १५
४०) लालजी सा रै पग जालणी रा दिया
१४) लवरा रा पाग दुपटो मेलीयो र नीछावर कीयौ
१४) श्री लालजी सायबा घरे पधारिया मायने तरै नीछावर किया
७) श्री परतापसीधजी सा र नीछावर कीया
१०) पालसा री डावडीया ने बिदाई रा दिया

३१) श्री चवाणजीसा रा लालजी रा हाथ म मोरा २) दीवी
४) नाजर करीमबगस ने दिया

---

१२१)
१।। –)। लापसी कराई
।। –)।। बाट सेर '३।
।।) गुळ सेर २।≡
।।) ।।। तेल सेर।

१
।।। –) बडा सेर '३)। जा० १ दीठ लप प्रा '८ लेप

२।≡।।

१ =) मैवो परीद
।। =) बीदाम '१ ।)दापा ।। (प्राधा सेर)
। =) खारका '१।। ०।।। स्ठोरी ''
'०।। वीदाम कुळी

।। =)।

वही धार्मिक पूजन पर बनाए जाने वाले व्यजनो म लगने वाले समा तौल, विभिन्न रीति रिवाज जानने के लिये उपयोगी है।

वही अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखी गई है। लिपि साधारण है। पत्र हाथ के बने हुए हैं। वही पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

६० महाराज श्री तखतसिंघजी साहब की सलामती मे ब्याह के खर्च की वही

१ महाराज श्री तखतसिंघजी साहब की सलामती मे ब्याह के खच की वही, २ पु० प्र० सग्रह ३ १३, ४ ६०×१४ सेमी० ५ २०, ६ ३८–४०, ७ वि० स० १९१०–१९२०, ई० सन् १८५३–६३, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस वही मे जोधपुर के महाराजा तखतसिंहजी के (पासवानिय) पुत्र मोतीसिंह, सिरदारसिंह, सुलतानसिंह जवानसिंह के ब्याह म जो

रुपय खच हुए थे उसका विवरण दिया गया है। बही मे वि० स० १६१० से वि० स० १६२० के फाल्गुन वदि १३ तक की तिथि अकित है।

प्रारम्भ—

'श्री जलधरनाथजी सत्य छ'

वाभा रा बीहाव हुवा ने जान अठा सु चढी तरै मारग मे परच पडीया तथा उठ सु पजाने जमा परच तिण री फडद'

बही मे मोतीसिहजी के व्याह का वत्तात इस प्रकार है—

"लालजी श्री मोतीसिहजी री बीहाव १६१० रा म हुवो तिण ता० रौ नावो पजानो दापल हुवौ १६१२ रा पास वद २ तिण री विगत बीहाव ता० सीकर जान अठा सु असाढ सुद २ चढीया सु जठा सा० वद सुधा मे परच उपाडीयो सु'

इस प्रकार व्याह का कुल खर्चा १)७१६३॥ –)॥ रुपये बताया गया है।

इस ग्रथ म सरदारसिह के व्याह का वणन इस प्रकार हुआ है—

'लालजी श्री सीरदारसिघजी री १६२० रा मीगसर वद १२ रा सावा हुवौ तिण जान ता० रो नावो पजान लग हुवौ १६२० रा म्हा सुद ६ तीण री विगत जान वु दी गई सु साथे दीवाणा री तरफ सु मुा० कुनणमल न हुरकरणजी जोसी सीवनारायण न पजाना री तरफ सु प्रो० पत भीवदान पोतदार मा० परमचद तीणा री जमा खरच ।"

इसम बरात का खर्चा भी दिया गया है—

३४२।) ता॥० श्री दवसथान
१४६०)॥ ता॥० श्री धरम द्वारे
७७४ =) जनानी दोढी ता० (तालुके)
२४४१॥। =)॥ ता० अान रा कोठार ता०
४६६॥) ता॥० वागर तग
५५) ता॥० परची रा
४६॥। =)॥ ता॥० पेमारा कारपाना
१४०॥।) ता॥० महीनदार

इसी तरह अन्य खर्चों का उल्लेख होते हुए सीरदारसिह के व्याह का कुल खर्चा १०६४६॥। –)॥ हुआ। ग्रथ म इसी तरह के खर्चे का उल्लेख दूसरे स्थान पर भी हुआ है।

एक स्थान पर सुलतानसिहजी व जवानसिहजी के व्याह का उल्लेख हुआ है—

लालजी श्री सुलतानसिहजी श्री जवानसिहजी रौ वीहाव १९२० फा० (फागुण) वद ७ रा सावा वीहाव हुवो जान देवलीये प्रतापगढ गई तीणा० रौ नावो पजाने दापल १९२० रा आसाढ वद १३ तीण री विगत—जान अठा सु चढी म्हा वद १४ लग फा० वद १३ सुधा मा० १ मै जमा परच री नावो हा० (हस्त) नाजर हरकरण पा जोरावरमल ने पजाना री तरफ सु बोडा कुसालीराम'

इस व्याह म कुल खर्चा ६०४८॥ ≈)॥ रुपयो का बताया गया है ग्रथ म इसी तरह के खर्चे का उल्लेख दूसरे स्थान पर भी हुआ है।

यह वही तीन व्यक्तियो द्वारा लिखी गई है। इसके पत्र हाथ के बने हुए ह लिपि साधारण है। बही के कुछ अन्तिम पत्र जजरित हो गए ह।

वही तत्कालीन राज परिवार के व्याह इत्यादि पर होने वाले खर्चों का ब्यौरा जानने क लिये महत्वपूर्ण है जहा एक ओर यह खच का विवरण देती है वहीं विवह के रीति रिवाज भी जानन के लिये उपयोगी है। इससे जोधपुर राजघराने के सीकर बू दी, प्रतापगढ इत्यादि राजघरानो के ववाहिक सबधो का ज्ञान भी होता है।

६१ विहाव तालके—माहाराज श्री तखतसिघजी साहब की सलामती मे बाईजो श्री किलयाण कवर बाईजो सा परणीजोया नें सासरे बू दी पधारिया तथा वापस पधारिया तिण रो जमा खच

१ विहाव तालके—माहाराज श्री तखतसिहजी साहब की सलामती म बाइ जी श्री किलयाणकवर बाईजी मा परणीजीया न सासरे बू दी पधारिया तथा वापस पधारिया तिण रो जमा खच २ पु० अ० सग्रह ३ १४, ४ ६७ × १८ समी० ५ १३, ६ ४०–४३, ७ वि० स० १९२०, ई० सन् १८६३ जोधपुर, ८ प्रभात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम कल्याणकवर बाईजी की शादी होने पर बू दो जान व वापस जोधपुर आने तक के खर्चे का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ—

श्री जलधरनाथजी सत्य छै

कल्याणकवरजी क व्याह के खर्चे का विवरण इस प्रकार दिया है—

बाइजी श्री कलयाणकवर बाईजो माहा वद ६ रा सावा परणीजीया न अठा सु सीष कर ने सासर बू दी पधारिया तरे मारग म परच पडीया न बू दी म देवता रै भेंट तथा काज कोरीयावर हुई तरै परायत तथा वड वेडा म पालीया नै

बूंदी मु सीघ करनै पाछा मठ पधारिया तर मारग म परच उपडाया तीण रा जमा परच रो नावो ई।।० फागण सुद ५ जठ सुद ११ सुधी मास ३ दीन ६ म हा।।० उदराज १६२० रा।"

इसम देवस्थानो म किए गए दान ब्राह्मणो को दान खाने का खर्चा, साधो को भेंट दिये गए रुपयो का वर्णन हुआ है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, ग्रथ पर गत्ता नही है। पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि साधारण है।

तत्कालीन रीति रिवाज के अध्ययन हेतु ग्रथ उपयोगी है।

६२ महाराज मानसिहजी साहब के राजलोक श्री वडा भटियाणीजी साहबां की सरकार तालुकै जमा खर्च रो नावो

१ महाराज मानसिहजी साहब के राजलोक श्री वडा भटियाणीजी साहबा री सरकार तालुके जमा खच रो नावो, २ पु० प्र० सग्रह ३ २८, ४ ६१५ × १५ ५ समी०, ५ १४८ ६ ३५–४० ७ वि० स० १८८१, ई० सन १८२४ जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० इसम जोधपुर महाराजा मानसिह की महारानी भटियानी के जमा खच का उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी सत्य छ

श्री माहाराजाधिराज माहाराणीजी श्री बडा भटियाणीजी साहबा तालकै जमा परच री नावो रीते रो ज ई।।० महा वद ४ लग चत सुद १४ री व सुधी मा० १८८१ रा

आसामी	जमा रुपीया	परच रुपीया
माह रा मास मे	३७१३।)।।	२८१६।।।)
फागण रा मास म	१०३)२०६१०।।।)	१०३)२०६६० –)।
चैत रा मास मे	४)१३५८३।)।	४)८६८१।)
	१०७)३७६०७।। –)।।	१०७)३२४६१ –)।

तिण मे वाद रुपीया हुसी मना किया सु जमा परच माह सु परा काढीया तिण री विगत

३०४७ =)।। ३०४७ =)।।

इसम भी खरीद गए सोन के गहना का मूल्य, कपडे, किराणा का सामान, चादी के गहन आदि खरीदन का खर्चा दिया गया है। इसम खजान के पैसो से नवरात्रि स्थापना, भैरूजी, गणेशजी, माताजी, शिवरात्रि, हनुमानजी आदि का पूजन करवाने थडे का पूजन करवान का वर्णन हुआ है।

इसम विभिन्न गावो जसे सयलाणा, वोयल, कँकोद, सरवाड आदि की आय का उल्लेख है, एक स्थान पर स्वरूपकवर बाईजी के ब्याह क खर्चे का भी उल्लेख है।

ग्रथ दो व्यक्तियो के हाथ स लिखा प्रतीत होता है, ग्रथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है, लिपि साधारण है।

तत्कालीन खान पान, वस्त्र भूषा, रीति सम्ब धी जानकारी क लिए सामग्री उपयोगी है।

९३ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाईजी साहबा की सरकार तालुके जमा खर्च आकडा मेल

१ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री कछवाईजी साहबा सरकार तालुक जमा खच आकडा मल २ पु० प्र० सग्रह, ३ २६, ४ ४६ ८× १५ ५ सेमी०, ५ ४४, ६ ३८-४०, ७ वि० स० १८७५ ७६, ई० सन् १८१८ १९, जोधपुर ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत बही म जोधपुर महाराजा मानसिंह के कछवाई रानी क जमा खच का विवरण वि० स० १८७५ पोष सुदि ४ से वि० स० १८७६ आश्विन सुदि १५ तक का है।

प्रारम्भ—

' श्री परमस्वरजी सत्य छै

श्री महाराजाधिराज राजराजेस्वरी महाराणीजी श्री १०८ श्री कछवाईजी साहेब देव वचनायता जमा परच री आकडा मेल ईण १८७५ रा पोस सुद ४ लग सा० १८७६ रा आसोज सुद १५ सुधी माह ९ दी १० मे जमा परच।''

फिर इसम १८७५ व १८७६ का जमा खच दिया गया है, जा इस प्रकार है—

	जमा	परच
स० १८७५ रा बरस म मास	३२४४४॥)।	३०४९२ ‒)।
सवत १८७६ रा बरस मे मास ३	८८४२ =)॥।	९५७५ ≡)॥
	४१२८७।)	४००३७)

हाथिया के लिय बनाय गये नोहर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—
२१ ता० नमठे न्होरे हाथीया राग भीत तथा न्होरे चूनो कराया तिण तालके

ग्रथ म जगह जगह गावा से आई माहवार आय तथा खच का उल्लेख है।

ग्रथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है, ग्रथ पर कपडे का गत्ता है, पन्न हाथ क बने हुए हैं लिपि साधारण है।

६३ नित हकीकत की वही—महाराज श्री भींवसिहजी साहब की सलामती की

१ नित हकीकत की वही—महाराज श्री भीवसिहजी साहब की सलामती की, २ पु० प्र० सग्रह ३ २५, ४ ५८×१४ सेमी०, ५ ११८, ६ ५०-५३, ७ वि० स० १८५०-५७, ई० सन् १७९३-१८००, जोधपुर ८ नाजर गगादास, सतोषीराम, ९ राजस्थानी देवनागरी १० इसम जोधपुर महाराजा भीवसिह के जनानी ड्योढी की नित हकीकत वि०स० १८५० से १८५७ तक की उल्लिखत है। प्रारम्भ—

"श्री परमश्वरजी सत्य छै

स्वारूप श्री अनक सकल सुभ ओपमा विराजमाना नग श्री राजराजेश्वर हिंदवा सुरज छत्रपति महाराजाधिराज माहाराजाजी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री भीवसिहजी देव वचनायत पायत गढ जोधपुर री जनानी दोढी तालके री वही सवत १८५० रा।"

इस ग्रथ मे राज परिवार के खर्चे दिए गए हैं जिसमे महारानियो के पीहर व ससुराल जाने का खर्चा, ड्योढी मे रहने वाले लोगा की मजदूरी इत्यादि का वणन है इसके अतिरिक्त विभिन्न देवी-देवताओ जसे गणेशजी, सीलमाता, गणगोर माता गवर माता, ठाकुरजी, नागणेचिया माताजी हीगलाज माता, महादेवजी, गुजार रा भैरूजी, काला गोरा भरूजी, चांवड माता, गोगाजी आदि की पूजा व उसका खर्चा दिया गया है।

एक स्थान पर मारवाड के राव रिडमलजी के परिवार की याददास्त दी गई है जो इस प्रकार है—

—याद दासत राव रिडमलजी रो परवार पाप राठोड दानेसरा राठोड

१ राव जोधाजी मडोवर ले पछ जोधपुर गढ करायो जोधपुर देवी हुवा, सा १४७२ वेसाप वद ४ जनम १५१५ रा जेठ सुद ११ जोधपुर गढ करायो

२ राव रिडमल मडोवर राजा

इस प्रकार इसमे जसवतसिहजी तक वशावली दी हुई है, फिर इसमे राज लोगो की याददास्त दी गई है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथो से लिखा गया है लिपि साधारण है। ग्रथ जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है।

६५ महाराज श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजो साहबा सरकार ताा जमा खर्च री जमा बधी

१ महाराज श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री ताजा भटियाणीजी साहबा सरकार ताा जमा खच री जमा बधी, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २४, ४ ६७ × १६ ५ समी०, ५ ५८, ६ ४५ ४८, ७ वि० स० १६०६, ई० सन् १८४६, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमे जोधपुर महाराजा मानसिहजी की महारानी भटियाणीजी की आय व्यय का ब्यौरा वर्णित है। यह ब्यौरा आश्विन वदि ११ से लगाकर आसाढ सुदि १५ तक का है।

प्रारम्भ—

"श्री जलधरनाथजी सत्य छ

माजी श्री १०६ श्री श्री तीजा भटियाणीजी सायबा र सिरकार तालके जमा परच री जमा बधी १६०६ रा वरस री आसोज वद ११ सु आसाढ सुद १५ सुधा माह दीन मे जमा परच री आकडा मल १६०६ रा।'

इस वही मे प्रति माह मे आय व व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है इसमे आसोज से आसाढ माह तक जमा ३४०५०॥) रु० तथा खच ३४०५०) रु० बताये गये हैं। *अन्त मे महारानी के पट्टे के गावो की बकाया रकम २४३८=) रु०* बताई गई है।

ग्रथ एक व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, ग्रथ पर गत्ता नही है पत्र हाथ के बने हुए है *लिपि साधारण है।*

६६ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तीरथा पधारिया, धर्म पुन कियो तिण बाबत

१ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तीरथा पधारिया, धम पुन कियो तिण बाबत, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २३, ४ ४७ × १५ सेमी० ५ २२, ६ २०-२३, ७ वि० स० २६११, ई० सन् १८५४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे जोधपुर

महारानी भटियाणीजी के तीथ यात्रा करने तथा वहा दिय जान वाले दान पुण्य का वणन हुआ है।
प्रारम्भ—

"श्री नाथजी

श्री १०८ श्री श्री माजी सायबा ता री वही पनरोतरे र सावण री वही १६११।"

इस वही मे महारानी के गगा, हरिद्वार पुष्कर, मथुरा, यमुना, गोवधन पवत आदि तीथ स्थलो की पूजा व वहां दिय जान वाले दान का उल्लेख हुआ है। दान मे थाल, लोटे, कलस, परात, पीतल के बेलन, हटडी कुडछी, चकलोटो, लोहे की सीगडी, कडायलो, कडई, कासी के बतन, सोन व चादी के गहने कपडे आदि दिये जान का वणन है। ग्रथ मे ब्राह्मणा को भोजन व दान दन का उल्लेख भी हुआ है।

इसम राजघराने की तीथस्थलो के प्रति आस्था का अच्छा बोध होता है।

ग्रथ दो व्यक्तियो क हाथ स लिखा गया है। ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है, पत्र हाथ के बने हुए हैं। लिपि साधारण है।

६७ महाराज श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री कछवाई साहबा की सरकार तालुके परगने सोजत रो गाव बीलावास री आमदनी रो चोपनियो

१ महाराज श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री कछवाई साहबा की सरकार तालुके परगन सोजत रो गाव बीलावास री आमदनी रो चोपनियो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २२, ४ ६४×१७ सेमी०, ५ ३०, ६ ४५-५०, ७ वि० स० १८८५, ई० सन् १८२८, जोधपुर, ८ अज्ञात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत बही म सोजत परगन के गाव बीलावास की आमदनी का उल्लेख हुआ है।
प्रारम्भ—

"श्री नाथजी सत्य छ

प्रागना सोजत रा गाव बीलावास री डोरी साष सावणु री दीवी तफदार पा बद्रीनाथ न पा (पडित) मनसाराम हवालदार प्रो (प्रोहित) जसकरण नै लोढा श्रीराम री ग्रंफ सु प्रा ऊदकीसन नै कणवारिया २ मुा सुजान नै म्हारो रतो न गाव रा चोही पीडीयारो देवसो आकलेमो भगे पटवारी लुणावत भीप नै

ग्रौर गाव रा वड करसा उगरम सा ईत्रा भेळा होयनै डोरी दीवी सा १८८५ मीगसर वद ७ सु

आसामी जुवार १ वीणा १ मकी १ मडवो १ कुरो कराग"

वही मे गाव की आय के रूप म ग्रनाज का उल्लेख हुआ है जिसम व्यक्ति का नाम, उससे लिया जाने वाला अनाज व उसके मूल्य अकित हैं।

ग्रथ मे एक साख (सावणु) की ग्राय १७६०॥) रु० ग्रौर ५०६) बाकी बताये गए हैं, कुल आय २२६६॥) रु० बताई गई है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ के बन हुए हैं, लिपि साधारण हैं, ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

६८ महाराजा श्री तखतसिहजी साहब के राजलोक श्री लाडी राणावतजी साहबा की सरकार तालुके कपडा रै कोठार तालुके जमा खर्च रो नावौ

१ महाराजा श्री तखतसिहजी साहब के राजलोक श्री लाडी राणावतजी माहवा की सरकार तालुके कपडा रै कोठार तालुके जमा खच रो नावो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ ८, ४ ५६ × २३ सेमी ५ ६८ ६ ४८-५० ७ वि० स० १६१०, ई० सन् १८५३ जोधपुर, ८ ग्रपात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस वही मे श्रावण वदि से ग्रासाढ सुदि १५ (मास १२) सवत १६१० तक का वरणन है। वही मे विभिन्न प्रकार के कपडा, गहना, उनका मूल्य मदिरो मे दिए गए कपडा इत्यादि का उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री जलधरनाथजी सत्य छै

श्री माहाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री श्री लाडी राणावतजी स्हायबो री सीरकार तालके कपडा रा कोठार तालके जमा खच रो नावो ईण दावत सावण वद १ लगायत ग्रासाढ सुद १५ सुधा, मास १२ रा दिन म जमा परच १६१० मे थान १ गज १ तोला १ ग्रासामी—

इस बही म महाराणीजी द्वारा बाजार से खरीदे गए कपडे तथा गहनो का वरणन हुआ है, कपडो का नाम, गहनो की सख्या व मूल्य इत्यादि का वरणन इस प्रकार है—

१०-)॥	७	२६ ≈॥	०	टुकडीया ग्राधी ६ गज ११ = ॥
॥)॥	०	८। = ॥	०	रेजा
१॥)।	०	३॥ =	०	छीट कसु मल

३ –)॥।	७	०	०	षोडकोया रा पेच
२३। =)॥	१	०	४१॥	तास
१०॥।)।	१३	०	०	घुडीया कलाब तुरी
॥।)	३	०	०	नाडा पोसापा रा सादा तथा रेसम रा
१३॥। –)॥	२०	०	०	मोजा री जोडीया १३॥। –)॥
१०॥।)॥	१७	०	०	ओरणो कचा रग री
१ –)॥	०	१७ =	०	सेळो
५५॥। =)	०	२३८ =	०	मोळी लडी सोन री
६७)॥	०	०	५२)२॥।	लपी सोने री १
३८॥)	०	८।	०	बनात दुरगीया
२१ =)॥	०	०	१२॥।)१॥।	लपी सुने री
२६८॥)॥	०	०	१६०॥)२ '१॥।	पठाणी सोने री
१०१ =)।	०	०	५२॥।) '१॥।	सीकी सोने री
३१॥।)	०	०	२४।)॥	पठाणी रुपे री
१३॥।)	०	०	८॥।	कीरण वादलो
६)	०	०	३॥)॥	फीत कलाबतु री
११६)॥।	०	०	६१॥।)१॥ ॥	सीकी रुपे री

वडा मापजी स्हायबा के।

एक जगह वडा मापजी सायबा के बप गाठ पर महाराणी भटियाणी की तरफ से लागा को कपडे वाटने का उल्लख हुआ है—

'श्री वडा आपजी स्हायबा रै बरस गाठ री बारो हुवो तीए री पुसो रो उछव करायो तीए तालके श्री तीजा माजी स्हायबा रा मोनपा नै देण सारू ओढणीया नग २० वेंताई, आसाढ वद ७।"

वही मे एक स्थान पर राखी भेजने का उल्लेख है—

"३॥ = ६॥।)१॥ बाईजी चादकवर बाईजी स्हायबा री रायो जैपुर सु आई तरै म्हैलीया, मीगसर सुद ५ सु वेंताई मीगसर वद ४ साडी १ मुलमुल कसु बल री।

३॥ ≡ मुलमल कसु मल पाट १।) प्र० ग० २॥। लेपे मु० गज ३

ज लपी सोने री चोफेर छीटकवा छेंडा पटली टुट गज ६।।। –) तोला ८।) ।।)१।। सीको सोने री गज ६ ग्रेक सीक न रोकड रु० ५०) होरा मु न काचली १ म्हाय सु ।"

एक स्थान पर देवस्थान मे नई पोशाक भेजने का उल्लेख है—

तालके श्री देवस्थान

१०।। श्री महादेवजी रा मोदरा ता श्री मान बावाचा रा खरच तालके सोम री सोम श्री म्हादेव श्री री पूजन हुव तरै बीछायत सारू रेजो सग सुद सोम लग काती सुद ४ सुधो रेजो गज १०।। हा।० बेदी पेलीगराम ५।। मग बद १० गज ५ काती म बद ६ १०।।

श्री ठाकुरजी र मोदर तालके

ठाकुरजी श्री नरसिंहजी री सेवा बडा बाईजी श्री सीरकवर बाईजी रा तळाव ऊपर बीराजे तीणरे पोसापा करावण सारू आगली पोसापा गढ ऊपर सु आई तीण मुजब नवी कराई मा वद १३।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि राजघराने की देवस्थानो के प्रति गहरी आस्था थी और इसी प्रकार की पाशाकें माताजी श्री नागणेचीजी गणेशजी, भैरुजी, जुजारजी सील माताजी के लिए बनवा कर भेजी जाती थी। कपड का भाव भी इससे ज्ञात होता है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है, ग्रन्थ के मुख पृष्ठ का गत्ता गायब है लेकिन अन्तिम पृष्ठ पर चमडे का गत्ता सुरक्षित हैं पत्र हाथ के बने हुए है।

बही तत्कालीन आर्थिक व धार्मिक स्थिति जानने के लिए महत्वपूर्ण है।

६६ नित हकीकत जनानी दोडी माय सू डावडीयां वगैरे चीज वस्त नीचे ले जावे जिस बाबत याददास्त

१ नित हकीकत जनानी दोडी माय सू डावडीया वगैरे चीजवस्त नीच ले जावे जिस बाबत याददस्त, २ पु० प्र० सग्रह, ३ १८, ४ ५६×१५ सेमी०, ७ वि० स० १९२२-१९३१ ई० सन् १८६५-१८७४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर दुर्ग की जनानी ड्योढी से आभूषण, कपडे तथा बर्तन आदि बाहर भेजे जाते थे उसका ब्योरा याददास्त स्वरूप दिया गया है।

प्रारम्भ—

'श्रीनाथजी सत्य छ

जनानी दोढी नग री वही माय सु दुयावतीया श्राव त्या हकीकत माडे तीणा री बही १६२२ रा ग्रासोज सुद ६ सु लार।"

इस बही मे जनानी ड्योढ़ी मे रहने वाली डावडियो द्वारा बतन, गहनें व कपडे इत्यादि नीचे ले जाने का वर्णन इस प्रकार हुआ है—

याददास्त उपरा बासण १५ पनरै लेगी हसते पालस री, गमा लेगी—

३ थाळ उपरा नग ३

२ तासळा नग २

२ प्राणपीरा नग २

१ चोपडा नग १

१ गुलाबदानी १

६ गोळीया नग ६

नग पनरै गमा लेगी।"

इसी तरह एक जगह गहनें ले जाने का वर्णन हुआ है। यथा—

माजी सा श्री जाडेचीजी सा री सीरकार री गेणो नै पोसाक श्री गोर माताजी री माय सु नोर लेगी डावडी हा० दवा लगे ईण भात गेणो—

१ तीमणीयो जडावु हेम रो

१ कठी मोती री

१० पनडा नग दस बीदली री

१ नथ ग्रेक

१ मोतीया री जोडी

१ हाथ कडी ग्रेक

१ कठी फेर मोती री

१ भुजवदां री जोडी जडावु

इतरी तो गढा री रकमा लेगी

यह ग्रन्थ ग्रनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि बहुत ही अस्पष्ट हैं।

७० महाराजा भीमसिंहजी के महाराणी देरावरजी भटियाणीजी रै सरकार तालके गांवां री आमदनी वगैरा री जमा खर्च

१ महाराजा भीमसिंहजी के महाराणी देरावरजी भटियाणीजी रै सरकार तालके गावां री आमदनी वगैरा री जमा खर्च, २ पु० प्र० संग्रह, ३ ५, ४ ५८ ८×१५ सेमी०, ५ ७०, ६ ३० ३५, ७ वि० स० १८५१, ई० सन् १७९४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह की देरावरी भटियाणी रानी को मिले गावों की आमदनी और खर्च का विवरण दिया गया है। यह विवरण चैत्र वदि १, १८४९ से मार्गशीर्ष सुदि १५, १८५१ तक का दिया है, उसे सोढावास मालकोसणी, सीरामणी, सुखवासणी ग्राम मिले हुए थे।

प्रारम्भ—

"॥ श्री परमेश्वरजी ॥

माहाराणीजी श्री देरावरीजी भटियाणीजी र सरकार ता॥० गावा री वगरे आमदनी री जमा परच ई० (ईण माफक) मीती चैत वद १ लागा(य)

मुधा

पोत बाकी

हाल जमा

श्री हजूर मु दीराया सु जमै

७७०) दास पिजाना रा जमा हु०

नाजरजी गगादासजी सतोकीरामजी

८०) हु० भा० गंगाराम गाव सीरावण र पटे गावा रा जमा

गाव सोढावास रा परगने गोडवाड रा जमा

७५५ = ॥) साप सावणु रा धान रा जमा

इस प्रकार प्रारम्भ में होने वाली आमदनी का लेखा जोखा लिखा गया है। जिसमे पट्टे के गावा की विभिन्न शाख पर जो हासल इत्यादि वसूल किया जाता था, उसका ब्यौरा दिया है। तत्पश्चात् राणियो के लिये विभिन्न प्रकार की वस्तुए इत्यादि खरीदी जाती थी उसका भी हिसाब दिया हैं।

एक स्थान पर देवस्थान के लिए किए जाने वाले खर्चे का विवरण इस प्रकार अंकित है—

८८॥।=)॥।

ता(लके) श्री देवस्थान

३४ श्री ठाकुरजी र तीवारा री भेंट परसाद

२) श्री ठाकुरजी रै मिंदर पवीतराई

८) श्री ठाकुरजी रै रापडी रामुनमे

६) माहा मे ठाकुरे द्वारे चढाया

२) ठाकुरजी दुवारे

---

८)

× × × ×

२) श्री रामदेवजी र चढाया

२) श्री ठाकुरदवारे आसोजी दसरावा रा

१) श्री ठाकुरजी रा परसाद

३) श्री ठाकुरजी भेंट नीछरावळ रा।

× × × ×

३) श्री लछमीनारायणजी र मिंदर

१) जनम असटमी रो

१) दिवाली रो

१) पाळी मगसर मे

---

३) हा० भगत मनीराम

महारानी ने मार्गशीष को ठाकुरजी के यहा थाल भेजा उसमे उन्होने ५) रुपये भेंट किये। ३ रुपये ७५ पैसे ठाकुरजी के पोशाक के और करीब २२ रुपये का मिष्ठान्न आदि खरीदा गया अथवा कदोई से बनवाया गया था, उसका भी खर्चा दिया है—

यथा—

२१=)॥। मिठाई कदोई रा मीति सुद १०

=) मीसरी	१॥।) लाडु मेदे रा
३) पेडा	५) लाडू मोतीचूर
२॥।) हेसमी	२) घेवर मेदा रा

१।।।) जलवो ।।। =) मादरळम
३) मालपुवा ।।।) पवरपळो
= ।।) मजुरी रा

२१ =)।।।

माघ सुदि १४ का चंद्र ग्रहण के समय राना साहिबा की ओर से किये जाने वाले दान पुण्य का विवरण इस प्रकार है—

६२।। −) चद्रग्रण महा सुद १४ रो हुवो तरै ३०) सोनो, तोला २) परत १५) लप पुनदान साम्ह टीकडो करायने गढ़ उपर मसीया अभागा नै बीरामण नु देवण साम्ह
४) बाजरी धान
२।।) कपडो टुकडो ४ मनसाराम री
१ −) पगरखी ४ पटवा मुवाई री
५) पार्मलिया रुपा री सताक झागरी

४२।।)

६१।।)।। सूरज मगल रा हाकत बीरामण जीमाया तथा दीयण रा—
१) नीसपरी बिरामणी नौरे म ग्राई तरे
२) दान रो
१०) रतनी री मा रा कारज उपरे
१ −) एकीरा सु पुन ग्ररथ
२ −) मगल रा दान नै भोजन
१) १)
३) सूरज रा दान रा
२) मगल रा दान ग महीना म
१) गरीबदास रै अपाड
१) फकीर साएसा रै
२) पीरा पीन
१) बीरामणे बेटा नु
२।।।) बी (रामण) सपत रै दान जीमाण रा
१) गगा गुरु नु परसाद रा
२) नीसपरोई बीरामण नै दुदा न

१) सीरीमाली जसकरण नै
१) बिरामण जोमाया तर दान रो
३॥। ☰)॥। सूरज मगल रा सोनो मोती टका दान।
१) सुरज रा दान रा बी० जीमाया
१) पुन परधबा भजान
४) डोढ़ी री भगतयरण री
१॥। –)। दान सारु मोती नु गोया
१) सामो नीस पर ई न
२) बी० मभागिता नु
१) पमरपीया रा जोडा ४ देण सारु
।।।) पीरणी नागार री नै पडकाळी
२) बी० (रामण) सनीसर रा जीमाया तर
५) बतरणी पूजत र दान रा
१) धान गरीबा फकीरा नु
२ –) मीठाई साधा न गरीब जीमे
।।।) दान सनीसर रो मिठाई बी० नु

६१।।)

वा० (लक) मीजमानी
८) चु सीमुदान रे मेली बहु नु
४) रोकड पगे लागण रा
४) दारु अतर मीठाई
१) १) २)

८)

महारानी के आभूषण इत्यादि बनाने के लिये सोना, चादी खरीद कर सोनी को दिया, उसका विवरण दिया है। मादलिया, वीछुडिया, बीटी (ग्रगुठी) चदणहार, टोटिया, बोरियो, झुटणो, चूडी इत्यादि गहनो के नाम आये हैं जो केवल ३८५) रुपये मे ही बन हैं। आगे और कीरणफूल, तिमणिया, काकण री जोडी, गुजरिया री जोडी, बेडला, कडला दायणो आदि बनाये जाने वाले गहनो के नाम हैं।

त्योहार पर होने वाले खर्च का विवरण भी दिया है—

तीवार रा उदव उपर

१४॥ –)॥। बसरावा उपर
नोजर नोछरावळ उपर मढो
भोजन साव जीनस मोदी सरुप रा मु
३) गुळ मण १)५'॥।
४) गेहूँ मण १)
१) चावळ
३) घीरत
≡॥।) कढ़ाव री मजूरी रा
३) उगमहा ॥।)१॥
– ॥) नारेळ १
– ॥) गुळ ७॥
१) दु मा नै मोताद री

१४॥)॥।

११ दीवाली

नोजर नोछरावळ उपर मढी टीका रा नायमि भोजन साव जीनस मोदी सरुप रा मु

४) घीरत १)१।
४। –)। गुळ मण १)२॥
१) चावळ ≡
२) गेहूँ काठा
=) नारेळ २
)। मजुरी री

११॥ –)।
१०२॥) होळी रो पेल
२६) नीजर

१४) होळी रै दिन परभात
१५) होळी रो पेळ महि

---

२६)

२८।) बाग पधारिया न पाणी रो पल हुवो, बालसमद राईनावाग
२) श्री ठाकुर दवारे चढ़ाया

२६।) रोजवार तथा मुजरो मालुम करयो तर
६) नाजर गगादासजी
४) नाजर सतोकीरामजी
५) धायभाई सीमुदान
६) डोढ़ीदारा नु भेळा
१) जोसी ने
२) होळी रा वीका नु
१।) गोठ रा तमासा म
१) पाणी सोच करण नु



---

२६)

९) मुताद रा
४) महरावा
२) राणी मगी प्राईदान
१) माळी नु छाबडी रा
२) पीणीयारी

---

९)

१०) नीछरावळ
२।।) मीठाई कदोई अभा नै
।।) चोणी
२)।। लाडू

२।।)

१०॥) = पर रा टका
६) असवारी बालसमद रा
२) राईका री असवारी मेंडूव रा
२॥) असवारी राईक पधारिया तर

१०॥)

महारानी की नौकरानियां (डावडियां) के लिये कपड़ा इत्यादि खरीदा जाता था, उसका भी विवरण दिया गया है। उस समय अच्छी ओढनी के करीब २) रुपये लगते थे तथा कपडा हाथ से नापा जाता था।

कपड़ा की खरीद के पश्चात रसोई से संबंधित विभिन्न जिनसो के खरीद का ब्यौरा दिया है, इसमे वस्तुओ की कीमत दी हुई है, मात्रा कही-कही दी है। यथा—

१) बदाम '१ =
॥) नाळेर ५
२) घीरत '२॥ =
३) गेहूं मण १)
१) केसर तोला १॥)१
–) खारका । =

इसमे विभिन्न वस्तुओ के मूल्य और विभिन्न उत्सवो पर किये जाने वाले खर्चे की जानकारी मिलती है तथा रानियो के देवस्थानो के प्रति आस्था व दान पुण्य की प्रबल भावना का भी अच्छा बोध होता है। सब मिलाकर जनानी ड्योढी पर शोध करने वाले शोधार्थियो के लिये यह सामग्री बहुत उपयोगी है।

बही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। उपर चमडे का गत्ता मढा हुआ है। '=सेर का चिन्ह, ‿=मण का चिन्ह

७१ महाराज मानसिंह साहब के राजलोक महाराणी भटियाणी सायबा के सरकार तालुके जमा खर्च री वही

१ महाराज मानसिंह साहब के राजलोक महाराणी भटियाणी सायबा के सरकार तालुक जमा खर्च री बही, २ पु० प्र० संग्रह, ३ १ ४ ६२×१६ सेमी० ५ ३५, ६ ४८–५० ७ वि० स० १८६२ ई० स० १८०५, जोधपुर ८ प्रनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोधपुर के शासक महाराजा

मानसिंह की भटियानी रानी को राज्य की ओर से जो गाव आदि हाथ खच के लिये मिले हुए थे उनकी आमदनी और जो खर्चा होता था उसका विवरण दिया गया है। यह वृत्तात वि० स० १८६२ श्रावण वदि १ से आसाढ सुदि ५ तक का है।

प्रारम्भ—

"श्री जलधरनाथजी सत्य छै'

श्री माहाराजजी राज माराणीजी भटियाणीजी साहबा तालकै जमै परच री मेळ स० १८६२ रा वरस री ।"

एक स्थान पर भटियाणी रानी द्वारा निर्मित पदमसागर तलाव पर जलधर नाथ के मदिर के खर्चे का विवरण भी दिया है। उस समय गजधर की हाजरी एक रुपया थी। काय पूर्ण होन पर कारीगरो को इनाम और मदिर की प्रतिष्ठा के समय उपस्थित नाथो को भेंट स्वरूप रुपये आदि दिये उसका भी ब्यौरा दिया गया है।

महाराजा मानसिंह के समय नाथो को कितना सम्मान दिया जाता था उस की अच्छी जानकारी मिलती है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है, पत्र हाथ के बने हुए है लिपि साधारण है। ग्रथ पर चमड का गत्ता मढा हुआ है।

७२ महाराजा भीवसिंह के चावडी रानी के सरकार तालके जमा खच री वही

१ महाराज भीवसिंह के चावडी रानी के सरकार तालके जमा खच री वही, २ पु० प्र० सग्रह ३ ६, ४ ५६×१४ ५ सेमी०, ५ ४२, ६ २८-३२, ७ वि० स० १८५७, ई० सन् १८००, जोधपुर ८ अज्ञात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर क शासक महाराजा भीमसिंह की रानी चावडी के राजलोक के जमा खच का लेखा-जोखा वि० स० १८५७ श्रावण वद १ से ज्येष्ठ सुदि १५ (ईघक महीना) तक का दिया है। महारानी साहिबा को दुदा का बाडा और मोकला ग्राम हाथ खच के लिये मिले हुए थे।

प्रारम्भ—

"॥ श्री रामजी सत्य छै ॥

स्वरूप श्री माहाराणीजी श्री चावडीजो वचनायत जमे परच री वही १८५७ रा मीती सावण वद १

जमे रुपीया

७) पोते बाकी बीजसाई रापी री नीजर सारू

७)

१५५) हाल जम

१२८) सा० १८१८ रा वरस री चोठी हु १५०) री महता री
कचड़ी उपर मोकाले रा हासल री तीण मे वसूल २४)
आग जम हुवा न बाकी तीण रा ईण भात श्राया।

४६) रोकड़ा विजसाही टका भी०

२७) ७) १२)

५०) ऊट नवो परी०

२०) श्रादमी मलियो तीण र रोजगार रा

६) अजमरीया रावटा रा

---

१७५)

७) हजूर रापी रै दिन नीजर नीछरावळ बीजसाई सुद १५

१७) रापी री दीपणा रा माथे दीना

६) व्यास प्रयाग

१) गोमी बाई

१) रतन बाई

१) उवका र रापी र थाली म

८) टका प्रा०

---

१७)

गाव दूदा क बाडे की श्राय का ब्यौरा इस प्रकार दिया है—

२१२) हाल जम गाव दुदा रा बाडे रा

१५२।।)।। गाव दुदा मुकाता आदे मुकाते रा आय न आदो मुकातो
बाकी छै

२२।।।=) माल रा लाटायता लोका रा

५।। नाव री कामदारा रा

१०।।।) झुपी रा माट जीना रा

१०।।।) छाळीया रा पान चराई रा
३ ~) ऊट सांड री पार चराइ रा ।

२०५। ~) इण भांत तीन वार
१७६) बीजसाइ ७७) मर्पसाइ ।। ≈) बट रा
२) गजमाईं १) चवद सीदो

२०६)
६) घीरत दु० ७) री तुलावट पटे आयो टा० धरम
साथे मायो जमे तीण री विगत
५) रावळ
१) घायजो रै

२१२)

वही के अनुसार कुछ वस्तुओं के भाव इस प्रकार अंकित है—
२) मोळीयो ओढणी एक
२) लाडू '३।। (साढ़ा तीन सेर)
३) गुळ १)८ (एक मण आठ सेर)
२) दूध १।)
।।) चावळ '३
≡।।।) पातल दाना २००
१) घीरत १ सेर

पाटा भरने आदि के लिए जो खर्चा किया जाता था, उसका विवरण दिया है, यथा—
११) भादवा वद " (अमावस)
२) टका पाटा भरण सारै ह० (हस्ते) दीपो
१) लाडू देवता वा पीतरा र पाटा भरण सारू ह० दीपो
१) वडा महाराज श्री वीजसिंघजी र पुजापा भरण सारू ह० दीपो
२) वीरम भोज रा
५) कासीद री कावड लनै गायद जासी सीतामऊ गयो तीण रा

११)

कमीणा (नौकरों) का कपड़ा इत्यादि दिया जाता था, उसका भी वर्णन है तत्पश्चात् छोटी कुंवरजी के चूड़ा पहिनने की रस्म अदा करने पर २) रुपये खर्च हुए उसका भी हिसाब इस प्रकार दिया है—

२) श्री छोटा कु वरजी बेंदुबा रो चूडो पहरीयो तरे नीछरावळ
१) चूडा रो मोहरत काढीयो तरे जोसीया न
१) गीतेरणीया न मारत रे दिन

२)

इसमें रानियों के आय-व्यय की अच्छी जानकारी मिलती है। राजकीय रीति रिवाज सम्बन्धी अध्ययन हेतु भी सामग्री उपयोगी है।

ग्रंथ एक व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। एक बार कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। पत्र हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

७३ महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत साहिबा के कपड़ों के कोठार की बही

१ महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत साहिबा के कपड़ा के कोठार की बही २ पु० प्र० संग्रह ३ ?, ४ ६०×१६ सेमी०, ५ ४० ६ ४०-४३, ७ वि० सं० १९४१, ई० सन् १८८४ जोधपुर, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में जोधपुर के महाराजा तखतसिंह की राणावत रानी के लिए बाजार से कपड़ा आदि खरीदा जाता था उसका विवरण वि० सं० १९४१ श्रावण वदि १ दिया है।
प्रारम्भ—

।। श्री जलधरनाथजी सत्य छै ।।

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री श्री माजी राणावतजी साहबा री सरकार ता० कपड़ा र वत री बही ऐवदायत सावण वद १ वार बुध सं० १९४१ रा हाल जमा

बजार सु कपड़ा गाटो बगैरे परीद हुय आवै सु जमा
सावण में
१०० वद मुलमुल नग १ पड़पनी परीद पीवसर रा सुरजभाण री ।

उस समय मुख्य रूप से मुलमुल, नठा, रेजा आदि कपड़ा खरीदा जाता था। इसमें मोरणा, अमरखी, कुडती काचली पायजामा और साड़ी आदि वस्त्रों के नाम

आये है। रानी साहिबा के बच्चों आदि के लिए कपडा खरीदा जाता था, उसका भी उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त कपडे पर लगने वाले सोने चादी के गोट का भाव क्रमश २२) रुपया और ६) रुपया लिखा है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा साधारण लिपि मे लिखा गया है। एक ओर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

७४ महाराजा भीमसिंह के राजलोक आडीजी (हाडीजी) साहब के सरकार तालके खर्च री बही

१ महाराजा भीमसिंह के राजलोक आडीजी (हाडीजी) के सरकार तालके खर्च री बही २ पु० प्र० सग्रह, ३ ७ ४ ५८×१४ समी० ५ २२, ६ ३०-३५, ७ वि० स० १८५६, ई० सन् १८०२, जोधपुर ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत बही मे जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह की रानी आडी (हाडी) के राज्य सम्बन्धी जमा खर्च का लेखा जोखा वि० स० १८५६ श्रावण वदि १ से लगाकर भाद्रपद सुदि २ (२ मास) तक का दिया है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री रामजी ॥

रोजनावो माजी श्री आडीजी साहबा र मीती सावण वद १ स० १८५६ रा २२२६ =)॥। पोते बाकी १८५८ रा आसोज सुद १५ री।"

इस प्रकार पहले के जमा रुपये और अन्य आमदनी का उल्लेख कर फिर खर्चे का हिसाब दिया है।

खर्च मुख्य रूप से देवस्थान, खान-पान कपडे, आभूषण इत्यादि पर किया जाता था। बडारना को १ टके से १ रुपया दिया जाता था। सोनी को गहनो की मरम्मत के केवल १॥ टका दिया गया था।

ग्रथ के एक ओर चमडे का गत्ता मढा हुआ है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा साधारण लिपि मे लिखा गया है।

७५ बियाव शादी महाराजा श्री तखतसिंहजी की सलामती मे— महाराज कवर बडा श्री जसवतसिंहजी साहब की

१ बियाव शादी महाराजा श्री तखतसिंहजी की सलामती म—महाराज कवर बडा श्री जसवतसिंहजी साहब की, २ पु० प्र० सग्रह ३ १५, ४ ४७× १४ सेमी०, ५ २, ६ ४०-४३, ७ वि० स० १६२१ ई० सन् १८६४, जोधपुर,

८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत बही में जोधपुर के शासक तखतसिंह के ज्येष्ठ राजकुंवर जसवंतसिंह की शादी का विवरण दिया है। यह शादी वि० सं० १९२१ भाद्रपद वदि ८ बुधवार को मंडार के राव सगरामसिंह देवड़ा की पुत्री से जोधपुर (बालसमंद) में हुई।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। लिपि सुवाच्य है।

७६ नजर निछरावळ सिरोपाव री वही

१ नजर निछरावळ सिरोपाव री बही, २ पो० पु० संग्रह ३ ३ ४ २१.५ × १४ सेमी० ५ १६, ६ २५, ७ वि० सं० १८९२, ई० सं० १८३५, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० जोधपुर के शासक मानसिं द्वारा पोकरन ठाकुर बभूतसिंह व उनके साथ के अन्य सरदारों को सिरोपाव इत्यादि प्रदान करने का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

"श्री रामजी"

'श्री १ आसाढ सुद २ वार गुर श्री दरबार मु ठाकुरा बभूतसिंहजी न सीष रो सीरपाव हुवा

२)) ३०) माहाराज श्री रामसिंहजी माजी श्री चद्रावतजी न नीजर नोछरावल रा २)) ३०)"

बभूतसिंहजी को हुए सीरोपाव का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१ श्री ठाकुरा रै सीरपाव

१ मीमो सपत पासगी	१ पाघ चुंदड़ीमा
१ सीरपेंच कलगी वाळी कडा	१ दुपटो वाणारसी
१ रुमाल कारचोभा रै काम रो	१ दुसालो लाल
	१ हाथी पटो

बभूतसिंह के साथ जो सरदार थे उनको सीरोपाव इत्यादि देने का विवरण इस प्रकार है—

(१) मु० सुरतरामजी पाघ १, पारचो १ दुपटो १।

(२) भायल पुसालसींघजी पाघ १, पारचो १ वाणारसी १।

(३) चा हीमतसीघ अवानसिघोत पाघ१, पारचो १, दुपटो१ वाणारसी१।

(४) चा मदजी पोवसिघोत पीलव पाघ१, पारचो१, दुपटो१ वाणारसी१।

(५) चा वाघजी जठत रो पाघ १, दुपटो १, वाणारसी १।

वही मे अग विभिन्न स्थानो से नजर निछरावळ के रूप म आये रुपयो की याददास्त दी गई है और खच हुए रुपयो का उल्लेख हुआ है। वही अनेक व्यक्तियो क हाथ से लिपिबद्ध है।

७७ ब्याव रे रोकड नावा री बही

१ ब्याव रे रोकड नावा री बही, २ पो० ह्रा० सग्रह ३ ६, ४ ३८ × १४ सेमी०, ५ ६०, ६ ३२, ७ वि० स० १८६६, ई० सन १८३६, पोकरण, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० पोकरण ठाकुर वभूतसिंह की शादी के समय विभिन्न रश्मा आदि पर हुए खर्चे का उल्लेख हुआ है।
प्रारम्भ—

"श्री परमेश्वरजी"

सिध श्री राज श्री वभुतसिंघजी लीपावत तथा श्री ठाकुरा री वीहाव सामोद रावल बैरीसालजी री बेटी सु फागण वद १० रा सावा हुवो, तिण रै रोकड नावा री बही स० १८६६ रा ह्रा० सुरतरामजी।

वही मे विवाह के समय हुए खच का उल्लेख एक स्थान पर इस प्रकार हुआ है—

परणीजण पधारिया तर वद १०
१)) तोरण री मोहर
४)) सासू आरती मोहरा
१)) गठजोडा म मोहर
१))४।) चवरी मे वीराजीया ह्रा राधा ल गई नगे सुपता रा
१०) चामु रा ह्राथी रे ऊपर असवार हुवा तर मावत नै
४) पडलो ले गया तरै
१५) पग धोवाई रा
१) परण ने पाछा पधारता पालपी वीराजीया तर कळस म
मोहर १)) लगन मे माढा ग्र प्राई सो दीनी
५०) गाळ गीता रा रावळा मे मेलीया आदि।

वही म रास्त मे खरीदी गई जीनस, पशुओ के चारे, धान, नजर-निछरावळ, देवस्थान, शराब, किराया आदि पर हुए खच का उल्लेख है।

वही से पोकरण के सामोद से सम्बन्ध तथा उस समय मारवाड मे प्रचलित विवाह के रीति रिवाजो का ज्ञान होता है। वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित है एव लिपि सुवाच्य है। वही पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

७८ तोसाखाना रै जमा खरच री वही

१ तोसाखाना रै जमा खरच री वही, २ पो० हा० संग्रह, ३ ४ ४ ३६ × १३ सेमी० ५ ६ ६ २८, ७ वि० सं० १८६७, ६० सन् १८४०, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० वही का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

तोसखाना म जमा खरच १८६७ रा।"

इस वही मे तोसाखाना म पात बाकी रुपया का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—
मीती जेठ वद १८६७ रा

पीत बारी	तांबा रा ईगतीसदा
बीजेसाई	२१) पाता मत्त रा
भाड़साई	७०) हा० सीमुदा
ग्रपेसाई	———
गजसाई	पोटा फेर
कीसनगढ़ रा	२) अपसाई हा० सीमुदो
सालमसाई परड़ा	
३ प्र० ॥=)	
ईगतीसदा	
कलदार	
बु दीरा	
सायपुरीआ	

इस वही से हम मारवाड़ म उस समय प्रचलित विभिन्न सिक्का के सम्बन्ध म महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

७६ निजर-निछरावळ मुकाता री वही

१ निजर निछरावळ मुकाता री वही, २ पो० हा० संग्रह, ३ ७, ४ ५३ × १८ सेमी०, ५ २३३, ६ ३५-४०, ७ वि० सं० १६०५ ई० सन् १८४८ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत वही मे गाव मजल (पृ० १ से ७१) दुनाडा (पृ० ७२ से ८२) करमावस (पृ० ८२ से ८६) और दुदा का वाडा (पृ० ६० से ६६) के आय पदावार का हिसाब लिखा है। इसके अतिरिक्त नजर निछावर के रूप मे जो रुपये प्राप्त होते थे, उसका भी उल्लेख यथास्थान किया है।

प्रारम्भ—

"श्री परमेश्वरजी
मीती वैसाष वद ११ सोम स० १९०५ रा
७६२) श्री पोते वाकी वही दूजी मू उतारिया
७२) पोते हाजर"

प्रारम्भ में जो आय होती थी तथा ब्याज आदि से पैसे प्राप्त होते थे उसका हिसाब लिखा है। पृ० ६ (ब) पर ठाकुर बभूतसिंह के पोकरण से जोधपुर जाते समय मार्ग में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा नजर किये गये रुपयों का उल्लेख हुआ है। यथा—

६४) नीजर नीछरावळ रा
१४) मारग मे
१३) तीवरी मे रणजीतसिंघजी सीवनाथसिंघजी बालरवे वाला
रा निछरावळ वट रा।
५) ५) गाव चामू मे
२) वभूतसिहजी
२) रावळा माय मू
१) दवरे माजनी नीजरे किया।

विभिन्न उत्सवों पर पोकरण ठाकुर को सरदारों व ग्रामीण जनता द्वारा रुपये (अखेसाही) नजर निछावर किये जाते थे, उसका ब्यौरा है—

रु०	उत्सव	वही की पृष्ठ संख्या
७	रक्षाबन्धन	२१ (अ)
४	पगडी बधवाने की रस्म के	२२ (ब)
११	दशहरा	२५ (अ)
१८	दीपावली	२६ (अ)
१७	बाहर से आये सरदारों ने नजर किये	२६ (अ)
४	दूल्हे ने नजर किये	३२ (अ)
६३	माजी साहिबा पर निछावर	३५ (अ)

ठाकुर किसी व्यक्ति को पगडी बधवात तो पगडी बधवाने वाला और उसके साथी भी अपनी हैसियतानुसार ठाकुर को रुपये नजर करते थ। इसी प्रकार नव वर-वधु के पक्ष स भी रुपय नजर करन की प्रथा प्रचलित थी।

जाग बही म पृ० ३७, ३८, ४५ ५४ और ५८ पर इसी प्रकार नजर निछ्रावर क रुपया का उल्लेख हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति से प्राप्त होने वाले एसे रुपया का बही म जमा किया जाता था।

अधिकाश गावा स हासल न लेकर मुकाता (रोकड रुपय) लिय जात थे। इसक अतिरिक्त ब्याज क जो रुपय प्राप्त होत थे उसका भी उल्लेख यथा स्थान किया है। उस समय ब्याज की दर ४ आन प्रति सकडा प्रति माह थी।

अकाल पडने पर मुकात की रकम कम कर दी जाती थी अथवा माफ कर दी जाती थी। मुकाता समय पर नही दने पर कडी कायवाही की जाती थी तथा उनसे मुकाते की रकम मय ब्याज से वसूल की जाती थी।

८० गाव दुदा रे वाडे तथा पाता र वाडे रै नाव री जमा परच री बही

१ गाव दुदा रे वाडे तथा पाता रै वाट र नाव री जमा परच री बही, २, पो० हा० सग्रह ३ १ ४ ८३×१८ समी० ५ ११, ६ ४६, ७ वि० स० १६०६ ०७ ई० सन् १८४६ ५० दुदा व पाता रा वाडा ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी दवनागरी १० इसम दुदा का बडा और पाता का वाडा नामक ग्रामो मे हुए जमा खच का हिसाब अकिण है।

प्रारम्भ—

श्री परमसरजी

गाव दुदा रे तथा पाता रे वाड रो जमा परच स० १६०६ सू १६०७ रा आसाढ सुद १५ सुधी'

इस बही मे ब्याह क समय लिय जाने वाले दाण (कर) का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१३॥≡)। ब्यावा रे दाणा रा जमा

३॥)।३७॥ भडारी दला री बन री ब्याव हुवो न जान पांडप मु आई जोण रै दाणे रा पोह वद १३

२)१२)२५ दापा रा फ़ीया रा
२) १२)२५

॥)१। चवरो रो दाण

२॥)१३)२५

२ ≡)। सोनार रुजे री बेटी मकवाड़े परणाई तीण रा

१)६)१२॥ दापो अधकर लाग

॥।)१। चवरी दाणा रो

१)७)१७॥

५॥) ≡॥ सा० तीलोक री बटी परणी न जान करसाळीय मु आई तीण रा

७)१२)२५ दाणा तथा फदीय रा

॥।) १ चवरी रो

२) ≡ १)२५ जान जान भाट रो पटीया लाग तीण रा

॥ −) आटो

१॥) घीरत

=) पाड '१

१)२५ गुड '१।

२ ≡)१)२५

४)१५
टका रा

५

१॥।) याभी दीपला र वेना गाव धुनाड़े नातर दीवी तीण रा।

॥ =)॥ सालपी भीवला री वन गाव पातां र वाडे नातरे दीवी तीण रा

१३॥।)।३७॥

बही में विभिन्न व्यक्तियों पर लगने वाले कर, जुर्माना, माहवार पेशगी आदि का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१॥) नायक हीरा हमीर कने बाळध र पडाव रा

२॥ =) भाट सरुपा वा० रामसिंघ वाले रा पोठीया रूलीयार आया तीके पाछा दीना तरे लीना

३) वाभीया रै कुड रा लाग सा लीना

। =) रबारिया रै ऊन बाब रा लागे छाग दीठ ऊन '२ रा लागे

=) रबारी मानो =) रबारी ऊमो =) रबारी जीओ

। =)

२५ कणवारिय रै रोजगार रा म० ३॥ रा प्र० म० १ रु० ६) लेप २४॥) रुपया ८) महीने रा लाग सो हमक वसती नादार तीण सु सात दीना रु० ॥) पगरपी रा

३) रबारी माने रै सुसर रो परच कीनो तीण रा पेटीया दीना नहा तरे रु० ३) पेटीया रा कर लीना

॥) रबारी ऊमला री वहु पू ख चोरिया तीण रा

मारवाड म प्रचलित रीति रिवाज, कर व्यवस्था ग्रादि का ज्ञान प्राप्त करन के लिये सामग्री उपयोगी है ।

वही एक ही व्यक्ति के हाथ स लिखो गई है एव गत्ता चढा हुग्रा नही है ।

८१ व्याव रै रीति-रिवाज री वही

१ व्याव रै रीति रिवाज री वही, २ पो० हा० सग्रह, ३ २, ४ ५० × १७ सेमी० ५ ६, ६ ४०, ७ वि० स० १९११, ई० सन् १८५४, ८ उज्वल नाथू, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वही म पोकरन ठाकुर बभूतसिह की शादी मे हुए पर्चे का विवरण लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेसायनम

"श्री ठाकुर साहबजी रो व्याव सोयतरे रा चवाण ग्रजीतसिघजी री बेटी रौ डाळा लेने चवाण मठ ग्राया तर हीरानद री बगची म व्याव कीनो तीण र नाव री विगत हा० उज्जल नाथू
सा० १९११"

इस वही म व्याव के समय होन वाली विभिन्न रस्मा पर खच का उल्लेख इस प्रकार हुग्रा है—

' परणीजण पधारिया तरे—

२) सामळे र थाल म

१०) कळस म

२००) पडळ सामल राकडो

४०) वडी आरती रा

१) चामक दीवे म

१) गठजोडा रै पले

४) मांटो बरसावण रा

५) नव गोरां म
१) रूद्र कळस रो
१) हथळेवे म
२) दस दाव रा
४) सेवरा रा
२) कसार री थाळी म
२) हथळेवे री थाळी म
५) मुरसी रा   २) पोंखरणा न २)   सेवगा ने १) सीरमाळी न
१००) हा० वधारण माय लें गई
  ८०) रु० वधारणीया न तथा   २०) रु० ढालणीया न कमीणा रा
५) जाता करण पधारिया तरै देवळां ५ चढाया
१) श्रीरामदेजी   काटडो चढ़ीयो
  नाळेर १६
७) सुथार न तारण रा
१) माथो गु थाई रा
१) पगरखीया रा
१) लूण ३ वारण रो"

तत्कालीन विवाह सम्बन्धी रीति रिवाजो को समझने के लिये यह सामग्री उपयोगी है।

वही पर गत्ता चढा हुआ नही है और पत्र पानी से भीगे हुए है।

८२ साढा री हाजरी री बही

१ साढा री हाजरी री बही, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४, ४ ३३.८×१५.५ सेमी०, ५ १७, ६ २६, ७ वि० स० १६१७-१६, ई० सन् १८६० ६२, कोमता री अरठ, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह ऊंटनियो की हाजरी सम्बन्धी एक वही है, इसमे नही ब्याने (बारवाड) वाली, ब्याने वाली (गियाव) तथा लगडी ऊंटनियो आदि की सख्या है।

'श्री परमेश्वरजी

श्री रावळी साढा री हाजरी लीनी री विगत १६१७ रा चतर वद ३ हा० ठाकुरा श्री वभुतसिहजी, जसोलीया धनजी हाजरी लीनी गांव कोमता री अरठ मे २३१ रायकै चुरा रै टोळा री हाजरी लीनी

६७ साढा सुआ
५६ साढा सुआ ५६
११ साढा गोआवाणी वेतर मार्थ
४२ साढा ४२ वापड
३ ऊट ३ साढा मे साट
१६ पागळी १६ वरसुदी
१६ तोरड़ा १६ वरसुदिया
३ पागळी ३ वरस दोय रै आसरे
५१ तोड वापड
२ साढ २ वदोतर
१ ऊट १ सडवानै
६ ऊट ५ तोरडो १ जु० ६
२ तोरडा २ बरसुदीया

२३३

बही मे इस प्रकार १९१६ तक साढ़ो की ली गई हाजरी का उल्लेख हुआ हैं, इसम बेचे गए ऊट व ऊटनियो का उल्लेख मय रकम (अखेसाई, बीजसाई) के हुआ हैं।

बही पशुधन के बारे मे जानकारी प्राप्त करने के लिये उपयोगी है। यही अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखित है।

८३ व्याव री बही

१ व्याव री बही, २ पा० हा० संग्रह, ३ ४१, ४ ४५×१५४ सेमी०, ५ ४ ६ ३० ७ वि० सं० १९१६, ई० सन् १८६२ ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही मे पोकरन ठिकान री एक पुत्री को शादी म हुए सम्पूर्ण खर्चे का ब्योरा दिया है।

प्रारम्भ—

"धीरजी बाई लाड कवरजी का व्याव की तजवीज जागती बही देपर लीयो जीकी याद दास्त समत १९१६ का"

गणेशजी, कुलदेवी, नवग्रह कळश भारती तिलक, डालण, बतोथी, धामला, बधाई घोरोपाव, पहला देवथापा का पूजन, हथलेवा दोन ब्राह्मण को, चवरी दापादि मे दिय खर्चे का उल्लेख है।

ब्याह में दिये गए गहनों के नाम इस प्रकार है—टोटी, झुमका, वेणी जडाउर, नथ, बाजुबध, कानणी, मुदडी, बीटी, हथफूल, पीपल पता, मतलडी, पायजेब, गुजरा की जोडी, कडीया पग की, मादला की जोडी, तीब इत्यादि जडाऊ व सोन के गहने।

दहेज मे दिये गए सामान का उल्लेख इस प्रकार है—सीसी दारू की, सुरमादानी, गुलाबदानी, ढोल्या का पागा, थाळो, पाळो, जल पीवा की बाटकी गोळ चादी की, पर्यो का डाडी, छवरी की डाडी, कतरणी नरणी, कळसा, लोटा चादी का, पाळो हाडीवार, पीकदानी, पानदानी, बाळकु ची इत्यादि।

कासी तथा पीतल के बरतनो का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—चरवा कळस, थाळ, थाळी, कुडी, रामझारी, पीकदानी रामरती डाबो, दुकडीयो चरी कटार-दान जरझरी, बलण घगलोटा, डाल परात, तोलोडी, लोटा कडछी बाटका।

पूरी बही मे विवाह के पहले दिन से आखिरी दिन तक खर्च जिसमे दहेज का सामान गहने, कपड व खाने पीने का अन्य सामान का कुल खर्चा ३५८१८) रु० लिखा गया है।

उस समय की घरेलू सामग्री का पता चलता है तथा विभिन्न वस्तुओ के मूल्यो की जानकारी भी होती है।

८४ गोडवाड रै परगने खीवाडे री ख्यात

१ गोडवाड र परगने खीवाडे री ख्यात, २ पो० हा० सग्रह ३ २, ४ २९×१९.५ सेमी०, ५ ३६, ६ १६ ७ १९वी शताब्दी का उत्तराद्ध, ८ प्रभात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ख्यात मे चापा के वशज भेरुदास, जसा, माडण, गोपालदास, विठलदास इत्यादि कापरडा व पाली के ठाकुरो का वृत्तात देकर खीवाड के ठाकुर जगतसिंह व उसके वशजो का इतिवृत्त दिया है।

प्रारम्भ म खीवाडे के ठाकुर गुमानसिंह चापावत के पट्टे के गावो की सख्या, रेख, रकबा, कुरब इत्यादि की जानकारी दी है फिर राव रिडमल से गुमानसिंह तक वशावली दी है।

प्रारम्भ—

'ठीकाणो पीवाडो प्रगने गोढवाड रै पटै पाप चापावत बीठलदासोता रै ठाकुर गुमानसिंघजी अजीतसिंघात तीण रा ठीकाणा री पीमात राव रिडमलजी सु फटीया पेला पाली थो न पछै ठीकाणो पीवाडे वदीयो समत १८३६ म आसोज

वद ७ राठौड़ गजसिंघजी नै माराज श्री वीजैसिंघजी ईनायत कायो हाल ठाकुर गुमानसिंघजी है, पट री विगत नीचे नपसा म—

न०	नाम ठीकाणा	नाव गाव	नाव प्रगना	रकबो	मरदुम सुमारी	रेप	नाव जागीर दारा री
१	पीवाडो	पीवाडो	गोढवाड	२५०००	१८०५	६०००)	गुमानसिंघजी

कुरबा नाम	तादाद गाव	पटा री रेप	भरतु रेप	राज म रेप भरे प्र १०००) लार ८)	तजवीर बाकी	घोडा	उट
हात रो कुरब	दफ्तर म गाव ११	१६०२५)	१३०२५)	१२८२)	०	१६	०

॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

१ ठीकाणो पीवाडा प्रगन गोढवाड रै पट चापावत वीठलदास तीणा री पीयाल री खुलासो

कुरसीनावो

१ राव राडमलजी	२ चापोजी राव रीडमलजी रा मु चापावत
३ भेरूदासजी	४ जैसोजी
५ माडणजी	६ गोपालदासजी
६ वीठलदासजी	८ लपधरजी
६ भ्रपेराजजी	१० राजसिंघजी
११ पेमसिंघजी	१२ जगतसिंघजी
१३ नवलसिंघजी	१४ ग्यानसिंघजी
१५ गजसिंघजी	१६ हमीरसिंघजी
१७ मजीतसिंघजी	१८ गुमानसिंघजी हमार ठाकुर है।

१ चांपा का वृत्तात —

ख्यात मे वर्णित है कि चापाजी का जन्म वि० स० १४६६ कार्तिक शुक्ला १ को हुआ और वे मडोवर परित्याग कर वि० स० १४६६ म पूर्व दिशा की ओर चले गए। (पत्र-३)

२ भेरूदास का वृत्तात –

चापाजी के कुवर भेरूदासजी का जन्म स० १४९७ को हुआ, वे कापरडा मे स० १५२२ को पाट बैठे और उन्होंने जोधा की बदगी मे काम किया। (पृष्ठ स० ७) बाद मे राव बीका इन्हे बीकानेर ले गए। राव जोधा एव बीका ने जब सारगखा पर हमला किया (वि० स० १५४५) उस युद्ध म भेरूदास के घाव लगे।

मेडता के राव वरसिह द्वारा साभर व अजमेर पर आक्रमण करने पर अजमेर के सूबेदार मल्लूखा ने सिरियाखा और मीर घडूला का साथ ले मेडता पर चढाई की तो वरसिह व दूदा भाग कर जोधपुर सातल के पास चले गये। मुसलमानी सेना ने लूटमार की तथा पीपाड से तीजणिया को पकड ले गय, इस पर भेरूदास आदि ने उन पर चढाई की इसका विवरण ख्यात म इस प्रकार है—

"भेरूदासजी कापरडे सू कोसीणे तुरका री फौज री भेद ले जोधपुर आय राव सातलजी सु अरज कीवी जद रोयट सू बरजाग भीवोत नै बुलाय फेरई सारा भाया ने ले चढाया सू अणीया कीवी १ अणी तो वरसिहजी दुदाजी री दूजी अणी वरसिह भीवोत री तीजी अणी भेरूदासजी चापावत री चौथी अणी राव सातलजी पुद री सा भारी झगडो हुवो तीजणिया छुडाई सातलजी काम आया तिणा री चातरो कोसीणा रा ताळाब उपर है। ओ झगडो सवत १५४८ रा चत सुद ३ न हुवो जिण दिन सू मारवाड म घुडला री मळो जारी हुवो सो हाल तक चाल है।" (पृ० स० ८ १०)

३ जैसा चापावत का वृत्तात –

ख्यात मे वर्णित है कि राव मालदेव की ओर से विभिन्न ५२ परगनो को हस्तगत करने मे जैसा चापावत का भी विशेष योगदान रहा। इन्होने डीडवाना और नागौर पर अधिकार किया। फिर जैसा चापावत राणा उदयसिह के वहाँ चले गये वहाँ उन्हे ३ लाख का पट्टा मिला। शेरशाह की मारवाड पर चढाई के समय राव मालदेव की ओर से जैता कूपा के साथ जैसा ने शाही फौज का मुकाबला किया। (पृ० स० १३-१९)

४ मांडण चापावत का वृत्तांत –

वि० स० १६१९ मे जब मोटा राजा उदयसिह तथा चद्रसेन के बीच युद्ध हुआ तब माडण ने चद्रसेन का पक्ष लिया। १६४० मे दताणी के युद्ध म सुरताण देवडा से लडते हुए रायसिह (चद्रसेन का पुत्र) के साथ माडण के मारे जाने का उल्लेख है। (पृ० स० २१

५ गोपालदास चांपावत का वृत्तांत –

माडण का उत्तराधिकारी गोपालदास हुआ, वह मोटा राजा उदयसिंह की सेवा में रहा। वि० सं० १६४२ में उसे आउवा का पट्टा मिला। उक्त राजा द्वारा चारणों से सामणिक गांव छीन लेने पर गोपालदास रुष्ट होकर उदयपुर राणा की चाकरी में चला गया। (पृ० सं० २७ २८)

६ विठलदास चांपावत का वृत्तांत –

यह महाराजा गजसिंह की बंदगी में रहा फिर महाराजा जसवंतसिंह की दक्षिण चढ़ाइयों में भी इसने भाग लिया (पृ० सं० ३३) अन्त में धरमाट के युद्ध में रतलाम शासक रत्नसिंह के साथ मत रहा। (पृ० सं० ३४ ३६)

७ लखधीर चांपावत का वृत्तांत –

बादशाह औरंगजेब ने जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह की नियुक्ति काबुल में विद्रोही पठानों को दबाने के लिए की तब महाराजा के साथ लखधीर भी था पठानों के इस युद्ध में पचोली वछराज मारा गया तथा लखधीर घायल हुआ। वि० सं० १७३५ में (पेशावर में) महाराजा की मृत्यु के बाद लखधीर, दुर्गादास, मुकंददास खीची इत्यादि के साथ दिल्ली आया। इसके रणसी नामक गांव भी पट्टे में था तथा १७२२ में पाली का पट्टा उसे मिला था। (पृ० सं० ३८-३६)

८ अखैसिंह उदयसिंह चांपावत का वृत्तांत –

अजीतसिंह इन्हें बड़ा सम्मान देते थे। वि० सं० १७३६ में नवाब कासमखां औरंगजेब से मिलने जा रहा था उस समय इन्होंने उसके नगारे निशान आदि छीन लिये और जब महमदखां मसन्द रामपुरा में आ पहुंचा तो इन चांपावत व अन्य राठौड़ों ने उससे युद्ध किया जिससे अखैराज घायल हुआ।

ख्यात में वर्णित है कि इन्द्रसिंह को इन्होंने जोधपुर का राजा स्वीकार नहीं किया और वे इन्द्रसिंह के विरुद्ध लड़ते रहे। उदयसिंह चांपावत के जयदेव प्रोहित के घर अजीतसिंह को लाने तथा १७४३ में कालद्री ग्राम में उसका राज्याभिषेक इत्यादि करने का उल्लेख है तथा महाराजा अजीतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने के बाद अखैसिंह से पाली जब्त कर मुकनदास सुजानसिंघोत चांपावत को देने का उल्लेख हुआ है। (पृ० सं० ४१ ४८)

६ राजसिंह चांपावत का वृत्तांत –

वि० सं० १७६५ महाराजा अजीतसिंह व राजा जयसिंह द्वारा सांभर आक्रमण के समय राजसिंह की वीरता पर मुग्ध होकर महाराजा ने उसको पाली का पट्टा इनायत किया। (पृ० सं० ४६)

१० पर्मसिंह चापावत का वृत्तात –

यह महाराजा अभयसिंह की सेवा मे रहा। इसने महाराजा की ओर से लडे अनेक युद्धों मे भाग लिया। रामसिंह व बखतसिंह के बीच हुए युद्ध मे पर्मसिंह ने बखतसिंह का पक्ष लिया। महाराजा विजयसिंह तथा रामसिंह के बीच हुए चौरासणी ग्राम के युद्ध मे पेमसिंह वीरता से लडकर काम आया। यह युद्ध वि० स० १८११ आश्विन सुदि १३ को हुआ। इसे एक बार आद्राशृन का पट्टा भी मिला था।

११ जगतसिंह चापावत का वृत्तात –

इन्होंने महाराजा विजयसिंह के यहा बदगी की और आत्माराम गुरु की मृत्यु पर विजयसिंह ने पोकरन आदि ४ ठाकुरो को कैद करवाया उसमे इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जिसका विवरण इसमे दिया है। बागी मलग नामक व्यक्ति जो मारवाड मे नुकसान कर मेवाड चला गया था जगतसिंह ने उसे मरवाया। इस पर महाराजा ने खुश होकर जगतसिंह को वि० स० १८३६ मे खीवाडे की जागीर प्रदान की। वि० स० १८४७ को मेडता मे मराठो से लडते हुए जगतसिंह के मारे जाने का उल्लेख है। (पृ० स० ६२–६३)

१२ नवलसिंह चापावत का वृत्तात –

यह भी महाराजा विजयसिंह की सेवा मे रहे। विजयसिंह के पश्चात् भीमसिंह की सेवा मे रहे। जब वि० स० १८५३ मे भीमसिंह ने सिंघवी अखेराज को जालोर मानसिंह पर भेजा उस समय नवलसिंह भी उसके साथ था। वि० स० १८५७ मे मानसिंह द्वारा पाली मे लूटमार करने पर भी भीमसिंह ने फिर नवलसिंह को मारवाड मे शाति बनाये रखने के लिये नियुक्त किया था। (पृ० स० ६४–६६)

१३ ग्यानसिंह चापावत का वृत्तात –

इन्होंने महाराजा मानसिंह की बदगी की। पोकरन ठाकुर सवाईसिंह को मार लाने मे घाते से मारा वहाँ ग्यानसिंह भी काम आया। (पृ० स० ६७)

१४ गजसिंह चापावत का वृत्तात –

मानसिंह द्वारा वि० स० १८७५ मे गजसिंह से खीवाडा ग्राम जब्त करने फिर वि० स० १८७७ मे पुन इनायत करने इत्यादि घटनाओ का विवरण दिया है। (पृ० स० ६८)

आगे दो पत्र लुप्त होने से खीवाडे के अन्य ठाकुरो की जानकारी प्राप्त नहीं होती।

यद्यपि जोधपुर के महाराजाओ के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले साक्ष्य राजस्थान इतिहास मे बहुत है लेकिन किसी गाव विशेष के इतिहास पर प्रकाश

डालन वाले सथ्य अत्यल्प है। प्रस्तुत ख्यात गाव सीवाडे क ठाकुरा की मारवाड क इतिहास म भूमिका का ज्ञान प्राप्त करन के लिय उपयोगी हैं।

८५ पोकरन चापावतो री ख्यात

१ पोकरन चापावता री ख्यात आदि, २ पो० हा० सग्रह, ३ १, ४ २० × १७ सेमी० ५ २८८, ६ ३५ ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी दवनागरी, १० प्रस्तुत ख्यात म गोपालदास, विठलदास सवलसिंह, सवाईसिंह, सालमसिंह इत्यादि चापावत ठाकुरा की मुख्य उपलब्धियो तथा उनके कुवर कुवरिया आदि का विवरण है। सवाईसिंह चापावत का वत्तात विस्तार से दिया है। प्रारम्भ म धनराज के पुत्र अमरसिंह के ९ पुत्रा तथा पुत्रिया आदि की जानकारी दी है।

प्रारम्भ—

१ याददासत श्री परमश्वरजी"
—पीरथराज वीठलदासोत र
—धनराजजी
—अनोपसिहजी अमरसिंहजी दूजा वेटा ५ जणा ६ भाई
—चा० अमरसिंहजी धनराजात वेटा १० वीठलदासजी रा पोतरा
(१) हीदुसिहजी — इदा रा भाणेज था
(२) मोकमसिंघजी भवानीसिंघजी सादुलसिंघजी इदा रा भाणेज था
(३) कीरतसिंघजी — उरजनोता रा भाणज था
(४) सूरतसिहजी — उरजनोता रा भाणेज
(५) चंनसिंघजी — उरजनोता रा भाणेज
(६) सूरजमलजी रा वटा पयारा भाणेज
(७) वाघसिहजी पीया रा भाणेज
(८) समसंसिहजी पीया रा भाणेज
(९) जवानसिंघजी अऊत गई छै उरजनोता रा भाणेज
१ विगत
२ इदा रा भाणेज
४ पीया रा
४ उरजनोता रा

अमरसिहजी र बाई एक थी सु जसलमर रावळजी तेजसिंघजी न परणाई न तेजसिंघजी नै मार नै अपेसिंघजी पाट बैठा पछै अमरसिंघजी जसलमर रो वीगाड करता।

पछ ग्रमरसिंघजी ठाकर म्हासिंघजी न म्ह पोकरन लीवी नैं पोकरन लीवा तर पोकरन ऊपर नरावत पेमसिंघजी था, पछैं लवारकी रावळजी कना सु तेजसिंघजी रा बेटा परतापसिंघजी नैं देराई सु परतापसिंघजी र बमुतसिहजी नाराजी हुवा छैं।

१ गोपालदास चापावत का वृत्तात –

इसमे माडण के पुत्र गोपालदास के ८ पुत्रो की नामावली दी है।

(१) बीठलदासजी	(२) वलुजी ग्रागर काम आया
(३) हाथीजी	(४) हरीदासजी
(५) भोपतजी	(६) राघोदासजी
(७) दलपतजी	(८) पतसीजी

२ विठलदास चापावत का वृत्तात –

इनके १२ पुत्रो की नामावली ग्रकित है—

(१) जोगीदासजी	(२) दईदानजी
(३) लपधीरजी	(४) प्रथराजजी रणसगा
(५) सीवदानजी पीलव	(६) जोधजी
(९) अजबसिंघजी	(८) सोनगजी
(९) आसथानजी	(१०) कानजी
(११) गोपीनाथजी	(१२) भीवजी

जोगीदास के दो पुत्र भगवानदास व सावतसिंह का नामोल्लेख है। फिर भगवानदास के पुत्र प्रतापसिंह जि हे दासपा मिला था उनसे पीढियें दी है जो इस प्रकार है—

प्रतापसिंहजी रा दासपा छ। प्रतापसिंघजी रैं दौलतसिंघजी दौलतसिंघजी रैं सिवदानसिंह, सिवदानसिंह रैं उदैराजजी, उदैराजजी र सादुलसिंघजी र अनाड-सिंघजी न, ग्रनाडसिंघजी र भैरूसिंघजी।

जगतसिंघजी भगवानदासोत मजल रा चापावतो जर दीनो ग्रऊत गई ग्रौलाद नही छैं।

३ सबलसिंघजी चापावत का वृत्तात –

भगवानदास के प्रपौत्र व देवीसिंघ के पुत्र सबलसिंघ का नामोल्लेख है तथा देवीसिंघ के ग्र य पुत्र पुत्रियो के विवाह ग्रादि का भी उल्लेख हुआ है।

४ सवाईसिंह का वृत्तात –

सवाईसिंघ (सबलसिंघोत) के ३ पुत्रो के नाम ग्रौर उनकी ज म तिथि दी है—

(१) सालमसिंहजी स० १८३० रा भादवा रो ज म।

(२) जालमसिंहजी स० १८३५ मे सीतला रैं कारण सु चल्या।

(३) हीमतसिंघजी सं० १८३८ रा आसाढ सुदि जनम छ।

सवाईसिंघजी के ४ पुत्रियां का जहां विवाह हुआ उस स्थान का नाम एवं व्यक्ति का नाम उल्लिखित है।

फिर ठाकुर सवाईसिंह का गाव जोभणवाली भाटियां के यहाँ विवाह होने, विवाह म हुए खर्च तथा दहेज का विवरण अंकित है।

(क) खूबचंद सिंघवी को मरवाने का वृत्तांत —

ख्यात में वि० सं० १८४८ में खूबचंद सिंघवी व उसके भाइयो को धोखे से मारने का उल्लेख इस प्रकार है।

सींगी खूबचंदजी वीरधमानोत नै चूक सावण वद पासवानजी रा बाग म हुवो। पैला तो ठा० सवाईसिंघजी चूक पासवानजी नै कहै नै खूबचंदजी तेवड़ियो थो पछै ठाकुर साणी पडीयार भेरजी सु मीळिया पछ भेरजी पासवानजी न कहै न खूबचंदजी नै चूक करायो पछ खूबचंदजी ने मार न ठाकुर सवाईसिंघजी घोडा चढीया सु उठै धनचंदजी खूबचंदजी री भाई नै सिवचंदजी पण भाई थो जीए न अर हुरषचंद खुबचंदोत थो जीणा नै पकडीया नै उणा रा कबीला पण सोजत था सु धनेचंदजी हुरषचंदजी नै तो मारया नै खूबचंदजी री छोटो बेटो अमरचंद थो जीवण नै बरस ३ बाला न पकड जोधपुर लाया ऊरा।"

(ख) महाराजा विजयसिंह के पासवान गुलाबराय को मरवाने का वृत्तांत —

सरदारां द्वारा गुलाबराय पासवान को धोखे से मारने का विवरण ख्यात में इस प्रकार है—

"पीची गोरधनजी नै पण पासवानजी मारण तवडिया सु ठा० सवाईसिंहजी रै बपत कम थी तरै ठाकुरा री डेरो पाली जगतसिंघजी री हवेली म थो पछ ठाकुर चढ़ण नै त्यार हुवा तर भायल जीवराजजी पूछ्यो जैपुर आवसा तर जीवराजजी कहो कीऊ तर ठाकुरा कही—अठै रण री धरम नही मारीया आवा तर जीवराजजी अरज कीवी उठा रा राजाजी न लोक पुछसी कीऊ आया काई हुवौ तरै काई जाब देसो अफुटो ईण मे कोजो लाग, तर ठाकुरा कही जीऊ करो तरै जीवराजजी कही सिरदारा सारा नै भेळो तो हु कर लेसु आप पुसी रयावो। पछै जीवराजजी चला तो आसोप री हवेली गया पछ सिवसिंघजी आऊवा रा ठाकुरा सु एकायत कीवी नै धाडमा [illegible] पछै वर्नसिंघजी चा० सेवा करता था सु इदरसिंघजी मुणसीयोत जाम नै चूक कीनो, इंदरसिंघजी रै काका लागता, पछै चूक करन सीरदारा कनै परा गया।

पासवानजी रो नाव गुलाब कवर बाई नाव थो सु चूक हुवो, बाग म था सु रथ म वठाए गढ ऊपर ले जाता था सु पळी रैं सीरदारसीघ चूक कीनो। श्री दरबार सिरदारा न मनावए पधारीया था न लारे चूक हुवो सु जोधपुर पधारया तर दोढीदार थोवजी अरज कीवी न पासवानजी री वडारए रग सोभा हजूर आई सु उण पण अरज कीवी—दोढी र बारएँ रथ ऊपर बसता न कटारी वुही, मासोप रा कामती नू पावत हरीसीघजी रथ र कन उभा था।'

(ग) सूरसिंह सांवतसिंह आदि राजकुमारो को मरवाने का वत्तात –

इसम जोधपुर क शासक भीवसिंह द्वारा अपन भाई भतीजा को धोखे से मरवान का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

'महाराज श्री सूरसिहजी सावतसिंघजी रा क्वर उमर वरस सु महाराज श्री भीवसिंघजी चूक करायो स० १८५१ रा म। ठाकुर सवाईसिंघजी वारे था न लार औ काम हुवो सु जनाना म श्री इँदरभाणोतजी कन था सु धाय भाई रामकीसन पा० सीवकरण झावरीयो नैं प्रहोर छनगराज वगरे माय गया सु सूरसिंघजी न इदरभाणोतजी गोद म छीपाया वठा था सु ईणा धको दे इदरभाणोतजी नै नीचा नाय नैं वारे लाय नैं चूक कोनी। चूक गढ माथे कीनो दाग काग दीयौ। न उणहीज मु० मुकनचद मातीमदोत पोकरण रा नै १८५१ म तोप रैं मुडे दीनो न मरायो। श्रौर सेरसिंघजी सावतसिंघजी वीजीसीघोत न प्रतापसिंघजी प्रजीत सिंघोत न ईणा सारा न श्री भीवसिंघजी चूक करायो। मानसिंघ गुमानसिंघोत सेरसिंघजी रैं पोळै था सु जालोर था सु वचीया, न सेरसिंघजी नै श्री विजैसिंघजी टीको देन जालोर मेल्या था पण पछ सरसिंघजी पाछा उरा आया। मुसदीया धालमल कर न बुलाय लीना नैं जालमसिंघजी बीजसिंघोत उदपुर था।"

(घ) पोकरन ठाकुर सवाईसिंह चापावत और भीवसिंह के जोधपुर राज्य की सेना से युद्ध करने का उल्लेख हुआ है—

प्रारम्भ—

"स० १८४६ का

महाराजा कु वर भीवसिहजी न ठा० श्री सवाईसिंघजी जोधपुर म सु चत सुद ४ ने सुद ६ सुधो चौपासनी रह्या नैं सुद ८ चौपासणी सु कवर गया ने सुद झगडो हुवो श्री दरबार री फौज सेष ईमाम अली ने चडावल रा कू पावत हरीसिंहजी ने कुचामए रा मेडतीया वगरे सीरदारा रो फौज सु झगडो हुवो उठे।"

(ङ) टालपुरा के युद्ध का वृत्तात –

सवाईसिह चापावत तथा सिघवी शिवचद द्वारा फतेखा अब्दुला से टालपुरे मे वि० स० १८३७ म युद्ध करने का विवरण दिया है।

"चोवारी महाराज श्री वीजसिघजी फौज ले ने सीधी सीवचदजी ठा० सवाईसिघजी वगरे सीरदार गया सु टालपुरा मे फतेखा अवदुला सु झगडो हुवो १८३७ रा महा वद १२ न।"

आगे युद्ध म मारे गये सरदारा की विगत दी गई है।

(च) महाराजा विजयसिह भीवसिह व मानसिह द्वारा सवाईसिह को सिरोपाव प्रधानगी देने का वृत्तात –

(अ) श्री सवाईसिघजो नै महाराज श्री विजसिघजी परधानगी दीवी १८३८ रा सावण वद १

(व) सा० १८५४ रा चैत सुद ८ आज नीवाजस फुरमाय महाराजाधिराज श्री भीवसिघजी ठा० सवाईसिघजो नै परधानगी री सीरपाव तीसरे पोर रा ईनायत करायो तीणरी विगत

— सीरपाव ईनायत —

१ चीरी परकलाई तास री
१ पोतीयो परकलाई तास री
१ मोतीया री कठी धुगधुगी सुधी रा रु० २०००) रोकडा
१ कडा री जोडी जडाऊ
१ कबाय फरकसाई तास री
१ मोतीया री चोकडी
१ सीरपेच जडाऊ
१ तरवार सोना रे मूठ री जडाऊ
१ कटारी सोना री
१ हाथी
१ पालखी
२ घोडा २ वलीणा

डेरा तबु वीछायत—

१ तबु	१ कनात
१ रावटी	१ पाल

१ जाजम   २ गदरा
२ तकीया   १ चानणी
१ जाजमा नवी

लवाजमो रोजगार पाबद चलु सदामद रोजगार माम १ रो पावे—

२५) नवीसदा २ रा
१५) प० फतैचद
१०) प० गाहडमल

२५)

३) चोवदार
३।।) फरास
२) चढवादार
३।।।) मसालची इत्यादि इत्यादि

(स) इसी प्रकार स० १८६० म महाराजा मानसिहजी द्वारा ठाकुर सवाईसिंह को परधानगी का सीरपाव ईनायत करन व सिरोपाव मे दी गई वस्तुम्रा का उल्लेख है।

(द) सवाईसिह का पत्र हिम्मतसिंह भारथसिंह के नाम –

सवाईसिंह द्वारा लिखे इस पत्र की प्रतिलिपि मे धोकलसिह को सकुशल लाने को कहा गया है।

" ठाकुर सारी कागद सु १ सीध श्री रामगढ सु याने छोरू कवर हिम्मतसिंघजी भारथसिंहजी जोग्य परवतसर सू राज श्री सवाईसिंघजी ली राम राम वाचजो अप्रच जोधपुर जोसी सीमुदान न मलीया है सो हूमे थे महाराज साहब नै ल नै सीताब म्रावणो ओर पेलाईज महाराज मानसिंघजी री फौज भाग गई आपणी फतै हुई कजीयो कोई हुम्रो नही, पेलाइज भाग गया, माल धणो लुटीजीयो, अठा री तरफ सु पुसी रापसो ओर सीमुदानजी न अठैईज राख्या है सो महाराज साहब (धोकलसिह) जाबता सु लावजो, हजार असवार जाबता नै मेल्या है सो म्राछी तर सु लावजो और ऊट पचीस ता आपणे भार नै अर ऊट २५ दरबार रा भार न जु० ऊट ५० रायचदजी कने सु मलाया छ उम्मेदसिंघ भारथसिंघात रो नै आपणो भार हुवै जीको सरच वरच ने ले आवजो १८६३ रा फागण सुद ५ ने।"

(ज) सवाईसिह को मरवाने का वृत्तात –

सवाईसिहजी को मीरपा द्वारा धोख मे मार डालन का उल्लेख इस प्रका हुआ है—

"ठाकुर श्री सवाईसिघजी चैत सुद ३, १८६४ मीरपा सु मूडव मीळ पधारिया था सु नीवाव सु पाघडी वदल भाई हुवा नै सुद ३ प्रभात रा मीळण पधारिया सु नीवाब तो तबु मे ग्रायो नही न नीवाब र कनै स्या मैमदपा थो स ठाकुरा नै कहो—हू नीवाव नै बुलाय लाऊ पछै स्या ममदपा उठीयो पछ वासली र सारस हुई जद तबु री डोरी कटीजी न ऊपर तोपा टुटी सु चूक हुवो, फेर ईता सीरदार भेळा था—पाली गेनसिघजी, बगडी रा जैतावत केसरीसिघजी चडावळ ठाकुरा रा छोटा भाई बगसीरामजी काम आया नै ग्रठ पबर ग्राई सु चत सुद सपाडो कर दीवो कीनो न ग्रंकादसी सुद १३ स० ने ठाकुरा सालमसिघजी आपरा हाथा सु सारीयो ।"

५ सालमसिह चापावत का वत्तात –

ख्यात मे सालमसिह के वि० स० १८६४ आसाढ शुक्ला ८ को पोकरन की गद्दी पर बैठन का उल्लेख है ।

जयपुर नरेश जगतसिह द्वारा जाधपुर घेराव के समय सवाईसिह के साथ उसके पुत्र सालमसिह का उपस्थित होना लिखा है—

"ठाकुरा श्री सालमसिहजी जाधपुर घेरो दीनोडो थो महाराज धोकलसिहजी नै जोधपुर दीरावण सारू जपुर महाराज जगतसिहजी बीकानर महाराज सुरतसिघजी फौज तीन लाप भेळी करने पला गीगोली ऊपर झगडो हुवो सो मानसिहजी झगडा मे सु नाठा सु जोधपुर आण बडघा लारा सु फौज लेनै दोनू राजा नै ठाकुर सवाई सिहजी जोधपुर घेरो लगायो उण फौज मे कुवर सालमसिहजी साथे था ।"

जोधपुर की सेना द्वारा फलोदी पर आक्रमण करने तथा बीकानेर राजा सूरतसिह व चापावत सालमसिह का उनसे युद्ध करने का विवरण है—

'सवत १८६४ आसाढ सुद ८ फलोदी उपर जोधपुर सु फौज ग्राई नै फलोदी बीकानेर महाराज सुरतसिघजी री हुती सो ठाकुर सालमसिहजी मदत करण न पोकरण सु ग्रसवार हुवा ग्रर उगरास रा डेरा ठा० उमदसिघजी गाम दीपणीया री फोज लडती थी सो जपुर री फौज मे ठा० उमदसिघजी था सो तोपा ऊपर घोडा नापीया सु ठाकुर काम ग्राया जीणा रा समाचार ग्राया न सुणाया नै उठी ठाकुर हीमतसिघजी पधारया सो । रा ठाकुर लोक

मुसदीया वरजीया दानू भाई कजीया में मत पधारो तीन महीना म दोय सरदार आपणा काम आय गया सो अेक सीरदार पाकरण पधार जावो पण मानी नही दानू भाई झगडा मे गया सो फतै हुई, जोधपुर री फौज भाग गई, फतै हुई आपणी, सावण वद झगडो हुवा।"

(६) चापावत बबुतसिह का वृत्तात –

इसम केवल वि० स० १८६७ म महाराजा मानसिंह तथा वि० स० १६०० म महाराजा तखतसिंह द्वारा ठाकुर बभूतसिंह को परवानगी, सीरपाव आदि देने का उल्लेख है।

(७) गीत राणाजी रे वशजो रो –

चित्तौड व उदयपुर राणाओ की वशावली से सम्बन्धित ११ द्वाले का एक गीत लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

चीतोड राणा जवान वडे चीत, भीमसिंह १ गादी कुळभाण ज्ञप अडसी ३ जगतसी ४ नरपत ।

ख्यात मे विभिन्न स्थाना के ठाकुरा के विवाह, उनकी पुत्रिया के विवाह, पाकरण ठाकुरा के विवाह, महाराजा मानसिंह व उनकी पुत्रिया के विवाह स्थान, सवत आदि का ब्यौरेवार उल्लेख है।

ख्यात म नजर निछावर, ब्रह्मभोज, मृत्युभोज तथा होम इत्यादि करने का विवरण है। सवाईसिंह, सालमसिंह, हिम्मतसिंह आदि के मृत्योपरात उन पर बनाय गए देवल आदि का भी वर्णन है।

ख्यात पोकरण के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी हैं। इससे उस समय की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एव सास्कृतिक स्थिति का भी कुछ ज्ञान प्राप्त होता है।

ख्यात अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखित है। वस्तुत यह ख्यात न होकर रोजनामचा है, जिसमे हर दिन घटित होने वाली घटना का उल्लेख बहियो, पत्रों आदि की नकल कर किया गया है। ख्यात मे घटनाओ को क्रम से नही लिखा गया है। ख्यात जर्जरित अवस्था म है।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अंग्रेजो रौ अहलवाल

१ अंग्रेजो रौ अहलवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ ५६, ४ ५४×२० सेमी० ५ ८०, ६ २६-२८, ७ वि० स० १६१३ ई० सन् १८५६, ८ भारथदान, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० यह एलफिनस्टन की अंग्रेजी पुस्तक का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गणेशायनम ॥

यूरोपियन लोक हिंदुस्थान में आया प्रथम सूं सा अहलवाल—इमानुएल नाम पातसाह पुरत के जारा देस में पातसाही करतो तिण वपत वास्कोडिगामा नामे सरदार १४६८ में पुरतकाल देस सूं नाव में बैस नै कालीकोट आयो नै काची मे थाणो बेसाणियो उण वपत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि।"

अंतिम भाग—

'हिंदुस्थान रौ अतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्तन साहब अंग्रेजी में किताब बणाई, इण इतिहास रौ अर बालगंगाधर सा उण एलफिलस्तान री किताब रौ तरजमो मराटी भाषा में कियौ, रणछोडदास गिरधर भाई मरेटी किताब रौ तरजमो गुजराती भाषा में कियो अर जीवणलाल अंबालाल रा छापाखाना में छपाई, आ किताब अहमदाबाद में १८५३ छापी। सो वा गुजराती भाषा री छपियोडी किताब राज भारथदान मारवाडी भाषा में लिपी स० १६१३ रा मिगसर वद ८ किताब समाप्त हुई थी स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है।'

इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी मिलती है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। चमडे का गत्ता चढ़ा हुआ है।

८७ दक्षिण रो अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर)

१ दक्षिण रो अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी म रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जो० क० सग्रह ३ ७८, ४ ३१ × २४.८ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० स० १९११, ई० सन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा म रूपान्तर है। जिसम मराठा का विस्तृत इतिहास वर्णित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र स हुआ है।

प्रारम्भ –

"श्री गणेशायनम

अथ दक्षण रो अहलवाल लिपते आठ हजार फौज ले अलादुनी पिलजी दक्षिण म आय दवगढ घरियो, दवगढ रो राजा मरहठा रामदेव राव जादव सुलह कर धन अलाउदीन नै देण लागो इतर आदि।"

पुष्पिका—

"आ किताब समाप्त सवत १९११ रा फागण सुद ७ दसकत कवराज भारथदान रा छ आ किताब मरेठी भाषा म थी सो देस भाषा म आपा साहब कराई अर कवराज कीवी।"

ग्रथ मराठो क इतिहास क अध्ययन हतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

८८ अब्दुल करीम पजाव रा अहलवाल री किताब रो तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाव रा अहलवाल री किताब रो तरजमो, २ जो० क० सग्रह, ३ ६१, ४ ४२ × १४.५ समी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम अब्दुल करीम की पुस्तक 'तोफेतुल अहबाब' का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ मे कुछ सोने के गहनो आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाव रा अहलवाल री किताब वणाई तिण रो तरजमो लिपते, 'तोफेतुल अहबाब' किताब रो नाम एक बार वाच बडा साहिब लोगा री जवान सू अहलवाल सुण किताब वणाई।

८७ दक्षिण रौ ग्रहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर)

१ दक्षिण रौ ग्रहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जो० क० सग्रह, ३ ७८, ४ ३१×२४.५ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० स० १९११, ई० सन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर है। जिसमे मराठा का विस्तृत इतिहास वर्णित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र से हुआ है।

प्रारम्भ--

"श्री गणेशायनम

अथ दक्षण रौ अहलवाल लिषते आठ हजार फौज ले अलादुनी षिलजी दक्षिण मे आय देवगढ घेरियौ, देवगढ रौ राजा मरहठो रामदव राव जादव सुलह कर धन अलाउदीन न देण लागो इतरै आदि।"

पुष्पिका—

आ किताब समाप्त सवत १९११ रा फागण सुद ७ दसकत कवराज भारथदान रा छै आ किताब मरेटी भाषा मे थी सो देस भाषा म आपा साहब कराई अर कवराज कीवी।"

ग्रथ मराठो के इतिहास के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

८८ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब रौ तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब रौ तरजमो, २ जो० क० सग्रह, ३ ६१, ४ ४२×१४.५ सेमी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे अब्दुल करीम की पुस्तक 'तोफेतुल अहबाब' का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ म कुछ सोने के गहना आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाब रा ग्रहलवाल री किताब वणाई तिण रौ तरजमो लिषते, 'तोफेतुल ग्रहबाब' किताब रौ नाम एक बार वाच वडा साहिब लोगा री जबान सू ग्रहलवाल सुण किताब वणाई।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अंग्रेजो रौ अहलवाल

१ अंग्रेजो रौ अहलवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ ५६, ४ ५४×२० सेमी० ५ ८० ६ २६-२८, ७ वि० सं० १९१३, ई० सन् १८५६, ८ भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह एलफिन्स्टन की अंग्रेजी पुस्तक का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर है ।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गणेशायनम ॥

युरोपियन लोक हिन्दुस्थान म आया प्रथम सू सो अहनवाल—हमायुएल नामे पातसाह पुरत के जारा देस मे पातसाही करता तिण वषत वास्कोडिगामा नाम सरदार १४९८ मे पुरतवाल देस सू नाव मे बेस न कालीकोट आयो ने काची मे थाणो बसाणियो उण बषत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि ।"

अंतिम भाग—

हिन्दुस्थान रौ अतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्तन साहब अंग्रेजा म किताब वणाई इण इतिहास रौ अर बालगगाधर सा उण एलफिलस्तान री किताब रौ तरजमो मराटी भाषा म कियो, रणछोडदास गिरधर भाई मरेटी किताब रो तरजमो गुजराती भाषा मे कियो अर जीवणलाल अबालाल रा छापाषाना म छपाई आ किताब अहमदाबाद म १८५३ छापी । सो वा गुजराती भाषा री छपियोडी किताब राज भारथदान मारवाडी भाषा मे लिपी स० १९१३ रा मिगसर वद ८ किताब समाप्त हुई श्री स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है ।"

इसमे मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी मिलती है । ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है । चमडे का गत्ता चढा हुआ है ।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अंग्रेजों री अहलवाल

१ अंग्रेजों री अहलवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ ८८, ४ ५४×२० सेमी०, ५ ८०, ६ २६-२८, ७ वि० स० १९१३, ई० सन् १८५६, ८ भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह एलफिनस्टन की अंग्रेजी पुस्तक का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गणेशायनम ॥

यूरोपियन लोक हिन्दुस्थान में आया प्रथम सू सो अहलवाल—इमा युएल नाम पातसाह पुरत क जारा देस में पातसाही करतो तिण वपत वास्कोडिगामा नाम सरदार १४९८ में पुरतकाल देस सूं नाव में बैस न कालीकोट आयो न कावी मे थाणा बसाणियो उण वपत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि।"

अन्तिम भाग—

हिन्दुस्थान रौ अतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्तन साहब अंग्रेजी में किताब वणाई, इण इतिहास रौ अर बालगंगाधर सा उण एलफिलस्तान री किताब रौ तरजमो मराटी भाषा में कियो रणछोडदास गिरधर भाई मरेटी किताब रौ तरजमो गुजराती भाषा में कियो अर जीवणलाल अंबालाल रा छापाखाना म छपाई, आ किताब अहमदाबाद में १८५३ छापी। सो वा गुजराती भाषा री छपियोडी किताब राज भारथदान मारवाडी भाषा में लिपी स० १९१३ रा मिगसर वद ८ किताब समाप्त हुई श्री स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है।"

इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी मिलती है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

८७ दक्षिण रो ग्रहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर)

१ दक्षिण रो ग्रहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी म रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जो० क० संग्रह, ३ ७८, ४ ३१ × २४ ५ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा म रूपान्तर है। जिसम मराठा का विस्तृत इतिहास वर्णित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र से हुआ है।

प्रारम्भ--

'श्री गणेशायनम

अथ दक्षण रो अहलवाल लिपते आठ हजार फौज ले अलादुनी पिलजी दक्षिण म जाय दवगढ घरियो, दवगढ रो राजा मरहठो रामदेव राव जादव सुलह कर धन अलाउदीन न देण लागो इतर   आदि।'

पुष्पिका—

'आ किताब समाप्त सवत १६११ रा फागण सुद ७ दसकत कवराज भारथदान रा छै आ किताब मरेटी भाषा म थी सो देस भाषा म आपा साहब कराई अर कवराज कीवी।"

ग्रथ मराठो के इतिहास के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

८८ अब्दुल करीम पजाब रा ग्रहलवाल री किताब रो तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब रो तरजमो, २ जो० क० संग्रह, ३ ६१, ४ ४२ × १४ ५ सेमी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम अब्दुल करीम की पुस्तक 'तोफेतुल अहबाब का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ म कुछ सोने के गहना आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

'श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाब रा ग्रहलवाल री किताब वणाई तिण रो तरजमो लिपते, 'तोफेतुल ग्रहबाब' किताब रो नाम   एक बार वाच बडा साहिब लोगा री जबान म ग्रहलवाल ग्रण किताब बणाई।

नानगसा (नानक) फकीर आपरो मत चलायो ही हू मुसलमान प्राव बिच ही रो परज ना नानगसा राखतो नहीं। पजाब म सिख न लाग कहै छ नानगसा रा मत म प्राया जिके सिख कहाव है ।"

इस प्रकार पजाब के सिखो का इतिहास दिया है जिसम विशेष रूप स रणजीतसिंह व अग्रेजो क बीच चल सघर्ष का वृत्तात अकित है। रूपान्तर अपूर्ण है आगे पत्र खाली पड है। लिखावट स ज्ञात होता है कि यह रूपान्तर कविराज भारथदानजी ने ही किया है।

अन्तिम—

'पछै मारो काम होय चूको तर गुलाबसिघ मु वजीरत उतार राणी लालसिघ न वजीरायत दीवी आ बात लाठ र पसद नहीं तिण राणा राजा मन आवसी तिण कनै काम करावसो ए मायर कौलनामा म था जिण मु लाठ (अग्रेज) बोलियो नहीं।" (पत्र–११)

यह रूपान्तर एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

८६ बखतावरसिंघजी रो अहेवाल

१ बखतावरसिंघजी रो अहेवाल, २ पो० हा० सग्रह, ३ ६१, ४ ५१४×१७२ सेमी०, ५ १, ६ २८, ७ वि० स० १८६६, ई० सन्० १८३६, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० रावणिया ग्राम के बखतावरसिंहजी द्वारा लिखवाये गये इस अहेवाल में उल्लिखित है कि समेल पर प्रारम्भ से ही बखतावरसिंह का अधिकार था। वि० स० १८८२ म भाटी गजसिंह के प्रयत्नो से समेल मुकन्दसिंह को जागीर म मिली, फिर वि० स० १८६० मे गजसिंह के कैद होने पर समेल पर पुन बखतावरसिंह का अधिकार हो गया। फिर वि० स० १८६२ मे मुकन्दसिंह ने आयस देवनाथ के मारफत समेल फिर अपन पट्टे म लिखवा दी और वह रावणिया ग्राम मे लूटमार करने लग गया।

"श्री परमेश्वरजी

॥ रावणिआ रा बखतावरसिंह अहेवाल मडाया

——समेल आदु म्हारी छै अर १८८२ री साल गजसिंघजी भाटी मुकन्द-सिंघजी न सौपाय दीनी।

——सवत १८६० री साल गजसिंघजी नै कैद हुई जद महैं पाछी हजूर मे अरज कर म्हे लीपाय लीनी समेल ने।

——सवत १८९२ री साल श्री आयेसजी महाराज ने केह र समल फेर मुकन्दसिंह लीपाय लीनी अर राणविओ म्हारे रेयो जीण मे बैठो छु ।

——सवत १८९६ रा श्रा० वद ५ रात मुकन्दसिघजी समल सु रावणिआ न रात रा ग्राव घेरीओ सो रात रा तो झगडो हुवो, ग्रासामी ४ रँ गोळी लागी पछ प्रभाते चोपळा रो ऊपर हुवो जद पाछा गया जद उजाड कीयो ।

——वेरा १० री तो मका तोड ले गया पछँ वद ७ ने फेर ग्राया सो रोही माय सु चरता घेरीया—

४५ मेसीया, २० गाया, १० बळध, १ घोडी

——वेरा री मका कपास सारो ले गया

——ग्रादमी ४ रँ गोळीया लागी

——ईण झगडा सु गाव अजोत रेयो सो साप रो नाज मण ४०००) ग्रावतो ।

——धीरत रुपीया ५) रोजीना रो मँस्या रो ।

——पाछे म्हे म्हा को धन लेवा वास्ते समेल गया सो धन तो हाथ लागो नही ने झगडो हुवो सो म्हारा ग्रादमी दोय रे गोळी लागी ।

——वेसाप म समेल सु फेर ग्राया सो पीण घट घाटो लुटीओ सो बसती होती रेहे गई ने झोटीया ४ ले गया ।

——आसाढ म हल जुता जद हलबाणी १० सजा सुधी ले गया ।"

ऐस जागीरदारी झगडा म ग्रामीण जनता को कितन कष्ट उठाने पडते हैं उसका चित्रण भी इसमे ग्राया है ।

९० साहब बहादुर रँ लिखी शिकायत री याददासत

१ साहब बहादुर रँ लिखी शिकायत री याददासत, २ पो० हा० सग्रह, ३ ८६, ४ ५१४×१७६ सेमी०, ५ १, ६ ३७, ७ वि० स० १८९७, ई० सन् १८४०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० अग्रेज सरकार द्वारा जोधपुर राज्य को लिखे पत्र मे पूव सधि की शर्तों को अमल मे लाने तथा राज्य काम मे लक्ष्मीनाथ आदि नाथो के हस्तक्षेप को रोकने के लिये कहा गया है ।

(क) साहब बहादुर र कागद री याददासत –

प्रारम्भ—

"श्री परमेस्वरजी सत्य छै

याददासत साहेब बहादर वाक श्रा मुजब लीपी पो० सुद १२, १८६७

(१) कागद १ नावा का हमेक भाव लीया सो हकवी जनस देवा श्रर वकील न वी कबुल कीश्रा श्रर ईस कागद मे स्टाफ मुद्रा लीपमीनाथजी का पोहोचता है श्रर श्रन की बात कु बरकला फकर डीश्रा श्रर जामती न लीपा है के गुरदुवारा की बात सीवाय राज की बात मे बोलणा नही श्रर श्रे कागद उसके चावक सवार।

(२) के वासते लीपा गया श्रे दपल हुवा श्रौर ये काम राज का श्रटकता है सो ईस सबब से अटकता है श्रर दीवान काम नही लेता है श्रोहोर नही लेता है। सा इस सबब से नही लेता है सो हमन वकील सु श्री म्हाराज साहेव के पास भेज दीश्रा है के हमारा सला सीवाय वधारा का गाव श्रर वीना चीठीश्रा गाव दाब लीश्रा सा जवत करो।

(३) श्रोर श्रेन की कलमा म कलमा बाकी रही चली नही सो जरूर चलाय दा।

(४) जोर दीवाण कु काम का पुरा श्रपत्यार दो जीससे काम चलाय दो श्रगर श्रे काम तुरत नही होयगा तो हम ईस कागद नावा वाला कु सदरलेन साहेव के पास भेजेंगे श्रर पलीता म्हाराज साहेब कु श्री लीपमीनाथजी महाराज कु नीकालने का भेजेंगे श्रर श्रे जामनी का रुपीया लेवेगें।

(५) सायत हम कु श्रेसा सुनने मे श्राता है के नाथा का ईन दीना मे ढील पुल गश्रा के ईस सबब से के परधान वगरे उसस बोहोत राजी होय गश्रा श्रर ऊवे जानता है के श्रे हमसे बोहोत राजी है सो पुरा मदत करेगा श्रर राज का काम मे दपल करेंगे तो ईनका सबब से हमारे ऊपर श्राने का नहीं लेकिन श्रछी तरे से समभो क श्रे कागद जामनी का दफ्तर मे है सो श्रे सनद है श्रर उस म लीपा है सो तुम से लीश्रा जायगा।

(६) श्रर श्रे बो सुनन म श्राता है क कीसी कु नाथा न घोडा दीश्रा, कीसी कुं पगडी दीश्रा, कीसी कु हवली दीश्रा, कीसी कु भाई का पीताब दीश्रा लेकिन हमारा दानस म श्राता है जीस दीन ईसकी श्रेवज मे सवा लाप रुपीया लीश्रा जावेगा श्रर लीश्रा जीनके ऊपर हरफ श्रावेगा श्रर जीस जीस के घर म लीपमीनाथजी का

दीया हुवा थाया है जीस कु उसकी श्रेवज रकम बोहोत म्हगी होयगा श्रर जानेगे के हमने कीश्रा सो दानाई से बाहर श्रोर जब श्रे बात चहीये के दीवाण कु गाढ़ा रषी श्रर मदत रषी जीस से सब काम चलाय देवे अगर श्रे दीवानी का काम अटकेगा तो ऊपर लीपा जो कागद साहेब सदर लेन साहब बाहादर पास भेजा जायगा श्रर जामना पास रुपीया लेन मे श्रर लीषमीनाथजी महाराज कु नीकालने कुछ देर नही होगा ।

(ख) गांव मडाया जबत करण ने –

(१) गाय पाटवी श्रागेवी नीबाज का सीवनार्थसिघजी ने आयेसजी श्री लीषमीनाथजी री श्ररज सु दीराया ।

(२) गाव बासणी पैदास ५०००) री पेला थी ने कुचेरा पैदास २००००) री श्री आयेसजी री अरज सु दीरीजाश्रो न बीना चीठी करणजी दाबीया गाव कागल १ ने लयारी १ ।

(३) गाव मोघडो श्रमरसिंघजी जाणीआणा वाला रे ।

(४) गाव दुघोड पाकरण का ठाकुरा के ।

(५) गाव मोर नावडो भानजी करमसोत रे ।

(६) गाव सारगवास बगडी ठाकुरा रै ।

(७) गाव मोरीआणो नीबाज रा ठाकुरा रे ।

(८) गाव कुलथाणी नाःसिंघजी जोधा रे ।

(९) गाव करमावस आयेसजी श्रीगनाथजी रे ।

(१०) गाव चोटीश्राळो महामींदर वाळा पातावता ने वीना चीठी दीराया ।

(ग) गांव १० माहामींदर दाबीया

१ मढीश्रा	१ वणाड	१ पीथावास
१ ऊटावर	१ दुधीयो	१ पवाणली
१ लुणावो	१ रडोद	१ पुडालो
		१ बीरामी

१०

गाव चीमाणी रूपावत दीपजी रे ।"

९१ बागरा रा डेरा री यादवासत

१ बागरा रा डेरा री याददासत, २ पो० ह्मा० सग्रह, ३ १२, ४ ४७ ३ × १५ सेमी०, ५ १, ६ ३३, ७ वि० स० १८९८ ई० सन् १८४१

बागरा, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धी कुछ भावी याजना पर प्रकाश डाला गया है।

"आद १ स० १८६८ री फा० वद १४ बागरा डरा

श्री सरूपा नै सीथ द दणी या पपता मास ६ म पाछा बुलाय दणा नै अठा री सला मुजब वरतन रहया १०००००) आजीविका रापणी या पपत वषतो री मरजी माफक करावसो सायत अठा ताई

(१) दीवाण सला मुजब कर देणो

(२) बीसुद फुरमास आगे मुजब न टग बधीया सु मरजी मुजब

(३) पटानवस धनजी न या पपता तो दोय चार म के दास दीन लाग तो मास २ म बुलाय लेंग।

(४) काले'श्री हजूर म सीरदारा ने मुसदीमा दील रायण री अरज सोगन सुधी करी जीण बाबत रुको। सीरदारा स्मस्ता री न रुको। मुसदीआ री सीयाय ने रुको। पवास पासवाना री ने रुको। जनाना चाकरा री लीपाय नैं नीच सारा हीरा दसकत कराय लोआ चाहीज।

(५) और मोटी सला हाय तथा नवी सला काढणा हाय जद तो सारा पच सीरदार मुसदी होय जीणा न बुलाय सला मीलाय करी चाहीजे।

(६) और नीत मीती सरदार मुसदी ने अेकद पवास पासवान ओधा कचाला री सला सु काम बीचार मालम कर काम चलावणो चाहीजे।

(७) ओधा हाकमी हवाला सु लेर पोतदारी ताई मरजी मुजब सला मीलाय लायक चाकरी देय ने दीया चाहीजे।

(८) ईण मुजब कलमा मरजी म मजुर हुवा पास रुको। ठाकुरा र नाव ईनायत हुवै जीण मे लीपीजे ईण मुजब म्हे सामल रहेने काम चलाय देसा म्हाने श्री जी री नै श्री बडा म्हाराज री आण है।'

६२ उमरावो मुतसदीयो खवास पासवानो आदि रै बदोबस्त री यादवासत

१ उमरावो मुतसदिया खवास पासवाना आदि र बदोबस्त री याददासत, २ पो० हा० सग्रह ३ १०१, ४ ६७७×१७ सेमी०, ५ १, ६ ५०, ७ वि० स० १८६६, ई० सन् १८५२, ८ अनात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धी कुछ भावी योजनाओ पर प्रकाश डाला गया है।

प्रारम्भ—

'श्री रामजी

याददासत पो० सुद ७, १८६६ रा

श्री सेवा मीदर सरूप जोगेसुर

——हमार दुवायती हुई सो

——फेर दुवायती दुतरफी सला मीलीया सु

——परगना वगेरे पेल कठे ही नहीं रह

१ श्री देवस्थान धरम वर वगर पकी टक ने फुरमास हाथ परच री परवध श्रोधो न्यारो नही है।

(क) जनाना तालके –

(१) राजलोका रै रूका मुजब वराबर करीयो चाहीजे।

(२) वाभा री सरसतो न्र दीओ चाहीजे।

(३) गायण्या पडदायता री सरसतो बरोबर करणो।

(४) रावणा रा चाकरा रा गाव जबत दोय ध्यार रै मरजी मुजब।

(५) जनानी डाढी ता० चाकर बडारणा री परदो मा० (मास) १२ री १२०००)।

(ख) उमरावा र –

(१) वेतलबीया री सरसतो हुवो चाहीजे।

(२) सायरा रा थाणा बडा माराज रा राज मुजब रेया चाहीजे।

(३) घोडा सारा रा बदगी मे सारा रा रपावा चाहीजे।

(४) कोक गाव गोठ मोठ जबत हुवा चाहीजे लाप पचास हजार रा।

(५) चाकरी म नहो रेवे जीणा कना सू दोय रु० लेणा।

(ग) मुतसदीया र –

(१) परगना म हाकम वगरे श्राधा री परच बडा माराज रा राज मुजब (होसी)

(२) अठे ओधादार जीणा री ही परच बडा माराज रा राज मुजब (होसी)

(३) ठावा चाकरा रै गाव आजीविका उनमान ही चाहीजे।

(४) प्रगना बदोबस्त रापण लायक चाकरा न सूपीजे।

(घ) पवास पासवाना मे –

(१) माहे छूट लायक नै छूट रहै न मरजी मुजब आजीवक रहे।

(२) कीलादारी नें कीला रा परच वडा माराज रा राज मुजब ।

(३) कोटवाळीया तबेला धीरादरीया आग छोटा पवास पासवाना र रता जीण मुजब ।

(४) छूट म पवास पासवान ता सदामद रहू नें मुतसदी काम सोर रहू न दुजा मोकुब ।

(५) छूटवाला कन वेली आदमी वडा माराज रा राज म ता मही था नें १८७० रा वरस म था जीण मुजब ।

(ड) परगने –

(१) हाकम वगैर आधादार ता वडा माराज रा राज सरस्त जाबता ।

(२) रसाला रा ता घोडा उठ रेवे ।

(३) जमीता रा घाडा रव

(४) पाळो लोक परदेसी तथा अतीता वगर

(५) परगना स परच मही उदार १८३१ ताई तो भावता सो पास दसपत हुवा रुपीया दीरोजता पछ दुवायती हुई जीतरी सला वीचार फुरमाव

(च) कारपाना –

(१) कपडा री कोठार वगैर छूट वाला रैया चाहीज ।

(२) कीतराक कारपाना छोटा पवास पासवाना न रहै ।

(३) रसाला सागरद पसा रा परच री मोपउ पको बधीयो चाहीज ।

(छ) परदेसी लोक –

(१) आदमी ५०० तोप ४ उगवणे परगना मे रेवे ।

(२) आदमी ५०० जाळोर वगरे ग्रायुणा रेवे ।

(३) अठै सवारी ता० रवे इसडो बदोबसत उ रेवे ।

(४) कीला ता० री परच मोपउ (सू) वीचार न वधाव—
जोधपुर, नागोर जालोर देसुरी, सीवाणो, सिव गीराब, दौलतपुर, फलौदी, परबतसर, थावलो ।

(५) उफीला ता० गाव पीजमत प्रभारी पुराक ।

	१	१	१
(६) महापुरसा रैं	नागौर	थावलो	जाळोर

(७) सारी बीगतवार अरज हुवैं जीण री पुलासो फुरमावे ।

(८) जुनी बाल रा घोडा तथा छोटा पटायता रा घोडा अठ सरे ता० रेवे ।

(९) बीसनस्वामी सर रा दरवाजा तथा रा वदोवसत नैं रहु।

(१०) तोपपाने दारु गोलो बळघा (वैल) री तयारी चाहीजे अेक दोय माधादारां ता० न्यारी रहु।

(११) मामला ता० साभर सु न रेय माय सु दीरीजे।

(१२) जुना बोरा री जमा जागी सा दीरीजी चाहीजे।

(१३) हुमार बोरा रा लेव देव जीणरी जमा री वदोवसत चाहीज।

(१४) सायरा री काम वदोवसत सु जमा बधाई चाहीजे।

(१५) लारला लपा माथे दोय तीन ठावा चाकर रया चाहीजे।

(१६) टकसाला मे मोर रुपीया चोपा पड।

(१७) पालसा हुवालो रु० च्यार पाच लाप री पालसो हुव सा ठावा चाकरा ता० लाप लाप री रयो चाहीजे।

(१८) ग्रदालत म ईण काम लायक ठावा रया चाहीजे।

(१६) नीत काम हुवे सो हुकम सू हो हुव पोण साहेव सू नीत जाहर हाय नै सलामी मीलाई चाहीजे।

(२०) कसबा म बरा पत ईनायत ज्यादा हुवा सो जवत हुवा चाहीज।

(२१) जमा परच बरोवर हुवो चाहीजे।

तत्कालीन प्रशासनिक एव आर्थिक व्यवस्था के अनेक मुद्दा को समझने हेतु सामग्री उपयोगी है।

६३ ग्रदालत दीवानी व फौजदारी रा नवा दसतूर री याददासत

१ ग्रदालत दीवानी व फौजदारी रा नवा दसतूर री याददासत, २ पो० हा० सग्रह, ३ १२६, ४ ३३.५×२३.५ सेमी०, ५ ६, ६ २२, ७ वि० स० १६०६, ई० सन् १८५२, ८ अज्ञात ६ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे दीवानी तथा फौजदारी अदालत के नये कानूनो ग्रादि की रूपरेखा दी गई है। प्रारम्भ—

"श्री रामजी

याददासत ग्राई नवा दसतूर ग्रमल ग्रदालत दीवानी वा फौजदारी को मीती फागण सुद ८ √१६०६ का।

ग्रदालत दीवानी को दसतूर –

(१) कलम पैली अवल तो सीरकार सु ईसतहार पोकरण पास मे वा ईलाका रा गावा मे जारी हो जावे, लेणा देणा को तगादो ग्रापस मे नही कर सके

दसतूर माफक मागे जो दे देवे जदा तो ठीक ग्रर नही देवे तो सीरकार मे माफक जो बतावे नालस करे सीरकार करज को सलीको मकदुर माफक कराय देवे ।

(२) कलम दूसरी लेणा बाबत तलबा सीरकार का तालकदार वे हुकम अदालत के परभारी नही कर सके ग्रर हीमायेत कोसी की सुणी नही जावे ।"

इसी प्रकार दीवानी अदालत और फौजदारी अदालत सम्बन्धी क्रमश १४ और २३ कलमे उल्लिखित हैं। उस समय के अदालती व्यवस्था का समझने हेतु सामग्री उपयोगी है ।

६४ रेख चाकरी सरणागत रै मुद्दो री याददासत

१ रेख चाकरी सरणागत रै मुद्दो री याददासत २ पो० हा० सग्रह, ३ ८६, ४ ५४×१७ ५ सेमी०, ५ १, ६ ४२, ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे रेख चाकरी अदालती तथा शरणागत आदि मुख्य तथ्यो पर आवश्यक सुझाव देते हुए उन्हे अमल मे लाने की इच्छा प्रकट की गई है ।

'श्रीरामजी सत्य छ

आददास्त ग्रायन र सुवाला म ईता हरफ फेर मडीआ चाहीजे—

(१) पेला सुवाल मे मुष ग्रोधा ५ जीके ग्रेहेलकार पुसतदर पुस्त सू करता ग्राया होय ज्यान लायक चाकरी देप दिग्रा चाहीजे ।

(२) चोरी ग्यारा गुणी भरावण री ओल म १- ग्यारा गुणा भराय २ ओधा सु मोकुप कीग्रो चाहीजे ।

(३) रेष री ग्रोळ[1] में –

श्री बडा महाराज रा राज मे रेप लागती जीण रीत लीरीजे ग्रर रेप मुजब चाकरी ग्रर रेप भरणी दोनु बणे नही

(४) सीवाय परच कर ग्राय पडै तो सावक राज जनाना पालसा सुधा तजबीज बीचार ने कीओ चाहीजे ।

(५) अदालत परधान रा न्याय मे नीसाफ पाग्रो नही तो परधान दीवाण बपसी सामल होय नीसाफ ता ले ग्रर पछ श्री हजूर मे ग्ररज नीसाफ कराय देणा

(६) पेडा दीठ रुपीग्रो छदामो श्री बडा महाराज री सोलामती मे यो जीण मुजब रखाग्रो चाहीजे

---

१ कानून सम्बन्धी वाक्य ।

(७) श्री हजूर सू पुलासे फुरमावणी श्रोळ मे –

प्रथम तो प्रधान, दीवाण, बपसी उगेर पर उतर करे जीकोय उतर पेस नही चढे जीण री श्री हजूर न पुलासा फुरमाई चाहीज ।

(८) जोलो नहीं रावण री श्रोळ मे –

श्री बडा महाराज री सीलामती १८५० री साल म पेहला रँ हेतो श्रायो जीण मुजब रापीओ चाहीज ।

(९) सरणा री श्रोळ मे –

१- सरणे वेस जीण कने लूट पोस दीराय देणी फेर करण देणी नही जीण री जामनी लीवी चाहीज अर मीनष मार श्रावे जीण री पचायत कराय नीसाफ बीचार श्री हजूर मे श्ररज कर हुकम मुजब सझ्या दीराई चाहीजे ।

(१०) भाई गनायत रापण री श्रोळ मे –

१- रापणो पीण उजाड दीराय देणो श्राया न उजाड नही करण री जामनी कराय देणी श्रर फेर उजाड करे तो सझ्या दीरावणी

(११) रत सु बाब श्री बडा महाराज री सलामती मुजब लेणी

(१२) बरसोवा वालो श्रोळ मे –

१ मरजी पावदा री ईपत्यार है बाकी दूर होय श्रर रहै जीणा न लायक चाकरी श्रोषा पीजमता दीरीज सो वे तो नीभ जाय श्रर बरसोदारी री हजूर मे फायदो ।

(१३), हाकम रा मुवा मे –

१- सीरकारी रकम श्री महाराज राज मलणा जीण सीरस्ते लेणी पटायत सदामद परगना मे रेता श्राया जोके रेहेसी ।

मळा री निजर गाव सु लेवे जीका बीना हुकम नही लेव ।

(१४) चोरी धाडा री श्रोळ मे –

१- पोज श्राघी नही चाले जीण जायगा सु चोरी लेणी पीण नीरधार करण री करार धाम श्रर साग मुदो पाछाय चावो कीश्रा जागीरदार श्रर भेमीश्रा सीरस्ता मुजब दोनु देवे ।"

९५ तबेला रै सामान री याददासत

१ तबेला रै सामान री याददासत, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४६ ४ ३२ ६ × १२ १ सेमी०, ५ ८, ६ २५, ७ वि० स० १९२०, ई० सन् १८६५, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस ग्रथ म तबले के सामान, ऊट व घोडा के शृगार की वस्तुओ का उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री परमेस्वरजी

११- घोडा री रपत वडै तबेला ता० री सभालीयो हु० दरोगा रावत १९२२ चैत वद ५।"

आगे सामान, उसकी सख्या, रग इत्यादि का वर्णन है सामान का नाम इस प्रकार उल्लिखित है—

टापरा—रग भगवो, गुलेल, बववा, लगीरी, मीसरू इत्यादि। धासीया जीणपोस तग, पीलाण, कडा, कतरणीया, पागडा हाना, पागीर (खागीर), आला, पाखर गदा, लगामा गुरलीया बाग, पु स तग, जेरबध उगटा, फराकीया, बागडोर, भवर कडीया, मोरो गादी, गुलमपा, जीणपास, फराकी, कडी भुल डळी, छेवटीया, पडछी, वाकबुध, साकडा, काठी, मोरी, लगाम इत्यादि।

उस समय घोडे के तबले की विभिन्न वस्तुओ की जानकारी इत्यादि के लिए सामग्री उपयोगी है।

९६ राज रै ओधा री याददासत

१ राज रै ओधा री याददासत, २ पो० हा० सग्रह ३ ६८, ४ ३० ४ × १६ ७ सेमी०, ५ १, ६ १६, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० राजकीय विभिन्न पदो का उल्लेख करते हुए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं।

प्रारम्भ—

"याददासत

१ पीडा सनमदी

१ ओधा मोकुप कर कैद कर पाच रुपीया लेणा

१ प्रोधा ईण मुजब

परधान	बपसी
दीवाण	उकील
	कीलादार

(१) हाकमीआ कोटवाली वगेर कीतराक मोटा छोटा प्रोधा वमुनासब है सो मरजी मापक मामा सामा कराय दणा।

(२) श्री सदुणा जोगसरा रो कराय दीआ जोण माफक पाया जावे सीवाय जुलम जाजती हुव नहो तीण री पकावट रावणी।

(३) पाच रुपीया परच पडे सु दीरावणा।

(४) नित दरबार भरावणो ने सारो समाल करावणी।

(५) काम सारा आगो चाले जिमा पुलासे फुरमावणो हुयवो करे।

(६) सीरदारा तथा चाकरा रो काइ बात रो भदसो हुव तीण रा फुरमाय न मनरी गल म्रे हुवै तो मीटाई चायजै।"

पांचवा अध्याय

फुटकर सग्रह

६७ अर्पेसिंघ री कही हकीकत री नकल

१ अर्पसिंघ री कही हकीकत री नकल, २ पो० हा० सग्रह ३ १००, ४ ५०×१७ ८ सेमी०, ५ ?, ६ ३७ ७ वि० स० १८९७, ई० सन् १८५० ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह हकीकत बाला राठौड अर्जेसिंह (खाडप ग्राम) ने लिखवाई। इसके अनुसार वि० स० १८९७ कार्तिक वदि ८ निबाज ठाकुर शिवनार्थसिंह व उसके सहयोगियों ने एक योजना बनाई कि जालोर से प्रयागनाथ को लाकर लक्ष्मीनाथ की जगह नियुक्त किया जाय और लक्ष्मीनाथ और जसरूप का कैद किया जाय फिर मानसिंह (जोधपुर महाराजा) काबू म नही आता है तो नकली राजकुमार को गद्दी पर बिठा दिया जाय।

श्री रामजी

१ नकल हकीकत मालम हुई तथा बाला अर्पसिंह गाव पडप वाळा उतराई स० १८९७ रा काती वद ८ न नीबाज री हवेली सला हुई जीण सला म ईतरा जणा।

१ सीवनार्थसिहजी नीबाज	१ कूपावत करणजी
१ जोशी फतचद	१ सी० मूलचद
१ चाकर ग्यानी	१ बाला अर्पसिंघ

ईतरा जणा सला म बैठा ने आ सला करी—जालोर सु पीरागनाथजी न लावणा ने गढ ऊपर चाढ ने फतेमैल म डरो राय ने गढ री बदोबसत पीरागनाथजी कना सु करावणो न लीपमीनाथजी महाराज न मु० जसरूप न पकड लेणा तोए रा रुपीया इण मुजब ठेराया २० ०००) बीस हजार तो कयो कीणी न दणा है सा

देणो तीण मे रुपीया साढा बारे हजार १२५००) तो दीग्रा, दीना दोये च्यारा पछै सीवनाथसिंघजी रै पलै हवेली मे घालीया मु० मुकनचद लीषमीचदजी रा वटा हसते तीण मे ईतरा आदमी सामल ने रुपीया १०,०००) दस हजार तो ठा० बमुतसिंघजी ने दीना ने २ ०००) दोय हजार भायल पुसालसिंघजी ने दीना ने रुपीया १०,०००) दस हजार ठा० सीवनाथसिंघजी करणजी नु दीना, ने रुपीया १०००००) अेक लाष फीतुर कानो देणा ठेहेराया ने सोनगरो जालो ने सावतसिंघ ने भाटी दोलो तोडीभाणा से तीणा ने ऊदेमीदर मे भाटी पुसालसिंघ री जायगा मे दीन १० रापीया ने रु० लाष देणा ठहेराया था तीण मे रुपीया २५,०००) पचीस हजार तो पलै घाल दीना हा० सी० मुकनचद ने अठा सु चढीया तरै करणोत डूगरसिंघ ने वालो जीवराज श्रे पीरागनाथजी री तरफ सु पोछावण ने गया ने पछै फेर आ सला हुई कीला री बदोवसत काने श्री दरबार हाथ नही लाग तो आपणो कयो नही करे तो फीतुर रा वेटा ने गढ चाढ देणो पछ श्री दरबार ने षबर हुय गई पीरागनाथजी आया री तरै दरबार असवारी कर ने बाग ताई सामा पधार गया ने लीषमीनाथजी सु मीळ नै गाव १२ कुचेरो न आगे थो नै कुरब दोवडा लीना नै पोकरण रा ठा० नै परदानी दीराय दीनी ईण मुजब सला हुई सो ईण बात मे काई भूठ होय तो मने नै उणा ने रूबरू कराय दीरावसो श्री हजूर मुढा आगे ठा० पुसालसिंघ बैठा।"

महाराजा मानसिंह के विरुद्ध रचे गये एक महत्वपूर्ण षडयन्त्र का पता चलता है।

६८ साहब बहादुर कलमा लिखाई जीण री विगत

१ साहब बहादुर कलमा लिखाई जीण री विगत, २ पो० हा० संग्रह, ३ ४६, ४ २२ १×८ सेमी०, ५ १, ६ ३३ ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा स्थानीय व्यवस्था सम्बन्धी कुछ शिकायतो का उल्लेख हुआ है।

' साहेब बहादुर कलमा कहो जीण री विगत—

१ याहा का काम बिल्कुल नही होता है अर हम कु कुछ कहता है और वहा कुछ होता है।

२ किसी जगे हाकम भेजण कहता है अर रवाने नही होता है।

३ हाकमी कसुर के सबब से जबत होती है और फेर वसी की वसी रहती है, जसे जतारण की हाकमी वछराज मेहता सु जबत करी अर अब तक दस महीने से उसका बेटा काम करता है।

४ काई कोद गाव जागदवरा रा अर सीरदारा का मुतसदीया वगर का जबत हुवा अर आमदनी उनका मीलता है।

५ हवाला के गाव व मुतसदीयु के तालके है तो जवत करणे वासत कहते हैं जब माहाराज साहेब कहते है ईनके रुपय बाकी हैं जीसा मुदो छाडे नही सो रुपीया उनकु दीरा दीया चाहीजे और गाव दूसरे के जीम कर दिया चाहीज।

६ पालस के गावा की फरद रावजी सु मागी सो हाल तक हाजर नही करी अर कुछ हमारा कहणे का पयाल नही करता।

७ जदेव जासी कु पाली को हाकमी नाथु के करणे से व ईतला हमारी के दीवी।

८ साहब अजट का कहणा य है क जुवाव २२ प्रगनु का पुछणा ओर लेया लेणा दीवाण कहान मे हुवा चाहीजे तो सबको ईसकु मानेग लेकिन कीसी की अरज स दिया जाता है ता इस तर दणा मुनासब नही सीरफ सीरकार का फायदा दप दिया चाहीजे। ईसी तरै नागोर मडता मीव मारोठ की हाकमी दिया गया।

१ १ १ १

९ आज पुनचद का आदमी ने जाहर किया काई परगना हमारे आदमी कु जमा परच बतलाता नही।

तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था और अनियमितताओं की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

६६ महाजना कलमा मडाई

१ महाजना कलमा मडाइ, २ पो० हा० सग्रह, ३ २०, ४ ५२ ८ × १६ २ सेमी०, ५ १ ६ ४४, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ प्रज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी १० इसमे महाजना द्वारा लिखवाई गई अनेक शर्तो का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री परमेस्वरजी सत्य छे ॥

महाजना कलमा मडाई —

(१) अठे महाजना री केणावट ईस है—पोर चवद हजार रो चीजो घालीयो सो वो तो वाअबी घलायो नही गरीब रो न धोग रो अेक सरसते घलायो सो उण

म धाग था जीणरा घर ता वचीया न गरीब हा जिणा रा घर मारीया गया, सो इजारो कीयो जीण सु म्ह तो वाकब नही न छव जणा तथा आठ जणा वाकब है न म्ह कोई दुजो जणा गाव रा वाकब नही, नैं हम राज रुपीया मागे सो उणा आठा जणा कन मागीया चाहोज नै उणा रै बदळे म दवा नही नैं उणा सु पडूतर कर लेसा ।

(२) माठा साध उधार बाव लवो मा मासु ता उधार बाव वण आवै नही सा देवा नही न हासल आव सो चुकाय देसा ।

(३) राज म वसत वानी लेवमी उधार ता दवा नही न रोकडा लेसी नैं दसी ।

(४) परणा पुरा लेवा नही ।

(५) पीरत राज म बीहाव साबा म ता रुपीया साट भाव विगत सु बारा सु मगावे सो रुपीया लार भाव वता परो देसा न आडे दीन मगावे तर देसा नही ।

(५) हासल री चारी म आवसी जीणा कनै गुनैगारी इग्यार गुणी देसी सवाय देवा नही ।

(७) चाम चारी हाट ऊपर पकडे जीका पर सारू गुनगारी दसी ।

(८) माचा राली देवा नही ।

(९) कडाया छाटा माटी आडे दीन रात न मगाव सो तो देवा नही न बीहाव साव नव पुराणे मगाव तो परी दसा, न रात रा बसारू देवा नही आग ही मगावता नहा ।

(१०) चौथाई पोकरण कराव सा तो पोकरण भर दसा न भणायाणे करावे सो भणीयाणे भर दसा पण पोकरण तो चौथाई करावे नैं फेर भणीयाणे भराय लेवे सो दाय जायगा भरा नही अेक जायगा रुपीया दीराव जठे भरसा ।

(११) काई लवणा देवणा वासते धरणो दजसो माहाजन र पापती तो माहाजन वस जाय न कोई नीच जात र पापती बेसाण सो बेसा नही ।

(१२) वारे गाव म कोई आसामी हुवे जीकण र कासीद मेला जीकण रो राज सु कोई केणो कर नही ।

(१३) कोई ओसर मोसर री जीमण करै जीको जळेबीया तथा लाडू कर जीको तो राज मे छाबा ४ घर लाग जीण रा रुपीया २) परा दसा न छाबा मला नही ।

(१४) सीरो करसी जीकण रा दुकडीया ४ लागे सो तो मला नही न रुपीयो १) परो देसा।

(१५) लाफसी करसी जीण रा दुकडीया ४ लाग सो तो मेला नही न ■ आना परा देसा।

(१६) जाना रा कासाला र दहबडा करसी सो तो नव सेर परी देमी कचा सेर सु न सीरो करसी सो छव सेर पका सेर सु देसा नाणा री दावो नही।

(१७) कामदारा कासा सदामद आग लाग सो कामेनीया री ऊपर आय वेस जीणा रा तीन सेर पका दहीबडा करसी सो ते दहवडा न सीरो करसी जीक सीरोय री देसा नाणा री दावो नही।

(१८) दूसरा कादारा री कानुगा री पाचोळोया री न सोपाया री न कोटवाळा री अे पाच कासा आगला सदामद लागता हा सो हमार देवा नही।

(१९) चोरी री माल जाण नै तो लेवा नही नै अजाण लीरीजे तो रुपीया लेन माल परो देसा नै गुनैगारी देवा नही, गुनगारी तो चोर देसी।

(२०) आसामी नै कीणी मै बीज आठ देवा सो तो पैली चूकसी नै जुने रहण पछ चुकसी।

(२१) कोई महाजन रा हाट घर हुवे जीण मे राज री तरफ सु कीणी न रापणा नही।

(२२) कोटवाळ लाठा घणे ताळी तथा वासण वीणी री ले जाय सो वरज दीयी चाहीजे।

इस लिखावट के अनुसार महाजना म आई जाग्रति की सूचना मिलती है साथ ही उस समय की सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रकाश पडता है।

१०० पोलिटिकल एजेंट जॉन लडलू रै नाम ठाकुरा री शिकायत रो नकल

१ पोलिटिकल एजेंट जॉन लडलू र नाम ठाकुरा री शिकायत री नकल, २ पो० हा० सग्रह ३ ७५, ४ १२८८×१७ सेमी०, ५ १ ६ ८३ ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अनात ९ हिन्दी राजस्थानी मिश्रित, देवनागरी, १० इस अजदाश्त मे जागीरदारा द्वारा जोधपुर के शासक मानसिह को तग करने का उल्लेख हुआ है। लेखक ने पोलिटिकल एजेंट जान लडलू को बताया है कि

जागीरदारो के आतक से महाराजा अत्यन्त दुखी हैं, व आपका नाम लेकर उनको यातनायें पहुचाते है अत महाराजा को कुछ हो गया तो इसकी जिम्मेदारी आपकी ही होगी। दुखी महाराजा ने रनवास मे जाना भी बन्द कर दिया है अत महाराजा के पुत्र होने की भी आशा अब न रही। राजकुमार छत्रसिंह व अन्य राजकुवरो की मृत्यु हो चुकी है।

प्रारम्भ—

"नकल कागद १ डाक मडता री नाव लन डाकवाली ज्यान लडलू साहब बाहादर न दीया मीनी आसाढ वद १४ स० १७६६ रा न जीण री नकल साहब कना सु उतारी।

कफीयत १ मारवाड के रईसा के मेवार की तथा मुलक मारवाड मे राठोड रजपूत समस्त भाया वा बारादरी सब बराबर हे पीण श्री माहाराजा साहब मुलक के सब राठोड के मालक है जीस कीसी ने श्री माहाराजा साहब की बदगी मे पर पाइ की तन मन सू करी जीनकु जागीर देव ठाकुर बणाय जागीरी नै ठाकुर पणा फासी की बापोती नही है फकत श्री माहाराजा साहब की बदगी पोषणे का है। बदगी बीना जात बीरादर मे सब राठोड बराबर है घर का धणी कोई श्री माहा राजा साहब की बदगी पाछ जीसकु माहाराजा साहब नवा पटा ईनायत करै वोई जागीरदार ठाकुर हो सकता है कोई उसके दरजा मुलायजा जबत कर तो हो सकता है। ईसमे कीसी का कसूर दपतर जागीरी जबत कर ता हो सकती है ईसमे कीसी का ऊजर पच नही पोचता है। कीस वासते बदगी सु जागीर ईनायत करण का नक मुरत तकसीर साबत हुवा जबत करण का सरसता तमाम सीरकार मे है जीण मरसत मारवाड की सीरकार मे है सो इण ठाकुर लोगा मासु कीतनेक श्री माहाराज साहब का बुजर काफी न इनकी कदीम सु बदगी पर पाई करी न फेर उमद पर पाई की करण की रपता है जीन सु माहाराज की रजाबद हुती आई न कीतनेक ठाकुर लोक श्री माहाराज साहब के बुजर काफी न माराज साहब की कदीम सु बद पाई नै जान की दुसमनी करते आय फेर वीयई उमेद रखत हैं सा सब थलक ऊपर जार है सो थोडा सा इसारा इसमे अरज करू हु सो आप अछी तर दरीयाफत कराग। समत १८७४ का वरस श्री माहाराज साहब कु कद करके माहाराज कुवार छत्रसिंघजी कु राज ऊपर बठाये ये पीछे कवरजी तो फोत हुवे जद ईन ठाकुर लोगा नें सन् १८७८ ईसवी मे दीली जाय के मटकळप साहब बाहादर सु अरज कोवी श्री माहाराज तो राज की लायक है नही नें औलाद इनके है नही सो कीसी कु पोळ लाएँ की आप सु अरज है सा उस बगत मे सीरकार अग्रेज बाहादर की

मुनसफी में राह सु न कोलानामा की लीपावट के पकावट सु न अपनी दानाई न अकल वदी न दूरदर्सी पणा सू मटकलप साहव वाहादर ना साफ जवाव इन ठाकुर लोगा कु दिया—हमारी सीरकार अग्रेज वाहादर की का कोलनावा श्री माहाराज साहाव की न माहाराज साहव की औलाद क साथ हुवा है सो आद अन्त ताई इनकी ई सात सावत रहगा राज श्री माहाराज साहव न माहराज साहव की औलाद करेगी दूज कु पोळ लाणे कुछ जरूर नही पीड अपणे अपणे सीरकार के कोलनामा के लीहाज सु उसी वपत मदर मे लीपावट करन वलडर माहव वाहदर कु जोधपुर भेजकर माहाराज साहव कु वारे कद माय सु नीकाल कर राज करणे का कया। जव माहाराज साहव नै कहा हम तू कीस वासते राज पर वठाते हो हमारे दुसमण हम कु राज तो करण देवेगा नही जव वेलडर साहाव वाहादर अपणा दानाइ सु अपणी पुव तर सु माहाराज साहव रा अहेवाल दरीयाफत करके जरनल लुणी अपतर वाहदर की मारफत सदर मे लीपावट करके श्री माहाराज साहव कु राज कु राज करण की पातरी ने सीरकार अग्रेजी सू मदत रपणे की पातरी मगाय दीवी सो सीरकार अगरेज मे है। पछे सुदर की पातरी आणे सु माहाराज साहव ने राज ने राज का वदोवसत पुव अछी तर कीया सो उस वपत मे दूजे राजस्थान मे इन वरोवर किसी का वदोवसत नही था फेर माहाराज साहव न पातर जमा सु जनाना मे पधारणा सरू कीया सो कुवर भी हुवा था सो आप जोधपुर आये जीण दीना म फोत हुवा। सो ये सव वाता पलक ऊपर जाहर है सो व ठाकुर लोग ने वद पाइ न दुसमनी सू मटकलप साहब वादर कन जाहर करी थी सो सब झूठी हुई जीण मु पछे मानसिंह सरमिंदे हुवे नै अव इन ठाकुर लोगा का दुसमणी का वपत फेर आया सो पाच वरस हुवे सो श्री माहाराज साहव कु तर तरै सू तकलीफ पौंछाई जीनसु जनाना मे जाणा ही वध हुवा सो कोई कवर पदा हुवा नही जीसकी ये हरक्त हुई न दुसमणा की मनचाई वात हुई फेर ये दुसमण माहाराज साहाव की ज्यान ऊपर घात करणे के उपाव म है सो ये बात ठाकुर लोग आपके मते सु कर सो तो इतना इनका मकदूर नही न आपका नाव लेके माराज साहव कु तकलीफ पौंचाते है सो इस वात सु श्री माहाराज साहव के ज्यान के उपर घात आणा वाला है। सो ये हमारे लोपण के पली वाका अहेवाल आप कु मालम है कदास माराज साहव की ज्यान घात होय गया तो दुसमणा का तो वदला हुवेगा, ये दुसमण वदनामी आप कु दवेगा कीस वासते अै आपका नाम ले के माहाराज कु तकलीफ पौंचाता है फेर पल्क ऊपर ये ही वात इना नै जाहर कर रपी है सु वदनामी का हरफ ये दुसमण आप ऊपर दवेगा, आपकी पर षाई जान के आप सु इस वासते

इतला कीदो है इन ठाकुर लोका न आगे इसी तर सु दुसमणी करनी वीचरी थी जीस वषत के मटकलफ साहब नैं जरनेल साहब ने वेलधर साहब वाहादर हाजर नही है उनके भेवज कायम मुकाम आप होने सीरकार अगरेज बाहदर की वो ही मुनसफ है, वो ही सीरकार का कोलनामा मुजबूत है नैं वो हो श्री माहाराज साहब है नैं उवेई ठाकुर लोक माहाराज के दुसमण हैं ।। सो बडा ताजुब री बात है ।। किस वासते इन दुसमणा कु आगा मुजब नैं ऊमदी का जुवाब नही मिलता है न माहाराज कु दुसमणा का हाथ सु नही छुडाता हो अब तो ये दुसमण ठाकुर लोग नैं इनकी सामलायत का मुसदी आपके मुक्त्यार होय के आप सु मीठी मीठी वाता करके आपके नाव स माहाराज साहब कु तकलीफ पौंचात है सो माहाराज साहब के बदन म हलावत ताकत नही रही है सो सबके ताईं पाप है सो इस तकलीफ पोचणे मे श्री माहाराज साहाब के जीव की जोषम होय गया तो इस बात का पीसतावा सबकु तो होयगा, पीण सीरकार अगरेज वाहदर के अेलकारा कु वोहत होयगा ने सब सू जादा आप कु होयगा फेर इस बात का ईलाज कुछ नही हा सकेगा आपके पेर पाही क लीप्या है ।।

१ और कोई आपके पास मुख्तियार है जीना न आप कु बकाय रख्या है श्री नाथूजी क सबब स मुलक का बदोबसत नही होता है सो इनका फक्त फरेब की बात है, आप पीयाल तो करो ये लोक आप कने मुकत्यार हुव है जीए पेहल्या इतना अवाजा पीसाद का नाथजी के नाव का मसुर नही था पीण ये लोक आप कन मुकत्यार हुवे है जोना न माहाराज साहब कु तकलीफ पौंचाणे वासते नाथजी माहाराज के नाव का फीसाद का वाजा जादा किया न आप कनैं नालस करवो किया न तो इस बात कु श्री नाथजी माहाराज समज न ना समजे श्री माहाराज साहब बहुत तरफी लीहाज सु तकलीफ अपणी ज्यान ऊपर भुगती सो इस दरजे कु पुतैं इस सबब से माहाराज साहब के न आप के सला मीली नही दील म फरक रहा जिस सु मुलक का बदोबसत पातर बार हुवा नही सो आप कु माहाराज साहब की पातर को रजावदी रप कर मुलक का बदाबसत करणा मजूर होय तो य लोक आप कनैं मुकरयार है जीनकु सबकु मोकुव करके माहाराज साहब न आप फकत दोनु साहब बदोबसत की सला मीलावो न सला मे कीसी तीजे का दरमान नही हुवे ने माहाराज साहब ने आप सला मीलाय कर श्रीनाथजी माहाराज कु रोटी देणी मुजूर होय जीतनी तो ऊनकु ने वाकी का मुलक था बदोबसत माहाराज साहब को ने हुने आपकी मरजी मुजब होय जावे श्री माहाराज साहब की सब तकलीफ मीट जावे जद जनाना मे पधार जद कवर भी पैदा हुवे जद अस बात

की नेकनामी न कुसी सब पलक उपर जाहर होय ये हकीकत आपके मते दरीयाफत करो नही न माराजा साहब अपनी जुबान से फुरमावे नहा न कोई सीरदार मसदी षवास पासवान नीसप री पणा सू आप जाहर कर नही जद हमन श्री माहाराज साहव को न आपकी परवाई जाण नै थोडा सा इसारा अरज किया है सो आप इस पर अमल करके इसका जुवाव फुरमावो तो श्री माहाराज की दोढी उपर भेजाय दवोगे तो हम कु आण पोचेगा जोधपुर म श्री माहाराज साहव की डोढी ऊपर हाजर हुय जाय हुऊगा ॥"

इसम महाराजा मानसिंह के अन्तिम दिना की झलक मिलती है ।

१०१ रेष री भरोतिया री नकल

११ रेष री भरोतिया री नकल, २ पो० हा० मग्रह, ३ ११४, ४ २८×१८ ५ समी०, ५ १ ६ ८, ७ वि० स० १९२१ ई० सन् १८६४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे पोकरन परगन की रेख राजकीय खजाने मे जमा करने का उल्लेख हुआ है ।

"श्री जलधरनाथजी सहाय छ

मु हताजी श्री मु कनचदजी लिपावत ।

रा० बभूतसिंह सालमसिंघोत पाप चापावत र पट जाधपुर रो गाव पोकरण वगैरे रेप ६९६०८) री रा स० १९१८ रा ५५६८॥=) वरस १९१९ रा ५५६८॥=) वरस २ री रेषा रा आ० १०००) लार ८०) लेप १११३७।) अयरे इगयारे हजार एक सौ सवा मतीस रुपीया सु पासे पजान जमा पोस सुद १५ न स० १९२१ रा पोस सुद १५ ।"

रेख लागत की जानकारी मिलती है ।

१०२ ठरडे रा पोकरणा लोयत कर दीनी उण री नकल

१ ठरड रा पोकरणा लीपत कर दीनी उण री नकल २ पो० हा० मग्रहं, ३ ४० ४ ४०५×१६ समी० ५ १, ६ ४०, ७ वि० म० १९२२ ई० सन् १८६५, पोकरण, ८ भानीबगस, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसम अपराधी द्वारा पोकरण ठाकुर बभूतसिंह को जुर्माना दने की व्यवस्था का उल्लेख हुआ है ।

'ठरडे रा पोकरणा लीपत कर दीनो सो श्री दरबार सु पोयो तीण री नकल इण मुजब स० १९२३ रा पोह सुद ४

१ लीपत १ ठरडे रा पाकरणा समसता कर दोनो ठाकुरा राज श्री वभूतसिहजी कवरजी श्री गुमानसिंघजी पोकरणा घणीया ने पोकरणा गावा री चोरीया वीगाड कीनो तथा जमादार अरजणषा रा बेटा काला ने मारीयो तीण र वैर गुनेंगारी माल असबाब तथा माडवै रा नरवदा रा पत गावा रा पाकोडा सो वीगडिया, बाळीया गोहू ले गया तीण बीगाड रा रुपीया १०००१) अपरे दस हजार एक ठेरीया सो रुपीया हाथ आया नही जद ईणा रुपीया जमी कुट री कारकुट कर दीवी सो ईण जमी रा पदास सुप भाल माप सावणु, ऊनहाळू वेरा, पेत नाडीया ईण जमी म है ओण रौ सुप लाभ ठाकुरा साहव रो छ। मारो दावा नही। जमी रा सैंडा री विगत —

१ बाजू उगवणे तो सीरदारसीघ री ढाणी री सीव न अगूण [illegible] उतराद पास उतरादे पीडता री डोळी तथा नरवदा री सीव तथा माडवै रो मारग थाट आव जीठा ताई तो उतरादे पासी नैं पास आथणवे थाट री सीव न दीवणादे पासे जैमला री सीव सुधी इण सदा वीचली उनमानु पाच कोस ईस नैं पास कोस उपले है तीण रा नेपम रोपाय देसा।

इण सैंडा तणा वीचली जमीन नीव सीव सुधी दीधी है सो इण जमी री हासल मुकातो पडोटो आसी सो पोकरणा ठाकुर लेसी पोकरणा ठरडे रा कोई नाव लेण पाव नही, म्रो लीपत मे मोरी राजी कुसी सु जोधपुर म कर दीना है हसत सीवदानोत जसो समलसिघ रा ।

इण लीपावट म कोई वात रो उजर करा तो राज दरबार अग्रेजी सीरदार पचा पचायती मे झूठा पडा, सा० १६२१ रा वरस सु पैदास पोकरण री सीरदार म लेसी मैं कीणी वात रो दावो करण पावा नही सा० १६२२ रा मीती भाद्रवा वद [illegible] अदीतवार दा० भानीवगस हरीसिंघोत रा पोकरणा ममसता र कहे सु लीपत वचायनै कीना छै।

पत्र म आग साप (साप) देने वाले व्यक्तियो के नाम उल्लिखित है।

१०३ पोकरण री रेख भरिया री नकल

१ पोकरण री रेख भरिया री नकल, २ पो० हा० सग्रह, ३ ६, ४ २५ ६×१५ सेमी०, ५ १, ६ ७, ७ वि० स० १९३०, ई० सन् १८७३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम पोकरण की सालाना रेख राजकीय खजाने म जमा करने का उल्लेख है।

"म्हैताजी श्री हरजीवणदास लिपावत राव वभूतसिंघ सालमसिंघोत पाप चापावत रै पटे जोधपुर री गाव पोकरण वगरे पटा री रेप ६६६०८) री रा स० १६३० रा वरस री रेप रा रुपीया १०००) लार २६०) लेप ५५६८॥=) प्रपरे पचावन सौ ग्रडसट रुपीग्रा दस श्राना सु पासे पजाने जमा जेठ वद ८, १६३१ रा जेठ तक।"

१०४ महाराजा तखतसिंह व अंग्रेज सरकार रै कोलनामा री नकल

१ महाराजा तखतसिंह व अंग्रेज सरकार रै कोलनामा री नकल, २ पो० हा० सग्रह ३ १२८, ४ ३४३×२१७ समी०, ५ २, ६ ३०, ७ वि० स० १६२५, ई० सन् १८६८, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० वि० स० १६२५ का लेफ्टिनेंट कनल कीटिंग (ए०जी०जी०) ने जोधपुर आकर महाराजा तखतसिंह और ब्रिटिश सरकार के बीच एक नया अहदनामा तयार किया उसकी धाराये उल्लिखित है।

यथा—

पेहली श्री माहाराजा साहब बाहादुर नीचे लीप हुए मुसाहबा कु रयासत की इतजामी की करवाई के वासते मुकरर फुरमाते है—

(१) जोसी हसराज—दीवान

(३) महता वीजेसिंघ—फौजदारी अदालत (हाकिम)

(३) महता हरजीवण—दफतर (हाकिम)

(४) सिंघवी समरथराज—दीवाणी अदालत (हाकिम)

(५) पडत सीवनारायण

और चूंकि अब राज का पजाना पाली है सो माहाराज साहब बाहादुर रुपीया १६,००,०००) पदरा लाप रुपीया रयासत के परच के वासत इन लोगा के हाथ नीचे रपना कबुल फुरमात हैं आदि।'

१०५ बभुतसिंह रै नाम पटा री नकल

१ वभुतसिंह रै नाम पटा री नकल, २ पो० हा० सग्रह, ३ ११२, ४ ३४×२०४ सेमी०, ५ १, ६ १०, ७ वि० स० १६३३, ई० सन् १८७६ जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे पोकरण ठाकुर बभुतसिंह को रोईचा ग्राम (परगना सिवाणा) जागीर म मिला उसका उल्लेख हुआ है।

"महता श्री विजमलजी ल्पायत गढ़ जोधपुर र प्रा० सीवाणा री गाव रोईचो बडो तर्फे दुनाडा रा चोपरिया लोका दिस तथा गाव राव बहादुर रा० बनुनसिंह सालमसिंघ सवाईसिंघोत पाप चापावत रै पटे हुवो है मु स० १६३३ री साथ उनहारू था ग्रमल दीजो गाव म विना हुरम सासण डाहलो देण न पावै हाण जमा बधो वगरे बाब दरवार रा है रेष (१५००) पनरे गो री गाव एक इनायत पालसा री। स० १६३३ रा जेठ वद।'

१०६ ग्ररजोग्रा लीपावे जीण रा मसौदा री नकल

१ ग्ररजीआ लीपाव जीण रा मसादा रो नकल २ पो० ग्रा० सग्रह ३ ४, ४ ३४७×१२४ समी० ५ १ ६ ३३ ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ ग्रपात, ६ राजस्थानी देवनागरी १० जोधपुर के शासक मानसिंह को लिखी गई ग्रजदाश्त म पाणेराव ठाकुर को षडयन्त्रकारी व राजद्रोही बतलाया है।

अरजीयां लीपाव जीण रा मसौदा री नकल

तथा पादी नाम बाज सीरदारा ग्रापरा बडेरा री पर नालका छाडन दसतूर ने राज री रसम पीलाफ दरबार री ग्रदुल हुकमी करने लोका र सीवावण सु माथो उठायो है नै पाणेराव रो ठाकुर दरबार रो हरामपोर हुवो है। जीणा साथे सामल हुवा है जीण सु म्हा सारा र कळक लगायो न मालवा नै ग्रदेसो है कै मै लोक सायद जाहर करता हुवी के सारा मारवाड रा सिरदार वारे सामल है सु श्री पावदा सु मालम हुवै के ईण तर री अफवा सु म्हा सारा रै काळस लाग है न मा सारा री सरवस बीगडे है न श्री पावदारा दील मे भरम पडण री जायगा है जीण सु पांनाजाद री श्रा ग्ररज है के पानजादा र श्री पावदा री धणीया पसवाय दुजो कोई आसरे हैं नही ना कीणी तर रो लेस राजस रो पाणेराव रा हरामपारा सु है सु व ग्रापरा कीया ग्राप भुगतसी नै सजा पासी म्हाने तो श्री पावदा री परवस धणीया सु ग्राज ताई कीणी बात री सीकायत है नही ने श्री पांवद हर तर पलीकारी परवरस रापी नै मायतपणो वरतीयो है नै म्हारा ग्रनेक चूक हुवा है परत पावद ता पावदी फुरमाई है श्री पावदारो छतर छाया मे सुषी हा कीणी बात रो दुप दरद है नही ना कीणी फीसादी पाणेराव रा हरामपोरा सु जसास है सु श्रा पावद भलाई नीचे जो कराय लेवे।"

१०७ आत्मघात, सती-समाध आदि रै हुकम री रुका री नकलो

१ आत्मघात, सती-समाध आदि रै हुकम री रुका री नक्ल, २ पो० हा० संग्रह, ३ ८०, ४ ७६×१७ सेमी०, ५ १, ६ ६२, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ जोशी हंसराज, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इन हुकम के रुक्कों की प्रतिलिपियों में जोधपुर राज्य की ओर से कुछ महत्वपूर्ण आदेश दिये गये हैं, जिनमें प्रचलित सामाजिक बुराइयों को रोकने के आदेश भी हैं।

१ गाव रै बंदोबसत री रुको –

'श्री परमेश्वरजी सत्य छ

१ मीती फागण वद २ हुकम रो रुक्को माहा वद ३ री मीती रो आयो तीण मे लीपीयो। तथा अमुलक रा काकड सीवा भेळी हुवे जठे रा जमीदारा नु आछी तरै समजाया चाहीजे कोई कोई अमुलक रा पोज लेनै आव तरै उण गावा रा जमीदारा नु पागी आपरो साथे लेनै तुरत पोजा ऊपर गयो चाहीजे न बार वाळा पोल लेनै आया हुवे सु देप नै लारला पोजा मु मीढ लेणा सु अक्सा पोज नीसर आवे तो आपरा गाव वाळा नु साथे लेन तुरत पोज आगा चलाय देणा न पोज लारला पोजा सु मीळता नही हुवै तो दोय च्यार दुजा गावा वाळा न बुलाय न आपरा काकड रा पोज नै लारला पोजा री तपास करनै फरक हुव जीण मुजब विगतवार मेहजर सारा आदमीओ कने लीपाय लेवै नै सापा घलाय लेवे पण भुठी तकरार करने सागे पोज आघा वाढण म जेज करणी नहीं न पोज आगा चलाव तर मारग मे आपणा ईलाषा रा गाव आव जीतरा गावा वाळा री रसीद लीपावता जावै न अेक गाव सु च्यार ऊट तथा च्यार घोडा तथा चार आदमीया रा चाले नै अेक गाव मे एक ऊट तथा एक घोडा तथा एक आदमी रा रै जाव तो उण गाव वाळा कने रसीद लीपाय लेणो न बाकी रेव तो पोज उठा सु आगा चलावे न मारग रा गाव वाळा रसीद लीपावता जावे सु पोज जीण गाव नै थाके जीण गाव वाळा री रसीद लीपाय लेवे नै दोय गाव वाळा रै मावोमाय पोजा री तकरार हुवे तो उण ही बपत दानू गाव वाळा री हकीक्त लारला गावा वाळा री हकीकत साईदारी लीपाय नै दोनू गाव वाळा नू अठे मल देव न पोज आपणी सीव मे आवे जीण दीन उठा ही बपत मुदेई री ईजार नै माल लुटीजीयो हुवे तथा चोरीजीओ हुवे जीण री विगत साईदारा सुधी लीपाय सापा घलाय लेवे न उण हीज बपत सारी हकीकत जोधपुर लाला ईसरीपरसाद कनै लीपाय मेले नै बार वाळा पोज पोचाय न पाछा आवे जीण वपत सारी हकीकत लीप नै आपरा पणीया नै तथा बारवाळा न आछी तरै सु वाकब कर देजा कोई ईरषा सु तथा लोभ लालच मु कीणी री भुठी

उमय लगावला तो नासा पाता सु सारा बारवाळा नु सजा दीवी जावेला नै हाकम री गफलत समजी जावसी नै हाकम कनै जरीवाना लीरीजसी न सारी बार रा ग्रादमीया नु साता री जायगा सु पाज थाके जठै ताई ग्रापर साथे रापणा न कोई ग्रापणा ईलाया म चोरी धाडा हुव ता तुरत वारदात री जायगा माथे जाय न पोज चलाय नै पाज चलाय दणी मुदेई रो ईजार लीपाय लेणो न पोज चलावण री विगत ऊपर लीपी जोण तरा सु पाज थाके जठा ताई पोछाय दव, ईण म कीभी १ तफावत हुवेला न हाकम री गफलत रही न जोधपुर नै तुरत लीपावट ग्राई नही ता हाकम ऊपर जरीमानो हुसा न हरेक गाम मे ग्रेक ग्रेक जायगा मुसाफरा र उतरण रै वासते कराय देवे न उण जायगा र चोभीता तथा बाड चोफेर कराय दरवाजो वणवाय देव नै चौकीदार चौकी पोरो देवण सारू मुकर कर दव नै चौकीदार रो हक लीपीजीया जोण मुजब ठेहराय देवे न चौकीदारा कनै ग्रेक लीपत कराय जामनो उरी लीजा ईण जायगा चारी हुय गई ता थाने देणी पडेला नै हुसीयारी रापणी सु कोई मुसाफर चौकीदारी देवण म हुजत कर तो उणा न समजाय नै दीराय देव न नही दव उण मुसाफर री नाव न जात न उतन जठा सु आयो हुवे नै जावे जीण री सारो नीरखो कर जोधपुर लाला ईसरीप्रसाद नै लीप मले सु उण कन चौकोदारी रो दसतूर मगाव न दीरावण म ग्रावसी न जीतरा गावा मे मुसाफरा रै उतारा री जायगा तयार हुय गया री विगत अठे लीपने पवर पोचसी जठे ग्रेक ग्रेक परवानो ग्रजट साहब बाहादुर रो सारी चौकीदारी रा दसतूर रो लीपाय मलण म ग्रावसी सु हाकम हरेक गावा म वदोबसत करने गाव री नाव लीप मले तो उण मुजब परवाना कराय मलण म ग्रावे ।

१ मुसाफरा कनै चौकीदारी दीरावण री विगत
६ ग्रादमी दीठ छदाम
२५ गाडी ग्रेक दीठ पईसो
१२।। ग्रेक घोड तथा ऊट तथा ग्रेक पोढ़ीया दी ग्रधला

न कोई मुसाफर ग्रा गयो तथा बेगारी मागे तो ईण मुजव दीरावणो
)२५ बेगारी तथा आमवो ने कोस ग्रेक लार २५ पइसा ग्रे दीरावणो
।।) गाडी १ वेगार म ले जाव तो कोस ६ छव रो रुपीया ।।) आधो रुपीयो दीरावणो

ईण मुजब गावा मे परवाना कर बदोबसत कर विगत पाछी तुरत लीपजो श्री हजूर रो हुकम छै ।

द दीवाण जोसी हसराजजी ।

२ ग्रात्मघात रोकण सारू रुको –

प्रारम्भ—

"परगना मे पटदरसण रो मकाम तथा गाव हुवे जीण तमाम ने कचेडी बुलाय वाकबो कर दणी—कोई ग्रादमी चादी कीवी तथा जवर कीयो तो सजावार हुसी न उण री ग्राजीवका जबत हुवो सु फेर ऊमर ताई मीलसी नही ईण तर वाकबी करन सारा कनै लीपत दसकत कराय मेलजो ईण री गाफली रापी तो ओल्भा पावसो, तीण री हुकम रो रुको जेठ वद ३ रो ।"

३ सती समाध न रोकण रो रुको –

प्रारम्भ—

परगना म तथा गावा मे जा कोई सती हुवे तथा समाध लेवे जीण न सती होवण देवो मती ना समाध लेवण देवा और तमाम थाणादारा नै पबर कर देवो जीण बपत षबर सती होवण री सता समाद लेवण री सुणो उण हीज बपत चढ न उठे जावै नै जठे हाकम रेवे जठा सु जायगा नजीक हुवै तो हाकम पीछा जाय न बदोबसत करनै सारा ही गावा मे पबर कर देवो जीण बपत सती समाध होवे जीण री कचेडी मे नही करै तो कसूरवार होसी न उण कनै गुनैगारी सवाय जरीबानो मुकर कीयो है जीण सु ईजाफै लीरीजसी न कदास कोई जबरदसती सु सती होय जावे तो तुरत श्री हजूर मालम कराय दीजो ईणरी तुरत पबर नही कीवी तो न ऊपर लीपीया मुजब बदोबसत नही कीयो हाकम थाणोयत कनै गुनगारी लीरीजसी न ग्रोधा सु दूर हुसी सु तमाम बदोबसत लीपीया मुजब ग्राछी तरा सु कीजो गाफली रापजो मती श्री हजूर रो हुकम छ ।"

४ वावरियो न काढण रो रुको –

प्रारम्भ—

हुकम रुको ५ जेठ वद ७ रो तथा परगना रा गाव म सु वावरी काढ देण रो ग्रागे हुकम दीया हुवे तीणरी तो विगत लीपजो न हमे कठै ही परगना रा गावा मे वावरी हुवे तो ग्रेक बार तो उणा ने केवाय देणो न ग्रेक बार रा केणा लीपणा सु बावरी नही काढे तो जठे बावरी देपो जठै पकड लेजो पकडता कोई हुजत करै तो अठै लीपजो सु गाव जबत होसी नै आगा सु ही हरेक ठोकाणा मे

देपो जठा सु पकड़ाय मगावजो जोण री पाणो वगर सारं लीपावट कर दीरो ईण काम री नराई रापजो मतो।"

सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

१०८ रामदेवजी महाराज रं विगत री नकल

१ रामदेवजी महाराज र विगत री नक्ल, २ पो० ह्रा० सग्रह, ३ १३२, ४ ४२२×१५६ समी० ५ १, ६ ३० ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ प्रभात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमें रामदेव तुवर व उसके पूर्वजों की कुछ जानकारी दी है।

'श्री रामजी

मार श्री रामदेवजी माहाराज री विगत मगाई सो अठं रामदेवरा सु पीडता न बुलाय नं पूछीयो सु ईण मुजब मडाई—तुवर प्रवजी री राज दीली उपर हो नं प्रवजी राज भाणेज पीरथीराजजी नं सुप तीरथा परा गया न अवजी र वेटा रणसीजी हुवा सो रणसीजी भगतीवान हा न नराण रहा नै रणसीजी र वेटो अजमालजी हुवा सो नराणा सु कासमर रहा न कासमेर सु दुवारकाजी दरसण गया तरै उठं अजमालजी पूछीयो—भगवान कठ, तर पीडा कही—भगवान मीदर में है तरं अजमालजी कही—आ तो मुरत पथर री है साचे भगवान कठ है, तर पींडा कही दीरीयाव म है तर अजमालजी समद मे कुद गया सो भगवान दरसण दीयो न कही—जा मैं थार पधारसा। जद अजमालजी कासमेर उरा पछं मास बाहरे नै अजमालजी रं बटा बीरमदजी हुवा पछ मास एक पालणा मे बरोबर आय रामदेवजी सुता जद वडारण जाय अजमालजी ने कही वीरमदेजी रं पापती बाळक फेर सुतो है जद अजमालजी कही—श्री दुवारका र नाथ वचन दीयो सु पधारिया है न नाव रामदवजी दीरायो नै पछ बाळपणा म परचा दीया। नै पछ पोकरण री ठोड राकस थो सो गाव येडा सूना कर दीया सो राक्स नै मार नै पोकरण वसाई, बाळक पणा मे, न पछ बन नं परणाय नै पोकरण महेचा नै डायजे दीनी ने आप रामदेवरो वसायो नै वीरमदेजी वीरमदेवरो वसायो सो उठे ई रेवता नै परचा मोक्ळा दीया न पछं बालनाथजी जोगी रा चेला हुव। जिण सु जीवता समाद लीवी न पछई परचा माकळा दीया ने फेर आज सुधी परचा दीया ई जावे है। तन मन सु भाव रापे तीण री कामना सीध करे है। अर गाव रामदेवरो वीरमदवरो सासण है नं दरसण करण नै आवे नै बोलवा कर नै चढावे सो उणारी औलाद रा पीडत दे सु लेवे है, आ आजीवका है।"

रामदेव तुवर के चमत्कार व लोकमान्यताओं की जानकारी मिलती है।

१०६ पोकरण ईलाके री चोरियो री कवल

१ पोकरण ईलाके री चोरिया री कवल, २ पो० ह्रा० सग्रह, ३ २१, ४ ३५.५ × १३.२ सेमी०, ५ ४, ६ २६, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे पोकरण परगने म होन वाली पशुग्रो ग्रादि की चोरिया की सूची दी है।

ग्रथ का ग्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

'चोरीया पोकरण ईलाका रै गावा री तथा पोकरणजी री जैसलमेर रा गावा म मागा जीण री कवल भाद्रवा सुद ७ री साहव रै ग्ररु वरु ठेरीयो सो ईण मुजब माल धणीया नै मेल दीजो आदि।"

चोर का नाम, जाति, चोरी हुए पशुआ के नाम, सख्या, वस्तुग्रो के नाम इत्यादि का ग्रथ मे उल्लेख हुग्रा है। पशुग्रा को या वस्तु के वापस लाने पर मालिक को राज्य को पुरी (सुरी) देनी पडती थी जो एक तरह से मेहनताना होता था।

११० चाकरी री लीयत

१ चाकरी री लीयत, २ पो० ह्रा० सग्रह, ३ १२६ ४ ३२.३ × १७ सेमी०, ५ १, ६ १८, ७ वि० स० १८७८ ई० सन् १८२१, ८ भाटी उमजी, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० चुतरिया नामक बलाई को पोकरन मे बसाने से सम्बधित यह एक लिखावट है।

प्रारम्भ—

"सिध श्री राज श्री सालमसिहजी लीषावत तथा वाभी चुतरीयो परभे री जात रा दइया आदुवासी परडाणा रा न हमार वास पोकरण रहे जीण न रावळी बसी रो कीनो, ईण री ग्राल ग्रोलाद श्री रावली बसीरा है सो चाकरी धणी फुरमासी जठै देस-परदेस मे दोड नै भली भात सु करसी। ईण री खुस रजा सु फौज मे जमीत गाव मु डयला रै डेरा ग्राय नै रहो जर राजी पुसी सू लीयत कर दोनी है। ह० भाटी ऊमजी मीजल वाळा स० १८७८ रा आसाढ़ सुद ६।"

पत्र मे आगे साक्षी देने वाले व्यक्तियो के नाम ग्रकित है।

किसी नये व्यक्ति को गाव मे बसने की मान्यता किस प्रकार मिलती थी उसकी जानकारी मिलती है।

१११ डूगजी बाबत लीपावट

१ डूगजी बाबत लीपावट, २ पो० हा० सग्रह ३ ४७, ४ १६७×१६५ सेमी०, ५ १, ६ १०, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० अग्रेज सत्ता को आतकित करने वाले डूगरसिंह शेखावत[1] सम्बन्धी यह एक लिखावट है।

प्रारम्भ—

ग्रौर जोधपुर सू डूगजी बाबत अठै लीपावट आई सु उठै थानै ई लीपे तो ईण मुजब जाब लीपजो।

१- ग्रौर डूगजी बाबत साहब मूलचदजो नै कयो इनका बदोबसत ठाकुर साहब करै तो हुय सकता है ईणरो जाब इण तरै देणो क मुलक मे चोरी धाडा रो बदोबसत करावो तो सारा सीरदारा नैं बुलाय कर फुरमाग्रो सो सीरदार ग्राप कु पाछी ग्ररज करसी, ग्रेकल ठाकुर नै फुरमाया हुवे नही।"

११२ गुमानसिंह चापावत रै खोळै लेवण री लीपत

१ गुमानसिंह चापावत र खाळे लेवण री लीपत, २ पो० हा० सग्रह, ३ १३१, ४ ६६५×१८५ सेमी०, ५ १ ६ ७५, ७ वि० स० १६१६, ई० सन् १८६२, पोकरण, ८ ग्रज्ञात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पोकरण ठाकुर बभूतसिंह द्वारा गुमानसिंह को गोद लेन की लिखावट है।

प्रारम्भ—

"श्री परमेस्वरजी

लीपत १ ठाकुरा साहब राजश्री बभूतसिंघजी नै राठोड गुमानसिंघ समलसिंघोत कर दीनो। तथा मने श्री ठाकुरा साहब मेहरबान होय नै पोळे लीनो है सो श्री ठाकुरा साहब री नै श्री नाथावतजी साहब री श्री भटियाणीजी साहब, श्री चवाणजी साहब री मरजी माफक चालसु नै श्रीजो महाराजा श्री ठाकुरा साहब रै कुवर देसी तो दोय रुपीया रोजीना री पैदास रा गाव तथा रोकड मने पावण नैं कर देसी सो लेसु नैं चाकरी सदामद करा जीवु कीया जासु ने कदास राज गत देई वगत मने सौ वरस पुग जाय तो मारा भाई कीणी वात रो दाईयो करे नही, नैं हु चाल कुचाल चालु नही नैं कदास मरजी मवाय कोई काम करू तो श्री ठाकुर

---

१ देखें 'परम्परा' बाक गोरा हटजा।

साहब मन अळगो कर देव तो मन कबुल हे न दूजो पाळो कर सा सावत रसी मारे कोणी वात रो दावो नहो। और मोरकार रा पांच आदमी ठाकुर लोक कामदार कामतो चाकर वहारण सोरकार रा तालकदार वसी पसावता र वगर नें श्री ठाकुर साहब रा फुरमावण माफक वरत सु ने श्री ठाकुर मने चाकरी दस परदस भालावसी जठे ही करसु, ना मुकर करू नही, और श्रीजी माहाराज ठाकुर साहब न कवर दसी जद तो ऊपर लीपीया मुजब मने सहो छै नें नही तो उमरजो माफक रै जासु तो श्री ठाकुर साहब ठाकुराणीया न पावद कर दीवो हे राकड तथा गाव ३ करमावस, दुदा रा वाडो, पाता रा वाडो वगर पटोया पोडा रा तथा उणा रा मीनपा वगर रा तथा रावणे सरवरा पटोया कपडा पावद सरब दीया जासु फरगत पाडु नहीं और श्री ठाकुर साहब आप री मरजी सु गणो कपडा रोकड ससतर पाती जमी जागा पुरण पाव तथ बगेर तथा श्री परमपुर सासण डोळी पटोया वगर देव तथा श्री ठाकुर साहब हरक काम कायळ सावळ मरजो सु करसी सो कीया मुजब रसी कोणी वात म तफावत पडसी नही और ठाकुर साहब मने पावद राजी हुय न कर देसी सो कवरपदे लीया जासु और आदमी चाकर मारे कन मरजी सु रापसी सो रैसी न मारा मता सु रापु नही। मारे कनलो आदमी रावळे मरजी म नही आसी जीए न सीप परी देसु मरजी सवाय काई वात री घाल मेल करसु नही, श्री लीपत राजी पुसी सु कर दीनो छ लीपत मुजब चालसु ऊपर लीपीया मुजब फरक घालू नो मने मारा ईसट देवजी री न श्रीजी री आण है लीपत मुजब नही चालु तो पच पचायती राज दरबार अग्रेजो सोरकार हीदवाणे तुरकाणे कठे ही ऊजर करू ता लाप दरजे झुठो, स० १६१६ रा मीती फागण वद ५ रविवार।"

पत्र मे आगे स्वय गुमानसिंह के हस्ताक्षर व महत्वपूर्ण व्यक्तियो द्वारा साखें डाली गई है।

इसम गोद सम्ब धी नियमो की अनेकानेक जानकारियाँ मिलती हैं।

११३ जोधमल री अरजदासत

१ जोधमल री अरजदासत, २ पो० हा० सग्रह ३ ६२, ४ ५०× १७ ३ सेमी०, ५ १ ६ ३५, ७ १६वी शता०दी, ८ जोधमल, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधमल द्वारा लिखी गई इस अरजदासत म साडेराव व कोयेलाव के बीच स्थित वावडी पर श्रीजी का मन्दिर बनवाने की इच्छा प्रकट की गई है।

"श्री जलधरनाथजी सत्य छ

श्री श्री श्री १०८ श्री हुजूर मे पानाजाद जोधमल री ग्ररज १ तथा गाव साडेराव नै कोयेलाव कोस ३ री उजाड थी नै रन छ तठ मैणा रो धको करतो नै ग्रो मारग पणो वहै मारगु तथा तीरथ वासी तीसा मरता तठ ग्राध मग बरस १५ म पानाजाद पवट कर बावडी १ नवी पीणाय वधाय उप्र ग्ररठ मडाय पेळीया ग्रवाळो करायो छ सु मारगु न तीन गावा री गाया पीवे छ तिण री प्रतसटा महा सुद १० हुई गोरयभ श्री ग्रनदाताजी रा नाव रो बहाली सु हाकम ओधा वगरे बुलाय पासकत करी ईण बावडी हुता मारग मीरम हुवो न हजारा मीनष गउवा पषरु जळ पीवे सु श्री ग्रनदाताजी मायवा नै दुवा देव छ, पानाजाद रा जीव जाया रा धणी श्री ग्रनदाताजी छ न ईण बावडी बनै पत १ गाव पीवाडा रै राणावत माले दीया छ तीको माली गाया पाव छ, अवालो भरीग्रा राष छ रूप बीरष री छाया हुय गई छ, उजाड म जायगा रेवास जु हुइ गई छै, आबुजी गिरनार दुवारका रो मारग पाणी छै, सु जोगीराज ग्रावै सु दाय च्यार दीन सु ठेहर रह जाय छ गोढ-वाड मे रणपुर १, वरकणि १, पीवाणदी १, वगेर जैईन मीदरा तो बरस म ग्राठ दस मळा मड छ तठै हाकम मुतसदी नगारो नीसाणा ग्राव छै सु ईण बावडी उप्र श्रीजी री मीदर हुवै जीसो जायगा छै सु रुपीया १००) छापर सु नै रुपीया १००) कचेडी सु जु २००) री सुद भय सु पानाजाद हुसते वाली सु दीरीजै तो मीदर हुय जाय ने श्री चरण पादका मकाराणा सु तयार हुय न पधरीज न पुजा री हुसते रुपीया ५) रो महीनो छपर केसर प्रसाद धुप दीप री सरू छापर सु पधरावण रो हुकम ग्रार तो घी तो म्हा पुरस देसा, पुजा हुयवो करे न कचेडी हुकम हुवै तो बरस म दोय वार उछव कर मळो करणी सरू हुय जावै नै ग्रा जायगा सदाबरत सरू हुवै जीसी छै सु नाडोलाई रा पटा री गाव पागडी कोस १ ईण बावडी सु छ नै पागडी म घर भेषियारी छ सीवाय बसती तो छ नही, न पापती गावा वाळा पाच च्यार अरठ कर ता रुपीया सो सवा सो ताई जागीरदार र आव, नै ईणा बरसा म तो जागीरदार री पेवट न रही तीण सु कीहु ग्रावै न छै सु जो गाव ईण सदा बरत तालक ताबा पतर हुय जावै ता पानाजाद पवट कर ग्ररठ पाच सात पायती रा गावा वाळा न पातरी कर करायवो करै तो सो सवासो पदास हु जाव न सदा बरत सरू हुय आव तो आ जायगा श्रीजी री धाम पको बधै जीसी छ ईतरी पदास सु सदा बरत अचळ रहैबो नर श्री ग्रनदाताजी री ग्रपी पुन रेवैं सु पानाजाद तो तुछ बुधी उपजी सु लीपी छ पछ श्री ग्रनदाताजी री मरजी मे आव जु हुसी। पानाजाद गुलराज नै चुक हुवा पछ आजीवका पाई नही न ऊदम कर गुजारो करतो थो सु

फतेराज बीगाड दीयो । तठा पछैं लहेणाई अटक गयो बीना उग्र कोई देवे न छैं । श्री अनदाताजी दोय वार आद फुरमाय पवर लीवी पीण दानतदार चाकर न कोई कामेती चावै नही, तीण सु भ्रावद हुई नही उलटा कारसारी रा करज मेंकळ गयो वडो भाई अयेमल सु म्हेरवान हुय अरठ पेत ईनायत हुवा था सु ई फतेराज परच घाल दीया । पानाजाद वीना खायें पराव हुय गयो छैं सु आसरा फकत चरणारवीदा,रो छ सु श्री अनदाताजी वेगी पवर लीराव तो पानाजाद री हुरमत रसी ।"

धार्मिक विचारधाराओ को समझने हेतु उपयोगी है। साथ म कई एक अन्य जानकारिया भी मिलती हैं। पत्र महाराजा मानसिंह को लिखा गया है।

११४ इदराज री अरज बभूतसिहजी रं नाम

१ इदराज री अरज बभूतसिहजी र नाम, २ पो० हा० सग्रह, ३ १८, ४ ३८ ८ × १४७ सेमी०, ५ १, ६ १५, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, जोधपुर, ८ इदराज, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इदराज द्वारा लिखी गई इस अरजी मे पोकरण ठाकुर बभूतसिंह से यह प्रायना की गइ है कि मथानिया मे स्थित कुए की पदावार की (निश्चित) रकम उसे नही मिल रही हैं।

श्री श्री श्री १०८ श्री ठाकुरा राज श्री बभूतसिंघजी स्हाबा रै हजुर मे प० इदराज री अरज मालम हुवै।

तथा मथाणिया रा वारा वीसनदास रौ बेटो मारे भोगळाऊ साठ बरस सु है रुपीया ७०३) मैने मारे घर री करसो करतो हो सु वारठ गगारामजी रै बेटे आसकरण वीसनदास रा बेटा कारकुट करायो। सु मारा भोगळाऊ रा रुपीया चुकाया नही ने वेरा पोस लीनो सु आप धरमातमा हो इसो जुलम आप री सीरकार मे हुवो नही चहीजे सो हमे कागद आपरा लीपाय दीराव वे तोणता मुजब रुपीया चुकता परा दीजो नैं रुपीया नही देवो तो वेरी पाछो सुप दीजो गुणरी देण रो मुदो काई वेरो रुपीया रा धणी आगे सदावद पता मुजब कगवत जीव करावसी रह वेरो सु प देणो इण रौ पाछो फेर केवणो पडे नही नाथुरामजो र नाव ने आसकरणजी रे नावें। स्हायवजी राज मे जबत कराय देसु ने पडऊतर करणी मारे हात तुही नही आप सीरदार हो, घणा आदमीया ने रोटी देवी हो।"

११५ तिलवाडे रा सोढा रो कुर्सीनामो

१ तिलवाडे रा सोढा रो कुर्सीनामो, भाट कुभा अजीता, २ एम० डी० एम० सग्रह, ३ , ४ वहोनुमा, ५ २ ६ ६०, ७ वि० स०

१६००, ई० सन् १८४३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें सोढ़ा राजपूतों का केवल वंशवृक्ष दिया है।

११६ मालाणी रो कुर्सीनामो

१ मालाणी रो कुर्सीनामो, २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ , ४ बहीनुमा ५ २, ६ , ७ वि० सं० १६००, ई० सन् १८४३, जसोल, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें खेड़ के शासक मल्लिनाथ से जसोल के ठाकुर मूलराज (महेचा) तक की वंशावली अंकित है।

११७ जोधपुर, ईडर, अहमदनगर, बीकानेर अर किशनगढ़ रो कुर्सीनामो

१ जोधपुर, ईडर, अहमदनगर, बीकानेर अर किशनगढ़ धणियां रो कुर्सीनामो, २ पो० ह्रा० संग्रह, ३ २६, ६४७×२४८ सेमी० ५ १, ६ ४४, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ जोधपुर राजाओं री पीढ़ियां –

इसमें सेतराम से महाराजा मानसिंह तक राठोड़ राजाओं की पीढ़ियां दी हैं तत्पश्चात इससे सम्बंधित एक कवित्त दिया है।

२ महाराजा अजीतसिंह र राजकुंवरो री याद –

इसमें जोधपुर महाराजा अजीतसिंह के १६ पुत्रों के नाम दिये हैं। जिसमें १३ पुत्रों के निःसंतान मरने का उल्लेख है।

३ महाराजा विजयसिंह रै राजकुंवरो री याद –

इसमें उक्त महाराजा के ७ पुत्रों का नामोल्लेख है।

४ ईडर री पीढ़ियों –

इसमें आनंदसिंह से जवानसिंह तक वंशावली दी है।

५ अहमदनगर री पीढ़ियों –

इसमें आनंदसिंह से तखतसिंह तक की पीढ़ियां दी है। तत्पश्चात आनंदसिंह के पौत्र जालमसिंह को मोडसा व बावड़ तथा इन्द्रसिंह को सुर की जागीर मिलने का उल्लेख है।

६ बीकानेर री पीढियो –

राव जोधा से रतनसिंह तक वशावली है।

७ किशनगढ री पीढियो –

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह स पृथ्वीसिंह तक पीढिया अकित है।

११८ खवरो री चोपनियो

१ खवरा री चोपनियो, २ पो० हा० सग्रह, ३ , ४ १२×३२ सेमी०, ५ १५, ६ २०-२५, ७ वि० स० १८२५, पोकरन, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे तत्कालीन महत्वपूर्ण घटनाम्रा का उल्लेख हुआ है। पत्रो एव सदेशवाहक आदि से जो समाचार प्राप्त होते थे उसका विवरण इसमे लिपिबद्ध किया गया है। मुख्य घटनाम्रो का विवरण क्रम राजस्थानी भाषा मे इस प्रकार है—

(१) सा० सुद १ १८२५

महाराज श्री वीजेसीघजी रे पवास री बेटी दीराव राज उम्मेदसीघजी रे पवास रा बेटा ने असाढ सुद ९ रा सावा परणाई। बू दी सु जान आई थी ब्याव नीराट आछो कीनो, बाई ने इतरो डायजो दीयो—

रु० ८०००) हाथी १
३५०००) घोडा २२ मोटा
४००००) गेहणो बाई न तथा बीद ने दीयो
८३०००) रो डायजो

आसोपा गुलावराय न श्री महाराज कडा मोती ने सीरपाव भारी दीना।

(२) सा० सुद ४

रु० ८००) ठा० सवाईसीघजी मे परची सारू वीसा हुरलान साथे मेलीया

(३) सा० सुद १५

श्री सवाईसीवजी री लोडते रे डेरा सु आयो सु कागद म लीपीयो म० छजमलजी थे गुरा रीषवोजी रे उपासरे जाय ने मोरत जोवाय ने लीवजो सो उण मोरत कीलो दापल हुवा, सो छजमलजी गुरा रे उपासरे जाय ने गुरां ने अरज कर मोरत दियो सु सावण वद १ रा घडी ४ गया कीले दापल हुवणो सु पाछो कागद लीय न ठाकुर सा ने दीयो।

(४) सा० वद १

ठाकुर श्री सवाईसिंघजी सामो साथ गया न रात घडी ४ गया ठाकुर साहब पोकरण गढ पधारीया, पहली पोळ भैंसो मीना श्री नागणेचीयाजी रे पाजरू कीना मीणगार चोकी चोछायत कर वीराजिया, अमल गाळीयो नीजर नीछरावळ हुई ।

२) मु० छजमलजी	नीजर	नीछरावळ
	१	१
२) मु० तीलोकचद सामाचदात	१	१
२) प० लीपमीचद	१	१
१) प० सीरदारमल	१	१
१) गहलात मगराज	–	१

सा० वद २ ठाकुर पदारिया जीण मु जीमण कीना रावळे म

लापसी   चावळ   मूग

(५) सा० वद ६

जोधपुर सु समाचार ग्राया महाराज वीजेसिंघजी जोधपुर सू कूच कीनो सो चोवडे डेरा हुवा

(६) सा० वद १०

आज पबर ग्राई महाराज वीजेसिंघजी रा पाली डेरा हुवा, वाकी फौज रा डेरा भागेमर है। ग्राज मह पणो हुवो, सावते देस म हुवो, काळ भागो ।

(७) सा० वद ११

ग्राज पवर आई अजमर दीपणी था जीन ने राणा रतनसीघजी बुलाया सो गनीमा गाव भीलाडो मारियो, माल घणो लुटाणो ।

(८) सा० सुद ३

ग्राज तीज रो तमासो हुवो ठाकुर सवाईसीघजी मेळे पधारीया, घोडा दोडाया ।

(६) सा० सुद १५ रापडी

श्री ठाकुर साहब रे रापी सदामद व्यास मनजी रा बटा पेला बाघे छ ने हमके सेवग जगनाथ पाचेजी रा बेटा ने सावत रामसीघ इणा मतो कीनो, हमके ठाकुर साहब रे रापी पेला म्हे बावसो सो सेवग तीलक करने रापी बाधता था तद व्यास देवदत्त बोलियो पेला रापी म्हे सदामद पेला बाधा सो घणी म्हा कना सु बधासी तद तो ठीक ने पेला म्हा कने नही बधासी तो ग्रठे उभो रहेन पाणी ई

पीऊ नही, परो जासु, जद ठाकुरा सेवगा न मन कीना सदामद पेला मे रापी बाध छ सा थान पला क्यू बाधणो पडे, सेवगा ने मना कीना न पला रापी व्यास दवदत्त वाधी न पछे सेवग।

(१०) भा० वद २

घो० सेरजी ग्रमरसीघोत न धरा री सीण दीवी रात घडा २ गया तर दीरायो—

१) मीठाई ३) दारू "१० ग्रमल

(११) भादवा ३ वडी तीज

आज वडी तीज रो तमासो मडीयो वाल नाथजी रा मठ कने

(१२) भादवा वद ४

ठाकुर श्री सामसीघजी रा कामदार मुहता मोतीचद छजमलात रा कागद ग्रायो जीण म लीपीया भरथपुर डीग रा धणी जाट राज जुहारसीघजी हाथी लडावण न गया सा आगरा म नागार रा राजा ग्रमरसिंघजी गजसिंघोत रो नवो महेल जठे हाथी लडावण पधारीया सो हाथीया री लडाई कराय न रात घडी ४ गया महल सु उतरने पालपी म वठला था सो रजपुत जात रो गोड जीण चूक कीनो सो एक झटका सु काम सज गया। सा० वद १३ चूक हुवा न जुहारसिंघ रो भाइ राव रतनसीघ गादी वेठो छ।

(१३) भादवा वद ६

घाणेराव सू कासीद ग्रायो जोण कह्यो राणा रतनसीघजी पाछा कु भलमर आया न दीवणीया न मवाड रा गाव घणा मारीया न दीवणी गाव मजीरा कन पडीया है सो घाणेराव रो लाक दीवणीया रा डर सू सारो पाला परो गयो न घाणेराव रो धणी मडतियो वीरमद कीसनसीघोत रो साथ गढी सभाय वेठा छ।

(१४) भादवा वद १४

गाव पाली सू महाजन ग्राया तीणा कह्यो—दीवणीया गाव नीलाडो न न ग्रमरायपुर गाव मारीया माल घणो लूटीया। पाली सू समाचार ग्राया। सर कोट री नीव पीणता थासो न पानो १ नीकलीया जीणा म श्री पारसनाथ जी री मुरता ५० पीतल रा तथा पथर री नीकली।

(१५) भादवा सुद ४

बीकानेर राजा गजसिंघजी रो उकील सागर धारीवाल ने मीया गुलाम सडीगरा कन मलीया सु ग्राज पोकरण ग्राया तद ठा० सवाईसीघजी रु० ८) वळ रा मलीया।

(१६) भादवा सुद १२

बीकानर राजा गजसीघजी जीणा रो दीवाण मु० बपतावरसिंघ फतैचदोत फोज लेने जसलमेर रा गाव भाटी मालदवोत गाव टेकरे बारू वाळा मारग पडे जीण सु फौज लेने भाटीया उपर श्राया सो वाप सू बपतावरसिंघजी रो कागज ठा० सवाईसिंघजी रे नावे श्राया छैं जीण मे लिपीयो—ठाकुरा सू मीलणो है ने मालदेवोतो र गाव रा श्रादमी श्रापरा गावा म कांई श्रावण देसी नही। राव बपतावरसीघजी रे साथे बीकानेर फौज थी सु गाव बेगटी सु कजीयो कीनो गाव सीडा रा रजपूत बीत वापर लेने गाव बेगटी मे वडीया सो इणा कहो इणा न काढ देवा सु सासण गाव (है) सु ईणा काढीया नही जीण सु कजीया हुवो श्रादमी ४ सीडा रा मुवा ने बेगटी रो वित परो गयो।

श्री ठाकुर साहब भाटी षीवजी रतनसिंघोत रे डेरे पधारीया डेरा बालनाथजी रे मठ मे थो।

घोडो १ रु० ८७५ मे ठा० सवाईसिंघजी रे असवारी ने परीद कीनो।

(१७) मीगसर वद ३

आज षबर श्राई उदेपुर रा धणी राणा अडसी भाला राज राघोदेजी ने मारीया, राघोदेजी देलवाडे रा धणी राणा रतनसीघजी राजसीघोत देवारी भेळी सो राणा श्रडसीजी रे मन मे फेर हो राघादेजी मेल न देवारी भेळाई जीण सु राघोजी ने चूक कीनो छैं।

(१८) महा वद १३

ठा० सवाईसिंघजी सूरा री सीकार पधारीया सु भाटी मालदान ऊठ सू पडीयो सो चोट घणी लागी ने श्री ठाकुर साहब सूर दोय मार लाया।

(१६) महा सुद ८

आज षबर आई—दिषणी जसवतराय राणा श्रडसीजी री मदत हुवा सो राणोजी इणा न कहो थे देवारी रो मोरचो जायने आवतो राषो सो श्रे दवारी रे मोरचे था ने राणा रतनसीघजी री मदत म दोषणी षानुजी ने मीया दोलो था जीणा ने रतनसीघजी कयो जसवतराय न थे कवाय ने देवारी रो मोरचो श्रापणें कायम करो तो वीस लाष रुपीया देवा। जद षानुजी जसवतराय ने लिपीयो देवारी रो मोरचो राणा रतनसीघजी तालके करावे तो रतनसीघजी बीस लाष रुपीया देसी जद इणा पाछो लिपीयो थे बीस लाष री नीसा कर लोजो न म्हे श्रो मोरचो छोड उदपुर परा जासा। श्रे तो उदयपुर गया ने षानुजी रतनसीघजी देवारी रो मोरचो

कायम कीनो ने राणा अडसीजी न वडा फीकर हुवो, पछै रुपीया बीस लाप दोना री अडसीजी ने पवर हुई जद अडसीजी कह्यो—वीस लाप रुपीया तो देवारी पाछी ल देवा वा म्हे थान दसा ने रतनसीघजी न पकडाव देवो तो चालीस लाप फेर देसा इण तरे सु दीवणी जसवतराय अे लीया ने कही जद इणा रही वीस लाप री नीसा दा। जद राणोजी कहो देस मे सु उपाव लो, जद झाले राघोजी राणाजी सु अरज करी—दीवाण र तद दीवणीया न सु पी तो मुलक सारो पराव हुय जासी जद दीवणीया जाणीयो झालो राघोदजी आदमी कुवधी है सो मे म्हान पईसो लेण कोई दवे नही जद जसवतराय राणाजी सु अरज कीवी राघाजी तो रतनसीघजी सु मीळीयोडा है ने चालीस लाप रुपीया हुवेली नें भेळ कर म्हे लेसा राघाजी न मार ने कहन राघोजी ने चूक कर मारीया जठा पछ सारो चलण दीवणीया रा हुवो पछ अडसीजी जसवतराय न कह्या—रतनसीघजी न पकडाय देवो तो चालीस लाप रुपीया देसा जद अडसीजी कह्या म्हे कवुल छा थे पकडा देवो थान चालीस लाप रुपीया देसा जद जसवतराय न अनेीये दीवणी पानुजी मीया दोला न लीपीयो—म्हे राणाजी सु इण तरे वात ठेराई छै रतनसीघजी न पकडाय दसा न चालीस लाप रुपीया अडसीजी आपा न देसी सा थारे म्हारे आधो आध छ न रतनसीघजी न पकडावणा जद पानुजी न मीय दाले लीपीया ये भलाई आ वात ठेराय लीजे मा थारे भेळा छा पछ जसवतराय अडसीजी कहो आपरी फोज मलो न म्हे साथ जासा सो रतनसीघजी न पकडाय देसा जद राणाजी आपरी फौज इणा साथे मली।

। राजा उमदसीघ भारथसीघोत सायपुरा रो धणी

।। मडतीयो वीरमदजी कीसनसाघोत घाणेराव रो धणी

।। रावत पाडसीघ जोधसीघोत सलु बर रो धणी, वगरा फोज दन दीवणीया साथे मेलीया सो दीवणी उजीण माधजी सोबदार कने था रतनसीघजी उठ जावण लागा ने जसवतराय अनीया दीवणी पानुजी मीया दोलो इणा भेळा हुय सोबदार माधजी ने कहायो—म्हे आपरा चाकर छा आपरा मेलीया अडसीजी कन बठा था न अडसोजी सु आ वात ठराई छै चालीस लाप तो अडसीजी कन उरा लेणा न रतनसीघजी न पकड न अडसोजी ने सूप देणा इण तर कीवी तद माधजी कवायो आ वात ये आछी नही कीवी राणे अडसीजी तो उदपुर बठा छै न रतन सीघजी तो आपणे भरोसे बठा छ, आपणे पाळ छ सो आ वात करा तो हाहुसथान म आपणो आछो लाग नही। जद जसवतराय पानुजी सु इणा वीचार कीना आप रतनसीघजो सु कजीयो करसा ने माधजी ने केवायो म्हे तो अडसाजी न वचन द आया छा सु पुठा कीण तरै जावा राज सभावजो म्हे कजीयो करण न आया छा

सु नाईजी ने माधजी जाणीया म्हारा चाकर छ सु म्हा सु वजीया काय करे नही न इणा ता वजीया रा वीचार कर अजाण चस्ता आया सा झगडो हुवा, सोवदार माधजी रा पग टूटा, प्रादमा घणा काम आया सिफरा उपर—

अडसीजी री फोज रा काम ग्राया—

॥ उमदसिंघ भारथसीघात सामपुरा रो राजा

॥ सलुबर रा धणी रावत पाडसीघ

वीरमजी र लाह र लागा सा नास न धर आया न फोज रा लाक घणो मारांणो। माधजी सावदार रा पग छूट गवा मीनप घणा मुवा राणा रतनसीघजी कन सामी नागा हजार ५००० था जोणा न माजी घणी भळावण दीवी न साम्या दीठा मारे ता कोई रावण वाळा नहो सा धणी रोवणु सु जावणा सा नागा वडी राड कोवी रतनसीघजी न कुसला निकाळिया।

ओ झगडो सफरा नदी वद १२ उजाण हुवा।

(२०) फागण वद ११

आज समाचार ग्राया सवाई जपुर म भडारी हुकमचन्द सवाइ रामोत सवाई राम रतनसी दोनु जणा रा परच हुवो २५००० परच न लागा। (ग्र) महाराज रामसीघजी रा दीवाण है। महाराज श्री रामसीघजी भ० वनचद सवाई रामोत न दिया—

सिरपाव	कडा	मोती	पालखी	राव पदवी रो पीताब
१	१	१		

(२१) चत्र वद १

आज पवर आई महाराजा श्री वीजसिंघजी रा राजलोक राणावतजी कवर जालमसीघजी उदेपुर था सा उदपुर दीयणी ग्राय लागा तर उदपुर सु चढीया सो राणीजी न कवरजी जोधपुर ग्राया न नाजर दौलतरामजी री वावडी उतरीया। ग्राज सुणी राणो रतनसीघजी न दीपणीया री फोज न साव

॥ सतपाल कामती फौज उदेपुर उपर लावता था सु जावद रे उली कानी ग्रेक जती मूठ चलाई सु साव सतपाल मूवा, तीण उपर कहूं छै जती ने इ परो मारीयो।

॥ दावद पोतरा ममारपपा कना नु ग्रादमा फा० सुद १३ आया था ने ठाकुर न उणा सीरपाव मलीयो थो ने उणा रा ग्रादमो आया था जीणा न पाछी सीप दोवी।

ममारषपा ने मेलीया—
पीनपाप चीरो जरी रो। मेमुदी कारचोस रो पातियो
१ १ १ १
ऊठ १। जाकोडो घणी कीमत रो पलाण पीतले रो।
हयायतषा ग्रठे ग्रायो जीण नै दीया—
चीरो जरी रो महुदी ग्ररग्रातें रा पातिया
१ १ १

(२२) चत सुद ५

ग्राम रामदेहुरे रे तलाब है मु पाणी ग्लोळी कुकु री कार छ, चोफेर ने पाणी भरे जीता घाट दोळी का नहो।

तत्कालीन एतिहासिक जानकारी के लिए सामग्री बहुत उपयोगी है।

११६ कूता री वही

१ कूता री वही, २ पो० हा० संग्रह, ३ ८, ४ १६×३२ सेमी० ५ १४६, ६ २२-२४, ७ वि० स० १८५५, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस वही में सावणू शाख की कुता का हिसाब दिया गया है।

प्रारम्भ—

श्री परमेसरजी सत छै
श्री गणेशजी

श्री पोहकरण रा कसवा रा खेतो रो कुतो किया संवत १८५५ रा काती सुद ४ रविवार

बाजरी मूंग मोठ जवार तिल
खळो गुमानो भोजराज रा हैं

बाजरी	तिल	जवार	मूंग	मोठ
॥)	।)	१॥)	।−)	।)१=

छीपो पमलो परवत रे
॥)५ बाजरी ४॥ जवार
मूंग
१।

मालो बसवो कसरा रो
१।)५।। ।।)।। बाजरी

हेमराज वासीराम

बाजरी	जवार	तिल
१६।)	१।।।)५	।।।)२।।।

मोठ
५। =

१२० श्री रामदेवजी रे मेळा ऊठा रै डाण री वही

१ श्री रामदेवजी रे मळा ऊठा रै डाण री बही २ पा० हा० सग्रह, ३ ५, ४ ७० × १३ समो०, ५ १८१, ६ ३८४१, ७ वि० स० १८५१ स १८६१, पोकरण, ८ अनात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे वि० स० १८५१ से १८६१ तक जिन-जिन गावो के ठाकुरो ने पोकरण ठिकाने मे रामदेवजी के मळे के लिए ऊट भेजे थे उनका विवरण है। साथ मे जिन दलालो ने ऊट तय किये थे उनका नाम व दलाली के पसो का विवरण है। राजाज्ञा के आदेश पर अधीनस्थ ठाकुर ऊटो का प्रबन्ध करते थे।

प्रारम्भ—

श्री परमसरजी

सवत १८८१ रा वरस मे ऊटो री बही बधी मीति भादवा सुद ४ वार सुकरवार १८५१ रा पठाण वीरामखान वास हदरावाद ऊट एक रुपीया ५६ ०० हालो रो किना

अगरवालो रामकिसन मातीराम ऊट २ रुपीया १११ ०० हालीरा वास बाडमर दलाल आसाराम परवातिया।

दुलपा मदन खा रा नागोर ऊट एक रुपीया ७७ ५० अखेसाई रा हस्ते दलाल जमाल्खा सामी वभूतगिरि वास जसलमर ऊट एक रुपीया २४ ०० अखेसाही

पलीवाल दूबो पनजी रो गाव भणीयाणा हस्त दलाल देदो दुरगादास रो दलाली के ५० पसे दिए।

भाटी मोहनसिघजी वास चापासर ऊट एक लागत ७६ ०० रुपया दलाली रोकडी दीवी दलाल गुलाब लाल न।

१२१ गैंणा कपडा तरवारो वगेरा को बही

१ गैंणा कपडा तरवारो वगेरा की बही, २ पा० हा० सग्रह, ३ ३, ४ १३ ५×५८ सेमी० ५ २१३, ६ ३७, ७ वि० स० १८६२ से १८७१ तक पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही मे वि० स० १८६२ स १८७१ तक के ठिकाने म गहना कपडो तरवारो आदि का वरान है जो एक रिकाड रूप म अकित है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम — श्रीरामजी साय छ

श्री हरसायनम — श्री सरस्वतेनम

श्री राम — श्री राम

सिध श्री राज श्री सवाईसिहजी कवर श्री सालमसिहजी लिखावत तथा तोसाखाना रा कोठार रा नावा री बही सवत १८६२ रा फागरा सुदी ५

गहणा वगेरे—

हेम रा खलीची नीली मे
४ ढाल रा फूल हाथी रा चेहरा रा
१ तेहनाळ
१ मावळीयो
१ कठी मीणीया री मकोडीदार
सिर पेच ने प्रचीया जडाऊ
बाजुबद मोतीयो सुदो
नखलीया
मोतीयों रो हार चोलडो
बेडीया

लकडा री डवी मे हेम रा गहणो—
हथफूल हम रा गुघरा ८० रो
माळा रा मोणीया ३२

लकडो री डवो मे—
कठी दुलडी मोतो दुगदुगी री
कंठी चोलडी मोती पना री हीरा री जडाऊ

हवा म—

नीलगो मुधा सरपच वेसकीमत रा
बाजुबध रा मेंढडा जडाऊ
सिरपच होरा रो जडाऊ

तरवारां—

मुलतानसाई मूठ करणसाई
तरवार तुरकाणो नाळ चवरस मूठ वेलदार
तरवार तुरकण तेनाल रूपा री मूठ सानरण
तरवार सुलतानसाई नाळ नयडी हम रा मूठ री
तरवार मानसाई मूठ सानेरण
चीमचो जनऊरो मूठ सोनेरण
चीमचा जोधपुर रो मूठ सोनेरण
तरवार जनऊ री मूठ वेलदार
तरवार मुज रो मूठ वलदार
तरवार जडाऊ मीना री

कटारिया—

ओढारी वेलदार सोनो चाढीयोडो
कटारी जोधपुर री तारकस सोनो चपरास मुख सोना री
कटार तनसी सोनारो मुखडा री

बरछियां—

बरछी चार फोफळीया रूपा री पाती छडी रूपा री

उपरोक्त गहना, तरवारो कटारिया व बरछिया के नामो के अलावा कई प्रकार के कपडो के नाम भी इस वही म आये हैं जिनका वरणन ग्रयाक नम्बर ४ म हुआ है।

१२२ तोपाखाना रे कपडो री वही

१ तोपाखान रे कपडो री वही, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४, ४ १५×५१ सेमी०, ५ १७८, ६ २३–२७, ७ वि० स० १८७४ पाकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसमे तोपाखाना के कपडो आदि की सूची दी गई है।

प्रारम्भ –

श्री परमसरजी साय छ

श्री राम श्री राम

सिध श्री राज श्री सालमसिहजी लिखावत तथा तोषाखाना रा कोठार रा कपड़ा री वही सवत १८७४ रा मीगसर वद १ सोमवार सु—

कपड़ा री वही—

रावळा मे सवा रे लाया

३ रूमाल

२ जेपुर रा आवनारी रा

१ पोकरण री रगत रो मोटो बुटा रो

धोतीया—

धोतीया सिरोही रा लाल पटा रा धोतीया रेशमी कोर रा

पायजामा, रजाइ, गुलीवद, बरडी दुपट्टा दुपट्टा समदडी का खेसला, पाग, दुस्साला, नेरणियो, लुगी, कमरबधो रूमाल खाव नेवण रो, अगरखा, जखावरीयो चोफोरा उपरणीया, सेली, कागसिया चदणरा सिरख पथरणा, फेंटा, पाग, फेंटा पचरगा वाकबध गाघरा, धिरमो बुगचा, ओढणिया इत्यादि।

इन कपड़ो के नामो के वर्णन के साथ ही प्रस्तुत वही मे उन सभी गहणो के नामो का भी उल्लेख हुआ है जिनका वर्णन थाक नम्बर ३ मे हो चुका है।

ग्रन्थ की भाषा आसानी से समझ मे आने वाली है। ग्रन्थ पर चमडे का कवर लगा है तथा कपडा के नामो व मारवाड मे कपडा उद्योग की दृष्टि से उपयोगी है।

१२३ वही तोसाखाना तालके जमा परच री

१ वही तोसाखाना तालके जमा परच री २ पा० हा० सग्रह, ३ ४ ७१ × १८ सेमी०, ५ १०६ ६ , ७ वि० स० १८६८ ६६ पोकरण ८ अनात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पोकरण ठिकाने के तोसाखाने सम्बधी जमा खर्च की वही है।

प्रारम्भ—

श्री परमेश्वरजी सत्य छै

जमा खरच री जमा बही तासापांना ता० स० १८९९ बरस री मीती सावण वद १ ला असाढ सुद १५ ताई

जमा रूपीया

१) १०६६।।।=)।। खाते बाकी १८९८ रा असाढ सु० १५ री

१३) ५१८८१।।।~)।। हाल जमा

२) पाछलो बाकी स० १८९८ म उधार दिया सो पाछा जमा किया

७) सावण म नायावतजी पाछा मलीया

बीछायत की व्यवस्था हेतु रू० ७६।।।=) लगे उसका ब्यौरे इस प्रकार दिया है—

७६।।।=) मीमनद मुघमल री रातकी

५४) मुखमल गज ६ प्र० ९

२।) दरीया गज ३ प्र० ।।।)

२०।।=) फुटकर

———

७६।।।=)

इसी प्रकार पालकी के बिछायत हेतु रू० ६५।।।=) लगे उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

६५।।।=) पालखी रे बीछायत

४२।।।) तकीयो कासी घाट मुघमलमलरो गज ४

६।।) मीसरू गादी न थान १

१=) लोगी थान ।।।

।।) रेसम रा डोरा

३।=) रूई सेर ।)

४१।=) ठठरी ने

———

६५।।।=)

घोडा के शृंगार हेतु ७५ रु० लगे उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

५०) बनाती सझाई १

बनात गज

रेसम रा डोरा
चकमा
लोगी
डोरा सूत रा
पाल ग्रावपान
मेनत
तग
कडा पागडा

१५) वारगी सफाई
पीलाण
चकमा
छोगी
पाल
कडा पागडा
तग
मेनत

---

७५)

ग्रग्रेज सरकार तालुके जो रुपये खर्च हुए उसका एक उदाहरण प्रस्तुत है—
५३१। ˜)। सीरकार अगरेज ता०

१७)	चोपदार चीपडासीया ने
३००)	फवरनवीस मीर ईमोमग्रलीजी ने दिया
८०)	मीजमानी मायब अजद जान डलडू सायब अर सायब री चेत म कीवो जद दिया । ५०) पातरीया ने ३०) भगतणीया ने
१३४। ˜)।	कूपावत सावतसीघजी ने ग्रजमर सामलायत रापीया जीणा रो प्रभारी पुराक रा आधा नीबाज री सरकार सू दीया ने आधा अठा सु दीना चत म।

५३१। ˜)।

२२ रुपयो के वतन खरीदे गय उसका विवरण इस प्रकार है—

२२) बासण परीद

६) दवात

२०) कासो रा बासण सथलाणा मु परीदीया

तासलोया बडी ४   तासलीया ५

तासलीया छोटी ४   कटोरदान २

---

२२)

शस्त्रागार तालुके शस्त्र एव बारूद आदि खरीदा गया उसका विवरण इस प्रकार है—

४६॥ =) सलेपाना ता०

५) तमछो ६ नाळीया र सचा करायो जीण रा चादीया लवार न इनाम रा दीया

१०) तमचो १ अगरेजी वीळायत सु कराय मगायो हु० साहब अजट फीरच साहब जीण री लागत रु० २२३ जीण बरस १६०१ रा बरस म दीया २०८।।।) = कलदार २१३) बाकी १०) हमार मूरसागर गीराट हेड साहब न दीया माह म।

२५) बदूक १ दिली री परीद लवार चादीया जोधपुर वाळा री हु० रामसीधजी

६॥ =) बदुक छोडण रो सोर ।।।)५ तोल जेपुर रे हु० मु० सायवचद जयपुर सु लायो

४६॥ =)

पोकरण ठिकाने मे रुपय जमा हुए उसका

३०१) सुनारा रे आपस मे झगडो बाबत लिया

१००) सुनार कसु रा

२०१) सुनार बुडो बीज सु आयो ने टटो बढायो

---

३०१)

१३७५) गावा वाळा रा काम कराय दीना
६५०) गाव सरेडे रा जागीरदारा रा
१००) वडगाव रा देवडो रा
१००) देई पेडा रे चोधरी पटवारी नजर कीना
२००) पोपरी रा जागीरदार चीमनजी रा
१२५) राइसर रा गोमादेवा क्ने पदरोडा री सगाई वावत
२००) घणलो लीपायो जद सं० १८६७ म ठरीया
हं० मुकनचद तीण मे १८६७ म आया
३५०) बाकी १५०) हमार ने ब्याज रा ५०) जु २००)

१३७५)

६६) सायव ग्रजट लडलु सायवरी वडी मीजमानी करी हवेली ग्राया जद व्योपारीया री नीछरावळ रा आया।

७१०) साढीया चोर ले गया था जीण मु तलबा करायने ३६ साढ तथा रूपीया लीया मारवाई रा।

८३२) पतरी समसता री कबुलायत रु० १००१) छुट १६६) बाकी ८३२)

४२५) मुनारा समसता री कबुलायत रु० ४५०) छूट २५) बाकी ४२५)

१०१) मोची समसतो री कुबुलायत रा रु० १३१) छूट ३०) बाकी १०१)

इसके अतिरिक्त नजर नछरावल के जो पसे आते थे उसका भी ब्यौरा दिया है।

तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था की जानकारी के लिये सामग्री उपयोगी है।

१२४ वही तोसाखाना तालके रोकड जमा परच री

१ वही तासाखाना तालके रोकड जमा परच री, २ पो० हा० संग्रह, ३ , ४ ५६ × २२ सेमी०, ५ १३० ६ वि० सं० १८६८, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पोकरण ठिकाने के तोसाखाने सम्बन्धी जमा खर्च की बही है।

प्रारम्भ—

रोजनाबो मीती असाढ सुद ८ ला० सुद १५ सुकर रा १८६८ रा जमा रूपीया

१) १८१७॥। ☰)। पोत बाकी दूसरी वही रा जमा परच सु
६४६) जोध० २०) मप० १६७) गज० ७८) ईम० ६८) साय०
२१) मायो ४१) पोटा ८८॥। ☰)। परभारा
३८४६ हाल जमा

१६ नीजर नीछरावळ रा जमा
३ असाढ सुद ५ म
१) तीजडिया दोला रा वेटा वजासाही
२) मु० कीसतुरचद गुमानचद तोगावत न दुनाड रो सुपीया न पाय वधाई जोण री नीजर रा वोजसाहा

—

३)

४) २) असाढ सुद ७ म
१) ० कछावा सीवजी परणीज मे आयो जद ईगतीसदा
० २ मडला रा इगतीसदा
१) ० मु० वुधा दुनाडा रा वीजेसाइ
१) ० जाट मनरूपो मीजल री अपसाई
१) ० उतसर रा चोधरीया री वीजेसाई

---

४) २) वीजेसाई अपसाई इगतीसदो
२) १) ३)

हवन के लिये खरीदी गई विभिन्न वस्तुओं का मूल्य इस प्रकार दिया है—
३५) होम तालके सराजाम—
५।) उदपुरी हसत
३।।।) कीसतुरी मासा ४।।) १) पगरपी जोडी ।) धूप
८।।।)।। पसारी धनजी रा
।) नालेर ५, ।¯) चावल '२।।, =) मोली '=
।=) हीगलु पुडीका, ।¯)।। गुळ '। ।) जायफल '
।¯) गुलाल '।।=), ।।।¯) वीदामा '१।।=),
¯।।। लूग '¯, ☰) इलायची '=,
।।।=) मीसरी '१।, ऽ=)।।। मेदी '। ☰) सुपारी '।।
।☰)।। जगाल =, ¯।।) पोपरा ।

४।।।)।।

७)। सरावगी गोकल रा
२॥ ☰॥) सेला २, कसुमल नागोरी
। =)॥ मलमल हाथ ४ सफेद, ॥। ☰) पाध १ गुलाबी,
१ ‾) सेला २ सुफेद, ॥। =) टुकडी १
॥। ☰॥) बोढणी १ छीट
॥) । ☰)॥

---

७)।

२।)॥ गोकल सारडा कना सु
। =) कपुर '‾ ‾) सीदुर '= =) सीरसु =
१) केसर १॥, ☰।) चदण '।, ‾।) मीरचा '=
=) पारका ☰)॥ पीसता '= दाण ।
=)॥। नाळेर १

२।)॥

। ‾)॥ भया मगनीराम दाल मसुर री '॥ कुकु '।
‾)॥ ।)

३॥।)। मोदी कीसनाराम सु
। ‾)॥ तील ५, =) जव '२॥, ‾) मुग '१,
२।) उडद ॥ २। दाल चीणा री '१। १२५ परायतचुन
३) घीरत '५।

३॥।)।

३॥। ☰) दात रो चूडा नगा पुनमचद रो
३ =)॥ नाथु सुनार रा थाळी २ लोटीयो १,
१॥। =)॥। ॥।)॥।
कलस्यो १ अरघीयो १
२।) पाड चीणी ५ रामनारायण फतपुरीया
२ ☰)॥ हु० बीदयाराम री हाट रो
॥।)॥। पेडा '१। २ २५ मवीर '॥ =) २। दापुआ ११

॥ ‾) कावला १, २१ फुल, १, नीबू ११
। =)॥ लागो हाथ ६, १ पान २५ छडो ?

१॥)। ६।

३५)

ब्राह्मणो के भोजन हेतु दी गई विभिन्न जिनसा का मूल्य इस प्रकार अंकित है—

२५) बीरामण भोजन ता० दीराया
 १०) रोकडा उदेपुरी गुसाया नं दीराया
 जीनस पाड रो सीरा कोरे
 ३॥) घीरत ७ ॥) चावळ '३॥
 २॥) पाड '६। । =) म्राटो '
 ३॥) मीठाई '।) १) तरकारीया ५
 ।॥) मेवा '६ ।॥) मेनत मुतधणा सुधा
 =) फूल पान

१३)

२५)

तत्कालीन विभिन्न वस्तुओ के मूल्यो की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है ।

१२५ जैन मन्दिरों के प्रतिष्ठा सम्बन्धी विवरण

१ जन म दिरा के प्रतिष्ठा सम्ब धी विवरण, २ फलोदी (ताराचद वैद्य) ३ , ४ ५ १, ६ , ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस पत्र मे कुछ जन म दिरो के प्रतिष्ठा सम्ब धी जानकारी दी गई है। विवरण इस प्रकार है—

(१) २०८ माघ सुदि ७ वाप्पनाग गोत्र शा० महीपाल भा० मायदे पु० अरजुन केन श्री महावीर विम्ब करपित प्र० रत्नप्रभा सूरि मि० ।

(२) २४३ फागुन सुदि ११ सुचति गौत्रे शा० माना मानकेन श्री पार्श्वनाथ बिंब करापित प्र० कक सुरिमि ।

(३) २९७ जेठ सुदि ५ गोत्रीय मन्त्रीश्वर हरपाल जसदेव केन श्री आदिनाथ प्रतिमा करापित ।

(४) ६८३ वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रेष्टि भोपाल केन श्री पाश्व विम्व करापित ।
(५) ८४२ फागुन शुक्ल ३ भाद्र गोत्रे सा० लल्लू भार्या ललतादे पुत्र सारग केन श्री पार्श्वा विम्व करापित ।
(६) ६६६ माघ शुक्ल १५ उपकेशपुर वास्तव्य उकेश वशे तप्त भट्ट गोत्रे सा० नानग भार्या नानोद पु० धरण पूरण केशव खेमा आदि कुटुम्बेन श्री बास पूज्य विम्व करापित ।
(७) ५१३ माघ सुदि ३ उपकेश वशे चोरडिया गात्रे सा० छाड भाय छाडद पु० नोढा भा० नागणदे केन स्व० माता छाहडी श्रेयाथ श्री महावीर दव विम्ब करापित ।

१२६ सिवाना और फलोदी के वैद्य मेहता (ओसवाल) का खुर्शी नाम, ज्ञान सुन्दर

१ सिवाना और फलोदी के वद्य मेहता (ओसवाल) का खुर्शी नाम, ज्ञान सुदर २ फलोदी (ताराचद वद्य), ३ ४ , ५ १२ ६ ८–१०, ७ २०वी शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ९ हिन्दी, देवनागरी, १० इसमे सिवाने के (मेहता) ओसवालो की वशावली लालचद से रासजी तक दी है। प्रारम्भ म उल्लखित है कि ओसवालो के नवें श्रेष्ठि गौत्र म लालचद प्रतापी पुरूष हुए। वे ओसिया स सिवाना आ रहे। चित्तोड के राणा ने वि० स० १२०१ मे १२ ग्राम उन्हे प्रदान किये तथा वद्य की पदवी दी। अनन्तर उसके वशज सभी वद्य कहलाये। इन्हीं के वशज रासाजी सिवाने से फलोदी आये। विवरण इस प्रकार है—

(१) लालाजी वि० स० ११६६ म ओसिया स सिवाणा आये। (२) भाभण। (३) जतसी—सिवाणा म महावीर का मन्दिर करवाया। (४) धरमसी—इनके पुत्र नागदेव न आचाय देवगुप्तसूरि से दीक्षा प्राप्त की। (५) सुलतानसिंह। (६) कुशलसिंह—सिवाणा मे पाश्वनाथ का मन्दिर बनवाया। (७) भूपतसिह। (८) मोहनसिंह। (९) कल्याणसिंह। (१०) जगतसिंह। (११) हिम्मतसिंह। (१२) लालसिंह—इन्होंने वि० स० १४९५ म पठाना स लडाइ की। (१३) सहसकरण। (१४) दलपत। (१५) त्रिभुवनसिंह—यह बडे वीर एव दानी पुरूष हुए। (१६) सवाईसिंह। (१७) ठाकुरसिंह। (१८) अनोपसिंह। (१९) प्रतापसिंह। (२०) राजसिंह। (२१) रासाजी—यह सिवाणा से फलोदी आये। इसके बाद रासाजी स घेवरचद्र तक फलोदी के

ग्रोसवाला की पीढिया दी हैं जो काफी लम्बी हैं। पेवरचद्र ने दीक्षा ली ग्रौर ज्ञान सुन्दर नाम स विख्यात हुए। उन्होने ओसवाल जाति एव जैन धम का अध्ययन किया।

सिवाना एव फलोदी के ग्रोसवालो सम्बन्धी जानकारी के लिये सामग्री उपयोगी है। लिखावट ग्रधिक पुरानी नही है।

१२७ चौरा री बही

१ चौरा री बही, २ पो० हा० सग्रह, ३ ६, ४ १६×५८ सेमी०, ५ १४१, ६ ३०, [redacted] वि० स० १९०७ से १९१९ तक, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० वही का प्रारम्भ इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

श्रीरामजी

श्रीरामजी श्रीगणेशायनम

श्री परमेसरजी सत्य छै जी

श्रीरामजी

स्वास्ति श्री ठाकुरराज श्री बभुतसिहजी लिखावत तथा पोकरण रा महाजना रे चौरा री वही सवत १९०७ रा महा सुद ५ वार गुरुवार

श्री परमसरजी साय छ

चौरा रा रुपीया जमा

९३१७ ०० हाल जमा

पोहकरण रा महाजना र महेसरीया रे ईजारे रता तरा रुपीया २५०००) ठहरीया तिण पेटे चौरो एक थाल दीना जिण चौरारी विगत सवत १९०७ रा महासुद ५ वार गुरुवार—महाजन वास वास मे दोय चार जणा बस ने त्यारो यारो चौरो कर दीनो सो उतारियो हस्ताक्षर चापावत पीरदानजी उजळ नाथूराम नीचे चौरा री विगत छे

३१ ०० सुरजमल पेमजी
२१ ०० तिलोक मुरलीधर रे
२१ ०० हीरो खेताणी
३ ०० सतोका ऊदाणी
५ ०० रामकिसन उदाणी
३० ०० कदोई केसर सालगाणी
२ ०० चुतरो मालकाणी

याददाश्त—२

नतो कोई सटपट सुपरो देसी तोइ म तो वीना मलीवा देवा नहा।
हरीयाडाणा रो हुकमनावा वदोम सु रावे नही।
तलवा दीवाण अनातत सवाय मातीसीयजी ग्रोर जनान रा मु वेठ वाजवो हुवे सु माने पुरव नही।
महाराज क्वरा रा जुलुम कई तर रा हुवे ओर कोटवाळा रा जुलम केई तर रा है। मोलपी रा ऊट गाडीयो वीना भाडु पास लूट।
जनाना गाव यारे है जीणा सु हवालदार चोरीयां यारी करावे ने पोस यारा लेवे ने तलवा करे।
ठरडा रा गाव म चारीया धाडा हुवे जीण रो वदावसत नही।
राज री दुकान आज ताई वेदे हुई नहा ने हमें दुकान राज री तथा जनाल सीरकार री भठे वजार म तथा परगना म पही कर दीवी ने जमीदारा रा जुना पत मोल लेर उगरावे ने तलवा कर।
पेढी री दुकान म राज रा लापा रूपीया सू पीज जीण र लेपा रो ठाह् नहीं।
कारपाना सालके लावा रूपीया परच म मडे है कारपाना म मुज वालो काई वर्णे नही जो वणावे तो उनकी उमर कुछ नही।
फौज री परची चुकै नही जीण सु मुलक रो वदोवसत नही।
पौजा री कलम वधी जद तो ओर तराजे वधी थी न हम वरते यार तर।
स० १८९६ रे वरस मे जमीदारा र गाव लीयाजीया जीण म कीताक जवन है।
साडीया रे टाळा सु मुलक रो वीगाड करावे।
श्री हजुर साहबा री मोसर हुवे नही कोइ मालम करावे जीण ने जाब मन आवे जेडा ई द दव।
साहब लोक श्रेक परगना म आव ने सरभरा सारा परगना मे उगराय लेवे वरसा वरसी।
ऊट गाडीया गरीवा री पोस लेवे जीण रो भाडो दवे नही।
रेप वाव माफ हुवोडी मरू हुय गई।
ग्राठ पार म श्रेक पोर दरवार हुय मोसर दीराया चाहीजे।
हाकमीया कोटवाळीया वगेरे ओघा मावारीया ईजारे सु दीरीजण लाग गया जीण सु जुलम जादा वध गयो।
पट दरसण री अदालत इजारे हुय गई जद नीरधार कोण तरे हुवे।

२१ अगरेजी मुकदमा रो जाव तुरत लीपीजे नही ने पाछो जाव पुछीजे जद सावत हुय जाय जद जमीदारा सु ब्याज सुधी भरीज जाय जद जमीदारा रो नीभाव नही ।

२२ राज रे काम रो परवथ छोटा काम सु लगाय ने मोटा मोटा काम रो पटकणा बधीयो चाहीजे ।

२३ माय सु हुकम फुरमावे सु वीचार फुरमायो चाहीज ।

२४ छानवे री कलम बघो सो सावत हुई चाहीजे ।

२५ तीवरी, माहामीदर मे वासो वगरे सदामद गुर धरम रहो जीण मुजब रहो चाहीजे ।

२६ सायरा सु दाण री पचल सवाय म हुवण लागी ।

२७ कचेडी म लागत सवाय लागण लागी ।

२८ मोतीसिघजी वाभा रे तलवा वे क वाजबी री सरू हुय गई ।

२९ पोळा री कलमा बघी चाहीजे ।

३० कुडकी रो लाठो ठीकाणो जीको पीण वीगड गयो है ।

३१ मीठडी पण लाठो ठीकाणो जीका पीण वीगड गयो है ।

३२ रोयडी पीण ईण सरसते बीगड रहो है ।

३३ बावरो पीण कदीमी ठीकाणा पण वीगड गया है ।

३४ पालीयासणी छोपीया रे भेवज रो ठीकाणो पीण वीगड रहो है ।

३५ सदामद ठीकाणा री रीत है भाईपा रा ठीकाणा भेळा हुय पाग बधावे सु सही रेवे पण राज वाळा ठाकुराणीया न तथा भाईपा वाळा ने वकाय न पडा कर सो ठीकाणो पाळो लीपीजे नही जद पालसे रेव ।

३६ मारवाड म फोज का बदोवसत नही सो अगाडी पातमावा र वगत मे मारवाड री फाज तीपी थी लेकन आगली रीत रसम नही, जीण सु ब बदोवसत है ।

३७ कानु गा हरपा न पाली म हाकम मार नापीयो ।

३८ हरीयाडाणा भापरवास रो जाव करणो ।

३९ रामपालोत सुरजमल रो लीपत वचावणो ।

शुद्धि पत्र

पृ० स०	पंक्ति स०	अशुद्ध	शुद्ध
२४	३	(ई)	(इ)
२५	२७	सिपत्त	सिपत्त
३३	२६	प्र प	प्र ५
३७	१४	१७	१०
३९	२८	इतिहाम	इतिहास
७४	१४	धाटी	घाटी
१३१	२०	सानपान	खानपान
१३६	२९	सरदार	सरकार
१३८	२६	जो	जी
१४७	७	६३	६४
१६५	६	भोमसिंह	भीमसिंह
१६५	६	साहब	साहिबा
२१०	२२	लोपत	लीपत
२१३	८	सीपावे	लीपावे
२२३	२	रावपूतो	राजपूतो



* जन्म सन् १९३०, माळूगा ग्राम (जोधपुर)
* शिक्षा एम ए , एल एल बी , पी-एच डी (राजस्थान विश्वविद्यालय)
* सस्थापक निदेशक राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी, जोधपुर (१९५५) (जोधपुर विश्वविद्यालय स मान्यता प्राप्त शोधकेन्द्र)
* सम्पादक शोध पत्रिका परम्परा' (१९५६ से वतमान तक
* सम्पादित ग्रन्थ इतिहास की सामग्री—बीस ग्रथ प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रथ
* ग्रन्थ लेखन डिंगल गीत साहित्य, राजस्थानी साहित्य कोष व छद शास्त्र आदि
* राजस्थानी के युग प्रवत्तक मूध य कवि ग्यारह काव्य कृतिया प्रकाशित
* केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनेक सस्थाओ से पुरस्कृत व सम्मानित
* शोध निर्देशक इतिहास व राजस्थानी विषय (जोधपुर विश्वविद्यालय)
* प्रोजेक्ट निर्देशक भारतीय इतिहास अनुसधान परिषद, नई दिल्ली
* महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोट जोधपुर) के सम्मान्य निदेशक